

Мўғул босқини
ёхуд
Мусулмонларнинг қонли
кечмиши



Абу Абдуллох Шоший

Мухаррир: Шамсиддин Дарғомий

الزحف المغولي

أو

صفحة دموية في تاريخ المسلمين

(باللغة الأوزبكية)



أبو عبد الله الشاشي

مراجعة: شمس الدين درغامي

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

هاتف: +9661144454900 فاكس: +9661144970126 ص ب: 29465 الرياض: 11457

ISLAMIC PROPAGATION OFFICE IN RABWAH

P.O.BOX 29465 RIYADH 11457 TEL: +966 11 4454900 FAX: +966 11 4970126



OFFICERABWAH

МУНДАРИЖА

| | |
|---|----|
| Мундарижа..... | 1 |
| Муқаддима..... | 10 |
| Фойдаланилган манбалар..... | 14 |
| Биринчи бўлим: Чингизхон даври ва Хоразмшоҳларнинг аянчли хотимаси..... | 18 |
| Тарихни ўрганишнинг аҳамияти..... | 19 |
| Мўғул ҳодисаси ва ҳозирги кунимиз..... | 20 |
| Мўғуллар тарих саҳнасига чиққанда дунёдаги аҳвол..... | 22 |
| Мўғуллар дунё саҳнасига чиққанда Ислом уммати..... | 22 |
| Мўғуллар дунё саҳнасига чиққанида салибчилар..... | 26 |
| Мўғулларнинг келиб чиқиши..... | 27 |
| Мўғулларнинг ўзига хос белгилари..... | 29 |
| Исломга қарши бирлик..... | 31 |
| Биринчи мўғул босқини..... | 34 |
| Хоразм давлатига ҳужум сабаблари..... | 34 |
| Қозоғистон ва Бухорога мўғуллар ҳужуми..... | 38 |
| Бухоро қатлиоми..... | 38 |
| Мўғул ҳодисасига Ибнул Асир муқаддимаси..... | 44 |
| Самарқанд истилоси..... | 47 |
| Муҳаммад ибн Хоразмшоҳ қисмати..... | 52 |
| Муҳаммад ибн Такаш Хоразмшоҳнинг сийрати ва энгилиш сабаблари..... | 55 |
| Форс диёрига мўғул юриши..... | 60 |
| Мозандарон, Рой, Қозвин, Арманистон ва Грузияда мўғуллар босқини..... | 60 |
| Фарғона водийси, Термиз шаҳри ва Кулоба қалъасининг яксон қилиниши..... | 62 |
| Хуросон ерларига мўғул босқини..... | 64 |

| | |
|--|-----|
| Балхнинг таслим бўлиши | 64 |
| Насо шаҳри қирғини | 64 |
| Толикон шаҳри қирғини | 65 |
| Марв фожиаси..... | 66 |
| Нишопур қатлиоми | 69 |
| Ҳирот шаҳрининг бўйсундирилиши | 70 |
| Хоразм диёрига мўғул босқини | 72 |
| Нажмиддин Кубро (1145–1221) | 73 |
| Афғонистонга мўғул юриши | 75 |
| Балқ жанги | 75 |
| Қобул жанги..... | 80 |
| Ўлжалар устидаги фитна | 81 |
| Жалолиддиннинг чекиниши..... | 83 |
| Афғонистон ишғоли..... | 86 |
| Хилофатга таҳдид..... | 89 |
| Мароға шаҳри ишғоли | 89 |
| Шимолий Ироққа таҳдид..... | 90 |
| Эронга мўғул босқини | 92 |
| Ҳамадон ва Ардебил шаҳри қирғини | 92 |
| Мўғуллар Табриз остонасида..... | 92 |
| Байлакон қирғини..... | 94 |
| Мўғуллар Ганжа остонасида | 95 |
| Гуржистон ва Шемаха истилоси..... | 96 |
| Доғистон ва Чеченистон истилоси | 98 |
| Руслар ва кипчоқлар қисмати..... | 99 |
| Ҳижрий 620 йилнинг муҳим воқеалари | 101 |
| Болгарларнинг зафари..... | 101 |
| Халифанинг Гиёсиддинга қарши ҳаракати..... | 102 |
| Мусулмон шаҳзода Анадолнинг насронийликни қабул қилиши..... | 104 |

| | |
|---|-----|
| Мусулмон ўлкаларида чигиртка балоси..... | 106 |
| Ҳижрий 621 йилнинг муҳим воқеалари | 108 |
| Форс минтақасининг тақсимланиши | 108 |
| Эронда бир гуруҳ мўғулларнинг иши | 108 |
| Чигиртка ва қурғоқчилик келиши..... | 109 |
| Ҳижрий 622 йил воқеалари | 110 |
| Мангубердининг Эронга ҳукмронлиги | 110 |
| Ҳижрий 623–624 йиллар воқеалари..... | 115 |
| Зоҳир Биамриллаҳнинг халифалиги | 115 |
| Мангубердининг Халат шаҳрини қирғин қилиши | 116 |
| Чингизхоннинг ўлими..... | 117 |
| Ҳижрий 624–627 йиллар воқеалари..... | 118 |
| Байтул-Мақдиснинг насронийларга топширилиши..... | 118 |
| Иккинчи мўғул босқини | 121 |
| Ҳижрий 628 йил ҳодисалари | 121 |
| Мангубердининг аянчли хотимаси..... | 122 |
| Жалолиддин Хоразмшоҳ сийрати..... | 125 |
| Битлис шаҳрининг вайрон қилиниши | 128 |
| Озарбайжоннинг босиб олиниши | 128 |
| Аллома Ибнул Асирнинг оламдан ўтиши..... | 130 |
| Мўғулларнинг ғарбга юриши..... | 131 |
| Арманистон, Грузия, Чеченистон ва Доғистоннинг забт этилиши | 131 |
| Украина, Польша, Можаристон (Венгрия), Словакия ва Хорватияга мўғуллар истилоси..... | 133 |
| Ҳижрий 639 йилда оламнинг аҳволи..... | 135 |
| Ҳижрий 639–649 йиллар оралиғи | 139 |
| Мўғул босқинининг вақтинчалик тўхташи..... | 139 |
| Учинчи бўлим: Ҳулагу даври ва Ислом хилофатининг ағдарилиши | 142 |
| Учинчи мўғул босқини | 143 |

| | |
|---|-----|
| Мангухон хоқонлиги..... | 143 |
| Мангухоннинг ёрдамчилари | 144 |
| Хулагунинг хилофатни ағдариш учун ҳозирлик кўриши..... | 144 |
| Хулагунинг саъй-ҳаракатлари..... | 146 |
| Пойдеворни мустаҳкамлаш | 146 |
| Сиёсий ва дипломатик тайёргарлик | 147 |
| Арманистон подшоси билан аҳдлашув | 148 |
| Насроний подшоҳликлар билан аҳдлашиш ҳаракати | 150 |
| Баъзи мусулмон амирликларининг келишуви..... | 152 |
| Маънавий жанг | 154 |
| Аббосийлар армиясининг кучсизланиши | 156 |
| Мўғул лашкарининг ҳужумга ҳозирланиши | 158 |
| Исмоилия тоифасининг қиличдан ўтказилиши..... | 159 |
| Аббосийлар хилофатининг ағдарилиши | 164 |
| Мўғул босқини вақтида Бағдоднинг аҳволи..... | 164 |
| Халифа Мустаъсим Биллаҳ сийрати..... | 164 |
| Бағдод ҳукуматининг аҳволи | 166 |
| Бағдод халқининг аҳволи | 166 |
| Бағдод камали | 167 |
| Мўғуллар билан Аббосийлар хилофати ўртасидаги музокаралар..... | 170 |
| Бағдоднинг ўққа тугилиши | 172 |
| Халифанинг хўрланиши | 173 |
| Халифанинг ўлими..... | 176 |
| Бағдод кутубхонасининг оқибати..... | 181 |
| Тарихда Ислом кутубхоналарининг мунтазам талофат кўргани..... | 182 |
| Бағдодга ўт қўйилиши | 183 |
| Бағдод халқидан баъзиларининг тирик қолдирилиши | 183 |
| Муаййиддин ибн Алқамийнинг Бағдодга ҳоким қилиниши..... | 184 |
| Бағдоднинг ағдарилишининг асоратлари | 186 |

| | |
|--|-----|
| Шом диёри истилоси..... | 188 |
| Баъзи мусулмон амирларнинг мўғулларга яқинлашуви..... | 188 |
| Майяфариқин камали..... | 191 |
| Майяфариқиннинг ёрдамсиз қолиши сабаблари..... | 194 |
| Майяфариқин камалида Носир Юсуфнинг тутган ўрни | 195 |
| Носир Юсуф билан Ҳулагу алоқасининг ўзгариб қолиши..... | 196 |
| Ҳулагунинг Носир Юсуфга йўллаган мактуби | 196 |
| Носир Юсуфнинг жиходга даъвати | 198 |
| Мўғуллар ва насронийлар ўртасидаги алоқа | 200 |
| Ҳулагунинг Ҳалабга юриши | 203 |
| Ҳалаб шаҳри камали | 204 |
| Майяфариқин шаҳри ишғоли | 205 |
| Ҳалабнинг таслим бўлиши | 208 |
| Ҳалаб қалъасининг ишғоли | 209 |
| Ҳулагунинг амирларга муомаласи | 211 |
| Ҳамаҳ шаҳрининг таслим бўлиши ва мўғулларнинг Дамашқ сари отланиши | 212 |
| Дамашқнинг таслими..... | 215 |
| Мўғул хоқони Мангухоннинг ўлими ва мўғулларнинг дамашққа киришлари..... | 216 |
| Дамашқда насронийлар ҳукмронлиги | 218 |
| Фаластин ишғоли | 219 |
| Тўртинчи бўлим: Айн-Жалут ғалабаси ва мўғул қувватининг синдирилиши | 220 |
| Миср мўғуллар қаршисида..... | 221 |
| Мисрдаги ҳолат | 221 |
| Айюбийлар давлатига чизгилар..... | 224 |
| Мисрда Солиҳ Нажмиддин Айюб волийлиги | 225 |
| Шом ва Миср ўртасидаги низо | 226 |
| Хоразм қўшинининг ажралиб кетиши | 227 |
| Мамлуқлар қиссаси..... | 228 |

| | |
|--|-----|
| Мамлуклар саййидларига нисбатланадилар..... | 229 |
| Нажмиддин Айюбнинг мамлукларга муносабати..... | 230 |
| Мамлуклар мавқеининг ортиши | 231 |
| Еттинчи салиб юриши..... | 232 |
| Думёт ишғоли | 232 |
| Ал-Мансура жанги | 232 |
| Фарискур жангги | 234 |
| Туроншоҳнинг ҳокимлиги ва ўлим қиссаси | 236 |
| Мамлуклар давлати | 238 |
| Мамлуклар давлатига илк одимлар | 238 |
| Шажаратуд-Дур шахсияти..... | 239 |
| Шажаратуд-Дур салтанат тепасида | 240 |
| Шажаратуд-Дурнинг турмушга чиқиши ва Иззуддин Ойбекнинг Мисрга ҳоким бўлиши | 241 |
| Мамолийк муъиззиянинг шаклланиши | 243 |
| Мамлуклар орасидаги фитна..... | 245 |
| Форисиддин Ўқтойнинг ўлдирилиши | 245 |
| Баҳрий мамлукларнинг Шомга қочиши..... | 246 |
| Подшоҳ Муъиз ўлдирилиши қиссаси ва қотилнинг оқибати ... | 247 |
| сайфиддин Қутуз волийлиги | 249 |
| Нуриддин Али ҳокимлиги даврида Мисрдаги аҳвол..... | 251 |
| Карак амирининг Мисрга ҳужуми | 251 |
| Сайфиддин Қутузнинг волий бўлиши..... | 252 |
| Сайфиддин Қутуз даврида Мисрнинг аҳволи | 253 |
| Ўша даврдаги ички сиёсат | 253 |
| Ўша даврдаги ташқи сиёсат | 254 |
| Ўша даврдаги иқтисодий ҳолат | 254 |
| Қутузнинг саъй-ҳаракати..... | 255 |
| Ички вазиятнинг барқарорлашиши | 255 |
| Мусулмонларнинг ягона мақсад атрофида жамланиши..... | 256 |

| | |
|--|-----|
| Сайфиддин Қутузнинг бошқарув маҳорати..... | 257 |
| Мўғулларга қарши курашга тайёргарлик..... | 259 |
| Қутуз эътиборини тортган баъзи нуқталар: | 260 |
| Дипломатик алоқалар..... | 262 |
| Шом амирларининг тутган ўрни..... | 263 |
| Носир Юсуф Айюбийнинг ниҳояси | 264 |
| Ҳижрий 658 санагача бўлган босқич..... | 266 |
| Миср халқининг аҳволи..... | 266 |
| Миср ва мамлуклар ҳаётида шайх Изз ибн Абдуссалом раҳимаҳуллоҳнинг тутган ўрни..... | 268 |
| Ҳулагунинг Музаффар Қутузга йўллаган мактуби..... | 276 |
| Мўғул элчиларининг ўлдирилиши | 282 |
| Ислонда эчилар ўлдирилишининг ҳукми | 283 |
| Иқтисодий, моддий қийинчиликлар..... | 284 |
| Шайх Изз ибн Абдуссалом фатвоси..... | 286 |
| Қутуз ва амирларнинг мўғулларни қаршилаб олиш борасидаги фикрлари | 288 |
| Акко муаммоси..... | 291 |
| Мусулмон аскарнинг покланиши | 294 |
| Миср лашкарининг Ғазога отланиши..... | 294 |
| Ғазо жанги..... | 297 |
| Фаластин — ғалабалар диёри..... | 298 |
| Ғазо ғалабасининг аҳамияти | 299 |
| Мусулмонлар билан Акко салибчилари орасидаги сулҳ..... | 299 |
| Айн-Жалут жанги..... | 301 |
| Китбуганинг мусулмонлар қаршисидаги аҳволи..... | 301 |
| Мусулмон аскарнинг Айн-Жалут сари йўналиши..... | 302 |
| Мўғуллар сафидаги Оллоҳнинг қўшини..... | 304 |
| Ҳижрий 658 йил 25 рамазон куни воқеалари | 305 |
| Мусулмон аскари муқаддимасининг Айн-Жалутга тушиши.... | 306 |
| Довулчилар гуруҳининг жанг майдонидаги ўрни..... | 307 |

| | |
|---|-----|
| Айн-Жалут маъракасининг бошланиши | 309 |
| Қутузнинг жанг майдониغا тушиши | 313 |
| Китбуганинг ўлдирилиши | 315 |
| Мўғулларнинг мағлубияти ва Айн-Жалутдан қочиши..... | 315 |
| Бейт-Шеан жанги | 317 |
| Музаффар Қутуз Ислон мезонида | 319 |
| Айн-Жалут жангидан олдин мўғулларнинг мусулмонлар устидан ғолиб бўлиши сабаблари | 319 |
| Шомнинг мўғуллардан озод қилиниши | 323 |
| Қутуз ва Миср лашкарининг Дамашққа келиши..... | 324 |
| Шомга амирлар тайинланиши..... | 326 |
| Айн-Жалут жангининг самаралари | 328 |
| Айн-Жалут жангининг самаралари | 329 |
| Нусрат ва мағлубият сабаблари | 335 |
| Нусрат сабаблари | 336 |
| Мағлубиятимиз сабаблари..... | 339 |
| Музаффар Қутуз сийрати | 344 |
| Қутузнинг ўлими | 346 |
| Хотима..... | 349 |
| Мўғуллар қиссаси қисқа сатрларда | 351 |
| Мамлуклар қиссаси қисқа сатрларда..... | 358 |
| Манбалар..... | 362 |

Ислом олами ўз тарихида кечирган энг аянчли ва мусибатли кунлари, айтишга тил, ёзишга қалам ожиз бўлган, юракларни тилка-пора қилсада аччиқ ҳақиқатдан бошқа нарса бўлмаган, уммат бағрида ўчмас изини қолдирган ва унга қиёматга қадар дарс бўлиши керак бўлган тарихий қисса “Мўғул-татар қиссаси”дир. Воқеа хижрий еттинчи асрларда бўлиб ўтган аччиқ ҳақиқатдир. Ушбу мудҳиш воқеани “*Мўғул босқини ёхуд Мусулмонларнинг қонли кечмиши*” номли асарда қаламга олар эканман, асосий мақсадим Оллоҳнинг ризосига ноил бўлишдан сўнгра, миллатимизга тарих сабоқларидан хулоса қилишларида ўз ҳиссамни қўшишдир. Муҳтарам китобхонга тавсиям шуки, китобни тарихий тафсилотларни ўрганишдан кўра, кўпроқ ундаги ҳодисалардан хулоса чиқариш мақсадида мутолаа қилсин. Чунки тарихий тафсилотларни баён қилиш учун арзимаган сатрлар эмас, дунёнинг ўнларча кутубхоналарида ўқувчи ва тадқиқодчиларини кутиб, чанг босиб ётган мингларча китоблар лойиқдир...

МУҚАДДИМА

Бисмиллаҳир роҳманир роҳим

Барча мақтовлар Оллоҳга хосдир. Унга ҳамду сано ва истиғфорлар айтамыз, Ундан ёрдам сўраймыз, нафсларимиз ҳамда ёмон амалларимиздан паноҳ тилаймыз. Оллоҳ ҳидоят қилган кимсани адаштирувчи, адаштирган кимсани ҳидоят қилувчи йўқдир. Шериксиз, ягона Оллоҳдан ўзга барҳақ илоҳ йўқ ва Муҳаммад Унинг бандаси ва элчисидир, деб гувоҳлик бераман.

«Эй мўминлар, Оллоҳдан ҳақ-рост қўрқинглар ва фақат мусулмон ҳолингиздагина дунёдан ўтинглар!»¹;

«Эй инсонлар! Сизларни бир жондан (Одамдан) яратган ва ундан жуфтини (Ҳаввони) вужудга келтирган ҳамда у икковидан қўп эркак ва аёлларни тарқатган Раббингиздан қўрқингиз! Яна ораларингиздаги савол-жавобларда ўртага номи солинадиган Оллоҳдан қўрқингиз ва қариндош-уруғларингиз (билан қариндошлик алоқаларини узишдан сақланингиз)! Албатта, Оллоҳ устингизда кузатувчи бўлган Зотдир»²;

«Эй мўминлар, Оллоҳдан қўрқинглар, тўғри сўзни сўзланглар! (Шунда Оллоҳ) ишларингизни ислоҳ қилади ва гуноҳларингизни кечиради. Ким Оллоҳга ва Унинг пайғамбарига итоат этса, бас, у улўғ бахтга эришибди»³.

Ислом тарихини ўрганиш, унинг воқеа ва ходисаларидан ибрат олиш мақсадида битилган ушбу сатрларда ҳижрий VII аср, яъни милодий XIII асрларда Ислом оламида содир бўлган воқеалар, «Мўғуллар истилоси бошланишидан, то тор-мор қилингунигача бўлган ходисалар» жой олган.

Тарих ибратларга бой бўлиб, Оллоҳ таолонинг халқлар устида жорий қилган ўзгармас қонунларини ўрганишда муҳим аҳамиятга эгадир. Ислом олами ўз тарихида кечирган энг аянчли ва мусибатли кунлари, айтишга тил, ёзишга қалам ожиз бўлган, юракларни тилка-пора қилган аччиқ ҳақиқат, уммат бағрида ўчмас из қолдирган ва то қиёматга қадар дарс бўлиб қолган тарихий воқеа — бу «Ислом оламига мўғул

¹ Оли Имрон: 102.

² Нисо: 1.

³ Ахзоб: 70 – 71.

босқини»дир. Ислом уммати тарихда кўп ҳодисаларга гувоҳ бўлди, унинг энг аянчлиларидан бири мўғулларнинг Ислом умматига бало бўлиб ёпирилиши, Ислом диёрларини вайрон қилишидир.

Ушбу китоб Мўғул давлатининг пайдо бўлишидан то ағдарилгунига қадар бўлган тарих босқичларини ўз ичига олади. Бу даврда мўғулларнинг Оламда яққа ҳоким куч бўлиши, Ислом умматининг мағлубият сабаблари, мусулмонлар орасида илдиз отган иллатлар, Аббосийлар хилофатининг ағдалириш, сўнгра мусулмонларнинг яна оёққа туриш босқичлари ва нусрат сабаблари баҳоли кудрат ёритилди.

Китоб қуйидаги тўрт бўлим ҳолида битилди:

Биринчи бўлимда «*Чингизхон даври ва Хоразмшоҳларнинг аянчли хотимаси*» ҳақида қалам сурдик. Бу бўлим мўғулларнинг тарих саҳнасига чиқиши, қайси миллатга мансубликлари ва қаерда истиқомат қилиб, қандай қонунларга амал қилишлари, уларнинг ўзларига хос белгилари, Мўғул давлати пайдо бўлган даврда дунёдаги ҳукмрон давлатлар: мусулмонлар ва насронийларнинг аҳволи; Ўтрор фожиаси, биринчи мўғул босқини: Қозоғистон, Бухоро, Самарқанд, Фарғона, Термиз, Хоразм, Форс, Хуросон, Афғонистон, Эрон, Арманистон, Гуржистон, Доғистон, Чеченистон, Дашти Қипчоқ минтақалари истилосини, умумий олганда, мусулмонларнинг енгилиш сабаблари, хос сўз юритганда, Хоразмшоҳлар сулоласининг ағдалириши каби ҳодисаларни ўз ичига олади.

Иккинчи бўлим «*Ўқтой даври ва Ғарб истилоси*» деб номланиб, ҳижрий 628 йил ҳодисаларидан бошланади ва Жалолиддиннинг фожиали якуни, унинг ўлиmidан сўнг Эрон ва Озарбайжон минтақалари истилоси; Ботухон бошчилигида Ғарбга мўғул босқини каби мавзулар зикр қилинди.

Учинчи бўлимда «*Ҳулагу даври*»га кенг жой бердик. Унда Мангухон ҳоконлиги, учинчи мўғул босқини; Ҳулағунинг Аббосийлар хилофатини ағдалириш йўлида олиб борган тадбирлари; Исмоилийя тоифасининг яқсон қилиниши; Бағдод қамали, унга ўт қўйилиши; Аббосийлар хилофатига яқун ясалиши ва Аббосийларнинг охириги халифаси Мустаъсим Биллаҳнинг ўлдирилиши; Бағдод кутубхонасининг қисмати; Хилофат ағдалиришининг асорати; Шом диёри истилоси каби мавзулар ўз аксини топди.

Тўртинчи бўлим «*Айн-Жалут ғалабаси*» деб номланиб, гўё бу бўлим китобимизнинг иккинчи қисми ўлароқ гавдаланди, чунки китобни катта икки қисм кўринишида тасаввур қилишимиз мумкин:

мўғулларнинг оёққа туриб, Ислом ўлкаларини босиб олиши ва уларнинг мағлубиятга учраб, Ислом ўлкаларидан ҳайдаб чиқарилиши. Шу эътиборга кўра, бу бўлим китобимизнинг энг муҳим аҳамиятга эга бўлган бўлими ҳисобланади. Унда Айюбийлар давлатига чизгилар, Мамлуклар қиссаси, Мамлуклар давлатининг пайдо бўлиши; Еттинчи салиб юриши; Сайфиддин Қутуз даври; Мусулмонларнинг қайта оёққа туриши; Ғазо, Айн-Жалут ва Бейт-Шеан жанглари; Мўғулларнинг мағлубияти; Айн-Жалут ғалабаси самаралари; Нусрат сабаблари баҳоли қудрат баён қилинди. Сўнгра китобнинг сўнгида китоб хотимаси ва фойдаланилган манбаларга ўрин бердик.

Ушбу китобни муҳтарам китобхонга хавола қилар эканман, куйидаги жиҳатларни эслатиб ўтмоқчиман:

А) Китобни ёзишда доктор Роғиб Сиржонийнинг баҳсларидан тўлқинланган бўлсам-да, у киши келтирган маълумотлар билан кифояланиб қолмадим. Ёзган маълумотларимни бақадрихол асл манбалардан олишга ҳаракат қилдим. Жумладан, доктор Роғиб Сиржоний келтирган маълумотларни ҳам асл манбаларга солиштирдим.

Б) Тарихий саналарни имкон қадар ҳам милодий⁴, ҳам ҳижрий⁵ тақвимга кўра ёнма-ён келтиришга ҳаракат қилдим.

В) Фойдаланилган манбаларни ҳар бир саҳифанинг хошиясида келтирдим ва араб, рус, турк тилидаги манбаларни ва муаллифларини транскрипция ҳолида келтирдим.

Г) Тарихий шахслар, жўғрофик жойлар номларини баҳоли қудрат ўзбек тилида келтиришга ҳаракат қилдим. Ўзбек тилида тополмаганларимни рус тилида ёки транскрипцион вариантини хошияда кўрсатиб ўтдим.

⁴ Бизнинг эрамиз бўлиб, кўпчилик мамлакатларда йил ҳисобининг боши ва йил ҳисоби системаси сифатида қабул қилинган. Исо Масихнинг христиан мифологиясида қабул қилинган таваллуд топган кунидан бошланади. Кўёш календарига асосланган шамсий тақвимдир. «Энциклопедик луғат» (1-жилд, «милод» сўзи).

⁵ Ой календарига асосланган бўлиб, пайғамбаримиз Муҳаммад алайҳиссалоту вассаломнинг Маккадан Мадинага ҳижрат (кўчиб борган пайт)ларидан бошланади. Ҳижрий сананинг биринчи ойи муҳаррам бўлиб, мусулмон мамлакатларининг йил ҳисоби боши ва йил ҳисоби системаси ҳисобланади. Бу тақвим милодий 638 йил иккинчи халифа Умар разияллоху анху томонидан жорий қилинган. Ҳижрий тақвимнинг биринчи куни милодий, яъни Григорян тақвими ҳисобида 622 йил 16 июлга тўғри келади. 12 қамарий ой 1 кун фарқ қилиши эҳтимоли билан тахминан 354 кунни ташкил қилиб, милодий, яъни шамсий санадан 11 кунга фарқ қилади. «Энциклопедик луғат» (2-жилд, «ҳижрия» сўзи).

Д) Араб тилидаги диалог кўринишида келган ёки шахслар томонидан айтилган жумлаларни эркин таржима қилар эканман, баъзи ўринларни бадиёлаштирдим.

Асарни ёзар эканман, асосий мақсадим Оллоҳнинг ризосига ноил бўлишдан сўнгра, миллатимизга тарих сабоқларидан хулоса қилишларида ўз ҳиссамни қўшиш бўлди. Ўқувчига тавсиям шуки, китобни тарихий тафсилотларни ўрганишдан кўра, кўпроқ ундаги ходисалардан хулоса чиқариш мақсадида мутолаа қилсин. Чунки тарихий тафсилотларни баён қилиш учун арзимаган сатрлар эмас, дунёнинг ўнларча кутубхоналарида ўқувчи ва тадқиқодчиларини кутиб, чанг босиб ётган мингларча китоблар лойиқдир.

Ушбу китобни тамомига етказишимга муваффақ қилган Оллоҳга чексиз ҳамду санолар бўлсин! Бу китобни уммат манфаатига хизмат қиладиган китоблар сирасидан қилишини илтижо қилиб қоламан. Бу китобни ёзишимда ўзларининг қимматли маслаҳатлари, кўрсатмалари, ёрдамлари билан кўмак берган устоз ва биродарларимга ўз миннаддорчилигимни билдираман.

«Парвардигорим, мени Сен менга ва ота-онамга инъом этган неъматингга шукр қилишга ва Ўзинг рози бўладиган яхши амалларнигина қилишга муваффақ этгин ва мени ҳам Ўз фазлу раҳматинг билан солиҳ бандаларинг қаторига киритгин».

«Парвардигоро, ҳисоб-китоб қилинадиган (қиёмат) куни мени, ота-онамни ва барча мўминларни мағфират қилгин».

«Парвардигоро, Ўзинг бизларни ва бизлардан илгари иймон билан ўтган зотларни мағфират қилгин ва қалбларимизда иймон келтирган зотлар учун бирон ғилли-ғаш қилмагин. Парвардигоро, албатта, Сен меҳрибон ва раҳмлидирсан».

Фойдаланилган манбалар

Китобни ёзишда ушбу мавзу ҳақида сўз юритган умумий ва хос китобларни Оллоҳ қодир қилганича ўқиб-ўрганиб, сўнгра ўзбек тилида баён қилишга ҳаракат қилдик. Бу китобни ёзишда муосир олим, доктор Роғиб Сиржонийнинг «*Қиссатут-татар минал бидаяти ила айн-жалут*» асари услубидан фойдаландик. Шунингдек, асос сифатида мўғуллар асрига замондош ҳамда ҳозирги замонимизнинг тарихшунос олимлари қаламига мансуб бир неча мўътабар тарих китобларидан кенг кўламда фойдаландик. Бу китобларни мўғуллар тарих саҳнасига чиққан даврга нисбатан уч гуруҳга ажратишимиз мумкин:

1. Мўғуллар даврида битилган тарих китоблари.
2. Мўғуллар даврига яқин замонда битилган китоблар.
3. Ҳозирги кунимизда мўғуллар тарихини баён қилган китоблар.

◆ Мўғуллар даврида ёзилган тарих китоблари қуйидалардир:

1. Аллома Иззуддин Абул Ҳасан Али ибн Муҳаммад Жазарий Ибнул Асир (630/1232) қаламига мансуб, тарих шодасида маржон бўлган «*ал-Камил фит-тарих*» асари. Бу китоб Ироқнинг Мосул шаҳрида ёзилган бўлиб, умумий тарих китобидир. Ибнул Асир, Чингизхон даврида яшагани учун ўша давр мўғул истилоси ҳақида эшитган ривоятлари ва кўзлари билан кўрганлари асосида воқеаларни ғоят гўзал ва жонли суратда қаламга олган. У 12 томли «*ал-Камил фит-тарих*» китобининг охириги томини, янада аниқроқ айтганда 12-томининг иккинчи яримини тўлиқ мўғуллар тарихига бағишлаган десак янглиш бўлмайди. Ибнул Асир 628/1230 сана воқеалари билан ушбу асарига якун ясаган, шунинг учун унинг бу асаридан ўша давргача бўлган тарихни, яъни Чингизхон даври мўғул истилоси ҳодисаларини баён қилишда фойдаландик.

2. Шиҳобуддин Муҳаммад ибн Аҳмад Насавийнинг (1193–1249)⁶ «*Сийратус-султон Жалолиддин Мангуберди*» номли асари. Насавий 1233 йилдан эътиборан Хоразмшоҳ Жалолиддиннинг хизматига киради. Ҳар доим Жалолиддиннинг ёнида бўлгани ва Хоразм давлатининг мансабдор шахслари орасида юргани учун мамлакатнинг ички ва ташқи ишларини, ўша даврдаги ҳодисаларни кенг ёритган.

⁶ «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («Н» ҳарфи бўлими).

589/1193 йилда таваллуд топган тарихчимиз ушбу китобини 1241 йилда тамомланган, лекин китоб султон Жалолиддиннинг фожиали ўлимини баён қилиш билан якунланган. Шу эътибордан Хоразмшоҳлар ва мўғул босқини тарихининг Жалолиддиннинг ўлимига доғури бўлган қисмини ёзишда ундан истифода этдик. Биз бу китобнинг Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий таҳқиқи бўлган арабча нусхасидан фойдаландик.

Биз фойдаланган бу икки китобдан ташқари мўғуллар замонида улар ҳақида битилган бошқа манбалар ҳам бор. Бу манбалар жумласига муаллифи номаълум бўлган, мўғул тилида ёзилиб, бир қанча тилларга таржима қилинган «*Мўғулларнинг сирли тарихи*»⁷ номли 12 бўлимдан иборат тарихий асар, Жузжонийнинг (660/1261) «*Табақоти Носирий*»си, Жувайнийнинг (681/1283) «*Тарихи Жаҳонғўша*»сини ўрнак қилиб келтиришимиз мумкин.

◆ **Энди мўғуллар даврига яқин замонда ёзилган манбаларга келсак, қуйидагиларни айтишимиз мумкин:**

1. Имодуддин Абул Фадо Исмоил ибн Умар Қураший Дамашкий Ҳофиз Ибн Касир (774/1373) қаламига мансуб, тарих китоблари ичида етакчи ўринни тутган ва асосий манбалар жумласидан саналган машхур «*ал-Бидаяту ван-ниҳоя*» асари. Биз бу китобнинг 20 томли Абдуллох Абдулмуҳсин ат-Туркий таҳқиқидан фойдаландик.

Ибн Касир раҳимахуллох ушбу китобида арш, курси, осмонлар-урнинг яратилишини, пайғамбарлар қиссасини охириги пайғамбар саййидимиз Муҳаммад алайҳиссалоту вассалом қиссаларигача, сўнгра ундан кейин ўзи яшаган давр, яъни VIII асрнинг иккинчи ярмигача бўлган ҳодисаларни зикр қилган.

Биз бу мўътабар китобдан китобимизнинг барча бобларида унумли фойдаландик.

2. Муаррих Абул Хайр Рашидуддин Фазлуллох ибн Имодуд-давла Ҳамадоний (717/1318) қаламига мансуб, мўғуллар тарихига оид китоблар орасида муҳим манбалардан саналган, форс тилида ёзилган китоблар орасида тенгсиз «*Жомеъут-таворих*» асари.

Олим, табиб, вазир, тарихчи Рашидуддин «*Жомеъут-таворих*» китобини Илхонлилар давлати ҳукмдори Ғазанхоннинг истаги билан ёзишни бошлаган. Китоб бир неча тилларга, жумладан, араб ва рус тилларига ҳам таржима қилинган.

⁷ Рус тилига С. А. Козин таржима қилган «Сокровенное сказание», турк тилига Аҳмад Демир таржима қилган «Мўғулларин гизли тарихи».

Бу китобнинг «*Сборник летописей*» деб номланган форсчадан рус тилига Л. А. Хетагурова томонидан таржима қилиниб, 1955 йил Ленинградда чоп этилган нусхасини арабча таржимасига солиштирган ҳолатда фойдаландик.

3. Муаррих Такиюддин Абул Аббос Аҳмад ибн Али ал-Мақризий (845/1442) қаламига мансуб, Мисрда салтанат сурган Айюбийлар ва Мамлуклар тарихи ҳақидаги маълумотлар девони бўлган «*ас-Сулук лимаърифати дувал ал-мулук*» асари. Бу китоб ҳижрий 568 йилдан 844 санагача тарихий ҳодисаларни баён қилади.

Бу асар тўрт томдан иборат бўлиб, биз китобимизнинг охириги бўлими — Айюбийлар ва Мамлуклар тарихи, Айн-Жалут жанги ҳодисаларини ёзишда унинг биринчи тоmidан кенг фойдаландик.

◆ **Биз фойдаланган ҳозирги кунимизда таълиф этилган манбалар қуйидагилар:**

1. Доктор Роғиб Ҳанафий Роғиб Сиржоний (1964 йил таваллуд топган) қаламига мансуб «*Қиссатут-татар минал-бидая ила айн-жалут*» китоби.

Биз услуби ва баҳсларидан кенг фойдаланган ушбу китоб, 2006 йил биринчи нашрдан чиққандир. Унда мўғуллар тарихи мухтасар ва баҳс услубида, тарих билан ҳозирги кунимизни таққослаб, ибрат олиш, хулоса чиқаришга тарғиб услубида битилгандир.

2. Доктор Али Муҳаммад Муҳаммад Саллабий (1963 йилда таваллуд топган) қаламига мансуб, мўғулларнинг келиб чиқишидан то мўғул давлатининг ағдарилгунича содир бўлган ҳодисаларни батафсил ёритиб берган «*ал-Мўғул байнал-интишор вал-инкисор*» китоби.

3. Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий қаламига мансуб «*ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул*» китоби. Бу китоб Хоразмшоҳлар тарихидан баҳс юритади. Шунинг учун Хоразмшоҳлар даврини ёритишда ундан кенг фойдаландик.

4. Доктор Абдуллоҳ ибн Саид Муҳаммад Ғомидийнинг (1957 йил туғилган) докторлик илмий иши асосида битилган, Мамлуклар давлати, уларнинг мўғуллар ва салибчиларга қарши олиб борган сиёсати ҳақида батафсил маълумот берувчи «*Жиҳадул-мамолийк зид ал-мўғул вас-салибийин*» китоби.

Бу манбадан китобимизнинг Ҳулагу даври ва Айн-Жалут жанглари бўлимида унумли фойдаландик.

5. Доктор Аҳмад Ўздемир (1961 йил туғилган) қаламига мансуб, докторлик илмий иши асосида ёзилган, Чингизхон ва Ҳулагу даврларини ўз ичига олган илмий китоб «*Мўғул истилоси ве Аббасий девлетинин йиқилиши*» китоби.

Тарихий саналар ва аскарлар сонини ушбу китобга солиштирдик. Чунки бу китоб, илмий тадқиқот асари бўлгани учун саналарга, воқеаларнинг ҳақиқатига, мўғуллар тарихига оид барча тарихий манбаларни тадқиқ қилиб, бир-биридан фарқлари ва ўхшашликларини, ҳақиқатга яқин ёки узоқлигини баҳс қилган. Муаллиф нафақат мусулмон тарихчиларнинг, балки мўғуллар тарихига оид мўғул, инглиз, рус тарихшуносларининг китобларини ўрганиб, мўътадил хулоса чиқаришга ҳаракат қилган.

5. Доктор Али Муҳаммад Саллабий қаламига мансуб «*Султон Музаффар Сайфиддин Қутуз ва маъракату айн-жалут*» китоби ва бошқа манбалардан фойдаландик.

Юқорида зикри ўтган манбалардан ташқари яна қайси китоблардан фойдаланганимизни ва бу китобларнинг қайси нашрини қўлланганимизни китобнинг сўнггида қайд этдик...

**БИРИНЧИ БЎЛИМ: ЧИНГИЗХОН
ДАВРИ ВА ХОРАЗМШОҲЛАРНИНГ
АЯНЧЛИ ХОТИМАСИ**

ТАРИХНИ ЎРГАНИШНИНГ АҲАМИЯТИ

Оллоҳ таолонинг Ер юзида ўзгармас қонунларни жорий қилгани инсонларга бўлган раҳматидандир. Мана шу қонунлар сабабидан инсонларнинг ҳаёти давом этиб, сақланиб келади ва халқлар ҳаёт мобайнида шу қонунларга таянади. Агар ҳар бир замон ва маконда ўзига хос қонунлар бўлмаганида, инсонлар ҳаёти мураккаблашиб кетган ва барча ҳосил бўлган тажрибалар йўқолган бўлар эди. Лекин Оллоҳнинг фазлу марҳамати билан ҳосил бўлган тажрибалар йўқолмайди. Ҳаётимизда кеча содир бўлган ҳодиса бугун такрорланади, бугун содир бўлгани эса эртага қайтарилади ва мана шундай қиёматгача давом этади. Шу ўринда, Ислом тарихи ва ундан бошқа тарихларни ўрганишнинг аҳамиятини англашимиз мумкин бўлади. Содир бўлган воқеа ва ҳодисалар доим такрорланиши билан бирга, бир-бирига айнан ўхшаш суратда юзага келади. Зотан, Ер куррасида янги содир бўлган нарсанинг ўзи йўқ. Тарихни ўрганар эканмиз, олдин бўлиб ўтган бирон ҳодисанинг ҳозирги кунимиздаги ҳодиса билан бир хиллигини билсак, биз унинг оқибати нима билан яқун топишини осонгина хулоса қилишимиз мумкин бўлади. Агар бу ҳодиса ғалаба ва муваффақият билан тугаган бўлса, биз ҳам шу йўлдан давом этиб, нусратга эришимиз, аксинча, мағлубият ва муваффақиятсизлик билан яқун топган бўлса, ўтганларнинг хатосини такрорламаслик учун бу йўлдан узок бўлмоғимиз лозим бўлади. Шу тариқа тарихни ўрганиш уни тартибга солади ва тирилтиради. Тарихни шунчаки овуниш учун ёки олийгоҳлардагина ўрганиш ярамайди, балки воқеликда ибрат олиш учун ўрганишимиз лозим бўлади. Бу борада тарихни ўрганиш аниқ мақсадга қаратилган бўлиб, бу мақсад ундаги ибратни баҳс этишдан иборатдир. Оллоҳ таоло китобида шундай марҳамат қилади: **«Дарҳақиқат, уларнинг қиссаларида ақл эгалари учун ибрат бордир»**.⁸

Оллоҳ таоло Қуръоннинг учдан бир қисмини қиссалардан иборат қилдики, бу билан мусулмонлар ўтган умматлар мисолида Оллоҳнинг қонунларини ўрганишлари ва бу қонунларнинг собит, барқарор эканини билишлари, бу каби воқеалар содир бўлишидан олдин унга тайёргарлик кўра билишлари ва ундан фойда олишлари учундир. Бунга ҳар бир қиссани чуқур ўрганиб, атрофлича тафаккур қилганимиздагина

⁸ Юсуф: 111.

эришамиз. Асосий кўзланган мақсад ҳам шудир: «Улар тафаккур қилсинлар учун бу қиссаларни сўйланг».⁹

Мўғул ҳодисаси ва ҳозирги кунимиз

Ҳижрий VII аср, милодий сана ҳисобида XII асрда нафақат мусулмонлар тарихида, балки Ер қурраси тарихида ўта муҳим ҳодисалар рўй берди. Яъни, Ер юзида янги, даҳшатли ва мудҳиш бир куч юзага келди ва бу куч таъсирида умумий тарзда дунёда ва алалхусус Ислом минтақаларида катта ўзгаришлар содир бўлди, бу куч — «Мўғул давлати»нинг кучи эди. Мўғуллар қиссаси барча ўлчовларда ҳайратомуздир. Қиссада оз сонли мўғул халқининг заиф ҳолатдан кучли ва кучлидан заиф ҳолатга ўтишига қисқа вақт кетгани, бунинг барчаси хаёл, бўлиши мумкин эмас, дейишингизга сабаб бўлиши мумкин. Оллоҳ таоло бир халқни азиз ва қудратли қилса, бошқасини хор қилади. Тарихда инсонлар ва тарих назарида жуда оз саналган халқлар яшаб ўтганки, биринчи гал Оллоҳ таоло уларни хор қилган бўлса, бошқа сафар азиз ва қудратли қилди. Мана шундай, Оллоҳ таоло хоҳлаганини азиз ва хоҳлаганини хор қилади. Мулк ёлғиз Унинг қўлидадир. Албатта, У барча нарсага қодир Зотдир. Бироқ, буларнинг бари Оллоҳнинг Ер юзига ва халқларига қўйган суннат-қонунлари асосида, инсонларнинг қилмишларига яраша бўлади, Оллоҳ ҳеч бир жонга зулм қилмайди.

Қиссадаги воқеалар, ундаги кўрсаткичлар, қатл қилинган қурбонлар, аскарлар ва хиёнатларнинг сони жуда ҳайратланарлидир. Қиссанинг яна ажабланарли жой шуки, ундаги воқеа ва ҳодисалар бугунги кунимизда содир бўлаётган воқеа ва ҳодисаларга айнан ўхшаб кетишидир. Гўёки Оллоҳ таоло бизга Ўзининг Ер юзида жорий қилган қонунларининг собитлиги ва тарихнинг такрорланишидаги ҳақиқатни баён қилишни хоҳлагандек!

Тарихдан баҳс юритар эканмиз, мозийдаги бир қанча ҳодисаларнинг ҳозирда уммат дуч келаётган ҳодисаларга ўхшашлигини топамиз. Буни биз «Мўғуллар қиссаси»нинг мисолида кўришимиз мумкин. Ҳозирги кунимизда ҳам уммат учун ўта муҳим бўлган ҳодисалар «Мўғуллар қиссаси» юз берган айни минтақаларда ва айни шаклда содир бўлмоқда. Оллоҳ таоло ҳижрий VII аср, яъни милодий XIII асрда уммат ўз бошидан кечирган воқеа ва ҳодисаларни бугун — ҳижрий XV аср, яъни милодий XXI асрда дуч келаётган воқеалар мисолида айнан такрорлади. Орадан 8 аср ўтса ҳам, ҳодисалар деярли бир хил. Бугун ўша ҳодисалар

⁹ Аъроф: 176.

Афғонистон, Ўзбекистон, Ироқ, Фаластин, Эрон, Сурия ва бошқа Ислом диёрларида такрорланмоқда...

Мўғуллар ҳодисасини ўрганувчи киши ҳозирги кун билан тарих орасини боғлай олади ва шунингдек, Оллоҳ азза ва жалланинг халқлар устида ва Ер юзида жорий қилган қонунларини фаҳмлай олади. Бу рисоламизда ҳар бир воқеага атрофлича, батафсил киришни мақсад қилмадик. Негаки, агар ҳар бир воқеани батафсил баён қилсак, ҳикоямиз жуда чўзилиб кетиши эътибори билан воқеалардаги ибрат ўринларини ва уларнинг замонамизда содир бўлаётган ҳодисаларга ўхшаш жиҳатларидан баҳс қиламиз, қисқача мағлубият ва ғалаба сабабларини таҳлил қиламиз, иншаоллоҳ. Янада кенгроқ маълумот олишни истаганлар исломий кутубхоналарга мурожаат қилишлари мумкин. Оллоҳ субҳонаҳу ва таолодан тавфиқ сўраймиз ва бу ажиб қиссадаги ҳар бир калима ва ҳарфларидан барчамизни фойдалантиришини илтижо қилиб қиламиз...

МЎҒУЛЛАР ТАРИХ САҲНАСИГА ЧИҚҚАНДА ДУНЁДАГИ АҲВОЛ

Мўғуллар ҳижрий VII асрнинг бошларида кучайиб, оёққа тура бошлади. Буни фаҳмлаш учун ўша замонда Ер юзида ўз таъсирини ўтказа оладиган қандай кучлар борлигига назар солишимиз керак бўлади. Ўша замонда Ер куррасида иккита асосий ва хукмрон кучлар бор эди. Уларнинг биринчиси Ислом уммати бўлса, иккинчиси салибчилар эди.

Мўғуллар дунё саҳнасига чиққанда Ислом уммати

Ўша вақтда Ислом умматининг худуди тақрибан дунёнинг ярмига тенг келар эди. Ислом мамлакатларининг чегараси шарқдан Хитойдан бошланиб, Осиёни ўз ичига олган, Африканинг бир қанча ўлкаларигача, ғарбдан Андалус ва Овропагача етган эди. Ҳудуд ниҳоят катта, лекин афсуслар бўлсинки, ўша даврда Ислом оламининг аҳволи майдонининг кенглиги, аҳолисининг кўплиги, молиявий, қурул-аслаҳа, илм-маърифат жиҳатдан бўлган имкониятлари кенг бўлишига қарамай ўта аянчли бир ҳолатда эди. Чунки Ислом уммати ичида авжига чиққан фитналар, бўлинишлар юзага келган, катта Ислом шаҳарларининг сиёсий аҳволи кескин ёмонлашган эди. Ажабланарлиси, ҳижрий VI асрнинг охирларида қувватли, ғолиб, бир бутун ва бош бўлган Ислом уммати аризмаган 20–30 йил ичида мана шундай ачинарли ҳолатга тушди.

Оллоҳ таолонинг қонуни жорий бўлувчидир: **«Бу кунларни (яъни, ғалаба ва мағлубият кунларини) одамлар орасида айлантириб тураминиз»¹⁰**.

✍ Ўша пайтда Ислом олами бир неча бўлақларга бўлиниб кетган бўлиб, улар орасида биринчиси ва энг каттаси Аббосийлар хилофати эди, лекин минг афсуслар бўлсинки, ҳижрий VII асрнинг бошларига келиб, жуда заиф ҳолатга тушди. Аббосийлар хилофати анчагина қадимги халифалик бўлиб, 132/750 йилда Умавийлар давлати ағдарилгандан кейин хилофатни қўлга олган, ҳижрий VII аср, яъни милодий XIII аср бошларида тақрибан 500 йиллик умри бўлган ва Бағдодни ўзига пойтахт қилиб олган халифалик эди. Сўнгра ҳижрий VII аср бошларида Аббосийлар хилофати анча заифлашди, ҳатто ҳақиқий

¹⁰ Оли Имрон: 140.

суратда ҳукмронлик қила олмай қолди, фақатгина Ироқнинг маркази ва атрофигагина ҳукми ўтарди. Ироқнинг атрофида мустақиллигини эълон қилмаса-да, воқелиқда халифалиқдан мустақил бўлиб олган ўнлаб амрликлар бор эди. Ўша замонда Аббосийлар хилофатининг фақат номи қолган бўлиб, ҳозирги кундаги Британия қироллиги каби Аббосийлар хилофатининг ҳам фақат тарихий рамзигина қолган эди. Ироқда Аббосийлар хилофатида Бани Аббосдан бўлган халифалар бирин-кетин алмашиб, халифа деган маҳобатли исмга эга бўлиб келар, лекин ўша пайтлар, хоҳласалар ҳам, бу буюк исмга ҳечам лойиқ эмасдилар. Чунки уларнинг бутун дарди хаёллари дунё тўплаш, ўзларининг чегараланган ҳудудларида султонликларини мустаҳкамлашдан иборат эди. Улар ўзларининг вазифаларига ҳоким сифатида соғлом назар билан қарамадилар. Ҳокимнинг масъулиятларидан бўлган давлатнинг тинчлик ва омонлигини сақлаш, аскарларини қувватлантириш, халқнинг маиший ҳаётини яхшилаш, мазлумларга ҳақларини бериб, золимлардан ўч олиш, Оллоҳнинг бандалари зиммасидаги ҳукмини қоим қилиш, маъруфга буюриб, мункардан қайтариш, Исломга тааллуқли бўлган барча кадриятларни ҳимоя қилиш, қалблар ва сафларни бирлаштиришни хаёлларига ҳам келтирмадилар. Бутун хоҳишлари мумкин қадар узокроқ вақт халифа бўлиб турса, бас, ундан сўнг тахтни фарзандларига мерос қилиб қолдирса...

Шунингдек, улар мол-дунё жамғаришга, тонггача чўзиладиган базму жамшид, тантаналар қилишга, куй, мусиқа, чолғу асбобларини тинглашга ҳирс қўйган эдилар. Ўша кундаги ҳокимларнинг аҳволи, Ислом умматининг ҳокимига ярашадиган ҳаёт у ёқда турсин, авомдан бўлган оддий мусулмонларнинг соғлом ҳаёт тарзига ҳам тўғри келмасди. Халифанинг на ҳайбати ва на иззати қолганди...

Бу ҳижрий VII аср, яъни милодий XIII аср бошларидаги Аббосийлар хилофатининг аҳволи эди.

✍ Ислом оламидаги иккинчи бўлакни Миср, Шом, Ҳижоз ва Яман деб тасаввур қилиш мумкин. Бу иқлимлар ҳижрий VII аср бошларида Салоҳиддин Айюбийнинг неваралари бўлмиш Айюбийлар қўл остида эди. Бу давлатлар «Ҳиттийн» ва «Ал-арок» жангларида салибчилар устидан ғалаба қозонганда янада қуввати ва ҳайбати ортган эди. Лекин минг афсус, бу минтақадаги ҳокимлар бу буюк инсон каби бўлолмадилар, тахт талашишди ва бир бутун Айюбийлар давлатини кичик амирликларга бўлиб олишди. Шом Мисрдан, Ҳижоз Ямандан ажралди, мустақил бўлди. Ҳатто Шомнинг ўзи бир неча амирликларга

бўлиниб кетди. Ҳимс Ҳалаб ва Дамашқдан, Фаластин Урдундан ¹¹ ажралиб чиқди. Салоҳиддин Айюбий раҳимахуллох солибчилар қўлидан оғир машаққат, қаттиқ жанг-жадаллар ва кўп қурбонлар бериши эвазига озод қилган бу ерлар, мусулмонлар ўртасидаги бундай хунук тафриқаланишдан кейин яна янгидан солибчилар қўлига ўтди. Ва лаа хавла валаа қуввата иллаа биллаҳил алийийил азийм.

✍ Ислом оламидаги учинчи бўлак Мағриб ва Андалус¹² ўлкаларидир. Бу ўлкалар ўша вақтларда Муваҳхидлар давлати қўл остида бўлиб, жуда кучли ва қудратли давлат эди. Шарқдан Ливиядан бошланиб, ғарбдан Мағрибгача, шимолдан Андалусдан бошланиб, жанубдан Африканинг ўртасигача ҳукм юргизар эди. Бироқ ҳижрий VII аср бошларига келиб, секин-аста кучсизланиб, сўна бошлади. 609/1212 йилда бўлиб ўтган «ал-Иқоб» жанги муваҳхидлар давлатига ҳал қилувчи зарбани берди, натижада бу улкан давлат қулади ва Андалус, Африка ва Мағрибга бўлиниб кетди.

✍ Ислом оламидаги тўртинчи бўлак, бошқа давлатларга нисбатан жуда катта бўлиб, тақрибан Ислом оламининг бутун шарқий қисмига ҳукмронлик қилган Хоразм давлати эди. Хоразм давлатининг майдони бепоён бўлиб, Ўрта Осиёнинг катта ўлкаларини ўз ичига олган эди. Унинг ҳудуди шарқдан Хитойнинг ғарбидан бошланиб, ғарбдан Эроннинг катта қисмларигача давом этган эди. Хоразм давлати Аббосийлар хилофати билан узоқ ва чуқур келишмовчиликларга борган, улар ўртасида беҳисоб фитна ва иғволар юзага келган эди. Бундан ташқари, улар Аббосийлар хилофати, Салжуқийлар, Ғурийлар, Турклар ва бошқа мусулмонлар билан мунтазам жанглар олиб борар эдилар. Хоразм давлатининг нафақат атрофидагилар билан, ҳатто ўзининг ичидагилар билан ҳам муаммоси етарли эди. Буларнинг тафсилотига ўз ўрнида яна тўхталамиз, иншаоллох...

✍ Ислом оламидаги бешинчи бўлак Ҳиндистон давлати эди. Ҳиндистон ҳозирда ҳиндуслар ҳукмида бўлса-да, қадимда мусулмонлар ҳукмида эди. У ерда узун асрлар давомида Ислом ҳукм сурди, ўша пайтда мусулмон Ғурийлар давлати қўл остида эди. Улар Хоразм давлати билан мунтазам жанг қилиб турарди. Бу минтақа ҳақиқатан жуда беқарор ва бетартиб минтақа эди.

✍ Ислом оламидаги олтинчи бўлак, Форс минтақасининг ғарбий қисми, Осиёнинг ўртасида жойлашган кенг минтақа, ҳозирги кундаги Эрон бўлиб, Аббосийлар хилофатига ёнма-ён жойлашган эди. У шиа

¹¹ Иордан.

¹² Ҳозирги кунда Испания ва Португалия давлатларини ўз ичига олган яриморол.

тоифасининг энг хабисларидан бўлган Исмоилийя тоифасининг кўл остида эди. Бу тоифа ақидада жуда кўп ихтилофларга борганидан, кўпчилик уламолар уларни Исломи миллатидан тамоман чиқанига ҳукм қилишган. Улар динни фалсафага аралаштириб юборган, асли мажусийларнинг авлодлари бўлган, зоҳирида Исломни даъво қилиб, ботини мажусий бўлган, Қуръон оятларини нафс-хаволарига биноан таъвил қиладиган, Исломдаги кўпгина фарзларни ҳамда Пайғамбар соллаллоҳу алайҳи ва саллам ва шариатни инкор қиладиган тоифадир. Улар салтанат ва мулк ортидан қувганлари сабаб, асосий эътиборларини курол-аслаҳа, қалъа ва қўрғонлар бино қилишга ҳамда ҳарбий ишларига қаратган эдилар. Улар энг хатарли ботиний тоифалар жумласидан ҳисобланади. Улар исломий шахсиятлар бўлмиш халифалар, амирлар ва уламоларга жиноят ва тажовузлар содир этишар эди. Бу тоифа Ироқнинг шарқий қисми ва Хоразм давлатининг ғарбий қисмида жойлашган бўлиб, бу икки давлатдан батамом мустақил эди.

✍ Ислом оламидаги еттинчи бўлак Анадоли минтақаси бўлиб, ҳозирги Туркиядир. Бу минтақада Салжуқийлар ҳукмрон эди. Уларнинг асли турклар бўлиб, мозийда буюк тарих ва катта жанглар соҳибларидир. Алп Арслон раҳимаҳуллоҳ қўмондон бўлган даврларда анча қувватли бўлган. Бу минтақа Византия императорлиги билан ёнма-ён жойлашгани сабаб жуда хатарли ва жуда таъсирчан бўлиб, Алп Арслоннинг неваралари ҳукм юргизган даврга келиб ўта заиф ва хор ҳолатга тушганди.

Юқорида санаб ўтилган давлатларнинг ўша вақтда мавжудлиги Ислом олами Аббосийлар хилофати ҳукмига исмдагина кирганини англатади. Мулоҳаза қилсак, ўша замонда мусулмонлар ўртасида фитна-фасод жуда кенг тарқалган, жангу жадал авжига чиққан, гуноҳ ва маъсиятлар кўпайган ва мусулмонлар дунёга шўнғиган эдилар. Инсонларнинг қалбларига кабира гуноҳлар ўрнашиб кетган, ҳатто «фалончи пистончига зулм қилибди, фалончи пистончини ўлдирибди, фалончи пистончини конини тўкибди» каби гап-сўзлар ҳар томонда кулоққа чалиниб турарди, инсонларнинг қадр-қиймати қолмаган эди. Ким ёки қайси қавм шу ҳолатга тушар экан, бу ҳолат алмаштирилиши, ўзгартирилиши аниқ ва турган гапдир. Ислом олами бу шаҳарлардаги анави заиф кимсалар устига бир фожиа келишини кутарди, ҳатто улардан кейин бошқа мусулмон авлодлар келиб, Оллоҳнинг изни билан бу ҳолатни ўзгартириб, Исломга ҳайбатни, хилофатга қувват ва ютуқни қайтаришини кутарди.

Бу ўша даврда Ер қуррасидаги биринчи куч, Ислом умматининг кучи эди. Лекин афсуслар бўлсинки, узун тарих давомида Ислом уммати

эга бўлиб келган бу куч, ўша даврга келиб емирилиш, парчаланиш ва тарқалишга юз тутган эди.

Мўғуллар дунё сахнасига чиққанида салибчилар

Ўша вақтда Ер юзидаги иккинчи куч соҳиби салибчилар эди. Шу пайтлар уларнинг маркази ғарбий Овропа бўлиб, у ерларда уларнинг кўплаб қалъа ва қўрғонлари бор эди. Ўша даврда ғарблик салибчилар мусулмонлар билан тинимсиз жанглар олиб боришарди. Англия, Франция, Олмония ва Италия насронийлари Миср ва Шомга қарши машҳур салиб юришини қилар, Испания, Португалия ва Франция насронийлари Андалусдаги мусулмонларга қарши кўплаб жанглар уюштиришар эди.

Булардан ташқари шарқда илдиз отган салибчи гуруҳлар мавжуд эди. Уларнинг Ислом умматига нисбатан чексиз адоватлари бор эди. Улар билан мусулмонлар орасида жанглар ҳеч тўхтамасди. Шарқий Рум давлати, бошқача қилиб айтганда, Византия¹³ давлати бу салибчи гуруҳларининг машҳурларидан бўлиб, шарқий Овропага ҳукмрон эди. Бу давлат мусулмон Анадолунинг ғарб томонида жойлашган эди. Византия давлати Ислом давлати билан тарихлар оша аччиқ урушлар қилиб келган, лекин айни вақтда заиф ҳолатга тушгани сабаб Ислом уммати ерларига киришга тоқати йўқ эди.

Салиб гуруҳларидан яна бири Арманистон давлати бўлиб, Форснинг шимолида ва Анадолунинг шарқида жойлашган эди. Анадолу минтақасидаги Салжуқийлар билан мунтазам жанглар олиб боришарди.

Салиб гуруҳларидан яна бири Гурж мамлакати, ҳозирги Грузия давлати бўлиб, у ерда маҳаллий васанийлар, яъни бутпарастлар бўлса ҳам ҳукумат насронийлар қўлида эди. Улар Ислом уммати ва Хоразм давлатига қарши мунтазам уруш олиб борардилар.

Салибчилар ичида ўзлари оз бўлишига қарамасдан жуда хатарли саналган гуруҳлари ҳам бор эди. Сабаби улар Ислом оламининг Туркия, Фаластин ва Шом давлатларининг ичида жойлашгани эди. Ҳижрий V аср, 491/1098 йилдан бери Ислом олами ичида бош кўтариб келаётган бу салиб амирликларининг машҳурлари Антокия, Акко, Тарабулус, Байрут, Сайда ва бошқа амирликлар эди.

Ҳижрий VI аср, яъни милодий XII асрнинг охирлари Ислом олами учун анча муваффақиятли, салибчилар учун эса, анчагина ҳалокатли ва

¹³ Ҳозирги кундаги Истанбул.

муваффақиятсиз келди. Ҳижрий VI асрнинг охирлари 583/1187 йилда Шомдаги «Ҳиттийн» жангида Салоҳиддин Айюбий салибчилар устидан ғалаба қозонди, ундан 8 йилдан кейин 591/1195 йилда «ал-Арок» жангида Муваҳҳидлар давлати бошлиғи ал-Мансур ал-Муваҳҳидий Андалус насоролари устидан ғалабага эришди. Бу икки буюк ғалабадан ҳеч қанча вақт ўтмасдан ҳижрий VII аср бошларига келиб, мусулмонлар қаттиқ заифлашди. Қувватли даври билан заифлик даври орасида атиги 20 йил фарқ бор эди, холос...

Мўғулларнинг келиб чиқиши

Ер юзидаги ўлчовни буткул ўзгартириб юборган янги, учинчи куч дунёга келди. У дунё харитасини тамоман ўзгартирди, Ер қуррасида учинчи куч деган номни, балки ҳиж-рий VII аср бошларида оламда яқка хукмрон деган номни сўзсиз қозонган бу куч, Татар ёки Мўғул давлати эди. Мўғул давлати ҳижрий VII аср бошлари 602 йил ражаб ойида/1206 йил феврал ойида ташкил топди.¹⁴ Онон дарёси бўйида ўтказилган қурултойда Чингизхон «Улуғ Хон» деб эълон қилинади ва бош шомон бутун халқ орасида Темучинга Чингизхон унвонини беради¹⁵. Чингизхон — энгилмас, қудратли, шоҳаншоҳ, паҳлавон деган маъноларга далолат қилиб, унинг асл исми Темучин¹⁶ эди. У саркарда қонхўр, золим ва қаҳри қаттиқ бўлиб, унда зўр бошқарувчилик хусусияти мавжуд эди. Дастлаб у Мўғулистонни қўлга олди, сўнг аста-секин атрофдаги ерларни ҳам эгаллаб борди. Қисқа вақт ичида мамлақати кенгайиб кетди, ҳатто унинг худуди шарқда Кореядан бошланиб, ғарбдан Хоразм давлатигача, шимолда Сибир соҳилларидан бошланиб, жанубда Хитой денгизигача етди. Оз йиллар ичида Хитойни тўлиқ эгаллади. Хитой, Мўғулистон, Веътнам, Корея, Камбоджа, Тайландни ва Сибирнинг атрофларини ўз мамлақатига қўшиб олди. Чунончи, Хитой ер майдонининг ўзгинаси тақрибан тўққиз миллион км тенг эди.

Татар ва мўғул номлари Мўғулистоннинг Гоби саҳроларида яшаган қавмларга нисбатланади¹⁷. Исломоил Холидийнинг «*Исломолами ва мўғул юриши*» номли китобида мўғул қабилалари ғарбдан Осиёнинг

¹⁴ Доктор Али Муҳаммад Саллабий «ал-Мўғул байнал-интишор вал-инкисор» (60-бет).

¹⁵ Т.Ў. Салимов, Ф.Э. Султонов «Жаҳон тарихи» (7-боб, 35-§. Мўғуллар давлати ва унинг босқини).

¹⁶ Ёки Гэмучин, Энциклопедик луғат (2-жилд, 392-бет, «Ч» харфи). Айтишларига қараганда унга бу исми отаси ўз қўли билан ўлдирган татар сардорининг исмини қўйган.

¹⁷ Саллабий «ал-Мўғул» (28-бет).

ўртасида жойлашган Сайхун ва Жайхун, ҳозирги кундаги Сирдарё ва Амударё атрофидан то шарқдан Хитой тоғлари ҳудудигача ва Осиёнинг шимоли-шарқий томонининг юқорисигача бўлган минтақаларда яшагани баён қилинади.¹⁸ Мўғуллар шу минтақадаги қабиаларнинг аслларидир. Доктор¹⁹ Роғиб Сиржоний фикрига кўра, улардан мўғул, турк, салжук ва бошқа кўп қабиалар келиб чиққан...

Чингизхон бу минтақаларни эгаллаб, у ердаги қабиаларнинг ҳаммасига мутлақ мўғул исмини берган. Доктор Али Муҳаммад Саллабий «*ал-Мўғул байнал-интишор вал-инкисор*» китобида келтиришича, машхур Овропалик тарихчи шарқшунос олимлардан руссиялик Бретшнейдер ва Бартольд, олмониялик Сюлар, англиялик Бойл ва бошқалар татар ва мўғул қабиалари номи орасида фарқ борлигини билдиришган. Мусулмон тарихчиси Рашидуддин «*Жомийут-таварих*», яъни «Тарихлар мажмуаси» номли китобида бунга ишора қилган, шунингдек, бир неча ғарб тилларига: русча, немисча, французча ва инглизчага таржима қилинган номаълум хитой тарихчиси ёзган «*Мўғуллар тарихининг сир*» китобида ҳам шу тарзда баён қилинган.²⁰

Муҳаммад Саллабий фикрига кўра, мўғул бошқа, татар бошқадир. Лекин улар орасидаги боғлиқликни топиш мумкин. Қисқача қилиб айтганда, татарлар мўғулдир, аммо мўғуллар татар эмас. Татарлар мўғуллардан келиб чиққан, лекин мўғуллар татарлардан келиб чиқмаган. Миллатнинг асллари татар эмас, мўғулдир. Чингизхон мўғулларга бошлиқ бўлган кезларда, татарлар устидан ғолиб келиб, эркаklarини кириб ташлаган, аёлларини таҳқирлаган ва болаларини қул қилган эди, шунинг учун татарларнинг мўғулларга аралашиб кетганини кўрамиз. «Салтанат мўғуллар қўлида эди, улар ўзлари учун императорлик тузди, тарихда бу императорлик татар эмас, мўғул императорлиги, деб танилди», деб ёзади доктор Али Муҳаммад Саллабий.²¹

Бу фикрни, яъни татар номининг янглишлиги, аслида мўғул эканини тарихчи Аҳмад Ўздемир ҳам «*Мўғул истилоси*» китобида қувватлаган.²²

Мўғуллар мустақил динга тобе бўлмай, бир қанча динлардан уюшган бир динга эргашар эдилар. Чингизхон ислом, оташпарастлик, бутпарастлик ва бошқа ўзига маъқул келган қонунларни бир китоб

¹⁸ Исмоил Холидий «Оламул-ислам ва ғозвул-мўғулий» (19-бет).

¹⁹ Докторлик илмий даражасидир.

²⁰ Саллабий «ал-Мўғул» (27-бет).

²¹ Саллабий «ал-Мўғул» (28-бет).

²² Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (37–38-бетлар).

шаклида йиғдириб, сўнгра уни мўғулларга дастур қилди. Бу китобнинг номи манбаларда: «Ёзик», «Йасик», «Йаса» деб келтирилади...

Ибн Касир раҳимахуллоҳ «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» китобида мўғулларнинг дастури бўлган «Йаса» китобидаги баъзи ҳукмларни Жавайнийдан шундай нақл қилади: «Зино қилган кимса, хоҳ уйланган, хоҳ уйланмаган бўлсин, ўлдирилади; ким бачабозлик қилса, сеҳр билан шуғулланса, оқмас сувга бавл қилса ёки оқмас сувга шўнғиб чўмилса, асирга таом берса ёки асирга ейдиган нарса ташласа, ўзи еб ёнидагига бермаса, ўлим жазосига тортилади. Ҳамда бировга овқат берган киши аввал ўзи еб кўрсатиши лозим».²³ Иқтибос тугади.

Мўғулларнинг ўзига хос белгилари

Мўғуллар қуйидаги ўзига хос сифатлар ажралиб турарди:

Биринчидан, даҳшатли тарзда тез тарқалиши;

Иккинчидан, кўшин сонининг жуда кўплиги, юз мингларча аскарлари бор эди;

Учинчидан, лол қолдирувчи тартиб ва интизом;

Тўртинчидан, қаттиқ ва оғир шарт-шароитларга бардошли: иссиқ, совуқ, сахро, чангалзор, тоғу тошни менсимас эдилар, ҳар қандай ҳолатда ва ҳар турли жойда ҳам жанг қилаверардилар. Зеро, улар истиқомат қилган минтақа ўта оғир табиатли бўлиб, қиш ойлари ҳаддан ташқари совуқ ва бўронли бўларди. Ёз ойларида ҳаво ҳарорати +38°С дан юқори бўлса, қишда -42°С дан паст бўлар, йил мобайнида кучли шамол эсиб турарди.²⁴

Бешинчидан, Чингизхоннинг ўзи ва унинг барча сардорлари ўзига хос, аъло даражадаги етакчилик қобилиятига эга эди;

Олтинчидан, бешафқатлиликлари. Мўғул юриши ғайритабиий суратда хонавайрон қилишдан иборат эди. Буни уларнинг тарихига шунчаки назар солган киши ҳам кўриши мумкин. Мўғуллар бостириб қирган шаҳарни хонавайрон қилибгина қолмасдан, йиртқич ҳайвонлардан ҳам даҳшатли кўринишда шаҳар ва қишлоқлардаги халқни оммавий қирғин қиларди. Улар эркагу аёлни, гўдагу ўсмирни, ёшу қарини, золиму мазлумни, жангчи-ю оддий фуқарони орасини ажратмас, ҳаммани баробар қатл қилишарди. Уларнинг мақсадлари мол-

²³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/162).

²⁴ Исмоил Холидий «Оламул-ислам ва ғозвул-мўғулий» (19-бет).

мулк ёки дунё зийнатлари эмас, гўё одамзотда ўзларидан ўзгасини тамоман йўқ қилиш пайига тушган эдилар.

Еттинчидан, ўзлариникидан ўзга ҳар қандай фикрни кескин рад қилишлари. Ажабланарлиси шуки, улар ҳар қачон бирон давлатга бостириб борсалар, у ерда динни қоим қилмоқчи, адолатни ёймоқчи ва юртни золимлардан халос қилмоқчи бўлган кишилар қиёфасини кўрсатар эдилар.

Саккизинчидан, келишув ва аҳду-паймонга мутлақо амал қилмасликлари, бирон мўмин хусусида на аҳдга ва на бурчга риоя қилар эдилар. Мўғул давлатининг қайси даври бўлмасин, бу улардан ажралмайдиган аслий сифат эди.

Самовий қонунларга ва Оллоҳнинг шариатига асосланмаган, куч-қувватга эга ва диндан бебаҳра бўлган ҳар қандай ҳарбий қўшинда бу сифатлар кўп такрорланади. Ва шундай бўлиши ҳам табиий. Уларнинг жинойтлари ва ваҳшийликлари бир-биридан фарқ қилсада, ниҳояси битта: улар мужрим, жинойтчидирлар. Муртадлар жанги, Форс, Рум жанглари, шунингдек, Шом, Миср ва Андалусдаги салибчилар жанги бунга мисол бўла олади. Сўнгра издошлари бўлмиш Испания, Португалия, Англия, Франция, Италия, Исроил ва Америка империалистлари уларнинг йўлларида юрдиладар. Уларнинг ташки кўриниши, юзлари ва рангларида фарқ бўлсада, қалблари биттадир. Қалблари нафақат мусулмонга, ҳатто ҳар бир тараққий этган ва маданиятли бўлганга нисбатан гина-қудурат, нафрат, кўролмаслик ва буғзу адоватга тўладир. Оллоҳ таоло марҳамат қиладики:

«Улар ўша (сўз)ни бир-бирларига васият қилиб қолдирганмилар? Йўқ, (зотан улар бир-бирларидан йироқ замонларда ва маконларда яшаб ўтганлари сабабли ўзаро васият қилиш имконига эга эмаслар, лекин фақат бир нарса уларнинг барчаларини юқоридаги каби сўзларни айтишга мажбур этар) — улар туғёнга тушган қавмдирлар!»²⁵

Хуллас, ҳижрий VII аср, яъни милодий XIII аср бошларида Ер қуррасида учта ҳукмрон куч юзага келди:

Биринчиси: Ислом умматининг куч-қуввати бўлиб, бу куч буюк тарих ва донги кетган ютуқ ва ғалабалар соҳиби эди, бироқ айна вақтда заифлик кунларини бошидан кечираётган эди. Бу заифлик жиддий тус олсада, умматнинг ҳайбатини тамоман йўққа чиқармаган эди. Ислом душманлари нусратнинг сабаблари ва куч-қувватнинг омиллари бу

²⁵ Зориёт: 53.

умматга хослигини яхши билишарди. Мусулмонлар эса, нусратни юзага чиқарувчи омиллардан бироз узоқлашган эдилар.

Иккинчиси: Салибчилар куч-қуввати бўлиб, улар ҳам заифлик босқичида эди. Ўша пайтлар улар Ислом умматига нисбатан илм-фан ва таракқиётда анча орқада эдилар. Шундай бўлсада, уларнинг адади ва мусулмонларга нисбатан қалбларида туйган буғзу адоватлари чексизлигидан огоҳ бўлишдан ўзга чора йўқ эди.

«Улар қўлларидан келса то динингиздан қайтаргунларича сизлар билан уришаверадилар».²⁶

Учинчиси: Мўғуллар куч-қуввати. Қадимий кучлар — Ислом уммати ва салибчилар қуввати рақобатлашиб келган майдонда учинчи, янги қувват дунёга келди, у мўғуллар қуввати эди. Бу қувват ваҳший куч бўлиб, на тарихга ва на маданиятга эга эди, у тўсатдан ўртага чиқди. Унинг бошқалардан устун бўлишига сабаб бўладиган бирор илмий, маданий ва диний асоси йўқ эди. Шунинг учун бешафқат уруш, беаёв зарбага таянишдан бошқа чораси йўқ эди.

Исломга қарши бирлик

Ер юзида турли кучлар ўртасида урушлар юзага келиши, ҳар хил гуруҳлар орасида бир-бирига босим ўтказилиши, шунингдек, диндан бебаҳра, куч-қувватга молик бўлганларнинг ўз атрофларида кучсизлар бор бўлишини ҳаргиз истамасликлари ва уларга мутлақо раҳм-шафқат қилмасликлари Оллоҳ таолонинг халқлар устида жорий қилган қонунидир. Ундан ташқари, ботилнинг бир талай кўринишлари бўлиб, уларнинг мафкура, йўналиш ва дунёқарашлари бир-биридан фарқ қилсада, Ҳаққа қарши жанг қилишда жамланишлари, шунингдек, ҳақ билан ботил ўртасидаги жангнинг қиёматгача давом этиши, Оллоҳ аzza ва жалланинг қонунидир.

Бу қонунлар зехнимизда турар экан, мўғуллар билан салибчиларнинг йўналишлари, сиёсатлари ва дунёқарашлари турлича бўлса ҳам, мусулмонларга қарши жангда улар ўртасидаги ўзаро ҳамкорлик юзага келишини осонгина тасаввур қила оламиз. Салибчилар Овропадан Мўғулистонга мусулмон давлатларга уруш очиш ва Аббосийлар хилофатини, ўша вақтдаги забардаст Бағдодни ағдаришга тезлаб элчилар юборди. Ваҳоланки, Овропа билан Мўғулистон орасидаги масофа 12 минг километрдан ортиқроқ эди. Бугунги кундаги

²⁶ Бақара: 217.

транспортлар — автоулов, автобус, поезд ва самолет бўлмаган бир замонда бу масофанинг не қадар узоқлигини тасаввур қилиш осон.

Салибчиларнинг Ислом оламига юриш қилишга ҳадди сиғмасди, чунки «Хиттийн» ва «ал-Арок» жангларида қаттиқ зарбалар еган эди. Улар Ислом умматини қириб ташлашни орзу қилганлари боис янги вужудга келган кучга қўл чўздилар, Ислом диёрларига хужум бошласа, уларга кўмак беришларини билдирдилар. Мўғуллар ғурурланиб янада мустаҳкам оёққа турди, салибчилар режа қилган натижа ҳосил бўлди.

Аббосий хилофати бисотидаги мол-мулкка мўғулларнинг сўлаги оқди. Бойликларга ва саховатга тўла бу кенг диёрга юриш қилишга қарор қилдилар. Мўғуллар салибчилар билан жуда кўп нарсаларда келишмасада, Ислом ва мусулмонларга қарши жанг қилишда сафларини бирлаштирдилар. Бунинг ажабланарли ери йўқ, балки бу ботил аҳлининг мусулмонларга қарши жанг қилишдаги ўзгармас суннатидир. Бу жанглардан кейин, мўғуллар оламнинг турли ерларида салибчиларга қарши уруш қилиб, уларни ҳам қирғин қилди.

Яҳудийлар эътиқоди билан мушриклар эътиқоди ўртасида катта фарқ бўлишига қарамай, бундан илгари яҳудийлар Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламга қарши мушриклар билан ҳамкорлик қилгани ҳеч кимга сир эмас.

Форс ва Рум давлатлари ўртасида адоват чексиз бўлишига, қадимдан мунтазам урушлар қилиб келганига қарамасдан, мусулмонларга қарши ўзаро ҳамкорлик қилишди.

Шунингдек, инглизлар ва яҳудийлар ўртасида мислсиз душманлик бўлатуриб, Усманийлар хилофатини ағдаришда, Фаластинни мустамлака қилишда ва Исроил бу муборак ерларга ўрнашиб олишида ўзаро ҳамкорлик қилишди. Бугун эса, Россия билан Америка бир-бирларига қарама-қарши бўлсалар ҳам, мусулмонлар зиддига кўз олдиларида «исломий терроризм» деган ғойиб душман ясаб, унга қарши бир ёқадан бош чиқардилар. Улар ўз душманларини кўнгиллари тусаган ердан топдилар ва топиб келмоқдалар...

Ботил аҳлининг мусулмонлар зиддига бирлашиши доимий ва ўзгармас қонундир. Шунинг учун мусулмонлар «душманининг дўсти душманидир» қабилидаги гапларга таяниб иш қилиши тўғри бўлмайди. Балки душманининг дўстларидан ташқари, унинг душманларини ҳам билиши керак, чунки душманининг душмани ҳам мусулмонларга келганда бирлашган ҳолда душман бўлиш эҳтимоли бор.

Мусулмонлар баъзан душманлари билан ўзига хос мақсадлар юзасидан ва муайян муддатга келишув тузиши мумкин. Лекин бунда динда чуқур кетиш ёки ҳуқуқларни енгил санаш тўғри бўлмайди, балки ўта огоҳликни тутган ҳолда, маълум муддатгагина келишилади, иш дўстлашув, садоқат ва ҳақ-ҳуқуқларни унутишга бориши ярамайди. Зеро: **«Яҳудий ва насронийлар уларнинг динига кирмагунингизча ҳаргиз сиздан рози бўлмайдилар»²⁷**.

Мўғуллар Ислом оламига юриш қилишга янгидан фикр юрита бошлади, беш асрдан буён Ислом хилофатининг пойтахти бўлган Бағдодга кириш ва уни ағдариш иштиёқи билан режа туза бошлади. Афғонистон ва Ўзбекистон минтақаларида жойлашишни, ўрнашишни фикр қилдилар. Бугун бу ходисалар батамом такрорланмоқда...

Бу билан Оллоҳ субҳонаҳу ва таоло Ўзининг қонунларини ўзгармайдиган ва алмаштирилмайдиган барқарор эканини миямизга мустаҳкам жо қилишни хоҳлади.

²⁷ Бақара: 120.

БИРИНЧИ МЎҒУЛ БОСҚИНИ

Хоразм давлатига ҳужум сабаблари

Чингизхон Ироққа ҳужум қилишдан олдин Хоразм давлатига — ҳозирги Афғонистон ва Ўзбекистонга юриш қилишни қасд қилди, чунки Ироқ билан Хитой орасидаги масофа анчагина узоқ эди. Ироқ билан Хитой орасидаги минтақаларда мўғул кўшини учун мустаҳкам, барқарор таянч, асос бўлиши керак эди. Бу минтақалар ўша кунларда «Кўқоз» деб номланиб, иқтисоди ва қишлоқ хўжалиги анча бой эди. Мана ҳозирги кунимизда, ҳижрий XV аср/милодий XXI асрга келиб, у ерлардан нефт чиқди ва дунёнинг нефтга энг бой минтақасига айланди. Унинг нефт захиралари Кўрфазнинг нефт захираларидан олийроқдир. Бу минтақалар мусулмонларнинг машҳур марказий жойларидан бўлиб, қазилма бойликлари кўп, мол-мулки мўл минтақа эди. Бундан ташқари, Чингизхонга бас кела оладиган ягона куч Хоразм давлати эди, десак муболаға бўлмайди, шунингдек, мўғуллар Ироққа юриш қилаётганда ортидан унга қарши жанг қилиши ва унинг режасини барбод қилиши мумкин бўлган халқларни қолдириши мумкин эмасди. Мана шулар сабаб, Чингизхон Ислом оламининг шарқий минтақаси бўлган Хоразм давлатига ҳужум уюштиришни режа қилди. Уларнинг олдида аҳдни ва илгариги иттифоқчиликни бузишларига монелик қиладиган нарса йўқ эди. Зеро, аҳдга вафо қилмаслик барча ботил аҳдининг суннатиدير, **«Хар қачон бирон аҳдга аҳдлашсалар, улардан бир гуруҳи бузаверадими? Ҳақиқатан уларнинг кўпи иймонсизлардир»²⁸**.

Айни вақтда ўзаро келишувда бўлганлиги учун уруш чиқаришга сабаб керак эди. «Бўлди, иттифоқчилик тугади», дейдиган нарсани Чингизхон излаб топа олмади. Шунда тўсатдан уруш очишга сабаб бўла оладиган ва аҳдни бузишга қаноатлантирадиган фожиали бир ҳодиса юз берди. Бу ҳодиса Чингизхоннинг режаси эмасди, лекин унинг режаси бўлиши эҳтимоли ҳам йўқ эмасди, чунки у ҳеч қачон аҳдга вафо қилмаган. Аммо мусулмонлар, мўғуллар ва бутун олам олдида ўринли бўла оладиган мантиқий жавоб керак. Ҳодиса шундай бўлганди: бир гуруҳ мўғул тижоратчилар Хоразмшоҳ давлатининг шарқий қисмида жойлашган Ўтрор шаҳрига боришади, шаҳар ҳокими уларни тутиб

²⁸ Бақара: 100.

келиб, ўлдиреди. Тарихчилар бу тижоратчиларнинг қатл қилиниши сабаби борасида ихтилоф қилишади:

Улардан баъзилари: Бу тижоратчилар Чингизхоннинг Ислом давлати ичида провокация, яъни иғво, фитна чиқариш учун юборган жосуслари эди, дейишса;

Баъзилари: Ўтрор шаҳри ҳокими мўғулларнинг Мовароуннаҳр ерларида талон-тарож ва босқинчилик қилганларига раддия сифатида қасддан ўлдирган, дейишади.

Бошқалари: Чингизхон атай Хоразм давлатига уруш қилишга баҳона бўлиши учун ўша тижоратчиларни ўлдириб келишга одам жўнатган, дейишса;

Яна бошқалари: Ўтрор шаҳри ҳокими тижоратчиларнинг мол-мулкига тама қилиб ўлдирган, дейдилар.²⁹

Алҳол, бу эҳтимолларнинг барчаси тарих саҳифаларида ворид бўлди, нима бўлганда ҳам оқибатта «тижоратчилар» ёки «жосуслар» ўлдирилди. Бу хабар Чингизхонга етиб келганда, у Хоразмшоҳга котилларни топширишини ва улар устида ўзи ҳукм қилишини англаган мактуб йўллади. Лекин Хоразмшоҳ Алоуддин буни Ислом давлати бошлиғига нисбатан ҳақорат, ҳаддан ошиш деб санади ва жиноят содир этган мусулмонни бошқа давлатга ва бошқа шариятда ҳукм қилиниши учун топширмади ва Чингизхонга: «Агар мусулмонлардан биронтасининг мўғул тижоратчиларни ўлдиргани исбот этилса, ўз юртида ва шарияти исломияга кўра ҳукм қилишини», айтди. Унинг бу гапи мантиқан тўғри ва бутун Ер юзида макбул ҳам эди. Қайсидир давлатда бирор жиноят содир этилса, жиноятчи ўша давлатнинг қонунига кўра жазо олади, бошқа давлатда ва бошқа давлатнинг қонунига кўра эмас, албатта. Чунки бир давлатда жиноят саналган ишлар бошқа давлатда жиноят саналмаслиги ёки жиноят саналсада жаримаси, яъни жазоси фарқ қилиши турган гап. Бошқача қилиб айтганда, сомсанинг пулини сомса еган жойга ўталади. Чингизхон Хоразмшоҳнинг жавоби қанчалик ҳақиқат, мантиқан тўғри эканини билсада, унинг мақсади Ислом диёрларига бостириб кириш, Ислом ўлкаларини эгаллаб олишга йўл қидириш эди ва тижоратчиларнинг ўлдирилиши бунга баҳона бўлди.

Кўрқинчли мўғул бўрони Ислом диёрларига қараб эса бошлади. Чингизхоннинг катта кўшини билан Хоразмшоҳ кўшини илк бор

²⁹ Саллабий «ал-Мўғул» (108-бет).

616/1219 йилда юзма-юз келди.³⁰ Яъни мўғул давлати вужудга келганидан 13 йилдан кейин содир бўлди. Маълумингизки, мўғул давлати 603/1206 йилда ташкил топган эди,³¹ лекин шу қисқа вақт ичида тақрибан бутун шарқий Осиёни эгаллаб бўлган, фақат Хоразм давлатигина қолган эди. Алоуддин Муҳаммад Хоразмшоҳ ўз қўшини билан Меркитлар устидан ғалаб қозониб, Мўғулистонга қайтаётган Чингизхоннинг катта ўғли Жўжи бошлиқ мўғул қўшинини таъқиб қила бошлади. Хоразмшоҳ Жўжининг олдига етиб келганда, у Чингизхоннинг рухсатисиз уруш қилиши мумкин эмаслиги, муқаддас китоблари «Йаса»га хилоф иш қилолмаслигини айтганда, Хоразмшоҳ шундай деди: «Агар Чингизхон сенга мен билан урушмаслигингни буюрган бўлса, Оллоҳ таоло эса, мени сизлар билан урушишимни амр этиб, бу учун савоб ҳам ваъда қилади. Ҳаммангиз мушрик бўлганингиз сабабли мен учун сен билан Гурҳон ва Гучлук орасида бирор бир фарқ йўқ».³² Хуллас, мўғуллар урушишдан ўзга чора топмагач икки тараф ўртасида Хоразм давлатининг шарқи, янада аниқроғи Сирдарёнинг шарқида (ҳозирги кундаги Қозоғистон ерларида) уруш бошланади. Насавийнинг хабар беришича, бу жангда мўғуллар сони 20 минг, хоразмшоҳлар эса 60 минг бўлган.³³

Хоразмшоҳ мўғуллар каби жангдан қайтаётган хорғин ҳолатда бўлмасада, мўғулларни енга олмади. Ҳатто жанг асносида қуввати синдирилган Хоразмшоҳ жасур ўғли Жаллолиддиннинг соясида қутулишга муваффақ бўлади.³⁴ Жангда Хоразмшоҳ мўғуллар томонидан қуршовда қолади, бу ҳолатда уни икки оқибатдан бири: ё асирга тушиш, ёки жанг майдонида ўлдирилиш кутиб турган эди. Яхшиямки, бу орада Жаллолиддин ёрдамга келиб, отасини мўғуллар исканжасидан қутқариб чиқади.³⁵ Бу ёш Жаллолиддин Мангубердиннинг мўғулларга қарши илк жангга кириши ва уларни доғда қолдириши эди. Ҳали унинг бундан бошқа қаҳрамонликларига яна гувоҳ бўламиз...

Жанг тўрт кун давомида шиддатли тусда давом этди. Иккала томондан ҳам кўп аскарлар ўлди, мусулмонлар 20 минг шаҳид берди,

³⁰ Т.Ў. Салимов, Ф.Э. Султонов «Жаҳон тарихи» (7-боб, 35-§. Мўғуллар давлати ва унинг босқини).

³¹ Насавий «Сийратус-султон» (11-бет).

³² Насавий «Сийратус-султон» (47–48-бет), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (150-бет).

³³ Насавий «Сийратус-султон» (46-бет).

³⁴ Аҳмад Ўздемир «Тариху жаҳонгуша» (1/126–127, 2/82), «Жомиъут-таворих» (1/345), Жужожоний (1/310)дан накл қилади. «Мўғул истилоси» (151-бет).

³⁵ Айни манба.

мўғуллардан ўлдирилганлар сони ҳисобсиз эди.³⁶ Сўнгра жанг тўхтаб, томонлар иккига айрилди. Бу жангда бирор тараф ғолиб бўлолмади. Тарафлар иккига ажралгандан кейин Алоуддин Муҳаммад Хоразмшоҳ мўғуллардан ҳадиксираб, давлатининг Бухоро ва Самарқанд каби буюк шаҳарлар қўрғонини кучайтириб, ўзи эса қўшимча аскар тўплагани марказ Урганчга қайтади ва шаҳар химоясини мустаҳкамлашга киришади.³⁷ Султон Хоразмшоҳ мамлакати атрофидан қўшин тўплаш билан машғул бўлди, лекин айтилган пайтда Ироқдаги Аббосийлар хилофатидан ажралиб олган ва унга бўйсунмасдан, унга исён қилиб ҳаддидан ошган эди. Шунингдек, қўшни Ислом мамлакатлари: турклар, салжуқийлар ва ғурийлар билан иттифоқчилиги йўқ ва алоқаси ёмон эди. Бир сўз билан айтганда, бошқа Ислом давлатларидан ажралиб қолган эди. Энди мўғулларга қарши ёлғиз ўзи жанг қилиши керак! Хоразм давлати гарчи кучли, катта ва биринчи ҳамлада собит турган бўлсада, яқка ўзи мўғулларнинг тўхтовсиз ҳужумларига бардош беролмаслиги тайин эди.³⁸

³⁶ Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/365), Саллабий «ал-Мўғул» (112-бет).

³⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/365), Саллабий «ал-Мўғул» (112-бет), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (151-бет).

³⁸ Сиржоний «Қиссатут-татар» (24-бет).

ҚОЗОҒИСТОН ВА БУХОРОГА МЎҒУЛЛАР ҲУЖУМИ

Бухоро қатлиоми

Чингизхон кўшинини янгидан жиҳозлаб, жангга шайлади. Чунки Чингизхон Хоразмшоҳнинг кудратини яхши билар, ўзини шарқнинг подшоси деб билса, Хоразмшоҳни ғарбнинг подшоси эканини эътироф қиларди.³⁹ Бир ўринда Чингизхон Хоразмшоҳни ўзига яқин, кудратли ўғиллари қаторида кўришини баён қилади.⁴⁰ Шунинг учун Хоразмшоҳга қарши урушга ҳозирлик кўраркан бутун жавобгарликни ўз зиммасига олмасдан, қурултой уюштириб, саркардалари ва қариндошлари билан маслаҳат қилишни лозим кўрди. Бу қурултой 615/1218 йилда бўлиб ўтди ва Хоразмшоҳ Муҳаммадга қарши уруш очиш қарори олинди.⁴¹ Бу уруш сафари ўзига яраша анча машаққатли бўлишини ҳисобга олган Чингизхон барча ўғилларини ва бутун аскарий қувватини олиб шахсан ўзи йўлга чиқди.⁴² Хоразмшоҳларнинг кудрати нафақат Чингизни, ҳатто оила аъзоларини ҳам тараддуллантирганини унинг хотини Есуи Хотунни Чингизхондан урушга кетишидан олдин валиаҳд тайинлаб кетишини сўраганидан билсак бўлади. Бу таклифдан кейин бутун оила аъзолари, қон-қариндошлари ва аскар сардорлари нўёнлар иштирокида катта баҳс сўнггида Ўқтой валиаҳд этиб танланди.⁴³

150–200 минг атрофидаги мўғул кўшини Чингизхон бошчилигида Ислом ўлкаларига қараб йўлга чиқди.⁴⁴ Чингизхоннинг йўлга чиқиш тарихи 616/1219 йил баҳорда, рабиулаввал/май ойига тўғри келди.⁴⁵

Мўғулларнинг уруш сафарбарлигидан хабар топган Хоразмшоҳ Самарқандда катта мажлис қурди, мажлисда вазирлари, катта қўмондон аскарларини жамлади. Мажлисда мўғулларга қарши нима чора кўриш

³⁹ Аҳмад Ўздемир Жузжонийдан (2/103) нақл қилади. «Мўғул истилоси» (152-бет).

⁴⁰ Рашидуддин «Жомиъут-таворих» (1/343).

⁴¹ Рашидуддин «Жомиъут-таворих» (1/353).

⁴² Аҳмад Ўздемир Жувайний (1/139) ва Жузжоний (1/311)дан нақл қилади. «Мўғул истилоси» (153-бет).

⁴³ Аҳмад Ўздемир «Гизли тарих» (174–181), Рашидуддин «Жомиъут-таворих» (1/353)дан нақл қилади.

⁴⁴ Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (153-бет).

⁴⁵ «Гизли тарих» (181-бет), Жузжоний (1/311), Рашидуддин «Жомиъут-таворих» (1/353).

мумкинлиги масаласи кўрилди. Кенгаш фикрлари куйидагиларга бўлиниб кетди:

➤ Биринчи фикр, Хоразмшоҳ дардини унга очадиган, маслаҳатларига аҳамият қаратадиган, фикрларини хурмат қилиб, унинг сўздан чиқмайдиган, Хоразмнинг машҳур фақиҳи, муфтий Шихобуддин Хивакийники эди. У Хоразмшоҳга катта сонли аскарлари борлигини, атрофдаги Ислом ўлкаларига мактуб йўллаб, янада кўпроқ аскар тўплаши мумкинлигини ва душманга қарши жиҳод сафарбарлигини эълон қилишини, султоннинг бу ҳолатида молиявий ва аскарларий дастак бериш бутун мусулмонларга фарз бўлишини ифода қилди.⁴⁶ Бироқ Хоразмшоҳ Муҳаммадга бу фикр маъқул бўлмади. Биринчидан, атрофдаги мусулмон ўлкалар билан алоқаси жуда кескин бўлса, иккинчидан, у ўзининг қипчоқлардан бўлган катта лашкарбошиларига тамоман ишончсизлик билан қарарди. Султон Хоразмшоҳ Амударё соҳилидаги ўзига уюштирилган суиқасдни ҳануз унутмаган эди. Бир оқшом у ўзи тунаши керак бўлган чодирдан аскарларига махфий тарзда чиқиб, бошқа жойда кечани ўтказди ва тонг отганда инсонни хайрату ҳаёжонга солиб қўядиган воқеага шахсан ўзи гувоҳ бўлади. Султон тунаши керак бўлган чодир қилич билан илма-тешик қилиб юборилган эди.⁴⁷ Шунинг учун ҳам у катта қўшинни бир жойга тўплашдан ва фурсатдан фойдаланган кўмондонлари уни тахтдан ағдариб ташлашларидан қўрқар эди.

Шихобуддин Хивакий унга шундай маслаҳат берди: «Сирдарёнинг нариги тарафига ўтаминг, унинг катта дарё экани маълум. Уни келаётган душман билан Ислом ўлкалари орасида тўсиқ сифатида фойдаланамиз. Биз нариги соҳилда душманни кутиб тураминг. Душман дарёнинг соҳилига келган вақтда анчагина ҳолдан тойган бўлади, биз эса бир муддат хордиқ чиқариб олган бўламиз».⁴⁸ Бу билан у барча қўшинни, яъни 400 минг⁴⁹ аскарни Сирдарё бўйига тўплаб, узок йўл сафариди толиқиб келаётган мўғулларни қарши олиш, душманга ҳали ўзини ўнглаб олмасидан туриб, бор куч билан тўсатдан зарба бериш тўғрисида бирдан-бир тўғри фикрни таклиф қилганди.

⁴⁶ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/363), Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/42), Рашидуддин «Жамиъут-таворих» (1/347).

⁴⁷ Аҳмад Ўздемир Жувайнийдан (2/88) накл қилади. «Мўғул истилоси» (159–160).

⁴⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/363), Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/105).

⁴⁹ Насавий «Сийратус-султон» (49-бет), Рашидуддин «Жамиъут-таворих» (1/346–347). Ўттор, Бухоро ва Самарқанднинг ўзидаги аскарлар сони 220 минг эди. Аҳмад Ўздемир (159-бет).

Хивакийнинг ушбу фикрini қўллаб, ўшанигина амалга ошириш керак деганлардан бири Хоразмшоҳнинг энг ишонган, жасур ва довюрак ўғли Жалолиддин эди. Жувайнийнинг нақл қилишича, Жалолиддин отасига: «Сиз қўшинга буйруқ беринг-да, ўзингиз бир четда бизнинг ғалаба қозонишимизни кутинг», деган журъатли таклифни билдирган эди.⁵⁰

➤ Иккинчи фикр, Хоразмшоҳнинг давлат одамларининг фикри бўлиб, у бутунлай бошқача эди, улар Хивакийнинг фикрini менсимадилар. Улар шундай дедилар: «Биз мўғулларни Сирдарёнинг бу томонига ўтишига тўсқинлик қилмайлик, майли ўтишсин, кейин мана бу тоғлар ва тор йўллардан юрсинлар. Улар бу йўлларни билмайдилар, биз эса жуда яхши биламиз. Улар тор жойларга кирганларида уларни битта қўймай кириб ташлаймиз».⁵¹

Бу фикр мантиқли бўлиб кўриниши мумкин, лекин Чингизхоннинг айғоқчилари йиллар давомида Хоразмшоҳ ерларини, тижорат карвонлари юрадиган йўлларни жуда яхши ўрганган эдилар.

Улар шу ҳолатда экан, Чингизхоннинг элчилари келиб, Ўтрорда ўлдирилган тижоратчиларининг қасосини, тортиб олинган мол-мулкларининг товонини олиш учун Чингизхон уруш сафарига чиққанини айтиб, Хоразмшоҳга таҳдид қилишди. Шунда Хоразмшоҳ ўша элчини ўлдириб, қолганларининг соч-соқолини олдириб, келган жойларига қайтариб жўнатади.⁵² Элчиларни ўлдиришнинг ҳукм ҳақида ҳали батафсил баён қиламиз, иншаоллоҳ...

➤ Учинчи фикр, жанубга Ғазнага чекиниш таклифи бўлди. Агар у жойда ҳам ҳимояланиш қийин бўлиб қолса, Ҳиндистонга чекинилар эди.⁵³ Бу энг шармандали кўрқоқларнинг фикри эди.

Хоразмшоҳ иккинчи фикрini қўллади, лекин уни бошқачароқ тарзда амалга оширишни режа қилди. У аскарий кучини қалъа ва истехкомларга бўлиб юбориб, айрим шаҳарларни мўғулларга қарши қўйиш билан душманга зарба бермоқчи бўлди, яъни партизанча уруш йўлини танлади. Унинг бу йўли ишқилиб, қарши курашди деган номни қозониш эди, холос. Шу сабабдан у мамлакатининг муҳим шаҳарларига Хоразм

⁵⁰ Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/105), Абул Фароҳ (2/514), Рашидуддин «Ҷамиъут-таворих» (1/347).

⁵¹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/363).

⁵² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/364).

⁵³ Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/86), Рашидуддин «Ҷамиъут-таворих» (1/347).

аскарларини тақсимлашга киришди. Хоразмшоҳ, мўғуллар биринчи Ўтрорга ҳужум қилади, деб тахмин қилароқ 20 минг аскарга соҳиб бўлган Ўтрор ҳокими Иналжикка 50 минг қўшимча аскар берди. Яна Сарой мулозимларининг бошлиғи Ҳожиб Қорача бошчилигида 10 минг аскар ҳам Ўтрорга ёрдамга отланди.⁵⁴ Шундан маълум бўладики, Ўтрорда 80 минг аскар тўпланди.

Бухорога, Ибнул Асирнинг ривоятига кўра, 20 минг, Насавий ва Жувайнийникига кўра эса 30 минг, Самарқандга, Ибнул Асирнинг айтишича, 50 минг, Жувайний ва Жузжонийнинг фикрича, 110 минг қўшимча ҳимоя кучи жойлаштирди.

Бу орада йўлга чиққан мўғул қўшини Хоразимшоҳга қарашли бугунги кундаги Қозоғистон минтақасини бирон-бир айтарлик қаршиликсиз босиб ўтди. Эслатиб ўтамиз, Қозоғистоннинг ер майдони тахминан уч миллион км²га тенгдир.

Чингизхон баҳайбат лашкарини тўрт қисмга ажратиб, Мовароуннаҳр ерларига сафарбар қиларкан, асосий қўшинни ўзи билан олиб, Қизилкум орқали Бухорога лашкар тортди. Шу аснода Бухорога йўналган Чингизхоннинг асосий кучлари йўлда Зарнук ва Нур қалъаларини ишғол қилдилар. Улар буюк олим, муҳаддис «ал-Жомиъус-саҳиҳ» китобининг муаллифи имом Бухорий раҳимахуллоҳнинг юрти Бухоро шаҳрига 616 йилнинг 1 зулҳижжа/1220 йилнинг 6 феввалида етиб келди ва уни уч кун давомида қамал қилди. Хоразмшоҳ шаҳарнинг ҳимояси учун 20 минг аскар тайин қилган эди.⁵⁵ Уч кун давом этган қамал ва жангда Хоразмшоҳ жангчилари кучсизлик қила бошлади, атрофдан ёрдам сўраш имконсиз эди. Хоразмшоҳ ўша вақтда Бухородан анчагина узоқда эди. Сўнгра мўғуллар Бухоро халқидан таслим бўлишни талаб қилди ва таслим бўлишса, омонлик беришини ваъда қилди. Бухоро халқи нима қилишга ҳайрон бўлиб қолишди ва ораларида иккита фикр юзага келди, биринчи фикр эгалари айтишдики: «Мўғулларга қарши жанг қилиб, шаҳримизни мудофаа қиламиз». Иккинчи фикр эгалари эса: «Қатлдан сақланамиз, омонлик оламиз ва мўғулларга шаҳар дарвозасини очиб берамиз», дейишди. Бу бечоралар мўғулларнинг бирон мўмин хусусида аҳд ва бурчга риоя қилмасликларини қаердан билсинлар!

⁵⁴ Рашидуддин «Жомиъут-таворих» (1/346), Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (1/140), Насавий «Сийратус-султон» (90-бет).

⁵⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/365, 366), Муҳаммад Солих Муҳиддин «Удатур-рух лил-хилафатил Аббасия» (195-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (112, 114-бет). Насавий Хоразмшоҳ шаҳар ҳимояси учун 30 минг аскар тайин қилганини ҳабар беради, Насавий «Сийратус-султон» (90-бет).

Хуллас, шаҳар аҳли икки қисмга бўлинди:

Биринчи қисм: Жанг қилишни ёқлаб чиққан ва шаҳар қалъасининг мудофаасига ўтган мужоҳидлар жамоаси бўлиб, уларга шаҳарнинг фақиҳ ва олимлари кўшилди.

Иккинчи қисм: Таслим бўлиш, шаҳар дарвозасини очиб беришни ёқлаганлар ва мўғуллар омонлигига сиғинганлар жамоаси бўлиб, буларга шаҳар аҳолисининг аксарияти кўшилди.⁵⁶ Оқибатда 616 йил 4 зулҳижжа куни/1220 йилнинг феврал ойида шаҳар дарвозаси мўғуллар учун очиб берилди.⁵⁷

Чингизхон буюк шаҳарга кирди ва дастлаб унинг халқига ваъда қилганидек, омонлик берди, буни катта қалъани кўрғон тутган мужоҳидларни яқсон қилгунича уларни ишонтириш учун қилган эди. Чингизхон қалъани қуршаб олди ва уни осонлик билан ишғол қилиш мақсадида шаҳар халқига қалъа атрофидаги хандақни шох-шабба, тупроқ ва бошқалар билан тўлдиришларига амр қилди, ҳатто бу кофирлар масжид минбарлари-ю, Қуръон тахтакачларини ҳам чуқурларга улоқтиришди. Иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожиъун.⁵⁸ Шаҳар аҳли иккиланмай унга итоат қилди. Ҳозирги кунимизда ҳам қанча-қанча мусулмон аскарларни ўз душманлари билан биргаликда биродарлари мусулмонларга қарши жанг қилаётганини кўрамиз! Оллоҳнинг Ўзи тўғри йўлга бошласин!

Мужоҳидлар беркинган қалъа дарвозалари ўн кун⁵⁹ (12 кун)⁶⁰ қамал қилингандан сўнг очилди. Чингизхон қалъага кириб, битта ҳам мужоҳидни қолдирмай барчасини қатл қилди.⁶¹ Шу ерда Чингизхон хиёнатни бошлади, шаҳар халқидан хазиналар, мол-дунё, олтин ва қумушларнинг жойларини ўрганди ва ҳаммасини ўзиники қилди, сўнгра аскарларини халқнинг устига солди. Мўғул аскарлари халққа ақл бовар қилмайдиган даражадаги ишларни қилди. Ибн Касир раҳимаҳуллоҳ «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*» китобида мўғулларнинг Бухорода қилган ишларини тасвирлаб, шундай дейди: «Шаҳар аҳлидан Оллоҳнинг Ўзигагина аён бўлган даражадаги халқни ўлдиришди. Гўдаклар ва

⁵⁶ Сиржоний «Қиссатут-татар» (26-бет).

⁵⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/366), Солих Муҳиддин «Удатур-рух» (198-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (115-бет).

⁵⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/366).

⁵⁹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (27-бет).

⁶⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/366).

⁶¹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/80), Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/366).

аёлларни асир қилишди, аёлларни оила аъзолари кўз ўнгида зўрлашди, кизни отасининг, хотинни эрининг кўз ўнгида номусини топташди. Қолганларини асир қилиб, ҳар турли азоблар билан қийноқларга солишди, шаҳар эркак, аёл ва гўдакларнинг йиғи-сиғисига тўлиб кетди. Сўнгра мўғуллар Бухоро кўчалари, масжид ва мадрасаларга ўт кўйишди, шаҳар батамом ёниб кул бўлди, томлари йиқилиб хувиллаб қолди». ⁶² Иқтибос тугади. Лаа ҳавла валаа қуввата иллаа биллаҳ!

Эркаклар кўз ўнгида аёлларнинг номуси топталаркан, бу тажовузу зўравонликка қараб туролмаган Имомзода, унинг ўғли, қози Садруддин ва Бадриддин Қозихонлар мўғулларга ҳамла қилганларича шахид бўлдилар. ⁶³

Тарихчи Рашидуддин Фазлуллоҳ Бухорода 30 мингдан ортиқ киши қатл қилингани ҳақида хабар беради. ⁶⁴

Имом Бухорий ва Муслим ўзларининг «Саҳиҳ»ларида мўминлар онаси Зайнаб бинти Жаҳш разияллоҳу анҳодан ривоят қилдилар. Зайнаб бинти Жаҳш Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламдан: «*Ё Расулуллоҳ, ичимизда солиҳ кишилар бўлгани ҳолда ҳам ҳалок бўламизми?!*» — деб сўрадилар. «*Ҳа, агар нопоклик (чиркинликлар) кўпайса!*» — деб жавоб бердилар Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам. ⁶⁵

Ҳадисда зикр қилинган «хабас», яъни нопоклик, чиркинлик бу шаҳарда жуда кўпайган эди. Мусулмонлар дини, ватани ва номусини ҳимоя қилиш учун қўлларига қилич олмасликлари нопокликдир. Кофирларнинг аҳдларига ишониб қолишлари нопокликдир. Душманларига қарши Ислом байроғини кўтариб жанг қилмоқчи бўлганларни таслим қилиб беришлари нопокликдир. Тафриқаланиб, ўзаро жанг қилишлари нопокликдир. Оллоҳнинг китоби ва Расулининг суннати билан ҳукм қилмасликлари нопокликдир, буларнинг барчаси хабис нарсалардир. Агар «хабас», яъни чиркинликлар кўпаядиган бўлса, ҳалокат ва қирғин юз бериши шарт бўлади. Расули ҳаким соллаллоҳу алайҳи ва саллам нақадар рост сўзладилар. Мана шундай, Бухоро шаҳри 616 йилнинг охирлари/1220 йилнинг бошларида ҳалокатга учради. ⁶⁶

⁶² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/80), Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/366).

⁶³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/367), Рашидуддин «Жомиъут-таворих» (1/361), Жужжоний (1/311–312).

⁶⁴ «Жомиъут-таворих» (1/361).

⁶⁵ Бухорий (3346) ва Муслим (2880) ривоятлари.

⁶⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/91).

Бу, қиссанинг дастлабки саҳифалари, зулм ва истибдод тўфонининг бошланишидир. Қиссанинг давоми бундан-да даҳшатлироқ, бундан-да қаттиқроқ ва кўрқинчлироқ давом этади ва унда мусулмонлар Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам пайғамбар этиб жўнатилгандан то бугунги қунимизгача бўлган тарихда мисли кўрилмаган зулм, қатағон ва даҳшатли йилларни бошидан кечиради.

Бу ҳодисалар Ислом уммати ўртасида юзага келган тарқоқлик, бўлиниш ва дунёга ҳирс қўйиш, мол-давлат жамғаришга берилиб кетиш сабабидан вужудга келган қаттиқ заифлик ҳолати натижаси эди. Бунинг оқибатида мўғуллар Хоразм давлатининг шарқий қисми бўлган Бухоро шаҳрини батамом йўқ қилди, эрақлар ўлдирилди, аёллар зўрланиб, таҳқирланди, болалар асир қилинди, шаҳар ва масжидлар ёндирилди. Буларнинг барчаси 1220 йилнинг бошларида содир бўлган эди. Бу ҳодисалар бундан кейин рўй берадиган даҳшатли ва аламли ҳодисаларнинг дебчасидир...

Мўғуллар буюк Хоразм давлатини-ю, унинг аҳолисини йўқ қилади, улар бунга мусулмонлар ўртасидаги бўлиниш, уларнинг кучсизланиши ва бир-бирларига нисбатан қалбларида гина-кудуратнинг тўлиб-тошгани сабаб эришадилар, бу эса, Оллоҳ таолонинг жорий бўлувчи қонунидир. Мусулмонлар мағлубиятга гирифтор бўлади ва улардан ер юзида подшоҳлик тахти олиб қўйилади.

Мўғул ҳодисасига Ибнул Асир муқаддимаси

Ҳижрий 616 сана Қозоғистон минтақаси ва Бухоро шаҳри ер билан яқсон қилиниши билан тамомланди, 617/1220 йил даҳшатли ҳодисалар билан бошланди. Бу йилда Ислом уммати Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам пайғамбар этиб юборилгандан то ҳозирги қунимизгача содир бўлган воқеаларнинг ғоят ёмони ва аянчлисини бошидан кечирди. Бу йилда мўғуллар анча кучайди, Ислом диёрларида мисли кўрилмаган вайронагарчиликлар, қулоқ эшитиб, кўз кўрмаган ва хаёлга ҳам келмаган қирғин-баротлар, мункара ишларни амалга оширдилар. Бу воқеаларга Ислом тарихшуноси аллома Ибнул Асир раҳимаҳуллоҳнинг «*ал-Камил фит-тарих*» китобида келтирган сўзларини муқаддима қилишни маъқул кўрдик. У кишининг сўзи бу ўринда бошқа тарихчиларнинг сўзларидан кўра ўринлироқдир, чунки у киши ўша воқеалар содир бўлган замонда яшаган ва бу ҳодисаларни ўз кўзлари билан кўриб, ўз қулоқлари билан эшитган эди, «Юз марта эшитгандан бир марта кўрган яхши», дейдилар. Ибнул Асир мўғуллар қиссасига қуйидагича муқаддима қилади: «Узоқ йиллар бу ҳодиса ҳақида сўзлашга

юрагим бетламади, кўлимга қалам тутардим, бироқ ёзишга кўлим бормасди. Ким ҳам Ислом ва мусулмонларнинг ҳалокатини ёза оларди?! Қайси инсонга ўшал воқеаларни гапириш енгил экан?! Эҳ... қани эди, онам мени туғмасайди! Кошки бундан илгари ўлсам-у, бутунлай унутилиб кетсам эди! Мен ёзишга ботина олмай турганимда баъзи дўстларим бу воқеаларни ёзишимга ундашди, сўнгра фикрладим, буни ёзишни тарк қилмоғимнинг фойдаси йўқ экан. Яъни қиссанинг ёзилиши-ю ёзилмаслиги, ўлимни ёки қиёматни олдин ҳам, кейин ҳам қила олмас экан. Шундай экан, бундан сўнг мусулмонлар ундан фойдаланишлари учун ёзилмасинми?!»⁶⁷

Сўнгра қиссага муқаддима қилиб айтади: «Ушбу амал буюк бир ходиса ва улкан мусибат тарзида тарих хотираларига битилди, бу мусибат бутун ҳалоиққа, айниқса, мусулмонларга мисл кўрилмаган бир фожиа эди. Бир киши Оллоҳ субҳонаху ва таоло Одам алайҳиссаломни яратгандан ҳозирги кунгача олам бунингдек азоб-уқубат чекмаган, деса рост сўзлабди, чунки тарихлар бунга тенг келадиган ва унга яқин бўлган ходисаларни бошидан кечирмади. Ўтмишда содир бўлган ходисаларнинг энг катталаридан Бобилнинг машҳур подшоси Бухтунасро⁶⁸ Бани Исроилни қирғин қилгани ва Байтул Макдисни вайрон қилгани деб айтишади. Байтул Макдиснинг хонавайрон қилингани лаънати мўғуллар Ислом ўлкаларидаги бир неча Байтул Макдисга баробар бўлган шаҳарларни вайрон қилгани олдида нима бўлибди?! Шунингдек, Бани Исроилдан қатл қилинганлар мусулмонлардан ўлдирилганларга қараганда ҳеч нарса эмас. Мусулмонларнинг битта шаҳарида қатл қилинганлар сони ўша воқеадаги Бани Исроилдан ўлдирилганлардан кўпроқдир. Халқлар олам яратилгандан буён бу ходисанинг мислича воқеани кўрмаган бўлса керак»,⁶⁹ субҳаноллоҳ!!!

«Халқлар олам яратилгандан буён бу ходисанинг каби ходисани кўрмаган ва дунё тугагунича ҳам кўрмаса керак. Фақат Яъжуж ва Маъжужларнинг чиқиши бундан мустасно. Дажжол ҳам ўзига итоат қилганларни тек кўйиб, хилоф қилганларни ўлдиради, мўғуллар эса, биронтани қолдирмай ўлдирди»,⁷⁰ во ажаб!!!

Ибнул Асирнинг назарида мўғуллар фитнаси, ваҳшийликлари ва қувватлари Дажжолнинг фитнасидан-да қаттиқроқ бўлди, лекин Дажжолнинг фитнаси қаттиқроқ ва аччиқроқдир. Аммо бошидан

⁶⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/359).

⁶⁸ Ёки Бухтунассар.

⁶⁹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/359).

⁷⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/360).

кечирган даҳшат, фожианинг қаттиқлиги уни бу сўзларни айтиб юбориш даражасига олиб келди.

Ибнул Асир сўзида давом этади: «Мўғуллар аёлларни, эркакларни ва гўдакларни ўлдирди, хатто хомиладор аёллар қорнини ёриб, хомидаларни-да ўлдиришди, иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожиъун, ва лаа ҳавла валаа қуввата иллаа биллаҳил алиййил аъзийм».⁷¹

Бу, Ибнул Асирнинг узундан-узоқ қилиб ёзган, дарду-аламга, ғаму-ғуссага ботирадиган ва ўйга толдирадиган муқаддимаси эди. Ислом оламига етган бу мусибат барча микёсда: ўтмиш, ҳозир ва келажак ўлчовларида ҳам катта фожа бўлиб қолди. Асрлар оша мусулмонларга келаётган мусибатларнинг кўплигидан бу мусибат секин-аста кичиклашиб бормоқда...

⁷¹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/360).

САМАРҚАНД ИСТИЛОСИ

Мўғуллар буюк Бухоро шаҳрини хонавайрон, унинг халқини қирғин қилиб, масжид ва мадрасаларини ёқиб, сўнгра кўшни шаҳар Хоразмшоҳ Алоуддин Муҳаммад ибн Такашнинг пойтахти Самарқанд шаҳрига отланишди. Мўғуллар бу икки шаҳар орасидаги Зарафшон ирмоғи бўйлаб йўл юришди. Йўлга чиқаркан, Бухоро шаҳридан асир қилиб олган мусулмонларнинг катта жамоасини ўзлари билан олишган эди. Ибнул Асирнинг асирлар ҳақида айтган сўзлари киши баданини жунжитиб юборади: «Энг хунук, энг разил суратда асирларни олиб кетишар, йўлда хушидан кетган ва йўл юришдан ожизлик қилганларни ўлдиришар эди».⁷²

Шундай экан, нима учун Бухородан Самарқандгача бу асирларни ўзлари билан олиб кетишар эди? Асирларни Бухородан Самарқандгача олиб кетилишидан бир қанча мақсадлар кўзланган бўлиб, қуйида айримларига ишора қиламиз:

Биринчидан: Ҳар ўнта асирдан биттасига мўғул байроғини кўтартириб қўйишарди, ҳатто узоқдан кўрганлар буларнинг барчаси мўғул кўшини деб ўйлашлари ва жангчиларнинг саноғи ададсиз, кўрқинчли бўлиб кўриниши, дилларни кўрқув чулғаб, уларга қарши чиқиш амримаҳол экан, деб урушсиз таслим бўлиш учун эди.

Иккинчидан: Асирларни ўзлари билан бирга жанг қилишга мажбур этар, бирга жанг қилишдан бўйин товлаганни ва куч билан қаршилиқ қилганни ўлдиришар эди. Шу зайлда мусулмон асирлар биродарларига қарши мўғуллар сафида мажбуран жанг қилишар эди.

Учинчидан: Асирлар жонли қалқон вазифасини бажариб берарди, уларни сафнинг олдига қўйишиб, ўзлари уларнинг ортига беркинишарди. Агар мусулмонлар мўғулларга қарата ўқ отсалар, мусулмон асирларга тегарди.

Тўртинчидан: Бостириб келган шаҳар дарвозаси олдида уларни қатл қилишарди, бу билан душманининг қалбига кўрқув солиш ва мўғулларга қарши чиқишнинг оқибати мана шундай бўлишини эълон қилар эдилар.

⁷² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/367).

Бешинчидан: Жангларда душман қўлига тушган мўғул асирларига бу асирларни алмаштирар эдилар. Гарчи бундай ҳолат нодир бўлган бўлса ҳам. Чунки мўғуллар жуда оз енгилгандир.⁷³

Самарқанд Ислом жуда тараққий этган ва ўша пайтлар энг бой бўлган буюк мусулмон шаҳарларидан бири эди. Самарқандда кўплаб кўрғонли қалъалар бор бўлиб, шаҳар атрофи баланд деворлар билан ўралган, нафақат саройлар, балки ҳар бир хонадоннинг ҳам боғчали ховлиси бўлиб, бир сўз билан айтганда, жаннатмакон жой эди.

Хоразмшоҳ, онаси Туркон Хотун билан муроса қилолмагани сабаб онасига пойтахт Урганчни қолдириб, ўзи Самарқандни пойтахт қилиб олганди.⁷⁴ Шунинг учун Хоразмшоҳ шаҳар ҳимоясига 50 минг⁷⁵, ҳатто баъзи манбаларда шаҳарда турк, ғурли ва хуросонли 110 минг Хоразм аскарларини қолдиргани айтилади.⁷⁶ Тарихчилар Жувайний ва Рашидуддин 110 минг аскарнинг 60 мингги турк, қолган 50 мингги тожик миллатига хослиги ва шу билан бирга баҳайбат, ортга чекинмайдиган қилиб тарбияланган 20та филлари бўлганини ривоят қилишади.⁷⁷ Аскарлардан бўлак Самарқанд шаҳрида юз мингларча аҳоли истиқомат қиларди.

Чингизхон Самарқанд шаҳрига етиб келди ва шаҳарни ҳар томондан қамал қилди, аммо шаҳар ҳимояси учун Хоразм қўшинлари ўрnidан кўзғалмади. Қалбларини кўрқув чулғаб олган, шармандаларча ҳаёти дунё илинжида бўлгандилар, яъни дунё ҳаётини афзал кўрдилар. Шаҳар аҳолиси бир жойга тўпландилар ва кучсиз, тўғрироғи, руҳияти синик қўшиннинг мўғулларга қарши жангга чиқиш оқибатида мағлуб бўлиши ва мағлубиятдан кейин нималар содир бўлиши ҳақида баҳс қилишди. Омма инсонлар ичида қалбларида ҳамияти, ғурури бор етмиш минг самарқандликлар мўғулларга қарши жангга чиқишга қарор қилишди, фақиҳлар ва уламолар ҳам улар сафида эди. Улар душманга қарши отуловсиз, аскарлик қалқонлари ва совутларсиз пиёда ҳолатда жангга чиқишди. Лекин ҳали хануз уйқудан уйғонмаган масъулиятсиз, совуққон аскар қилиши керак бўлган вожибни булар қоим қилишди.

⁷³ Доктор Роғиб Сиржоний «Қиссатут-татар минал-бидаяти ила айн-жалут» (30, 31-бет).

⁷⁴ Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (158-бет).

⁷⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/365, 367), Муҳаммад Муҳиддин «Удатур-рух» (201-бет), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/91), Саллабий «ал-Мўғул» (112, 117-бет).

⁷⁶ Аҳмад Ўздемир Жузжоний (1/312) ва Жувайний (1/166) дан нақл қилади. «Мўғул истилоси» (159-бет).

⁷⁷ Аҳмад Ўздемир Жувайний (1/166) ва Рашидуддин (1/362) дан нақл қилади. «Мўғул истилоси» (168-бет).

Самарқанд халқининг жангга чиқиб келаётганини кўрган мўғуллар хатарли ҳарбий хийла ишлатишди, шаҳар деворларидан орқага чекинишди, бу билан уммат жонкуярларини шаҳардан узоқлаштиришни мақсад қилдилар. Улар бирин-кетин Самарқанддан узоқлашиб борар ва ортларига пистирмалар қўйиб кетардилар. Мўғуллар режаси натижа берган, жанг сирларидан беҳабар мусулмонлар уларни таъқиб қилиб, шаҳардан анча узоқ жойга бориб қолишган эди. Шунда мўғуллар уларни ҳар томондан ўраб, қуршаб олишди ва Самарқанднинг фақиҳлари, олимлари ва мужоҳидларидан иборат энг афзал рижолларини даҳшатли суратда қиргин-барот қила бошлади, шаҳардан чиққан 70 минг кишидан биттаси ҳам қолмай барчаси шаҳид бўлди,⁷⁸ иншаоллоҳ. Самарқанд бир лаҳзада энг афзал рижолларидан айрилди, субҳоноллоҳ!

Ҳижрий учинчи йил шаввол ойида юз берган «Уҳуд жанги»да шаҳид бўлган 70 саҳоба, шунингдек, шу йилнинг сафар ойида «Биъру маъуна»да шаҳид бўлган 70 саҳобанинг фожиаси мусулмонлар учун улкан мусибат бўлган эди. Расулulloҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам бу саҳобаларнинг қотилларини бир ой мобайнида дуои баъд қилган эдилар. Бу ерда эса, бир неча лаҳзалар ичида 70 минг мусулмон ўлдирилди, улар Самарқанд халқининг энг афзаллари эди. Бу 70 минг кишининг мўғуллар қўлида ўлдирилиши кутилган ҳол эди, чунки мусулмонлар молларини жангга тайёргарлик учун сарфламади, фарзандларининг аскарий тарбиясига эътибор бермади, давлатини ўраб турган катта куч — мўғуллар кучи борлиги хаёлларига ҳам келмади. Мўғул давлати 14 йилдан буён оёққа туриб, секин-аста ҳудуди кенгайиб, уларнинг давлатларига ҳам яқинлашиб келгани аниқ эди, шундай экан, бу кун учун тайёргарлик қаерда қолди?!

Мўғуллар мусулмон жонкуярларни кириб ташлагандан сўнг, Самарқандга қайтди ва уни камал қилди. Хоразмнинг мунтазам армияси тубан ва шарманда бир қарорга келди, шаҳар дарвозасини мўғулларга очиб бериш эвазига улардан омонлик сўради. Ибнул Асирнинг таъбирига кўра: «Мўғуллар билан биз айни ирқданмиз, улар бизни ўлдирмайдилар», дейишди. Ваҳоланки, улар мўғуллар аҳду паймонга риоя қилмасликларини, иттифоқчилик қилмасликларини яхши билишарди. Зотан, «Бухоро ҳодисаси» юз берганига ҳам кўп бўлмаган эди. Лекин улар энг тубан ҳаётга рози бўлдилар. Мўғуллар уларга омонлик беришга аҳд беришди ҳамда зимдан келишувни бузишга ва унга хилоф қилишга азму қарор қилишди. Оддий халқ ва омма инсонлар армияга қарши чиқа олмасдилар, чунки Хоразм армияси ўз халқига шер

⁷⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/367-368).

каби, душманига эса, кўрққанда бошини ерга тиқиб оладиган туяқуш каби эдилар, десак балки ўринли бўлар.

Хуллас, мунтазам армия мўғулларга шаҳар дарвозаларини очиб беришди ва таслим бўлган ҳолатда чиқишди. Мўғуллар уларга: «Қуролларингни, мол-давлатларингни ва от-уловларингни бизга топширасиз, эвазига омонлик берамиз», дейишди. Мусулмон аскар қаттиқ камситилган, хорланган ҳолатда айтганларини қилишди. Вақтики мўғуллар уларнинг қуролларини, от-уловларини олиб бўлганида ўзларидан қутилган ишни қилдилар, қиличлар ялонғочланди ва бир неча лаҳзада Хоразмнинг мунтазам армиясини битта қолдирмай кириб ташлашди.⁷⁹ Хоразмнинг мунтазам армияси ўзларига хорликни сотиб олган ва бу учун эваз беришган эдилар. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаах.

Сўнгра мўғуллар кўхна Самарқандга кириб, илгари Бухорода қилган ишларини такрорладилар. Бехисоб эркак, аёл ва болаларни ўлдиришди, юртнинг мол-мулкани талон-тарож қилишди, аёлларнинг ҳурматини тўқишди ва мисли кўрилмаган хунук азобларни беришди, катта сондаги аёллар ва болаларни асир, қул қилишди. Қулликка ярамайдиган заифларини ва кексаларини ўлдиришди, катта масжидларга ўт кўйишди, шаҳарни буткул хонавайрон ҳолатда тарк қилишди. Бу ҳодиса Бухоронинг қули кўкка совурилгандан бир ойдан кейин, яъни 617 йил муҳаррам ойида/1220 йил март ойида содир бўлди.⁸⁰

Ўша вақтда мусулмонлар нахот бу ҳодисаларни эшитиб, жим қараб турдилар?!

Мусулмонларнинг ҳурмати, обрўси топталаётганини билатуриб, нимага мўғулларга қарши бир ёқадан бош чиқармадилар?!

Дин, нафс, обрў ва молга тажовуз бўлаётганини кўратуриб, мусулмонлар қандай яна тарқоқ ҳолда юрдилар?!

Мусулмон амирлар кичик бир жойга, бир давлатга ҳокимлик қиларди, ўша ҳокимга-да бу ҳодисанинг хабари етганди, лекин чегараланган мамлакатим тинч, омон, уруш бўлмаптимми, демак омондамиз, деган эътиқодда эдилар. Бу нисбий омонлик билан ўзларини-ўзлари овунтирар, билмаган ҳолда ўзларини-ўзлари алдар эдилар. Агарчи уруш уларнинг юртларидан анча узоқ масофаларда

⁷⁹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/368–369). Жувайнийнинг нақлига кўра, улар 30 минг атрофида бўлган (1/170).

⁸⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/369), Ибн Қасир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/91), Саллабий «ал-Мўғул» (119-бет), Аҳмад Ўздемир Жузжонийдан нақл қилади «Мўғул истилоси» (170-бет).

бўлаётган бўлсада, тез кунларда ўзларининг бошига ҳам бу мусибатлар келишини бу ҳокимлар ўйламасдилар. Самарқанд ва Бухорода бўлган воқеалар қолган мусулмон давлатларидаги қонли ва аламли кунларнинг кириш қисмидир, унда на яқиндаги ва на узоқдагилар омон қолади. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Тарихда юз берган бу ҳодисаларда уммат учун, ақл эгалари учун улкан ва беҳисоб ибратлар бордир...

МУҲАММАД ИБН ХОРАЗМШОҲ ҚИСМАТИ

Мўғуллар Хоразмшоҳ давлатининг кўп қисмларини, шаҳар ва қалъаларини босиб олишди. Жумладан, Ўтрор, Хўжанд, Бамиён, Бухоро ва Самарқанд ишғол этилди. Бу ходисалар Хоразм давлатининг бошлиғи Алоуддин Хоразмшоҳга қаттиқ таъсир қилган эди. Самарқанд ишғолидан кейин тўпланган кенгашда бундан буёнига бошқа бирор кимсадан ёрдам келмаслигига қаноат ҳосил қилинди.

Воқеанинг давомини доктор Сиржоний шундай тасвирлайди: «Лаънати Чингизхон Самарқанддек гўзал, кўхна шаҳарни илгари кўрмагани сабаб, унга маҳлиё бўлиб, Самарқандни ўзига қароргоҳ қилди. Сўнгра хаёлига келган илк фикр Хоразм давлати бошлиғини йўқ қилиш бўлди, чунки давлат бошлиғи ўлдирилса, ўзига қарши қўшин тўплай оладиган кимса қолмасдан, ўлкани хотиржам ва осонгина эгаллай оларди. Шу мақсадда Субутой, Жебе ва Чингизхоннинг куёви Тохучар бошлиқ⁸¹ 20 минг⁸² отлик изқуварларни Хоразм давлати бошлиғи Хоразмшоҳни тутиб келиш учун жўнатаркан уларга: «Хоразмшоҳни қаердан бўлса ҳам, агарчи осмонга чиқиб кетган бўлса ҳам топасизлар», деди.⁸³

Шундай муҳим ва катта бир вазифага 20 минггина қўшинни жўнатиши Хоразмшоҳ ва Ислом умматининг устидан очикчасига кулганлигига, мазаҳ қилганлигига ишора эди. Чунки миллионларча мусулмонларнинг ичига сафарбар этилган бу арзимаган сондаги 20 минг мўғул армияси мусулмонлар сонига нисбатан ҳеч қанча эмасди. 20 минг мўғул суворийлари тўғри пойтахт Урганч шаҳрига йўл олишди. Хоразмшоҳ Жайхун дарёси, ҳозирги кундаги Амударёнинг ғарбий соҳилида эди. Мўғуллар дарёнинг шарқий соҳилига етиб келишди, дарё бу икки гуруҳни иккига ажратиб турарди. Мусулмонлар ўзлари билан мўғуллар орасини дарё ажратиб турганига ва мўғулларда қайиқлару, кемалар йўқлигига ишониб, ўзларини дадил тутардилар. Мўғуллар эса, ёғочдан бочкалар тайёрлашди, ўзлари сув ўтказмайдиган қилиб устларига сигир териларини кийишди, сўнгра бочкаларга қурол-

⁸¹ Рашидуддин «Жомиъут-таворих» (1/371, 374).

⁸² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/369). Жувайний ва Насавийнинг ривоятида 30 минг экани айтилади. Насавий «Сийратус-султон» (102-бет), «Мўғул истилоси» (171-бет).

⁸³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/371), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/91), Сиржоний «Қиссатут-татар» (34-бет).

аслахларини, керак-яроқларини ва бошқа нарсаларини солишти. Сўнгра отларни сувга тушириб, думларига бочкаларни боғладилар. Маълумингизки, отлар сувда яхши сузиш қобилиятига эга. Отлар сувда сузиб, оркасига боғланган, ичига қуроллар ва бошқа нарсалар солинган бочкаларни олиб ўтар эди. Шу тариқа мўғуллар улкан дарёни кесиб ўтдилар.⁸⁴

Муҳаммад ибн Хоразмшоҳнинг ҳамроҳлари, давлат ҳимоячилари бўлмиш Хоразм армиясининг кўзи қаерда эди?!

Мўғул аскарлари Урганч шаҳридаги мусулмонларни эсанкиратиб қўйди. Мусулмонларнинг адади жуда кўп бўлиши билан бирга қалблари мўғуллардан кўркувга тўла эди. Ўзлари билан мўғуллар орасини катта дарё ажратиб турганига бўлган ишончларигина ўзларини йўқотмасдан туришини таъминларди. Лекин тонг отганда мўғулларни қаршиларида кўрдилар, мўғуллар етиб келибди, деб улар билан жанг қилишдимми? Йўқ, аксинча, қочишдан бошқа чора топмадилар! Бу ҳодисани Ибнул Асир шундай баён қилади: «Муҳаммад ибн Хоразмшоҳ хос кишиларига ҳам қиё боқмай, қариндошларини, яхши кўрганларини ва оиласини тўплада-да, ҳозирги кундаги Эронда жойлашган Нишопурга қараб йўл олди. У шаҳардан бу шаҳарга кўчиб юрди, мунтазам армия эса, ҳар томонга тарқалиб кетди.⁸⁵ Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Мўғул изкуварларининг вазифаси маълум ва аниқ: Муҳаммад ибн Хоразмшоҳни тутиб келиш эди. Шунинг учун улар Урганчга кирмадилар, Нишопурга қараб йўналдилар. 20 мингдан кўп бўлмаган ҳолларида Исломо ерларининг тобора ич-ичигача кириб борардилар. Чингизхоннинг ўзи эса, Самарқандда ўтирарди. Бу 20 минг мўғул аскарни Исломо диёрларининг тўрисиغا кириб келганларида ўртага олиб кириб ташласа бўларди, аммо мусулмонларнинг қалбларига мўғуллардан бўлган кўркув ўрнашиб бўлган эди. Кўриб турганимиздек, давлатдан давлатга, шаҳардан шаҳарга қочиб юрган бошлиқлари Муҳаммад ибн Такаш Хоразмшоҳга эргашган ҳолатда қочиш йўлини танладилар. Бу кутурган мўғул изкуварлари олдиларидан чиққан шаҳарлар аҳолисини ўлдирмадилар, талон-тароҷ қилмадилар ва уларга қайрилиб ҳам қарамадилар. Чунки топшириқлари ва мақсадлари аниқ эди, вақтларини ўлдириш, ғаниматлар жамлашга сарф қилмадилар, фақат мусулмон бошлиқни ушлашни қасд қилдилар. Бошқа томондан, инсонлар ҳам мўғулларнинг ғазабини келтириб, ўзларига бало орттириб

⁸⁴ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/370), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/92).

⁸⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/370), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/93), Насавий «Сийратус-султон» (104–106-бетлар).

олмасликлари учун уларга қаршилик қилмади ва барча инсонлар уларга йўл очиб бердилар. Мана шу тарика мўғул аскарлари жуда осонлик билан қисқа вақт ичида буюк Нишопур шаҳрига яқин келди. Мўғуллар ортидан қувиб келаётгани сабабли Хоразмшоҳ атрофига на ансорларни ва на армияни тўплай олди. Мўғуллар яқинлашиб қолганини эшитиши биланоқ, шаҳарни тарк қилди ва ҳозирда Эронда жойлашган Мозандарон шаҳрига йўл олди. Мўғуллар уни шаҳардан чиқиб кетганини эшитганида, улар ҳам унинг изидан Мозандаронга қараб юрдилар. У эса, Мозандарондан чиқиб, Ҳамадон шаҳрига отланди. Бу шаҳар ҳам Эронда жойлашган. Мўғуллар унинг пайида... У яна шармандаларча қочиб, яна Мозандаронга қайтди. Ундан сўнг, Хазар⁸⁶ денгизи соҳилида жойлашган Тобаристон шаҳрига юзланди.⁸⁷

Насавийнинг хабар беришича, у маълум вақт соҳилдаги қишлоқларнинг биридаги масжидда мусулмонларга имомлик қилиб юрди. Агар Оллоҳ таоло мўғуллардан омонлик бериб, салтанатимни қайтариб берса, адолатни қоим қиламан, деб назр қилди.⁸⁸ Баногоҳ, яшириниб юрган жойи мўғул изкуварларга маълум бўлиб қолади ва унинг маконига ҳужум қилишади. Шунда у ердан қочиб, денгиз соҳилида кемага минади ва қочиб кетади, мўғуллар етиб келганида Хоразмшоҳ соҳилдан анча узоклашиб қолган эди, улар кема тополмай, орқасидан камондан ўқ узишади, ўқлар ҳам мўлжалга тегмайди. Ўқлар ҳавога кетганини кўриб, жаҳл устида бир-бирларини ғиж-ғижлаб, кема ортидан баъзилари ўзини денгизга отади, Насавийнинг таъбири билан айтганда, сув уларни дўзах сари бошлади, яъни улар денгизга ғарқ бўлди.⁸⁹ Мусулмонларнинг буюк бошлиғи Муҳаммад ибн Такаш Хоразмшоҳнинг қочоклиги ниҳоясига етган, мўғуллардан «ғоят зўр» қутулган эди.

Хоразмшоҳ шармандаларча қочиб Обисқун⁹⁰ оролида жойлашган Амина қалъасига ҳолдан тойган ва касал ҳолда етиб олади.⁹¹ Ушбу қалъада қаттиқ фақирлик ва оғир ҳаёт кечиришга рози бўлади. Бепоён давлатнинг подшоси, ҳисобсиз мол-мулкнинг соҳиби эди, лекин ўлимдан қочиб, буларга рози бўлган эди. Аммо у ўлимдан ҳеч ким қочиб қутула олмаслигини унутган кўринади. Алоуддин Муҳаммад

⁸⁶ Каспий денгизи.

⁸⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/371), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/93).

⁸⁸ Насавий «Сийратус-Султон» (106), Саллабий «ал-Мўғул» (121).

⁸⁹ Насавий «Сийратус-Султон» (106-бет).

⁹⁰ Рус. Абесқун. Баъзи манбаларда Ашура ороли деб келган.

⁹¹ Насавий «Сийратус-Султон» (106), Саллабий «ал-Мўғул» (121-бет).

Хоразмшоҳ кўп ўтмасдан зотилжам касали оқибатида⁹² 617 йил 22 зулҳижжа/1221 йил 24 феврал куни шу оролда, ўша қалъа ичида ёлғиз, бадарға қилинган, қочоқ ва фақир ҳолатда оламдан кўз юмди.⁹³

Ҳатто кафанлик ҳам тополмасдан, уни эғнидаги кўйлагига кафанладилар.⁹⁴ Субҳаноллоҳ!

«Қаерда бўлсангиз, ҳатто мустаҳкам қалъалар ичида бўлсангиз ҳам ўлим сизларни топиб олур».⁹⁵

«Ҳар бир жамоат учун ажал бордир. Бас, қачон уларга ажаллари келса, уни бирон соат кетга ҳам, илгарига ҳам сура олмайдилар».⁹⁶

Мусулмон подшоҳни номаълум оролда хор бўлиб ўлгани афзал эдими ёки қадди рост, мағрур, собитқадам ва қалби хотиржам ҳолатда жанг майдонида ўлганими?!

Ортига киё боқмай қочқин ҳолатда ўлган яхшими ёки шаҳид ҳолатда кетганими?!

Инсон ўлим вақтини белгилай олмайди, лекин ўлим йўлини танлай олади. Шижоат умрни ҳеч қачон қисқартирмаганидек, жангдан қочиш ва кўрқоқлик ҳам умрни узайтирмайди. Оллоҳнинг йўлида жангда юрган киши тўшагида ўлса ҳам, Оллоҳнинг йўлида ўлган ҳисобланади. Имом Муслим ўзининг «Саҳиҳ»ларида Саҳл ибн Ҳунайф разияллоҳу анҳудан ривоят қилади, Расулulloҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам шундай дедилар: *«Ким Оллоҳдан сидқидилдан шаҳидликни сўраса, гарчи тўшагида ўлса ҳам, Оллоҳ уни шаҳидлар мартабасига етказди».*⁹⁷

Муҳаммад ибн Такаш Хоразмшоҳнинг сийрати ва энгилиш сабаблари

Аллома Ибнул Асирнинг Алоуддин Муҳаммад Хоразмшоҳ таржимаи ҳоли таърифида ажойиб сатрларни топамиз, буюк мусулмон имомларининг бири кўз ўнгингизда гавдаланади. Агар бу киши ҳаётининг бошқа томони — хотимаси, жангдан қочгани ва энгилганига назар солсангиз, ҳафсалангиз пир бўлади. Ибнул Асир унинг сийратида куйидагиларни келтиради: «Подшоҳлик даври 21 йилу бир неча ой

⁹² Насавий «Сийратус-султон» (106-бет).

⁹³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/371), Саллабий «ал-Мўғул» (121), Насавий «Сийратус-султон» (107-108).

⁹⁴ Насавий «Сийратус-султон» (108-бет).

⁹⁵ Нисо: 78.

⁹⁶ Аъроф: 34.

⁹⁷ Муслим ривояти (3/1517), (1909).

давом этди, ҳокимияти кенгайди, шон-шухрати ортди, мамлакати Ироқнинг чегарасидан Туркистонгача етди. Афғонистондаги Ғазна, Ҳиндистоннинг баъзи қисми, Покистондаги Сажистон ва Кармон, Эрондаги Тобаристон, Журжон, Тоғ мамлакати, Хуросон ва Форснинг баъзи қисмларига ҳукмронлик қилди. Бу ўлкаларнинг барчаси мўғуллардан қочган мусулмонлар бошлиғининг қўл остида эди».⁹⁸ Бу сатрлардан мамлакати жуда катта бўлгани ва шу билан бирга узок вақтлар буюк давлатни бошқариб келганидан унинг омилкор бошқарувчи бўлгани маълум бўлади.

Ибнул Асир бошқа ўринда шундай дейди: «Қийинчилик ва йўл машаққатларига ўта бардошли, роҳат-фароғат, айшу-ишратга ҳирс қўймаган, бутун эътибори мамлакат бошқаруви, юрт ва халқ хавфсизлиги эди».⁹⁹

Шахсий ҳаётидан куйидагиларни айтади: «Фозил инсон бўлиб, фикҳ, ҳадис ва бошқа илмлар олими, уламолар ва дин аҳлини эъзозловчи, уларни яхши кўриб, эҳсон қилувчи эди».¹⁰⁰

Бу сифатлар Хоразмшоҳни юқори мақомларга кўтаради, шундай юксак сифатлар соҳиби бундай аянчли ва хунук мағлубиятга учраши мумкинми?

Наҳотки, шундай кенг мамлакат ҳокими мўғулларга қарши жангда сабр билан тура оладиган жангчиларни тополмасдан, шарманда ва фожиали хотимага юз тутди?

Сиржоний айтадики, бу ўриннинг таҳлили диққатимни тортди, сўнгра Ибнул Асирнинг китобида бу инсоннинг ҳаётидаги сир-асрорларнинг кўпини очиб ташлайдиган ўринни топдим. Ибнул Асир айтади: «Муҳаммад ибн Хоразмшоҳ бир давлатни босиб олар ва унинг подшоҳларини ўлдирар, ёлғиз ўзи барча ўлкаларга султон бўлар эди. Мўғуллардан енгилганида юртда мўғулларга қаршилик қиладиган ва мамлакатни ҳимоя қиладиган киши (султон) қолмаган эди».¹⁰¹

Хоразмшоҳ мусулмон ва бошқарувчи сифатида ажойиб инсон эди, бироқ ўзи билан атрофидаги Ислом шаҳарлари, мусулмон амирликлари орасидаги барча алоқаларни узиб қўйган ва улар билан ҳамкорлик қилмас эди. Ҳамкорликни тиклаш ўрнига бу шаҳарлардаги ҳокимларни ўлдириб ёки зиндонга ташлаб, шаҳарларни ўз мамлакатига қўшиб олган

⁹⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/372).

⁹⁹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/372).

¹⁰⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/372).

¹⁰¹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/362).

эди. Шак-шубҳа йўкки, бу нарса ўша юртларнинг халқлари қалбида чексиз нафрат, адоватни пайдо қилганди. Бу эса, ҳикматсизлик эди.

Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам бирор ўлкани фатҳ қилганларида у ерларнинг бошлиқларини волий ҳолида қолдирар, бу билан ҳокимлар ва халқнинг муҳаббатига эришар эдилар. Масалан, Баҳрайннинг подшоси Мунзир ибн Савий иймон келтирди, уни ўз ўрнида, яъни давлатининг ҳокимлигида қолдирдилар. Уммоннинг подшоҳлари Жайфар ва Аббод исломни қабул қилганларидан сўнг, уларни ҳам волийликларида қолдирдилар. Яманнинг волийси Базон ибн Сасон ал-Форсий иймон келтирди, уни юртига волий этиб тайинладилар. Бу сиёсат, ҳикмат ва ўта юксак бошқарув услубидир.

Муҳаммад ибн Такаш Хоразмшоҳ инсонлар муҳаббати билан эмас, қаҳр ва куч-қувват билан ҳоким бўлди. Натижада инсонларга иши тушиб, уларга муҳтож бўлганда улардан ҳамкорликни топмади. Хоразм давлатида ички кўзғолонлар тўхтамасди. Шу сабабдан халқнинг фикри тарқоқ ва бир ёқадан бош чиқара олмасдилар. Умнатнинг ҳоли бу экан, нусрат келиши амримаҳолдир.

«Албатта, Оллоҳ Ўзининг йўлида гўё (ҳар бир қисми ўзаро) туташ (мустаҳкам, бир бутун) бинодек бир сафга тизилган ҳолларида жиҳод қиладиган зотларни севар».¹⁰²

Бу кўмондон, олим ва фақиҳнинг ҳаётидаги сирдир, давлати кенгайиб, аскари кўпайди, сўнгра денгизнинг ўртасида ёлғиз, бадарға қилинган, қочоқ ва фақир ҳолатда оламдан ўтди.

Насоий ва Абу Довуд, Абу Дардо разияллоҳу анҳудан ривоят қилишган ҳадисда, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам шундай дедилар: *«Жамоатни лозим тутинглар! Чунки бўри ҳам (подадан) четда қолган қўйни ейди».*¹⁰³

20 минг мўғул изқувари Хоразмшоҳнинг ортидан кувиб, тута олмаган ва Хоразмшоҳ кемада қочиб, Каспий денгизидаги оролга етиб олиб, мўғул изқуварларидан қутулган эди.

Бундан сўнг бу мўғул армиясининг кичик бўлаги нима қилди?

Атиги 20 минг бўлган бу мўғул суворийлари нима қилишга қарор қилди?

Ислом давлатининг ич-ичига Хоразмшоҳни ахтариб кирган мўғул изқуварлари турган жой, яъни Каспий денгизи соҳили билан мўғул хони

¹⁰² Соф: 4.

¹⁰³ Насоий (847) ва Абу Довуд (1/150, 547) ривоятлари.

Чингизхон жойлашган жой, яъни Самарқанд шаҳри орасидаги масофа — текис ва тўғри йўл бўлган тақдирда 650 километрдан ортиқроқ эди. Агар Самарқанд билан Каспий денгизи орасидаги минтақаларда мавжуд бўлган ўта машаққатли табиий ғовлар, тўсиқлар ҳисобланган тоғлар ва анҳорларни эътиборга олсак, мўғул изқуварлари турган жой билан мўғул хони Чингизхон ўрнашган макон орасидаги бу масофанинг нечоғлик катталигини бамайлихотир тасаввур қила оламиз. Шунингдек, мўғуллар бу минтақанинг аҳолиси бўлмагани, ундаги ҳаёт тарзи ва йўллари билмасликлари ҳамда бу ерларда жафо чеккан халқларнинг қалбларидаги мўғулларга нисбатан ашаддий адоватларини ҳисобга олсак, бу мўғул изқуварларининг Самарқанддан не қадар узоқда эканини фаҳмлаймиз.

Бу минтақаларнинг аҳолиси муболағасиз бир неча миллион бўлиб, 20 минг мўғул суворийлари уларга бас кела олмаслиги турган гап эди. Чингизхон ҳам 650 километрдан ортиқроқ узоқликда эди. Лекин воқеликда эса, аянчли ва шармандали ишнинг гувоҳи бўлдик, мусулмонларнинг қалбига руҳий тушқунлик, кўрқув сингиб кетган, ҳақир дунёга ўралашиб қолган ҳамда ўз масканлари ва шаҳарларида ўша озгина мўғул армияси қўлида ўлишни ўзларига эп кўрган эдилар. Субҳоноллоҳ!

Имом Абу Довуд ва Аҳмад ўзларининг ҳадис тўпламларида Савбон разияллоҳу анҳудан ривоят қилишган саҳиҳ ҳадисда, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам шундай дейдилар: *«Миллатлар хўранлар овқатига йиғилганидек, сизнинг устингизга йиғилиши арафасида»*. Шунда саҳобалар: *Эй Оллоҳнинг Расули! Ўша кунда озлигимиздан (шундай бўламиз)ми? — деб сўрадилар. Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам дедиларки: «Йўқ, у кунда сизлар кўпчилик, лекин худди селнинг кўпиги каби бўласизлар. Душманларингиз қалбидан кўрқув олиб қўйилади ва сизларнинг қалбингизга эса, ваҳн солиб қўйилади»*. Шунда саҳобалар: *Ваҳн нима? — деб сўрадилар. Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам: «Ваҳн, бу дунё ҳаётини яхши кўриб, ўлимни ёмон кўришидир»*, — деб жавоб бердилар.¹⁰⁴

Дарҳақиқат, мусулмонларнинг қалбларини дунёга бўлган муҳаббат ва ўлимни ёмон кўриш эгаллаб олган, сел оқимида қўшилиб оқувчи кўпиклару хаслар каби бўлиб қолишган эди. Уларнинг на ўз истаги, на ғояси ва на мақсади бор эди. Оллоҳ азза ва жалла мўғулларнинг қалбидан мусулмонлар ҳайбатини кўтарган, мусулмонларнинг қалбига эса, ваҳнни — дунё ҳаётини яхши кўриб, ўлимни ёмон кўришни, заифлик ва

¹⁰⁴ Абу Довуд (4/111) ва Аҳмад (5/278) ривоятлари.

рухий тушкунликни солган эди. Уларнинг кўплиги фойда бермади. Ҳатто битта мўғул юзлаб мусулмонларнинг қаршисидан чиққанда, оёқларини ердан узишга ва унга қарши чиқишга тоқат қила олмадилар. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

ФОРС ДИЁРИГА МЎҒУЛ ЮРИШИ

Мозандарон, Рой, Қозвин, Арманистон ва Грузияда мўғуллар босқини

Мўғул изкуварлари нима қилди?

20 минг хос армия Каспий денгизи соҳилидан Мозандаронга қайтди ва мустаҳкам кўрғони, шаҳарга кириш машаққатлилигига ва мусулмон мамлакатларнинг ичида энг қувватлиларидан бири бўлишига қарамай, уни киска фурсатда забт этди. Умар разияллоху анху халифа бўлган даврларда мусулмонлар Кисронинг давлатларини бошдан охиригача фатҳ қилганларида ҳам Мозандаронга кира олмаган эдилар. Бу шаҳар Умавийлар халифаси Сулаймон ибн Абдулмалик замонидагина фатҳ қилинган эди. Лекин мўғуллар жуда киска фурсатда унга кирдилар, бинобарин, қувватлари билан эмас, балки ўша вақтдаги Мозандарон халқининг руҳан заифлиги сабаб, уни осонлик билан қўлга олдилар. Шаҳарга киришлари биланоқ ўзгаларга қилганлари — ўлдириш, азоблаш, асир олиш, вайрон этиш, бандалар ва шаҳарни ёқиш амалиётларини қилишди, сўнгра Ройга қараб йўл олдилар.

Рой ҳам Эроннинг катта шаҳарларидан бири эди. Мўғуллар Мозандарондан Ройга қараб кетиш асносида йўлда Муҳаммад ибн Хоразмшоҳнинг онаси, хотини ва улар билан бирга мисли кўрилмаган мол-мулк ва захираларга дуч келдилар. Уларнинг барчасини қул ва ғанимат ўлароқ ўзлаштирдилар ва зудлик билан ўша вақтда Самарқанд шаҳрида ўтирган Чингизхонга жўнатдилар. Гўё Оллоҳ азза ва жалла Муҳаммад ибн Хоразмшоҳга ўлимидан кейин ҳам хорликни тўла-тўқис қилишни ирода қилгандек! Бу воқеани муаррих Саллабий қуйидагича баён қилади: «Хоразмшоҳнинг онаси Туркон Хотун 616/1219 йилнинг охирларида ўзининг оқсочлари, ўғли Алоуддиннинг хотини, болалари ва шунингдек, хазинадан ололганларича олтин-кумушларни олиб, Хоразм минтақасини тарк қилди. Кетишидан олдин ваҳшиёна, жирканч бир ишга қўл урди. Хоразмшоҳ босиб олган мамлакатларнинг амирлари Хоразм қамокхоналарида маҳбус эдилар, уларнинг барчасини ўлимга ҳукм қилди. Ўлимга ҳукм қилинганлар жумласидан, Салжуқийлар султонининг фарзандлари, Балх, Термиз, Бамиённинг амирлари, Ғурийлар давлати подшосининг авлодлари ва бошқа амирлар бор эди.¹⁰⁵

¹⁰⁵ Насавий «Сийратус-султон» (94-бет).

Сўнгра Ироққа қараб йўлга чиқди, Мозандарон қалъаларидан бирида мўғул саркардаси Субутой томонидан асирга олинади ва Чингизхонга жўнатилади. Чингизхон Хоразмшоҳнинг болаларини ёш бўлишига қарамай ўлдиради, шунингдек, иккита қизини ўғли Чигатойга беради. У эса, биттасига уйланади, иккинчисини ўзига яқин одамларидан бирига беради. Учинчи қизини ходими Донишманд Ҳожибга беради. Шу тариқа, Хоразм иқлими Хоразм хукмдорларидан айрилади».¹⁰⁶

Мўғуллар Рой шаҳрига етиб келиб, уни босиб олдилар ҳамда шаҳарни хонавайрон, аёллар ва болаларни қул қилдилар, тарихда мисли кўрилмаган хунук ишларни амалга оширдилар. Сўнгра шаҳар атрофидаги шаҳар ва қишлоқларни ҳам шу аҳволга солиб, Қозвин шаҳригача етиб келишди ва у ерда 40 минг мусулмонни қиличдан ўтказишди.¹⁰⁷ Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

Сўнгра мўғуллар Каспий денгизининг ғарб томонида жойлашган мусулмон Озарбайжон юртига лашкар тортди. Йўл давомида ўша вақтлар Озарбайжонга қараган, унинг шарқий томонида жойлашган, ҳозирги кунда Эроннинг ҳудудидаги шаҳар бўлган Табриз шаҳрининг ёнидан ўтишди. Шаҳар амири Ўзбек ибн Паҳлавон мол-давлат, кийим-кечак ва от-улов эвазига мўғуллар билан сулҳ тузишга қарор қилди, уларга қарши урушишни мутлақо ҳаёлига келтирмади. У ичкиликка муккасидан кетган, эртаю-кеч шароб ичишдан бўшамас эди. Ўша вақтда кўпчилик мусулмон бошлиқлар ҳаром ичимлик ичишдан тап тортмас эди.¹⁰⁸ Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Мана бугунги кунда ҳам атрофга бир назар солинг, ғайридинлар назарида мусулмон ҳисобланган давлатлар раҳбарларининг аҳволи ҳеч кимга сир эмас. Кўп узокқа бормайлик, масалан, Ўрта Осиёдаги давлат раҳбарлари ҳам ўзларини мусулмон ҳисоблашади, лекин қилаётган ишларига назар солган киши ҳайратдан капалаги учиб кетади. Демак, мўғуллар даврида ҳам худди бугунги кунимиздаги каби мусулмончиликнинг фақат оти қолган экан...

Мўғуллар ҳадялар эвазига шаҳарни омон қолдирди. Зеро, бу минтақада аччиқ, қаҳратон қиш бошланган эди.¹⁰⁹ Сўнгра мўғуллар

¹⁰⁶ Насавий «Сийратус-султон» (97-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (125–126-бет), Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий D'ohsson «Histoire des Mongols» (260-бет) дан нақл қилган «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (161–162).

¹⁰⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/92), Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/374).

¹⁰⁸ Сиржоний «Қиссатут-татар» (42-бет).

¹⁰⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/92), Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/374).

Каспий денгизнинг ғарбий соҳили томон юришди, Табризни маълум вақтга ўз холига ташлаб қўйишди. Озарбайжоннинг шарқидан бошлаб, шимолий томонига қараб эгаллаб бордилар. Йўл асносида Арманистон ва Грузияга хужум уюштирдилар. Рисоламизнинг бошида зикр қилганимиздек, Арманистон халқининг аксарияти насронийлар эди. Грузияда эса, васаний ва насроний грузин қабилалари бор эди.

Мўғуллар бу икки давлат билан жанг қилди, уруш арманлар ва грузинларнинг мағлубияти, мўғуллар қўлининг баланд келиши билан якун топди. Мўғуллар бу юртларда ҳисобсиз даражада қирғин-барот, катағонлар қилишди ва бу давлатларни ўз мамлакатлари доирасига қўшиб олишди.¹¹⁰

Мўғуллар мусулмонлар қирғинидан насронийларга ўтган эди. Бу зикр қилганларимиз қирғинлар, вайронагарчиликлар, кул қилишларнинг барчаси мўғул армиясининг кичик бўлаги — Хоразмшоҳ кетидан тушган 20 минг изкуварларнинг иши эди. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаа...

Фарғона водийси, Термиз шаҳри ва Кулоба қалъасининг яксон қилиниши

Чингизхон Хоразмшоҳнинг қочиб кетганига ишончи комил бўлгандан сўнг, Самарқанд атрофидаги минтақаларга кўз олайтира бошлади, уларнинг ичида энг ҳашаматли ва кучлилари Хоразм ва Хуросон минтақалари эканини яхши биларди. Хуросон минтақаси Ислом оламининг улкан жойларидан бири бўлиб, унда катта шаҳарлар мавжуд эди, уларнинг машҳурларидан: Балх, Марв, Нишопур, Ҳирот, Ғазна ва бошқалар бор эди. Хуросон минтақаси ҳозирги кунда Эроннинг шарқи ва Афғонистоннинг шимолига тўғри келади. Хоразм минтақаси эса, Хоразм давлатининг негизи, асоси бўлиб, мустаҳкам қалъа ва кўрғонлари, турли-туман бойликлари ва жанг маҳоратлари билан тилларда дoston эди. Хоразм Самарқанднинг шимоли-ғарбий томонида жойлашган бўлиб, ундан ҳозирги кунда Ўзбекистон ва Туркменистон давлатлари орасидан оқиб ўтувчи Жайхун, яъни Амударё оқиб ўтади. Чингизхон Хоразм ва Хуросон минтақаларига хужум қилишдан олдин, маънавий жангни бошлади, бу билан мусулмонларнинг руҳиятига таъсир ўтказишни хоҳлади. Бу улкан минтақалардаги мусулмонларнинг қалбларига қўрқув солиш мақсадида йўқ қилиш, яксон этиш амалиётини

¹¹⁰ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/92), Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/375-376).

бошлади. У мўғул армиясини уч гуруҳга ажратди: биринчи гуруҳни Фарғона водийсига, иккинчисини Термиз шаҳрига ва учинчи гуруҳни Кулоба қалъасига юборди.¹¹¹

Фарғона водийси Самарқанднинг шарқий томонида тақрибан 500 километрдан кейин келадиган, Термиз эса, Самарқанднинг жанубида тақрибан 100 километрдан (ўша пайтдаги чегаралар ҳисобида) кейин бошланадиган шаҳар эди. Термиз «*Сунани Термизий*» ҳадис тўплами соҳиби имом Термизийнинг шаҳридир. Кулоба қалъаси Жайхун дарёсининг соҳилидаги энг мустаҳкам қалъалардан бири эди. Бу учала гуруҳ, Чингизхон хоҳлаганидек, яқсон қилишга киришди, минтақаларнинг ҳаммасини ишғол қилди ва у ерларда мўғулларнинг одатига кўра қатл, қирғин, вайрон қилиш, таҳқирлаш, қул қилиш, асир олиш ишларини олиб бордилар.¹¹² Сўнгра ён-атрофдаги халқларга мактуб йўлладилар. Мактуб қуйидагиларни сўзлар эди: «Мўғуллар чанқоғини фақат қон билан қондиради, фақат хонавайрон ва яқсон қилиш билан бахтиёр, кўнгли чоғ бўлади, мўғуллар енгилмайди...».¹¹³ Бундан сўнг, бутун халойиқ кўрқувга тушди. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

¹¹¹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/95), Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/389).

¹¹² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/389).

¹¹³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (44-бет).

ХУРОСОН ЕРЛАРИГА МЎҒУЛ БОСҚИНИ

Балхнинг таслим бўлиши

Сўнгра Чингизхон бундан-да кабиҳроқ ишга тайёргарлик кўра бошлади. Хоразм ва Хуросон ерларига ҳамла қилиш учун ҳозирлик бошлади, дастлаб Хуросон диёрига ҳужум уюштирди. Чингизхоннинг ўғли Тулихон¹¹⁴ 617/1220 йилнинг куз фаслида отасининг буйруғига кўра Хуросон ерларига отланди. Чингизхон Тулихоннинг зиммасига 70 минг кўшин бериб, ўзи Балх шаҳрига жўнади.¹¹⁵

Балх шаҳри Афғонистоннинг шимолида ва мўғуллар хонавайрон қилган Термиз шаҳрининг жанубида жойлашган шаҳардир. Бу шаҳар Хоразм давлатининг асосий шаҳарларидан бўлиб, Ўрта Осиёдаги катта тижорий ўринларидан бири эди. Айтишларича, у ерда кичик масжидлардан ташқари 1200 та катта масжидлар ҳамда тижоратчилар учун кўп кулайликлари бўлган шаҳар эди. Балх шаҳрининг халқи Термиз шаҳрида бўлган воқеалардан хабар топгани аниқ, бунинг натижаси ўлароқ, уларнинг қалбларида мўғуллардан жуда қаттиқ қурқув юзага келган эди. Мўғул аскарлари бу шаҳарга келганида шаҳар аҳли мўғуллар тарихидаги қора кунлар ва ваҳшийликларни билган ҳолларида улардан омонлик сўради. Шунда мўғуллар одатига ёт, ҳайратда қолдирувчи ҳодиса содир бўлди, улар шаҳар аҳлини ўлдирмай, талон-тарож ва қул қилмай, уларга ҳақиқий суратда омонлик берди. Балх шаҳри 618 йил (617)¹¹⁶/1221 йилда таслим бўлган эди.¹¹⁷ Чингизхоннинг бу иши жуда «қизик» эди, лекин бу ажабланиш бир неча кундан кейин, Балхга қайтганида тамоман йўққа чиқади...

Насо шаҳри қирғини

Тулихон 617/1220 йилда Хуросон ерларига юришни бошлади, унинг бир неча ўн минг аскарлари Чингизхоннинг куёви Тохучарнинг кўмондонлигида Насо шаҳрига юриш қилди. Тохучар лашкарининг бир

¹¹⁴ Ёки Тулий, Тули (тах. 1192–1230) Чингизхоннинг кенжа ўғли, Чингизнинг ҳарбий ишлари бўйича бош маслаҳатчиси, саркарда. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Т» ҳарфи бўлими).

¹¹⁵ Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (172-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (130-131).

¹¹⁶ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/390).

¹¹⁷ Саллабий «ал-Мўғул» (131).

бўлаги шаҳарга яқинлашганда мусулмонлар уларни ўққа тутишди, оқибатта бу қисмининг командири Балкуш ва катта сондаги аскарлар ўлдирилди. Кейин Тохучар бу ўринга етиб келади ва шаҳар атрофига 20 та манжаникларни¹¹⁸ ўрнатиб, шаҳарни ўққа тутишга буйруқ беради. 15 кундан кейингина шаҳар деворлари дарз кетиб, мўғуллар кечаси шаҳарга кириш имконига эга бўладилар. Тонг отганда ҳарбий бўлим командири Балкушнинг қасосини олишга киришадилар. У шаҳар аҳолисининг ҳаммасини ташқарига чиқариб, бир қаторга ёнма-ён саф бўлиб ва қўлларини орқага қилиб туришга буюрди, сўнгра эркаклар, аёллар ва гўдакларни, ҳатто чақалоқларни, ҳамма-ҳаммани қатл қилдирди. Пана жойларда яшириниб, тирик қолганларнинг хабар беришича, бу шаҳардан ўлдирилганлар сони 70 мингдан ошиб кетганди.¹¹⁹ Ва лаа хавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

Жалолоддин Хоразмшоҳнинг муншийси Насавийнинг хабар беришича, Насо шаҳрида мўғуллар қиличи билан қатл қилинганлар сирасида имом Шиҳобиддин Ҳивакий ҳам бор эди. Оллоҳ уни Ўз раҳматига олсин.¹²⁰

Толиқон шаҳри қирғини

Самарқанддан чиққан бир гуруҳ мўғул қўшини Толиқон сари отланди. Толиқон Афғонистоннинг шимоли-шарқий тарафида Тожикистонга яқин жойда жойлашган шаҳар эди. Бу шаҳар мустаҳкам кўрғонли бўлгани учун уни ишғол қилиш анча машаққат туғдирди. Мўғуллар Чингизхондан мадад сўрашга мажбур бўлишди. Чингизхоннинг шахсан ўзи келиб, шаҳарни бир неча ой мобайнида камал қилди ва охир-оқибат кўрғонни бузиб киришга муваффақ бўлди. Шаҳардаги эркакларни битта қолдирмай қатл қилиб, аёллар ва болаларни асир қилди ва мол-мулкини талон-тарож қилди.¹²¹

¹¹⁸ Тошотар ҳарбий қурилма. Эшилган пай, тола ёки жуннинг эгилювчанлик кучи остида ҳаракатга келтирилган. Мўғул босқинчилари тош топмасдан, тутнинг кундаларини кесиб, шаҳарни ўққа туганлар. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («М» ҳарфи бўлми).

¹¹⁹ Ҳофиз Ҳамдий «ад-Давлатул-хаваризмийя вал-мўғул» (172-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (131-132).

¹²⁰ Насавий «Сийратус-султон» (124-бет).

¹²¹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (45-бет).

Марв фожиаси

Бир неча кун ўтгач, Чингизхон Балхга қайтди ва халқига мусулмон Марв¹²² шаҳрини ишғол қилишда кўмак беришларига амр этди. Улар мўғуллар билан бирга Марв шаҳрини ишғол қилгани боришди. Балхликларнинг барчаси мусулмон эди, лекин Термиз шаҳрида Чингизхоннинг буйруғи билан содир этилган даҳшатли, ўта ярамас, жирканч амалларнинг натижаси ўларок, қалбларидаги рухий тушкунлик оқибатида ҳатто биродарларига қарши жанг қилишдан ўзга чора тополмадилар. Инсон ўлдирувчи ҳам, тирилтирувчи ҳам, жон бериб, жон олувчи ҳам оламлар Раббиси Оллоҳ субҳонаху ва таоло эканини унутса, ўлимдан кўрққанидан мана шундай тубанликка, ўз ака-укалари — мусулмон биродарларини ўлдиришга ҳам тайёр бўлиб қолар экан, субҳоноллоҳ!

Чингизхон шу тариқа бошқа жанглار учун куч йиғар, ҳозирлик кўрар, мусулмонлар эса, бир-бирини қирар эдилар. Бу ҳодисаларнинг такрорига тарихлар оша кўп гувоҳ бўлмоқдамиз! Ҳодисаларнинг ўта ўхшашлиги ҳайратомуздир. Бу оламлар Рабби субҳонаху ва таолонинг Ер юзида жорий қилган қонунларидандир. Тарих батамом, бутун кўринишлари билан такрорланади. Шу боис ибрат олиш учун ундаги қиссаларни ҳикоя қиламиз...

Балхлик мусулмонлар мўғул кўшини билан бирга Марв шаҳрини ишғол қилиш учун келишди. Ўша вақтлар Марв катта шаҳарлардан бири бўлиб, ҳозирги кунда Афғонистондаги Балх шаҳрининг ғарбида, ундан 450 км узоқликда жойлашган Туркманистоннинг шаҳари эди. Чингизхон ўғилларидан бири бош бўлган кўшиннинг саноғи ривоятларда аниқ зикр қилинмаган. Лекин Балхдан ўзлари билан олган мусулмонлар ва Афғонистоннинг шимолидаги мўғул кўшинларидан ташқари бир неча 100 мингдан иборат, ниҳоятда катта кўшин эди. Мўғул лашқари Марв шаҳрининг киравериши, шаҳар ташқарисида 200 минг мусулмон рижолларга дуч келди.¹²³ Ўша замон учун бу жуда катта армия ҳисобланар эди. Икки тараф ўртасида даҳшатли, кўрқинчли жанг содир бўлиб, катта мусибат юз берди, жанг мусулмонларнинг зарарига ҳал бўлди. Катта сондаги мусулмонлар қатл қилинган, қолганлари асир олинган, жуда оз қисмигина омон қолган, кўшиннинг мол-мулки, қурол-аслаҳаси ва от-улови ғанимат қилинган эди.

¹²² Туркманча Marguş, Merw, Marguh, Merwan. Ҳозирги кунда Мари шаҳридан 30 км узоқликда жойлашган шаҳар бўлган.

¹²³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/391).

Ибнул Асир раҳимахуллоҳ бу жангни шундай тасвирайди: «Мўғуллар етиб келиб, мусулмонлар билан тўқнашди ва икки гуруҳ ўртасида жанг бўлди, мусулмонлар сабр қилди, лекин мўғуллар мағлубият нималигини билмас эди». ¹²⁴ Субҳоноллоҳ! Душман билан жанг қилаётган мусулмонлар, душманини енгиб бўлмайди, деган эътиқодда эди! Уларнинг руҳияти ва маънавияти қашшоқ, тубан даражада эди. Во ажаб! Мусулмон армия аччиқ мағлубиятга дучор бўлди. Марв шаҳрига йўл очилди, ўртадаги тўсик синдирилган эди.

Сиржонийнинг фикрига кўра, шаҳар аҳолиси 700 мингдан зиёдрок бўлиб, мусулмон эркак, аёл ва болалардан иборат эди. ¹²⁵

Саллабийнинг хабар беришича, 618 йил муҳаррам ойининг боши/1221 йил 25 февралда Тулихон 500 мўғул суворийлари билан Марв шаҳрининг қамалига киришди, бир ҳафта ўтар-ўтмас мўғул лашкари етиб келди. ¹²⁶ Мўғуллар катта шаҳарни қуршаб олди, кўз ўнглирида катта армиянинг кирғинига гувоҳ бўлган халқнинг дилларини қўрқув эгаллаган эди, лекин шунда ҳам осонликча таслим бўлмади, шаҳар дарвозасини тўрт кун мобайнида очмади. Сўнгра бешинчи кун мўғуллар Марв шаҳрининг ҳокимига мактуб йўллади, мактуб қуйидагиларни сўзлар эди: «Ўзингни ва халқингни ҳалокатга қўйма, олдимизга кел, сени юртингга амир қиламиз ва сизларни тинч қўямиз!» ¹²⁷ Шаҳар ҳокими мўғул бошлиғининг сўзига ишонди ёки ўзини-ўзи ишонтирди ва мўғул қўмондони олдига келди. У тантанали равишда кутиб олинди ва унга ҳурмат-эҳтиром кўрсатилди. У ҳам мўғул қўмондонини рози қилиш учун совға-саломлар билан келган эди. ¹²⁸ Тулихон уни ўзига яқин олди, сўнгра айёр мўғул қўмондони шундай деди: «Бизнинг олдимизга ҳамроҳларинг, яқинларинг ва қавмингнинг катталарини бошлаб кел! Уларни ҳам кўрайлик, хизматимизга ярайдими билайлик, агар ишимизга яраса уларга ҳадялар, мукофот тарзида ерлар бўлиб берайлик, улар ҳам сафимизга қўшилсинлар!».

Бундан гапдан сўнг алданган амир шаҳарга ёрдамчилари, катта вазирлари ва армиясининг олдига қайтди. Уларни ҳам Тулихоннинг олдига боришга кўндирган бўлди, улар мўғул бошлиғининг ҳузурига

¹²⁴ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/391).

¹²⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/393), Сиржоний «Қиссатут-татар» (46-бет).

¹²⁶ Саллабий «ал-Мўғул» (132).

¹²⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/392).

¹²⁸ Саллабий «ал-Мўғул» (132).

келганларида ҳаммаси қўлга олиниб, арқонга боғланди ва улардан иккита узун рўйхат ёзишлари талаб қилинди:

1- Шаҳардаги катта тижоратчилар ва мулкдорлар исмлари ёзилган рўйхат.

2- Моҳир ишбилармонлар ва хунарманд-косиблар номлари ёзилган рўйхат.¹²⁹

Сўнгра Чингизхоннинг ўғли шаҳар аҳолисининг ҳаммасини шаҳардан ташқарига чиқаришга буюрди ва халқдан биттаси ҳам қолмай шаҳар ташқарисига чиқарилди. Сўнгра Чингизхоннинг ўғли олтиндан бўлган курсига ўтирган ҳолатда буйруқ бера бошлади:

Биринчи буйруғи: Шаҳарнинг катталари, амирлари ва катта саркардаларни келтириб, омма халқнинг кўз ўнгида ўлдириш.

Иккинчиси: Моҳир ишбилармон ва хунарманд-косибларни чиқариб, уларнинг малакалари ва иш кучларидан Мўғулистондаги ишлаб чиқариш ва саноатчиликда фойдаланиш масқадида у ерга жўнатиш.

Учинчиси: Мулк эгалари ва тижоратчиларни чиқариб, бор мол-мулкларини қаердалигини кўрсатиб бергунларича қийноқ, азоб бериш. Мулкдорлар хазиналарини кўрсатиб беришди, уларнинг ичида ўз жонини қутқариб олишга етарли нарса тополмай калтакнинг зарбидан ҳаётдан кўз юмганлари ҳам бўлди.

Тўртинчиси: Шаҳарга кириб, уйларни тафтиш қилиш. Мулк, мато, олтин ва кумуш қидириш. Тафтиш уч кун давом этди. Ҳатто тириклар бир ёнда қолиб, Хоразмнинг қадимги султонларидан бўлган султон Санжарнинг қабрини очиб, тилла ва кумуш қидиришди.

Бешинчиси: Шаҳар аҳолисини битта қолдирмай ўлдириш. Улар эркак, аёл, гўдакларни ўлдира бошладилар. «Бизга осийлик қилдинглар, бизга қарши бош кўтардинглар, ким бизга қарши бош кўтарса, оқибати мана шундай бўлади», дер эдилар. Ибнул Асир айтади: «Чингизхоннинг ўғли шаҳар аҳолиси ўлдирилиб бўлгандан сўнг, ўликларни санашга буюрди, 700 минг ўлик бор эди!¹³⁰

Жувайнийнинг нақлига кўра, Марв шаҳрида ўлганлар сони 1.300.000 га етган эди, бу тасаввурга ҳам сиғмайди.¹³¹ Иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожиъун.

¹²⁹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/392–393).

¹³⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (393).

¹³¹ Саллабий Жувайнийдан накл қилган «ал-Мўғул» (133), Аҳмад Ҳамдий «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (175-бет).

Ҳақиқатан, инсоният тарихида Одам алайҳиссалом яратилгандан буён, узоқ ўтмишда ва яқин келажакда ҳам мутлақо бунинг сингари катагон, қирғин юз бермаган! Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

Марв шаҳри йўқ бўлди, унинг номи тарих саҳифаларидагина қолди. Бугун дунё харитасига назар солсангиз, ўша кунги Марвнинг номидан асар ҳам қолмаган. Субҳонллоҳ! Ҳозирги кунимизда мусулмонлар устида содир бўлаётган ҳодисаларга бир назар солсак, бугун биз ўша мўғуллар қиссасига нисбатан Оллоҳнинг буюк раҳматида эканимизни биламиз. Мўғуллар тарихида бир кунда битта шаҳарнинг ўзидан 700 мингдан ортиқ мусулмон ўлдирилди¹³², ўлдирилганлар шаҳар аҳолисининг ҳаммаси эди! Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

Нишопур қатлиоми

Сўнгра мўғуллар 617/1220 йил Марвдан Нишопурга ўтишди¹³³, бу шаҳар ҳам Хуросоннинг буюк шаҳарларидан бўлиб, ҳозирги кунда Эроннинг шимоли-шарқий томонида жойлашган. Тохучар Насо шаҳрини қиличдан ўтказиб, Нишопур шаҳрига келди ва шаҳарни беш кун камал қилди, лекин камалнинг учинчи куни Тохучарга ўқ тегди ва ўлди.¹³⁴ Шаҳарда мусулмон армиянинг катта қисми бўлсада, Марвда содир бўлган ҳодисалар уларга етиб келган, натижада эса, уларнинг қалбларини кўрқув чулғаб олган, омма мусулмонлар орасида ваҳима, даҳшат ҳукм суради. Шунинг учун мўғулларга қарши оёққа туришга бардошлари қолмаган эди.

Марв халқини битириб, 12 кун йўл босган Тулихон Нишопурга етиб келади.¹³⁵ У куёви (ёки поччаси) Тохучарнинг қасосини олишга ният қилади. Мўғуллар 618 йил 12 сафар куни/1221 йил 14 апрелда шаҳарга кирдилар¹³⁶ ва унинг барча аҳолисини саҳрога чиқардилар. Баногоҳ, Чингизхоннинг ўғлига Марв халқидан омон қолганлар хабари келади. У, биз қилич билан чопиб, ўлди деб ташлаб кетсак, улар тирик қолишибди, деб фикр қилди-да, Нишопур халқининг ўлганига қаноат қилмай, битта-битта бошини танасидан жудо қилиб чиқишга буюрди. Аскарлар ўликларнинг бошини олиб, бошини бир томонга, жисмини бир томонга

¹³² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/96).

¹³³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/393), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/96), Саллабий «ал-Мўғул» (133).

¹³⁴ Саллабий «ал-Мўғул» (133).

¹³⁵ Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (176-бет).

¹³⁶ Саллабий «ал-Мўғул» (134).

ташлардилар. ¹³⁷ Улар эркаклар, аёллар, гўдакларни, кўйинки, мушуклару кучукларни ҳам битта кўймай кириб ташладилар. ¹³⁸ Иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожибун.

Сўнгра бир қисм аёлларни ва 400 га яқин деҳқонларни, улардан фойдаланиш ниятида кул қилишди. 15 кун давомида шаҳарни остин-устин қилиб, мол-мулк, қимматбаҳо нарсаларни изладилар. Ибнул Асир айтиб ўтганидек, шундан сўнг шаҳарни тарк қилдилар. Бу шаҳар Хоразм давлати бошлиғи Алоуддин Муҳаммад Хоразмшоҳ ўлимидан 2 ойдан кейин маҳв этилди. ¹³⁹ Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

Ҳирот шаҳрининг бўйсундирилиши

Сўнгра мўғуллар Афғонистоннинг шимоли-ғарбий томонида жойлашган Ҳирот шаҳрига йўналди. ¹⁴⁰ Улар Марв ва Нишопур шаҳарлари яқсон этилгандан сўнг биронта шаҳарга омонлик бермадилар, эркакларни ўлдирдилар, аёлларни кул қилдилар ва барча шаҳарларни хонавайрон қилиб, ўт кўйдилар. Лекин бу шаҳарнинг амири Темур Маликхон бир қисм армияси билан жанг бўлаётган жойдан узокроқдаги, Афғонистоннинг жанубида жойлашган Ғазна шаҳрига қочиб кетди. Мана шундай, ўша пайтдаги амирлар, бошлиқлар халқи «мўғул вулкониға», хавф-хатарга тушган вақтда халқини ташлаб, ўзлари қочиб кутулар эди. Ибнул Асирнинг фикрига кўра, Тулихон Ҳиротни 10 кун қамал қилди ¹⁴¹, (бошқаларнинг ривоятида 8 кун қамал қилинган) ¹⁴² сўнгра шаҳар халқи ундан омонлик сўради. У ҳар доимгидек дастлаб омонлик бериб, сўнг аҳдига вафо қилмади. Ҳирот аҳлидан 12 минг кишининг ҳаётига зомин бўлди ва шаҳарга ўзига итоатдаги мусулмон аскарни волий қилиб қолдирди. ¹⁴³ Ўзи эса, отаси Чингизхоннинг буйруғи билан Толиқон шаҳрига жўнади. Ҳирот шаҳрининг эгалланиши

¹³⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/393), Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (177-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (134).

¹³⁸ Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий D'ohsson «Histoire des Mongols» (290-бет) дан нақл қилган «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (177-бет).

¹³⁹ Саллабий «ал-Мўғул» (135), Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий «ад-Давлатул ховаризмия вал мўғул» (177-бет).

¹⁴⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/393), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/96), Саллабий «ал-Мўғул» (135).

¹⁴¹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/393), Саллабий «ал-Мўғул» (135).

¹⁴² Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (152-бет), Солих Муҳиддин «Удатур-рух» (219-бет).

¹⁴³ Солих Муҳиддин «Удатур-рух» (219-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (135).

бутун Хуросон минтақасининг мўғуллар кўлида ишғоли эди. Хуросонда мўғуллардан омон қолган битта ҳам шаҳар қолмади.

Зикр қилинган ҳодисаларнинг барчаси 617–618/1220–1221 йилда юз берди.¹⁴⁴ Бу ҳодисалар мутлақ Ер қурраси тарихида содир бўлган воқеаларнинг энг хайратли ва ажабланарлиларидан бири бўлган эди. Субҳоноллоҳ!

¹⁴⁴ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/394).

ХОРАЗМ ДИЁРИГА МЎҒУЛ БОСҚИНИ

Хоразм шаҳри Хоразм минтақасидаги шаҳарларнинг энг машҳурларидан эди. Хоразмшоҳнинг аҳли-оиласи шу шаҳарда истиқомат қилгани боис мусулмонларнинг катта жамоаси бу шаҳарга ерлашган эди. Шаҳарнинг кўрғони анча мустаҳкам эди. Ушбу шаҳар ҳозирда Ўзбекистон ва Туркменистон ўртасидаги Жайхун, яъни Амударёнинг атрофидаги ҳудудларга тўғри келарди. Мусулмонларнинг жуда улкан иқтисодий, стратегик ва сиёсий қиймати мужассамлашган жойи эди. Чингизхон бундай аҳамиятга эга бўлган шаҳарга катта лашкарини жўнатди. Бу кўшин шаҳарни тўлиқ беш ой қамал қилди,¹⁴⁵ Саллабий фикрига кўра, шаҳар 6 ой давомида Чингизхоннинг икки ўғли Жўжи ва Чигатой бошчилигида қамал қилинади,¹⁴⁶ бироқ уни ишғол қила олмай, Чингизхондан ёрдам сўрашга мажбур бўлишди. Чингизхон, ўғли Ўқтой бошчилигида катта армияни ёрдамга жўнатди. Ҳар томондан қилинган тинимсиз ҳужумлар оқибатида шаҳар девори дарз кетиб, мўғуллар шаҳарга киришга муваффақ бўлдилар. Шаҳарда мусулмонлар билан мўғуллар ўртасида шиддатли, даҳшатли жанг борди, иккала томондан ҳам саноксиз қурбонлар берилди. Сўнгра мусулмонлар мағлубиятга учрай бошлади, жанг ғоят шиддатли кечганидан мусулмонлар қочиб, чуқурлар, омборлар ва уйларга беркина бошладилар. Мўғуллар Амударёга қурилган, шаҳарни сув босишидан тўсиб турган улкан тўғонни бузишга киришди. Тўғон бузилди ва улкан сув тошқини тўфон бўлиб шаҳарга оқди, шаҳар тамоман сув остида қолди, сув чуқурлар, омборлар ва уйларгача кириб борган, Хоразмда битта ҳам тирик жонзот қолмаган эди, жангда қатлдан омон қолганлар ё девор остида, ё сув остида қолдилар.¹⁴⁷ Буюк шаҳар харобага айланди. Мўғуллар шаҳар тўлиқ сув остида қолиб, Жайхун дарёсига қўшилиб кетгунича, у ердан қимирламай кузатиб туришди. Бу улкан шаҳарда ҳаётнинг бирор асари топилмайдиган ҳолатга келди. Ибнул Асир раҳимаҳуллоҳ айтадики: «Нух алайҳиссаломнинг қавмида юз берган

¹⁴⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/394). Қамалнинг қанча муддат давом этгани борасида тарихчиларнинг ихтилофлари бор, жумладан: Абул Ғозий 8, Рашидуддин 7, Ибнул Асир 5 ва ниҳоят Насавий 4 ой бўлганининг хабарини беради.

¹⁴⁶ Саллабий «ал-Мўғул» (129-бет), Ҳофиз Ҳамдий «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (166-бет).

¹⁴⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/96), Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/394–395), Саллабий «ал-Мўғул» (130).

ходиса ҳисобга олинмаса, қадимги ва ҳозирги замонда бунинг мислидек ходиса қулоқларга чалинмади».¹⁴⁸

Хоразмни ишғол қилган мўғул қўшинининг саноғини 50 минг бўлган деб кўрсатган тарихчи Рашидуддин, Хоразмда ўлдирилганлар сони 1.200.000 (бир миллион икки юз минг) атрофида бўлганини хабар беради.¹⁴⁹ Оллоҳ субҳонаҳу ва таолодан нусратдан кейинги мағлубиятдан паноҳ сўраймиз. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Бу «қонли ходиса» 618 йил рабиул-аввал/1221 йил майда содир бўлган эди.¹⁵⁰ Мўғуллар буюк Хоразм давлатининг шимолий минтақасининг маркази Хоразм ва Хуросон ерларини забт этган, Ироқ худудига яқин жойлашган Хоразм давлатининг ғарбий ноҳиясига келиб қолган эдилар, бироқ ҳали Хоразм давлатининг жануби омонда эди.

Нажмиддин Кубро (1145–1221)

Хоразм қамалида машҳур тасаввуф олими Нажмиддин Кубро ҳам муридлари билан мўғулларга қарши курашиб, шаҳид бўлди (иншаоллоҳ). Бу киши шайхул-имом, аллома, муҳаддис, шаҳид, Хуросон олими бўлиб, (тахаллуси) Нажмиддин Кубро (қуныси) Абул Жанноб (тўлиқ исми) Аҳмад ибн Умар ибн Муҳаммад Хоразмий Хивақийдир. Хоразмнинг Хива шаҳрида таваллуд топган. У киши шофей мазҳабида бўлиб, суннат имоми эди.

У ҳадис ўрганиш талабида риҳлат қилиб, Абу Тоҳир Салафий, Абул Ало Ҳамадоний ал-Аттор, Муҳаммад ибн Бинямон, Абдул Мунъим Фаровий ва бошқалардан таълим олди. Ҳадисга катта эътибор қаратиб, усул илмини пухта ўзлаштирди. Абдулазиз ибн Ҳилолах, Хатиб Дароя Шамх, Носир ибн Мансур Арозий, Сайфиддин Бахрозий ва бошқалар ундан ҳадис ривоят қилишган.

Умар ибн Ҳожиб шундай дейди: У юртларни кезиб, таълим олди ва Хоразмга қайтиб, ўша ерда истикомат қилди. У киши ҳадис ва суннат соҳиби, ғариблар учун бошпана эди. Жуда олийжаноб бўлиб, Оллоҳнинг йўлида маломатчининг маломатидан кўркмас эди.

¹⁴⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/394–395), Саллабий «ал-Мўғул» (130).

¹⁴⁹ Рашидуддин «Жомийут-таворих» (1/373)/ «Сборник летописей» (1/216–217), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (176-бет).

¹⁵⁰ Насавий «Сийратус-султон» (170- бет), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (177-бет).

618 йил рабиул-аввал/1221 йил майда Хоразмга бостириб келган мўғулларга қарши жангга чиққан Нажмиддин Кубро шахид бўлди. Ўшанда у 80 ёшларга яқинлашиб қолганди.¹⁵¹

¹⁵¹ Заҳабий «Сияр Аълам ан-нубала» (22/111–114).

АФҒОНИСТОНГА МЎҒУЛ ЮРИШИ

Балқ жанги

Мўғулларнинг Афғонистон ерларига кириш воқеасидан олдин бироз мозийга қайтсак, чунки бу минтақа ҳокими саналган Жалолоддин ҳақида шу ўрингача баъзи нарсаларни гапирган бўлдик, лекин у Афғонистон ерларига қандай келиб қолди? Мўғулларга қарши курашда отасини мўғуллар исканжасидан қутқариб, зўр мардлик кўрсатгани ёдимизда, сўнгра у Хоразмшоҳ уюштирган кенгашда Хивакийнинг фикрини қўллаб-қувватлаганини тилга олгандик. Энди асосий мавзумиз унинг ҳақида десак ҳам бўлади.

Хоразм давлати султони Муҳаммад ибн Такаш улкан давлатини ўғиллари ўртасида тақсим қилишга қарор қилади. У онаси Туркон Хотун¹⁵²нинг ташаббуси билан валиаҳд этиб тайинланган кенжа ўғли Кутбиддин Ўзлокшоҳга Хоразм, Хуросон ва Мозандаронни, энг суйган ва ишонган ўғли Жалолоддин Мангуберди¹⁵³га Ғазна, Бамиён, Ғур, Буст, Такинобод, Заминдовар ва Ҳиндистон худудларигача бўлган минтақаларни ва учинчи ўғли Рукниддинга Ироқдаги ерларини беради.¹⁵⁴

Мўғул истилоси бошланган вақтда Ғурийлар Хоразмшоҳлар томонидан тарих саҳифаларидан ўчирилиш арафасида эди. Ғурийларга қарашли минтақалар орасидан Ғазна¹⁵⁵ марказий шаҳар қилиниб, Жалолоддин Мангуберди ҳукмига берилганди.¹⁵⁶ Бироқ султон Муҳаммад уни жуда яхши кўриб, унга қаттиқ ишонгани ва унинг хизматларидан фойдаланиб қолишни истагани учун уни ёнидан узоқлаштиргиси келмади, унинг ўрнига ноиб сифатида Карбар Маликни Ғазнага жўнатган эди. Карбар Малик зиммасига топширилган вазифани ортиғи билан бажариб келди ва мўғул истилоси бошланган пайтда

¹⁵² Туркон «Теркан» олий насабли, «Хотун» малика деган маъноларни билдиради. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Т» харфи бўлим).

¹⁵³ Жалолоддин бурнида холи (манк) бўлгани учун Манкбурни деб номи билан аталган, кейинчалик бу ном талаффузда ўзгариб «Мангуберди» номи билан машҳур бўлиб кетган. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Ж» харфи бўлим).

¹⁵⁴ Насавий «Сийратус-султон» (71–72-бет).

¹⁵⁵ Ғазна ёки Ғазни шаҳри Афғонистоннинг жануби-шарқий қисмидаги шаҳар бўлиб, Ғазни дарёси бўйида жойлашгандир. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Ғ» харфи бўлим).

¹⁵⁶ Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/69).

Ғазнага етиб келган ёш, навқирон султон Жалололдинга кучли аскар ва қувватли давлатни топширди.¹⁵⁷

Хоразмшоҳ оғир касал бўлиб ўлим тўшагида ётганда уч ўғли: Жалололдин, Оқшоҳ ва Ўзлокшоҳларни — юқорида зикри ўтган Обескун (ёки Ашура) оролига чақиртиради, ўлими олдидан ишончини қозонган катта ўғли Жалололдинни тахт вориси — валиаҳд этиб тайинлашга журъат қилади. Чунки айни дамда онаси Туркон Хотуннинг асирга тушганининг хабарини эшитган эди.¹⁵⁸ Юқорида ишора қилганимиздек, олдин Ўзлокшоҳ валиаҳд этиб тайинланган эди. Унинг онаси Туркон Хотуннинг қариндоши бўлиб, Боёвут қабиласидан эди. Шу сабабдан Туркон Хотун суюкли келинининг ўғли Ўзлокшоҳни валиаҳд этиб танлайди,¹⁵⁹ Хоразмшоҳ Жалололдинни муносиб кўрса-да, онасига эътироз билдира олмайди. Туркон Хотун Хоразм давлатига кўп хайр ва ҳасанотлар қилган бўлса-да, унга етарлича зарари ҳам теккан эди. Балки мана шу валиаҳд тайинлашдаги иши унинг энг катта зарари эди.

Туркон Хотун ўз невараси, ўғли султон Муҳаммаднинг энг яхши кўрган ўғли ва йиқилиш арафасида турган хонадоннинг ягона юраги бор инсони Жалололдиндан нафрат қилар ва унинг чоҳини қазир эди.¹⁶⁰ «Бировга чоҳ қазима, ўзинг тушасан», деганларидек, шундай зўр нуфузга эга бўлган малика Туркон неварасини қаттиқ ёмон кўргани сабаб ва келини Ойчечакнинг олдида паст кетаманми деган манманлик билан Жалололдиннинг ёрдамига ошиқиш ўрнига мўғулларнинг қўлида хўрланган асир ҳолатда ўлишни афзал билади. Юқорида айтганимиздек, у асир тушгандан сўнг дастлаб Самарқандга жўнатилиб, Чингизхонга таслим этилади, кейин эса пойтахт Қорақурумга олиб борилади ва ўша жойда танг ҳаёт кечириб, 630/1233 йилда вафот этади.¹⁶¹

Каспий денгизидаги оролда Хоразмшоҳнинг жанозаси ва дафнидан сўнг Жалололдин Мангуберди, Ўзлокшоҳ ва Оқшоҳлар денгизни кесиб, узоқ вақтлардан бери момолари Туркон Хотуннинг шарофати билан бора олмай юрган Хоразмга йўл олдилар. Эслатиб ўтамиз, мамлакатда

¹⁵⁷ Насавий «Сийратус-султон» (71–72-бет).

¹⁵⁸ Насавий «Сийратус-султон» (120-бет), Рашидуддин «Жомийут-таворих» (1/371).

¹⁵⁹ Насавий «Сийратус-султон» (71-бет).

¹⁶⁰ Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (99-бет), Насавий «Сийратус-султон» (97-бет).

¹⁶¹ Насавий «Сийратус-султон» (97-бет), Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/164), Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий D'ohsson «Histoire des Mongols» (260-бет) дан накл қилган «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (161).

Туркон Хотуннинг мавқеи ўғли Хоразмшоҳникидан кўра анча баланд эди. Хоразмшоҳ юритган сиёсатга у ва бошқа нуфузли сиёсий кучлар доимий муҳолифатчилик муносабатида бўлиб келар эди. Жалололдин икки укаси билан Хоразмга етиб келганида уларни 7 минг Хоразм суворийлари қаршилаб олади. Бахтга қарши бу армия Туркон Хотунга қаршли турклардан, яъни боёвутлик аскарлар бўлиб, Жалололдиннинг Хоразмга киришига ва отасидан сўнг султон бўлишига монелик қилишади.¹⁶² Жалололдин момоси Туркон Хотун ва қипчоқ амирларининг норозилиги сабаб укаси Қутбиддин Ўзлокшоҳ фойдасига ворисликдан маҳрум этилганди. Урганч мудофааси учун етиб келган Жалололдин Туркон Хотуннинг акаси Хумор Тегин бошчилигида ўзига суиқасд уюштирилаётганини сезиб, уч юзта суворийси билан Урганчни тарк этиб, Хуросонга қараб кочиб қолишга муваффақ бўлади.¹⁶³

Жалололдиндан кейин ака-укалар хотиржам салтанат сурди, деб ўйлаган бўлсангиз, янглишасиз. Жалололдин, Темур Малик ва унинг уч юзта суворийси билан Хуросон томонга йўл олганларидан уч кун ўтар-ўтмас, мўғулларнинг Хоразм диёрига бостириб келаётганининг хабарини эшитиши биланоқ қалблари бўғизларига тикилган Ўзлокшоҳ ва Оқшоҳлар акасининг ортидан Хуросонга отланишади.¹⁶⁴ Бу орада Хоразмшоҳ ўғилларининг Хоразмга келганидан хабар топган Чингизхон уч ўғли: Жўжи, Чигатой ва Ўқтойлар бошчилигида улкан қўшинни Хоразмга сафарбар қилади. Мўғуллар Хуросон ерлари орқали Хоразмга йўл олган Жалололдиннинг олдига шошаётган Ўзлокшоҳ ва Оқшоҳларни қўлга туширадilar,¹⁶⁵ уларни ва улар билан бирга бўлганларни қиличдан ўтказадilar.¹⁶⁶

Яна асосий қаҳрамонимизга қайтсак, Хоразм давлатининг жанубий томони Жалололдин Мангубердининг қўл остида эди. Унга Афғонистон, шунингдек, Покистоннинг жанубий ва марказий минтақалари кирар эди. Бу минтақа Ҳиндистондан Ҳинд дарёси билан ажралиб турарди. Жалололдин Мангуберди ҳозирда Афғонистонда жойлашган Ғазна шаҳрини ўзига қароргоҳ тутди.¹⁶⁷ Бу шаҳар Қобилдан 150 км жанубда жойлашган бўлиб, атрофи тоғлар билан ўралган жуда мустаҳкам шаҳар

¹⁶² Насавий «Сийратус-султон» (122-бет), Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (162-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (126–127).

¹⁶³ Насавий «Сийратус-султон» (122, 125-бет), Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» (163-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (127).

¹⁶⁴ Насавий «Сийратус-султон» (122, 125-бет).

¹⁶⁵ Насавий «Сийратус-султон» (126-бет).

¹⁶⁶ Насавий «Сийратус-султон» (130-бет), Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (1/171, 2/110).

¹⁶⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/395).

эди. Чингизхон Хоразмшоҳ давлатининг марказий ва шарқий қисмини даҳшатли кўринишда маҳв этгандан сўнг, унинг жанубий минтақаси саналган Афғонистоннинг маркази ва жанубига юриш қилишни режа қилди. У буюк Хоразм давлатини бутунлай босиб олиш ва Муҳаммад ибн Хоразмшоҳдан сўнг тахтга ўтирган Жалолоддин Мангуберди ишини тамомлаш илинжида беҳисоб, жуда катта мўғул лашкарини Ғазна шахрига йўллади. Хоразм давлатининг маркази ва шимолий воҳасида содир бўлган мўғулларнинг даҳшатли қирғини, ваҳшийликларидан Жалолоддин Мангуберди яхшигина маълумотга эга эди.

Жалолоддин Хоразм давлатига бошлиқ бўлиб, жуда катта масъулиятни ўз зиммасига олди. У дастлаб Насо шахрига, у жойдан Нишопурга келиб, мўғулларга қарши Оллоҳ йўлида жиҳод эълон қилади, ўшанда бу шаҳарлар ҳали мўғул босқинига учрамаган эди. Нишопурда бир ой муддат турган Жалолоддин атрофдаги мусулмон амирларга мактублар йўллаб, мўғулларга қарши мададга келишларига тарғиб қилди, лекин бахтга қарши унинг бу саъй-ҳаракатидан хабар топган мўғуллар у томонга бостириб келиб, унинг бу олий мақсадини барбод қилишга муваффақ бўладилар.¹⁶⁸ Кейин у Ғазна сари йўл олади ва йўлда кетаётиб, тоғасининг ўғли Ҳирот шахрининг собиқ волийси Амин Маликнинг, ўзининг 10 минг турк аскарлари билан яқин атрофда эканидан хабар топади ва унга элчи жўнатиб, мўғулларга қарши сафларини бирлаштиришини таклиф қилади. Шунда Амин Малик дарҳол унга ижобат қилиб, Жалолоддиннинг сафига келиб қўшилади, холбуки, у Ҳиротдан мўғул босқини чоғида бир гуруҳ аскарлари билан жуфтакни ростлаб қолган эди. Улар йўлда кетаркан, Қандаҳор қалъасини камал қилиб турган мўғулларнинг бир бўлагига дуч келадилар ва улар билан жангга киришиб, уларни қиличдан ўтказадилар. Мўғуллар аччиқ мағлубиятга учрайди, ажали етмай қилич зарбидан омон қолганлари бориб Чингизхонга воқеани айтиб берадилар.¹⁶⁹ Ўшанда Жалолоддин Чингизхонга мағлубият нималигини илк бор хис эттирган эди.

Шундан сўнг ғолиб, музаффар Жалолоддин Ғазнага йўл олади. Ҳижрий 618 санада¹⁷⁰ Ғазнага келиши биланоқ мўғулларга қарши жангга тайёргарликни бошлаб юборади ва мамлакатидан катта сондаги қўшин тўплашга муваффақ бўлади. Унинг сафига Турк амирларидан бўлган Сайфиддин Бўғроқ¹⁷¹ Холижий исмли амир келиб қўшилади. Бу амир

¹⁶⁸ Насавий «Сийратус-султон» (132-бет).

¹⁶⁹ Насавий «Сийратус-султон» (133–134-бет).

¹⁷⁰ Насавий «Сийратус-султон» (153-бет).

¹⁷¹ Ёки Иғроқ, Ағроқ.

ўта шижоатли, ботир, оқил, жанг сирларидан бохабар, уddaбурон ва мохир жангчи бўлиб, қўл остида 30 минг турк жанггарилари бор эди. Шунингдек, қарлуқлар йўлбошчиси Ҳасан Қарлуқ, афғонлар сардори Музаффар Малик ва Балх хукмдори Аъзам Маликлар ҳам Жалололиддинга кўшилдилар.¹⁷² Яна Жалололиддин билан бирга бир қатор Ислом шаҳарларидан мўғуллар босқини вақтида қутулиш насиб қилган 60 минг Хоразм аскарлари ва 10 минг аскар соҳиби Амин Малик ҳам бор эди.¹⁷³ Жалололиддиннинг лашқари жуда катта сонга етгани маълум бўлсада, аниқ бир саноғи зикр қилинмаган. Лекин ҳиротлик жангчилар ва Жалололиддиннинг Афғонистондаги аскардан ташқари, Сайфиддин Буғроқ ва Хоразм армиясининг сони 90 минг эди,¹⁷⁴ дейди Сиржоний.

Жалололиддин Мангуберди бу улкан қўшинни олиб, Ғазнанинг ёнида жойлашган Балқ деган минтақага йўлга чиқди.¹⁷⁵ Бу минтақа улкан тоғлар ўртасида жойлашган ўнқир-чўнқир, паст-баланд жой эди. У мўғул аскарини шу кўрғонли маконда кутди, тез орада мўғул қўшини ҳам етиб келди. Жалололиддин Мангубердининг бирлашган қуввати билан мўғул қуввати тўқнашди, бу минтақада шафқатсиз ва даҳшатли жанг содир бўлди. Бу жангда мусулмонлар жонларини аямай, бор кучлари билан урушди, агар мусулмонлар мағлубиятга учраса, бундан сўнг Хоразм давлати султонлигидан асар ҳам қолмас эди. Бу маърақада мусулмонлар ғоят зўр ғайрат кўрсатдилар, жанг бўлаётган жой тоғли, қоя-тошли, қаттиқ табиатли макон эди, шунингдек, мусулмонларнинг кўплиги, Сайфиддин Буғроқ бошчилигидаги турк жанггариларининг ўта шижоатли экани, Жалололиддиннинг жанг майдонидаги бошчилиги мусулмонларнинг мўғуллар қаршисида собитқадам туришига яққол таъсир кўрсатган эди. Даҳшатли уруш уч кун давом этгандан сўнг, Оллох таоло мусулмонларга нусратини нозил қилди.¹⁷⁶ Оллоху акбар!

Юқоридаги Қандаҳор қалъаси ёнидаги кичик мўғул қўшинининг мағлубияти ҳисобга олинмаса, мўғулларнинг мусулмонлар юртида илк бор енгилиши эди! Жалололиддин Мангуберди мўғулларнинг енгилмаслиги тўғрисидаги афсонани пучга чиқарди. Улардан кўпчилиги

¹⁷² Насавий «Сийратус-султон» (154-бет), Солиҳ Муҳиддин «Удагур-рух» (222-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (136-бет).

¹⁷³ Насавий «Сийратус-султон» (154-бет), Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/395).

¹⁷⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (51-бет).

¹⁷⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/395).

¹⁷⁶ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/395), Сиржоний «Қиссатут-татар» (51–52-бет).

ўлдирилди, қолганлари қочиб қолишди, қочганлари ичида Толиқонга Чингизхоннинг хузурига етиб борганлари ҳам бўлди.¹⁷⁷

Ҳа, айтганча, ўша вақт Чингизхон Самарқандни тарк қилиб, жанг бўлаётган жойга яқинроқ туриш мақсадида Афғонистоннинг шимоли-шаркидаги Толиқон деган минтақага келиб ўрнашган эди.

Бу жангдан кейин мусулмонларнинг руҳияти, маънавияти бағоят кўтарилди. Бундан олдин кўпчиликнинг қалбида мўғулларни енгиб бўлмайдиган деган тушунча бор эди. Лекин Ислом лашкарларининг Ғазнада бирлашиши ўз натижасини берган эди. Бу маърақада Жалололдин Мангуберди отаси Муҳаммад ибн Хоразмшоҳ армиясидан қолган қўшин билан, Сайфиддин Буғроқ бошлиқ турк армияси, Ҳирот амири Амин Маликнинг қўшини, шунингдек, қарлуқлар йўлбошчиси Ҳасан Қарлуқ, Музаффар Малик ва Балх ҳукмдори Аъзам Маликлар билан бирлашган эди, бирдамлик ўз баракасини кўрсатди. Бундан ташқари, жанг қилиш учун жуда муносиб жой танлаган, қилиш мумкин бўлган сабаблар ушланган эди ҳамки, нусрат берилди...

Қобул жанги

Жалололдин Мангуберди ўз лашкаридан мамнун ва хотиржам эди. У Толиқон шаҳрини қўноқ тутган Чингизхонни янги жангга чорлаб мактуб йўллаб: «Қаерда уруш қилишни истасанг, ўша ерга борамиз», деди.¹⁷⁸ Чингизхон биринчи маротаба аламини ҳис қилди. У катта қўшин ҳозирлаб, ўғилларидан бирини бош қилиб, мусулмонларга қарши урушга жўнатди. Тулий ибн Чингизнинг бошлиқ қилингани ривоят қилинади.¹⁷⁹ Яна бошқа бир ривоятда, Чингизхон Шики Хутуху нўён бошлиқ 45 минг қўшинни сафарбар қилгани айтилади.¹⁸⁰

Бу орада мусулмон қўшини ҳам ҳозирлигини кўрди. Икки қўшин Афғонистондаги Қобул шаҳри яқинида тўқнаш келди. Жанг Қобил шаҳри ёнидаги Парвон чўлларидан содир бўлди. Шунинг учун кўп манбаларда бу жанг «Парвон жанги», «Парвон ғалабаси» деб номланган.¹⁸¹

¹⁷⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/395).

¹⁷⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/396).

¹⁷⁹ Насавий «Сийратус-султон» (154-бет), Солиҳ Мухиддин «Уудатур-рух» (222-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (136).

¹⁸⁰ «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Ж», «П» ҳарфи бўлим).

¹⁸¹ Ҳофиз Ҳамдий «ад-Давлатул ховаризмия» (185-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (137), «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Ж», «П» ҳарфи бўлим).

Қобил кўрғонли шаҳар бўлиб, тақрибан ҳамма томонидан тоғлар билан ўралган эди. Шимол тарафида баланд Ҳиндукуш тоғи, ғарб тарафида Паропамиз тоғи, жануб ва шарқ тарафида Сулаймон тоғи бор. Қобилда буюк жанг содир бўлди, бу жанг Балқ жангидан кўра қаттиқроқ, кўрқинчли ва ашаддий тус олди. Мусулмонлар собит турди, сабр қилдилар, натижада иккинчи бор мўғуллар устидан ғалаба қозондилар, бир неча ўн минг мусулмон асирлар мўғуллар кўлидан озод қилинди.¹⁸² Жанг авжида Тулихон ўлдирилди,¹⁸³ хоразмликлар мўғуллардан қаттиқ интиқом олди.¹⁸⁴ Мусулмонларнинг руҳияти, маънавияти ғоят кўтарилди ва чексиз қувониб, хурсанд бўлдилар.

Бу икки жанг мусулмонларнинг қайғу аламларининг ниҳояси бўлса керак, деб ўйлашимизга ундайди, лекин қиссадаги аччиқ ва ҳайратли фожиага келиб қолдик. Жалолиддиннинг бу ғалабаси муваққат устунлик бўлганди.¹⁸⁵ Баъзилар бу ғалабаларни неъмат дейишади, лекин аслини олганда катта синов бўлганди. Шундай ҳодиса юз бердики, бунда нусрат мусулмонлардан олиниб, яна мўғулларга қайтариб берилди.

Ажабо, бу қандай ҳодиса экан?! Бу фожиа нима экан? Жалолиддин ибн Муҳаммад ибн Хоразмшоҳнинг оқибати қандай кечди? Афғонистоннинг оқибати нима бўлди? Ислом оламидаги буюк Хоразм давлатини батамом ағдарилишига сабаб бўладиган нарса нима экан?!

Ўлжалар устидаги фитна

Кўпчилик инсонлар неъмат деб эътибор қилган ўлжалар аслини олганда мусулмонлар учун бир синов бўлган. Мол-дунё кўпгина халқлар қатори қанча-қанча мусулмонларни ҳам ҳалок қилмади, дейсиз?! Имом Бухорий ва Муслим, Амр ибн Авф разияллоҳу анҳудан ривоят қилади: Расулulloҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам шундай марҳамат қиладилар: *«Оллоҳга қасамки, мен сизларга фақирликдан кўрқмайман. Мен дунё сизга сиздан олдингиларга бўлганидек сероб бўлишидан, сиз ҳам улар унинг учун талашганларидек талашиб кетишингиздан ва у уларни ҳалок қилганидек сизни ҳам ҳалок қилишидан кўрқаман»*, дедилар.¹⁸⁶

Ўша даврда мусулмонларнинг қалблари бедаво дард — дунёга ҳирс кўйиш дардига мубтало бўлган эди, албатта, Оллоҳ таоло раҳм қилиб,

¹⁸² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/396).

¹⁸³ Насавий «Сийратус-султон» (154-бет).

¹⁸⁴ Ҳофиз Ҳамдий «ад-Давлатул ховаризмия» (185-бет).

¹⁸⁵ Ҳофиз Ҳамдий «ад-Давлатул ховаризмия» (185-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (137).

¹⁸⁶ Бухорий (3739, 5974) ва Муслим (5266) ривоятлари.

ундан сақлаганлар бундан мустасно. Зеро, одамзотга табиат қилиб берилган нарса ҳам дунёга кўнгил кўйишдир. Мусулмонларнинг жанглари Оллоҳ йўлидаги жиҳод руҳидан бироз узоқлашган, моддият, қовмият, манфаат ва нафс-ҳаволарига берилиш, дунё ҳаётига муҳаббат, салтанат рағбати, асирга тушиш ва ўлимдан қўрқидан иборат эди. Мусулмонлар мўғуллар устидан икки марта ғалаба қозондилар, лекин мол-дунё ва ўлжалар қаршисида ўрталарига фитна оралади. Мусулмонлар финтага гирифтор бўлди ва ўлжалар тақсимотида ихтилофга боришди. Турк амири Сайфиддин Буғроқ билан Ҳирот амири Малик ғаниматлардан ўз улушларини талаб қилдилар ва талашиб қолишди, натижада овозлар баланд кўтарилди, сўнгра юксалган овоз пардалари ортидан қиличлар ҳам эргашди. Катта Ислом шаҳарлари мўғуллар исканжасида бўлатуриб, мусулмонлар ўлжа устида бир-бирлари билан урушиб қолишди. Мусулмонлар дастидан ўз биродарлари жон берди, бу жон берганлар жумласида Сайфиддин Буғроқнинг укаси ҳам бор эди. Сайфиддин Буғроқ қаттиқ ғазабланган ҳолатда 30 минг аскарини олиб, Жалолиддиннинг қўшинидан ажралиб кетди.¹⁸⁷ Ушбу воқеа мусулмонлар сафида жуда катта парокандаликни келтириб чиқарди. Бу ходисани муаррих Ҳофиз Ҳамдий куйидагича баён қилади: «Жалолиддиннинг Парвон чўлларида мўғуллар устидан ғалаба қозониши муваққат эди, ўлжалар тақсим этилар экан, икки саркарда орасида битта араб айғир оти устида низо чиқди, иккаласи ҳам айни отни ўзиники бўлишини хоҳлади. Натижада жанжал чиқиб, улардан бири иккинчисининг бошига юзи аралаш қамчи тортди».¹⁸⁸ Сўнг юқорида зикр қилганимиз бўлиниш юзага келди.

«Парвон жанги»да кўп сонли мўғуллар устидан йирик ғалаба қозонилди. Бироқ Жалолиддин «Парвон ғалабаси» самарасидан фойдалана олмади. Жангда қўлга киритилган ўлжаларни тақсимлаш вақтида чиққан низо туфайли Сайфиддин Буғроқ, Аъзам Малик ва Музаффар Малик султонни ташлаб кетди. «Ушбу иш, улар ниҳоятда зарур ва ёрдами керак бўлган пайтда рўй берди ва бу билан улар юзларига уятсизлик тамғасини босдилар»,¹⁸⁹ деб ёзади Насавий. Жалолиддин Мангуберди муаммони ҳал қилишга ҳаракат қилди. Зудлик билан Сайфиддин Буғроқни мусулмонлар сафига қайтаришга киришди.¹⁹⁰ Чунки мусулмонлар ҳар бир жангчига ва ҳар қандай ёрдамга муҳтож эдилар, устига-устак Сайфиддин Буғроқ жангчиларининг

¹⁸⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/396–397).

¹⁸⁸ Ҳофиз Ҳамдий «ад-Давлатул ховаризмия» (185–186-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (137).

¹⁸⁹ Насавий «Сийратус-султон» (155-бет).

¹⁹⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/396–397).

ажралиб кетиши, қолган мусулмонларнинг маънавиятига ва руҳиятига жиддий таъсир қилган эди. Ажралиб кетган турк жангчилари кўшиннинг энг қувватли бўлаги эди. Лекин Сайфиддин Буғроқ фикридан қайтмади ва буни амалда ҳам кўрсатди. Мусулмон аскар ҳам моддий, ҳам маънавий жиҳатдан синди. Мусулмонлар Ғазна ва Қобилда эришган ғалабада нажот топмади. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Имом Муслим Абу Саид ал-Худрий разияллоҳу анҳудан ривоят қилган ҳадисда, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам дедилар: *«Дунё яшинаб турган, ширин нарсадир. Оллоҳ азза ва жалла қандай амал қилишларингизни кўриши учун сизларни унда қолдиражак. Шундай экан, дунёдан ва аёллардан эҳтиёт бўлинглар! Зеро, Бани Исроилнинг илк фитналаниши аёллар хусусида бўлган эди»*.¹⁹¹

Ўша замонда мусулмонлар дунёнинг ҳақиқатини англаб етмадилар. Ваҳоланки, дунё қароргоҳ, омон қолиш ва мангулик диёри эмас, балки вақтинчалик фойдаланиш ва синов диёридир. Бу воқеада биз мусулмонлар учун улкан ибрат, дарс ва ўғит бор, етарки фаросат билан назар солайлик...

Жалололдиннинг чекиниши

Ўша дамларда мусулмонлар Раббиларининг синов юборишини унутдилар. Мусулмонлар мана шундай парокандалик ҳолатида турганда Чингизхон мусулмонлар устига лашкар тортди ва бу сафар лашкарга шахсан ўзи бошчилик қилди.¹⁹² Ғазна ва Қобилда ғалабага эришган мусулмонлар бунинг гувоҳи бўлишди. Бироз олдин нусрат узра турган бўлсалар, энди сафлари озайган, кўшиннинг қалбига кўрқув оралаб, кўнгиллари чўккан ва маънавиятлари чил-парчин бўлган эди.

«(ўзаро) талашиб-тортишмангизки, у холда сустлашиб, куч-қувватингиз кетур».¹⁹³

Жалололдин Мангуберди лашкарининг ўта кучсиз ҳолатга тушганини кўриб, Ҳинд дарёси томонга чекина бошлади. Унинг жангни қолдиришдан бошқа чораси ҳам қолмаганди. У Ҳинд дарёси бўйига бориб ажралиб кетган амирларни янгидан бирлаштириш ва қайтишлари яхшироқ эканини тушунтириб мактуб йўллашни ўз олдига мақсад қилароқ маърақадан тисарилди,¹⁹⁴ лекин Чингизхон унга йўл бермади.

¹⁹¹ Муслим ривояти (4932).

¹⁹² Насавий «Сийратус-султон» (156-бет).

¹⁹³ Анфол: 46.

¹⁹⁴ Насавий «Сийратус-султон» (156-бет).

Жалолиддин иложсиз илгари отаси қилган ишни — давлатдан давлатга, шаҳардан шаҳарга кўчишни бошлади, ҳатто бора-бора Покистоннинг чегарасига етиб қолди. Покистон чегараси ва Покистонни кесиб ўтиб, Покистон билан Ҳиндистонни ажратиб турувчи Ҳинд дарёсига етиб келди.¹⁹⁵ Шу ерда Ҳинд дарёсидан ўтиб, Ҳиндистонга киришга қарор қилди. Ҳолбуки, унинг Ҳиндистон билан алоқаси ёмон эди, лекин бу Чингизхонга йўлиқшидан кўра яхшироқ эди. Жалолиддин соҳилга етиб келган бирдан-бир кемага онаси, оиласи ва яқинларини ўтиргизиб, нариги қирғоққа йўллаш асносида кема бир тўсикқа урилиб, тешилади ва яроқсиз ҳолга тушади. Улар шу ҳолатда экан, тўсатдан Чингизхон лашкари билан етиб келиб, уларни қуршаб олади,¹⁹⁶ ортда дарё, олдинда ғаним, урушишдан бошқа чора йўқ!

Икки тараф орасида қўрқинчли ва даҳшатли жанг бошланди, Ибнул Асирнинг таъбири билан айтганда, бундан олдин содир бўлган жанглarning барчаси бу жанг олдида гўё ўйин мисоли бўлиб қолганди.¹⁹⁷ Қонли жанг уч кун тинимсиз давом этди. Иккала гуруҳдан ҳам қурбонлар тўлиб кетди, мусулмонлар сафида ўлганлардан Ҳирот шаҳри амири Амин Малик ҳам бор эди.¹⁹⁸ Маълумингизки, бундан олдинги жангдан кейин Сайфиддин Буғроқ билан ўлжа талашган, оқибатта турк амирининг аскарларини олиб, Жалолиддиндан ажралиб кетишига сабаб бўлган эди. Амин Малик ўлдирилди, дунёдан бирор нарсага эга бўлмади, ҳатто кўлидаги қиличини ҳам ўзи билан қабрга олиб кетолмади. Тўплаган мол-дунёси ўлимни бир лаҳза бўлсада кечиктира олмади, лекин мусулмонларга бор кучи билан ёрдам берган ҳолатда ўлиш қаерда-ю, уларнинг ўртасида фитна чиқариб, мағлубиятига сабаб бўлиб ўлиш қаерда?!

Сиржоний ушбу ҳодисани шундай баён қилади: «Жангнинг тўртинчи куни иккала тараф талофатнинг кўплигидан жангни вақтинчалик тўхтатишди. Икки гуруҳ ҳам жанг ҳисоботига, сафларни тартиблашга киришди. Мана шу вақтинчалик тинчлик вақтида Ҳинд дарёси соҳилига кема келиб қолади, Жалолиддин узоқ фикр қилмай кемага миниб, мамлакатни кўчманчи мўғулларга қолдиришга қарор қилиб, хос кишилари ва яқинларини олиб кемага минади. Ҳинд дарёсини

¹⁹⁵ Насавий «Сийратус-султон» (157-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (137), Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/397).

¹⁹⁶ Насавий «Сийратус-султон» (157-бет).

¹⁹⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/397), Солих Муҳиддин «Удатур-рух» (324-бет).

¹⁹⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/397).

кесиb ўтиб, Ҳиндистонга етиб олади». ¹⁹⁹ Дарёнинг ғарбий соҳилида мўғуллар билан бирга мусулмон давлатлар, шаҳар ва қишлоқларни, шунингдек, у ердаги фуқароларни аскарий ҳимоясиз ҳолатда тарк қилади. Мўғуллар оддий фуқаро билан ҳарбий аскар орасини ажратмас эди, устига-устак икки мағлубият натижаси ўлароқ Чингизхоннинг қалбида юзага келган қаттиқ нафрат, адоватни қўшимча қилсак, бундан сўнг у Жалолиддин ташлаб кетган халқнинг бошига неқадар қора кунларни солишини хулоса қилиб оламиз...

Бу воқеани Саллабий Ибнул Вардийдан нақл қилиб, шундай баён қилади: «Бу муваффақиятсиз жангда Жалолиддин мўғуллар сафини ёриб чиқишни ўз олдига мақсад қилиб олди, у ва унинг қўшинидан баъзилар мўғуллар исканжасидан қутулишга муваффақ бўлдилар. Лекин у Ҳинд дарёсига юзланиб қолди, сўнгра жон ҳолатда отини дарёга солди, от бор кучи билан сакради ва 20 зироъ кўтарилиб, дарёнинг асосий қисмидан ўтиб олди. Шу тариқа Жалолиддин дарёнинг шарқий томонида кесиb ўтишга муваффақ бўлган эди». ²⁰⁰

Унинг армиясидан катта миқдори ўлдирилган, дарёнинг шарқий соҳилига ўтмоқчи бўлганларининг кўпчилиги сувга ғарк бўлганди. Бу орада Жалолиддиннинг етти ёки саккиз ёшлар чамасидаги ўғли асирга тушди, Чингизхон болани отасининг кўз ўнгида ўлдириди. ²⁰¹

«Жалолиддин соҳилга яқинлашганда соҳилнинг нариги томонида ўз онаси, фарзандининг онаси (яъни хотини) ва маҳрамларидан бир қисмини кўрди, улар: «Бизни ўлдир ёки асирликдан қутқар!» дер эдилар. Шунда у буйруқ қилди, (яъни ўзларини дарёга отишларига буйруқ қилди), оқибатда улар дарёга чўкиб кетишди. Бу улкан бахтсизлик ва нодир суратдаги офат эди», ²⁰² деб ёзади Насавий. Унинг айтишича, ўз жонларини дарёнинг шарқий қирғоғига ўтиб қутқарган Хоразм армиясидан 4 мингги худди қабрдан кўпорилган нушур аҳлидек оч ва ялонғоч эдилар. ²⁰³

Жалолиддин Мангуберди Ҳинд дарёси бўйида 618 йил шавволдан саккиз кун қолганда/1221 йил 15 декабр чоршанба куни содир бўлган

¹⁹⁹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/397), Сиржоний «Қиссатут-татар» (55–56-бет).

²⁰⁰ Ибнул Вардий «Татимматул мухтасар фи ахбарил башар» (155-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (138).

²⁰¹ Насавий «Сийратус-султон» (158-бет).

²⁰² Насавий «Сийратус-султон» (159-бет), Ибнул Вардий «Татимматул мухтасар» (155-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (138), D'ohsson «Histoire des Mongols» (307-бет).

²⁰³ Насавий «Сийратус-султон» (160-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (138).

жангда аччиқ мағлубиятга учради.²⁰⁴ Лекин фазл аҳлини фозил инсонларгина таниганидек, баходир баходирни гарчи рақиби бўлса ҳам кадрлар экан. Чингизхондек қаҳри қаттиқ, омилкор саркарда ашаддий душмани Жалололидиннинг довюрраклиги, мардлигига тан бериб: «Довюррак эркак мана шундай бўлади ўзи», деганди.²⁰⁵ Жувайний эса, Чингизхоннинг хайратини шундай ифодалайди: «Чингизхон ўғлларига юзланиб: «Мана шундай ўғли бор ота бунчалар бахли бўлмаса! У ўзини сув ва ўт каби икки бало гирдобидан халос этиб, нариги соҳилга етиб олди-я!» деган эди».²⁰⁶

Афғонистон ишғоли

Чингизхон мусулмонлар диёрига одатдагидан зиёда, қаттиқ ва бор газабини сочди. Шаҳарлар орасида Чингизхон лашкари мағлуб бўлган Ғазна шаҳри қаттиқроқ жафо чекиб, улкан азоб-укубатга гирифтор бўлди. У, шаҳар эркакларини битта қолдирмай ўлдирди, аёлларини асир, қул қилди ва бутун шаҳарга ўт кўйди. Ибнул Асир раҳимахуллох айтганидек, «Бу шаҳар гўё куни кеча обод бўлмагандек, томлари йиқилиб, хувиллаб қолган вайронага айланган эди».²⁰⁷ Бу ўринда айтиб ўтишлик ўринли бўлган сўзлардан, Чингизхон шаҳар аҳли ичидан Жалололидин Мангубердиннинг фарзандларини кўлга туширган эди, уларни ҳаммасини сўйишга буюрди. Ёрдамсиз ташлаб кетилган миллионларча халқ тотган аччиқ аламнинг айни кўринишини Жалололидиннинг ўзи ҳам тотган эди.²⁰⁸

Байҳақий мурсал санад билан ривоят қилган ҳадисда Расулulloх соллаллоху алайҳи ва саллам шундай дедилар: «*Истаганинг каби бўл, қандай ёндошсанг, ўшандай ёндашилсанг*»,²⁰⁹ (яъни ҳукм қилганинг каби жазо оласан).

Чингизхоннинг ўта юксак орзуси ушалган эди. Рўёбга чиқиши осон бўлмаган бу орзу — Афғонистоннинг маҳв этилиши эди. Афғонистон истилоси нафақат Чингизхонни, балки барча давр мустабидларнинг орзуси бўлиб келди. Афғонистоннинг босиб олиниши Ислому умматини йиқитиш йўлидаги жиддий аҳамиятга эга бўлган одимдир.

²⁰⁴ Насавий «Сийратус-султон» (158-бет).

²⁰⁵ Саллабий «Ад-давалул мустақилла фил мағрибил исламий» (188-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (137).

²⁰⁶ Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/116), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (177-бет).

²⁰⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/398).

²⁰⁸ Саллабий «ал-Мўғул» (138).

²⁰⁹ Байҳақий ривояти (6119), Албоний заиф санаган (2369).

Афғонистоннинг эгалланиши бир қатор сабабларга кўра, Ислом уммати учун ўта хатарли, душманлар учун ўта эътиборлидир:

Биринчидан, Афғонистоннинг хужумга имкон бермайдиган тоғли худуд эканлиги, бу эса душманга кучли табиий ғов бўлиб, қўшни давлатларга киришни қийинлаштирар эди. Афғонистон бўйсундириладиган бўлса, Покистон, Эрон, ундан сўнг Ироқ каби қўшни давлатларни босиб олиш осонлашар эди.

Иккинчидан, Афғонистоннинг муҳим стратегик мавқеи шуки, у Осиёнинг ўртасида жойлашгандир. Афғонистон қўлга киритилса, бутун минтақаларни 360° бурчак остида, яъни ҳамма томонни бемалол кузатиш имконига эга бўлинади. Бу билан Покистон, Эрон, Россия ва Ҳиндистонни назорат қилиш осонлашади, шунингдек, у Хитойга ҳам яқиндир. Афғонистон эгалланса, бутун Осиёга ҳукм юргизиш арзимаган ишга айланади.

Учинчидан, Афғонистоннинг тоғли табиати унинг халқига бошқа ўлкалардаги халқларга берилмаган салобат, қатъийлик ва қувватни бергандир.

Тўртинчидан, халқининг исломга юксак мойиллиги ва бошқалардан фаркли, бемисл ҳимояланиш, курашиш руҳидан баҳрамандлиги. Улар осонлик билан жон бермас ва таслим ҳам бўлмасдилар. Бу уларнинг мўғуллар устидан қозонган ғалабаларида ҳам исбот бўлди. Шу кунгача барча мусулмон жангчилар жангларда мўғуллардан енгилиб келди, илк бор мўғуллар Афғонистонда мағлубиятда гирифтор бўлди. Улар икки марта енгилган эди. Афғонистоннинг қўлга киритилиши «антимуслим» қувват учун улкан муваффақият саналади.

Бешинчидан, Бу ҳодиса Ислом умматининг маънавиятига даҳшатли тарзда салбий, мўғулларнинг маънавиятига эса, жуда катта ижобий таъсир этган эди. Афғонистон мўғуллар учун ўта хатарли бекат бўлиб, унинг босиб олиниши нафақат Афғонистон халқига, балки умумий суратда бутун Ислом умматига ўта жиддий ва салбий таъсир кўрсатган эди.²¹⁰

Шундай қилиб, мўғуллар 617/1220 йилда Хитойдан бошлаб ҳозирги Қозоғистон, сўнгра Ўзбекистон, Туркменистон, Афғонистон, Эрон, Озарбайжон, Арманистон, ундан сўнг Грузияга кириб борган эдилар. Бу аччиқ ҳақиқат барча тарих китобларида собит бўлгандир. Мўғуллар бир

²¹⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (57–58-бет).

Йилнинг ичида Ислом оламининг улкан шарқий қисмини эгаллаган эди.
Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

ХИЛОФАТГА ТАҲДИД

Мароға шахри ишғоли

Мўғуллар 618 хижрийнинг бошларида мусулмон Мароға²¹¹ шахрига лашкар тортдилар.²¹² Бу минтақа Озарбайжоннинг шарқий худудида жойлашган эди. Ажабланарли жойи — шаҳарнинг бошлиғи муслима аёл эди.²¹³ Нима учун мусулмонлар бундай таҳликали, қалтис даврда давлат бошқарувини аёл кишига топшириб қўйишган экан? Мамлакатда бошқарувга яроқли эркак киши қолмаганмикан? Хуллас, мўғуллар шаҳарни ўраб олишиб, унинг атрофига манжаниқларни ўрнатишди ва мусулмон асирлар воситасида жангни бошлашди. Мусулмон асирлар Мароғани ишғол қилишга киришди, улар дунёда озгина муддат яшаш илинжида мусулмон биродарларини ўлдира бошладилар.²¹⁴ Агар бу асирлар Мароғадаги биродарларини ҳимоя қилиб, мўғулларга қарши чиқишганида эди, ҳеч бўлмаганда оз бўлсада, баъзи мусулмонлар тирик қолган ва ўзлари ҳам мардонавор шахид бўлишган бўлар эдилар. Лекин саҳиҳ-тўғри тушунча-ю, соғлом дунёқараш йўқлиги кўзларни кўр қилган эди. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

Мўғуллар Мароға шахрига 618 йил 4 сафар/1221 йил 6 апрел куни кирдилар ва халқнинг бошидан қилич юргиздилар.²¹⁵ Ибнул Асир айтганидек, улардан беадад ва беҳисоб даражада инсонларни қатл қилдилар, ўзларига керакли ва олиб кетишга қодир бўлган нарсаларни талон-тарож қилдилар, олиб кета олмаганларини бир жойга тўплаб, ўт қўйдилар.²¹⁶ Ҳатто баланд тепалик баробар келадиган кимматбаҳо ипак матони келтириб, ўт қўйишди.

Ибнул Асир раҳимахуллоҳ ўша кундаги мусулмонларнинг қай даражада хор ҳолатга тушганини қуйидаги сўзлари билан ифодалайди: «Бир мўғул хотин мусулмон хонадонга кириб, ундаги эркак, аёл ва

²¹¹ Мароға Эроннинг шимоли-ғарбида, Шарқий Озарбайжон остонасидаги қадимий шаҳар бўлиб, Табриздан 80 км жанубда жойлашгандир. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («М» ҳарфи бўлими).

²¹² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/377), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/105), Саллабий «ал-Мўғул» (123).

²¹³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/377).

²¹⁴ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/377).

²¹⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/377), Саллабий «ал-Мўғул» (124).

²¹⁶ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/377–378), Солиҳ Муҳиддин «Удатур-руҳ» (208-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (124).

болалардан иборат жамоани ўлдиради, улардан биронтаси унга қаршилиқ қилмайди». Мароға халқининг биридан ўз қулоғи билан эшитганини шундай ҳикоя қилади: «Битта мўғул 100 та мусулмон эркак бор сўқмоққа кириб, уларни битта-биттадан ҳаммасини қиличдан ўтказди, бирон киши унга қўл кўтармади». Инсонлар шу қадар хорлиққа гирифтор бўлиб, ўзларини кўпчилиқни қўятуринг, озчиликдан ҳам ҳимоя қила олмасдилар. Оллоҳ азза ва жалладан хорлиғу хўрликдан паноҳ тилаймиз».²¹⁷

Шимолий Ироққа таҳдид

Ҳижрий 618 йилда мўғуллар Ироқнинг шимолида жойлашган Арбил шаҳрига юриш қилишни режа қилдилар.²¹⁸ У Ироқдаги Мосул шаҳри билан чегарадош шаҳардир. Арбил шаҳри ва унинг ғарбида жойлашган Мосул шаҳри аҳолисининг қалбларини қўрқув чулғаб олган эди. Арбил ва Мосул халқининг баъзилари мўғуллар йўлига тўғаноқ бўлмасликни ўйладилар. Аббосийлар халифаси Носир Лидийниллаҳ мўғуллар Арбил шаҳридан воз кечиб, Бағдодга қараб юриш қилишидан қўрқувга тушиб, сергак тортди. У Арбил ва Ироққа қарашли бошқа шаҳарлардаги мусулмонларни мўғулларга қарши оёққа туришга чақирди. Аббосийлар армияси тайёргарликка киришди. Халифа Носир Лидийниллаҳ юз минглаб мўғул лашкарига қарши бор-йўғи 800 аскарнигина тўплай олди!²¹⁹

Халифа Носир Лидийниллаҳда фақат халифанинг ташқи кўринишигина қолган эди. Аббосийлар армияси кўмондони, айти вақтда Арбил шаҳри ҳокими Музаффаруддин бу оз сондаги кўшин билан мўғулларга қарши жанг қила олмаслиги аниқ эди. У мўғулларнинг юз мингларча кўшинини кўрган захоти ортга чекинишдан ўзга чора топмади. Бироқ жуда ғаройиб ҳодиса юз берди: мўғуллар бу чекинишни хийла деб ўйлаб, шу арзимаган сондаги армия буюк мусулмон аскарининг муқаддимаси бўлиши керак, деб тасаввур қилдилар. Чунки буюк Аббосийлар хилофатининг кўшини 800 аскардан ошмаслиги ақлга сиғмайдиган нарса эди. Мўғуллар урушни кейинга қолдиришга қарор қилиб, улар ҳам ортга чекиндилар. Аббосийлар хилофатининг донги бутун оламга етганида шубҳа йўқ. Шунинг учун хилофатининг имкониятлари мўғуллар қалбига кўрқув солиб, ортга чекинишларига сабаб бўлган эди.

²¹⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/378).

²¹⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/378), Саллабий «ал-Мўғул» (124-бет).

²¹⁹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/379), Рашидуддин «Жомийут-таворих» (1/381).

Аббосийлар хилофати бошқа умматлардан жуда узун тарихи ва буюк ютуқлари билан ажралиб турарди. Мўғул давлати бор-йўғи бир неча ўн йиллардан бери ер юзида пайдо бўлиб, зафар байроғини кўтариб келаётган бўлса бордир, лекин Аббосийлар хилофатининг тарихи эса 500 йилдан зиёдроқ эди. Шунинг учун ҳам мўғуллар Аббосийларнинг имкониятларини керагидан ортиқча баҳолади ва хилофатга бевосита бостириб киришга ботина олмадилар. «Қатлиом» деган жангга киришди: муносиб вақтда уруш очиш, Ироқни танг аҳволга солиб қўювчи шиддатли зарбалар бериш, узок вақт қамал қилган ҳолда заифлаштириб, Ироқнинг атрофидаги амирликлар билан тил бириктиришга қарор қилдилар. Мана шу сабабларга кўра, мўғуллар Ироққа, янада аниқроқ айтсак, Хилофатга яна бир неча йил имконият бериб ортга чекиндилар...

ЭРОНГА МЎҒУЛ БОСҚИНИ

Ҳамадон ва Ардебил шаҳри қирғини

Мўғуллар Эронга қараб юрдилар. Улар Ҳамадон шаҳрига келиб, уни қуршаб олишди. Шаҳарда озиқ-овқат тортилгандан сўнг, шаҳар халқи мўғулларга қарши жанг қилди. Икки гуруҳ ўртасида шиддатли жанг содир бўлди. Мусулмонлар уч кун қаршилик қилиб, муносиб рақиб бўла олдилар. Кейин уларнинг сони озлиги ва қувватининг заифлиги панд бера бошлади. Мусулмонлар сафида кун сайин шаҳидлар сони ортиб борарди. Уларнинг амири жангнинг биринчи куни бир неча жойидан жароҳат олишига қарамай, иккинчи кун яна жангга чиқди, у яна бир қанча еридан жароҳат олиб, кейинги кун жангга чиқолмади. Бошлиқларини бу аҳволда кўрган аскар ҳам жангга чиқишга журъат қилолмади. Омад мўғулларга кулиб боқди, улар ҳамадонликлар устидан ғалаба қозонди. 618 йил ражаб ойида/1221 йил сентябрда мўғуллар шаҳарга кирди, мусулмонлар қўлларига пичоқ олиб бўлса ҳам мўғулларни қарши олдилар. Бахтга қарши мўғуллар уларнинг битта кўймай қириб ташлади, сўнгра улар бу ўлкани вайрон қилиб, шаҳарга ўт кўйишди. Кейин улар Ардебил шаҳрига қараб йўналди. Улар бу шаҳарни ҳам қўлга олдилар, халқини ўлдириб, шаҳарга ўт кўйдилар ва вайрон қилдилар.²²⁰

Мўғуллар Табриз остонасида

Мўғуллар Табриз²²¹ шаҳри амири Ўзбек ибн Паҳлавон билан тузган келишувни бузишни қасд қилиб, Табризга қараб йўл олишди. Лекин қутилмаганда бу фикрларидан қайтишди. Уларни фикрларидан қайтишларига сабаб бўлган нарса нима эди? Сиз ҳам ҳайрон бўлаётган бўлсангиз керак?!

Келинг, биргаликда бу саволнинг жавобига назар солайлик. Ўша кунларда шаҳарга Шамсуддин Тоғроий исмли янги бошлиқ волийлик қилаётган эди. Бу киши динни ҳам, дунёни ҳам яхши билувчи мужоҳид

²²⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/381–382), Сиржоний «Қиссатут-татар» (61-бет).

²²¹ Табриз Эроннинг шимоли-ғарбий қисмидаги шаҳар бўлиб, Шарқий Озарбайжоннинг маъмурий маркази. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Т» ҳарфи бўлими).

инсон эди. У киши одамларни Оллоҳ йўлидаги жангга ҳозирлик кўришга чақирди, уларнинг қалбларида зўравонликка қарши туриш туйғусини жонлантирди, фаолиятсизлик ва кучсизликнинг оқибатидан огоҳлантирди, уларга олдиндан назарий жиҳатдан билган, бироқ амалий суратда мутлақо татбиқ қилмаган нарсалари бўлган — жиҳодни таълим берди.²²² Шунингдек, инсон вақти-соати келмагунича ҳаргиз ўлмаслиги, унинг ризки ва ажали дунёга келишидан илгари битиб қўйилганини ўргатди. Улар мўғулларга қуллуқ қилиб, уларнинг олдида тиз чўксалар ҳам мўғуллар уларни тинч қўймаслиги, мусулмонлар фақатгина қўлларига қилич-у қалқон олиб ўзларини ҳимоя қилмаса, Ер куррасида уларни ҳимоя қилувчи бошқа куч йўқ эканини англатди.

Шамсуддин раҳимаҳуллоҳнинг саъй-ҳаракати натижаси ўларок Табриз аҳлининг қалбларида ҳамият, шавқ тўлқинланди, амирлари билан бирга юртнинг қўрғонини тузатиб, мустаҳкамладилар, шаҳар атрофига хандақлар қазиб, қурол-яроқларини ҳозирладилар, баррикидалар²²³ ўрнатиб, сафларни тартибладилар. Халқ Оллоҳ йўлидаги жиҳодга шайланди.

Мўғуллар шаҳардаги ҳолатдан, халқнинг исёнидан, ҳамманинг Оллоҳ йўлидаги жиҳодга отланганидан хабар топганларида нима қилишди?

Мўғуллар ўзларига исён кўтарганларни эшитган заҳоти ғазаб отига миниб, уларни битта қўймай кириб ташлаймиз, кўзларига кўрсатиб кўямиз, дея уларнинг устига лашкар тортдимми?

Йўқ, азизлар! Мўғуллар ҳайратомуз қарорга келдилар, бу қарор — Табриз шаҳрига кирмаслик, Оллоҳ йўлида кураш байроғини кўтарган халққа қарши жанг қилмаслик эди. Оллоҳ таоло Табриз халқи оз, мўғуллар сони кўп бўлсада, мўғулларнинг қалбига қўрқувни солди. Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам бир ойлик масофадан душманнинг қалбига тушадиган қўрқув билан нусратланган эдилар, шунингдек, у кишининг йўлларидан юрадиган ҳар бир жамоа, бир ойлик масофадан душмани қалбига тушадиган қўрқув билан нусратланади.

Жанг ҳали содир бўлмаган, халқ жанг босқичига етиб бормаган, фақат содиқ ният қилган, қўлларидан келгунча тайёргарлик кўришган эди ҳамки, Раббоний ваъда рўёбга чикди. Мусулмонларнинг

²²² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/382).

²²³ БАРИКАДА (франц.), кўча банд — кўча, йўл, кўприк ва тоғ йўлларида турли нарсалардан (ходалар, кум солинган қоплар, тошлар ва б.) қуриладиган сунъий мудофаа тўсиғи. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Б» харфи бўлими).

тайёргарлик кўришларининг ўзиёқ душман қалбига қурқув солган эди. Бу унутилмас дарсдир, «(Эй мўминлар), улар учун имконингиз борича куч ва эгарланган отларни тайёрлаб қўйингиз».²²⁴

Яъни имконингиз қадар тайёргарлик кўринг. Табриз халқи мўғул лашкарининг олдида қанча эди? Ёки ер билан яқсон қилинган Ислон давлатлари ва шаҳарларига нисбатан қанча эди?

«(Эй мўминлар), улар учун имконингиз борича куч ва эгарланган отларни тайёрлаб қўйингизки, бу билан Оллоҳнинг ва ўзларингизнинг душманларингизни ҳамда улардан ташқари сизлар билмайдиган — Оллоҳ биладиган бошқа бировларни ҳам қўрқувга солурсизлар. Оллоҳ йўлида нимани сарф қилсангиз, сизларга зулм қилинмаган ҳолда комил қилиб қайтарилур».²²⁵

Бу ҳодиса зулмат ичида порлаб турган нур эди. Оллоҳ таоло Шамсуддин Тағройни Ўз раҳматига олсин, у киши Табриз шаҳрида динни янгиллаган эди. Шундан сўнг мўғуллар Байлақон шаҳрига йўл олишди.²²⁶

Байлақон қирғини

Бу шаҳар Аррон минтақаси²²⁷ да жойлашган эди.²²⁸ Мўғуллар бу шаҳарга таслим бўлинг, дея элчи юборди. Улар элчини қатл қилдилар. Бундан дарғазаб мўғуллар шаҳарни қамал қилдилар ва шаҳарга 618 йил рамазонда/1221 йил ноябрда кириб, унинг халқи устидан қилич юргиздилар. Қарияларни, ёшларни, аёлларни, Ибнул Асир хабар берганидек, ҳатто хомиладорлар қорнини ёриб, хомилаларни ҳам ўлдирдилар. Аёлларнинг номусларини топтаб, сўнгра ўлдирдилар. Шаҳардаги одамлар ишини битириб, сўнгра шаҳарни талаб, вайрон қилдилар ва ўт қўйдилар.²²⁹ Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

²²⁴ Анфол: 60.

²²⁵ Анфол: 60.

²²⁶ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/382).

²²⁷ Кафказорти минтақаси.

²²⁸ БАЙЛАҚОН — Араке ва Кура дарёлари бирлашадиган ерга яқин бўлган шаҳар (Арронца). «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Б» ҳарфи бўлими).

Ўша пайтлар Аррон минтақасига қараган Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/382). Ҳозирги кунда Озарбайжонга қарашли ва рус тилида Бейлаган деб аталган шаҳардир.

²²⁹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/383), Сиржоний «Қиссатут-татар» (63-бет).

Мўғуллар Ганжа остонасида

Байлақонни харобага айлантирган мўғуллар Ганжа шаҳри сари йўл олди. Бу шаҳар (ўша вақтлар)²³⁰ Аррон минтақасидаги асосий шаҳарлардан бири эди. Ганжа шаҳрида ҳам Табриздаги айни ҳодиса рўй берди, улар Оллоҳ йўлида жиҳод эълон қилиб, унга тайёргарлик кўрди, Ганжа шаҳрига бирорта мўғул кирмади.²³¹ Бу тасодиф эмас, Оллоҳ йўлидаги жиҳод байроғини кўтарган, унга тайёргарлик кўрган юртларга мўғуллар киришга журъат қила олмадилар. Такрор айтамыз, булар тасодиф эмас, балки бу Оллоҳ таолонинг қонунларидан бўлган бир қонундир. Мусулмон шаҳарларнинг барчаси шундай қилганида эди, мўғуллар ҳам, улардан бошқалар ҳам, мусулмонларнинг ерларига қадам босмаган бўлар эди, валлоҳу аълам. Мусулмонлар бу шаҳарларни йиллар давомида ҳимоя қилиб келди, ададларининг кўплиги, иттифоқлиги, келишувчанлиги ва бошқалар сабабли эмас, балки содиқ жиҳод, покиза қонлар, мухлис, беғубор қалблар сабабидан сақлаб келдилар. Оллоҳ таоло ваъдасига хилоф қилмайди, вафо қилмаслик бандалардан содир бўлади. Оллоҳ аzza ва жалла одамларга зулм қилмайди, лекин инсонлар ўзларига-ўзлари зулм қиладилар...

²³⁰ ГАНЖА (1804-1918 йилларда Елиза-ветполь, 1935-89 йилларда Кировобод) — Озарбайжон Республикасидаги шаҳар, Ганжасой дарёси буйида. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Г» ҳарфи бўлими).

Ҳозирги кунда бу шаҳар Озарбайжонда жойлашган Ганджа шаҳри бўлиб, Ибнул Асир бу шаҳарни ўша пайтлар Аррон минтақасига қараганини хабар беради. Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/383).

²³¹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/383).

ГУРЖИСТОН ВА ШЕМАХА ИСТИЛОСИ

Мўғуллар мусулмон Озарбайжон ва Аррон минтақаларини баъзисини куч билан, баъзисини сулҳ билан таслим қилгандан сўнг Гуржистон²³² мамлакатига қараб йўл олди. Мўғулларнинг бостириб келаётганини эшитган гурж насронийлари урушга тайёргарлик кўра бошладилар. Мўғуллар етиб келганда икки тараф орасида қаттиқ уруш содир бўлди. Бу сафар ҳам мўғулларнинг қўли баланд келди. Ибнул Асир айтади: «Мўғуллар гуржлардан 30 минг кишини қатл қилган экан. Сўнгра одатларига кўра мамлакатда қирғин-барот, талон-тарож қилиб, шаҳарнинг кулини кўкка совирдилар».²³³

Бу минтақаларда мўғуллар босқинидан энг ашаддий жафо чеккан шаҳар Шемаха²³⁴ шаҳри бўлди. Бу шаҳар ҳозирги кунда Озарбайжонга қаршли шаҳарлардан бири саналади. Мўғуллар бу шаҳарга етиб келиб, уни қуршовга олишди. Лекин шаҳар халқи сабр билан қаттиқ қаршилик кўрсатди. Мўғуллар шаҳар қўрғонидан ошиб ёки бузиб киришга ҳеч имкон топмадилар. Сўнгра улар мол, қўйларни ва ўлган одамларни қўрғоннинг остига тахлаб қалаштирдилар ва қўрғондан ошиб шаҳарга кирдилар. Шаҳарда уч кун давомида аёвсиз жанг кетди. Мўғуллар халқ устига қуюн мисоли ёпирилиб, уларни янчиб ташлади ва шаҳарни харобага айлантирди.²³⁵

Сўнгра мўғуллар Ширвон²³⁶ минтақаси ҳокими Ширвоншоҳга элчи йўлладилар. Мўғул элчиси: «Биз сен билан сулҳ тузиб, сизларга омонлик беришни қасд қилдик, ишонган одамларингни мўғул сардорига йўллагин», деди. Бу подшоҳ мўғулларнинг бевафолигини билса-да, ишонган 10та аъёнини унинг ҳузурига йўллади. Мўғул сардори сулҳ

²³² Ҳозирги ГРУЗИЯ (Сакартвело), Грузия Республикаси — Закавказьенинг марказий ва ғарбий қисмида жойлашади давлат. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Г» ҳарфи бўлими).

²³³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/383–384).

²³⁴ ШЕМАХА (озарбайжонча Шамахи, араб. Аш-Шамаҳийа) — Озарбайжон Республикасидаги шаҳар. Катта Кавказнинг жан.шарқий этагида, Боқудан 122 км ғарбда, Кюрдмир т.й. станциясидан 72 км шим.шарқда жойлашган. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Ш» ҳарфи бўлими).

²³⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/384–385).

²³⁶ ШИРВОН — Шим. Озарбайжонда, Каспий денгизининг ғарбий соҳилида жойлашган тарихий вилоят. «Ширвон» атамаси — «Шарван» шаклида сосонийлар даврида (226—651) қадимий Кавказ Албанияси, кейинчалик Арронини бир қисмини англатиш учун қўлланилган. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Ш» ҳарфи бўлими).

ниятида келган 10 элчидан биттасини қолганларининг кўз ўнгида қатл қилиб, агар бизга йўл бошчилик қилмасангиз, сизнинг бошингизга ҳам шеригингизнинг кунини соламан, деди. Улар ноиложликдан мўғулларга Дарбанд²³⁷ шаҳрига олиб борадиган осон йўлни кўрсатиб беришди. Мўғуллар эса аҳдларига вафо қилмади...²³⁸

²³⁷ ДАРБАНД — РФ нинг Доғистон Республикаси жан.-шарқдаги шаҳар. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Д» ҳарфи бўлими).

²³⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/385).

ДОҒИСТОН ВА ЧЕЧЕНИСТОН ИСТИЛОСИ

Мўғуллар Дарбантнинг ишини ҳаллаб, ўша минтақадаги ҳозирги кундаги Озарбайжоннинг шимолий тарафида жойлашган Доғистон ва Чеченистонга²³⁹ қараб юрдилар.²⁴⁰ Ҳозирда Россиянинг исканжасида бўлган бу ўлкалардаги мусулмонларга Оллоҳ нусрат ва нажот берсин. Ушбу ўлкаларда ҳам мўғуллар одатларига кўра бузғунчилик ишларига киришди, бутун мамлакатни вайрон қилдилар. Йўлларида учраган аксарият одамларни ўлдирдилар. Мўғуллар Чеченистонга яқинлашиб қолганда, чеченлар тайёргарликни бошлаб юборгандилар, қипчоқлар ҳам уларга ёрдамга келдилар. Мўғуллар билан шиддатли жанг бўлди, лекин икки тарафдан бирортаси ғолиб бўлолмади. Шунда мўғуллар хийлага ўтдилар, қипчоқларга элчи жўнатиб, чеченлар сизларнинг динингизда эмас ва бошқа миллат, улардан ёрдам қўлини тортсангиз, сизларга катта совға-саломлар берамиз, дедилар. Қипчоқлар мўғуллар билан аҳд тузиб, совға-саломларни олиб, чеченларни ёрдамсиз ташлаб кетдилар. Мўғуллар чеченларни қиличдан ўтказиб, кейин қипчоқларнинг ҳам додини берди. Берган совға-саломларидан бир неча қарра кўп ўлжаларни ундириб кетишди.²⁴¹ Ҳа, золимга ёрдам берган киши золим қўлидан зулм кўради. Бу Оллоҳ таолонинг Ер юзиде жорий бўлган қонунлардан ҳисобланади.

²³⁹ Ўша вақтлар бу диёрлар «Аллон» минтақаси деб аталган. «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя», «ал-Камил фит-Тарих» (12/383).

²⁴⁰ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/106), Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/385–386).

²⁴¹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/386).

РУСЛАР ВА ҚИПЧОҚЛАР ҚИСМАТИ

Қипчоқлар Россия ерларига ва мусулмон ўлкаларига қочиб қолишди. Мўғуллар бу юртлардаги насронийлар билан жанг қилдилар, мусулмонларга қилган жиноятлари, қирғинларини уларга ҳам қилишди. Маълумингизки, Россиянинг ерлари бепоёндир. Ушбу санада мўғуллар Россиянинг жануби-ғарбий минтақаларини эгалладилар.

619/1222 йил мўғуллар мустамлакаларини сақлаб қолишга ҳаракат қилдилар ва ўша минтақаларда ҳокимиятини мустаҳкамладилар. Улар маълум вақт Қипчоқ минтақасида қўноқладилар.²⁴²

Ўша вақтлар мўғул давлатининг доирасига кирган мамлакатлар:

- Қозоғистон, Қирғизистон, Тожикистон, Ўзбекистон, Туркменистон, Покистон — унинг жанубий минтақаси Кармондан ташқари, у минтақага ҳали мўғуллар етиб бормаганди —;
- Бутун Афғонистон, Эроннинг катта қисми — Исмоилийя тоифаси қўл остида бўлган ғарбий қисми бундан мустасно —;
- Озарбайжон, Насроний Арманистон, Гуржистон ва Россиянинг жануби-ғарбий минтақалари.

Мўғуллар бир йилу бир неча ойлар ичида дунёнинг мана шу минтақаларини эгаллаган эди.²⁴³

620/1223 йил Чингизхоннинг ҳукмронлиги Хоразм давлати ва унинг атрофига ёйилди ҳамда Россияга ҳужумлари давом этди.²⁴⁴ Ушбу санада мўғуллар Россияга юриш қилиш билан овора бўлишди. Уларнинг Россия ерларига ялпи бостириб келаётганидан хабар топган руслар, қипчоқлар билан бирлашиб, баҳайбат лашкар тўплади ва мўғулларни қарши олишга чиқди. Буни кўрган мўғуллар орқага чекинди, лекин бу чекиниш кўрққанлари ёки уларга кучи етмаслигидан эмас, балки ҳарбий ҳийла эди. Бироқ руслар ва қипчоқлар, уларни қочаяпти, деб гумон қилиб, орқаларидан таъқиб қилди. Таъқиб 12 кун давом этди, охир-оқибат уларни қувиб юбордик, деб хотиржам бўлганларида мўғуллар тўсатдан зарба беришни бошладилар. Даҳшатли жанг бошланди, икки тараф ҳам туриб берди. Олишув бир неча кун тинимсиз давом этди. Жанг ниҳояси

²⁴² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/386–387).

²⁴³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (65-бет).

²⁴⁴ Т.Ў. Салимов, Ф.Э. Султонов «Жаҳон тарихи» (7-боб, 35-§. Мўғуллар давлати ва унинг босқини).

руслар ва қипчоқлардан иборат бирлашган қувватнинг тағ-туби билан қўпориб ташланиши билан яқунланди. Уларнинг аксарияти ўлдирилди, нодир суратда тирик қолганларигина қочиб қолишди. Улар узоқ-узоқларга қочиб кетишди. Ортдан тушиб қувиш навбати мўғулларга келганди, улар руслар ва қипчоқларнинг ордидан тушиб, борган жойларини харобага айлантирди ва мол-мулкларини таладилар...²⁴⁵

²⁴⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/386–387).

ҲИЖРИЙ 620 ЙИЛНИНГ МУҲИМ ВОҚЕАЛАРИ

620/1223 йилда содир бўлган воқеаларнинг аҳамият касб этганларидан фақат тўрттасига тўхталиб ўтамыз:

Болгарларнинг зафари

Биринчи воқеа: Мўғуллар Россия ерларига бостириб кириб, саноксиз ғалабаларга эришди, ниҳоят қаршиларидан болгар халқи чиқди. Бу минтақа ҳозирги Болгарияда бўлсада, ўша вақтлар Россияга қаршли эди. Мўғулларнинг келаётганидан хабар топган болгарлар ҳозирлик кўриб, бир нечта пистирмалар қўйишди. Мўғуллар етиб келганда болгарлар тўсатдан ҳамлани бошладилар, мўғуллар довдираб қолишди ва кўшиннинг бир қисми орқага чекинди. Қолганлари билан болгарлар орасида қаттиқ жанг бўлди, мўғуллар мудҳиш мағлубиятга учради ва жуда озчилигига жон сақлаш насиб қилди. Айтишларича, жон сақлаб қолган ва Чингизхоннинг олдига қайтиб борган мўғул аскарлари 4 минг бўлган.²⁴⁶ Мўғуллар бу жангдаги аччиқ мағлубиятлари баробарида Россиянинг ғарбий минтақаларида, яъни илгари босиб олган кўп жойларда ҳукмронликни қўлдан бой бердилар. Улар Россия минтақасида бир маротаба енгилиши оқибатида Россия, Гуржистон, Арманистон, Чеченистон, Доғистон, Озарбайжон ва Эроннинг шимолида нуфузини йўқотдилар.

Мўғулларнинг мағлубиятга учраб, саросимада туриши мусулмонлар учун сафларини тартибга солиш, тайёргарлик кўриб, мўғуллардан ўч олиш учун жуда қулай фурсат эди. Бироқ Ибнул Асирнинг хабар беришича, шу йилнинг шаъбон ойида мусулмон амирларидан бири жангга шай бўлиб, Грузиядаги насроний гурж қабиласига ҳужум уюштирди ва бир нечта қишлоқларни ишғол қилиб, бир қанча одамлар баробарида уларнинг бошлиғини ҳам асир олиб қайтди. Ҳолбуки, ҳеч қанча вақт ўтмасдан Гурж давлати подшосининг талабига кўра асирга тушган гурж амираи озод қилинди.²⁴⁷ Бу ҳайратланарли ҳодисадир. Мусулмонлар билан насронийлар ўртасида урушлар мунтазам давом этиб келган бўлсада, улар айна дамда ўзаро норасмий, муваққат сулҳда эдилар, қолаверса, катта душман — мўғуллар мавжуд бўла туриб,

²⁴⁶ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/388–389).

²⁴⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/414–415).

уларни йўқотишга киришмасдан, янги ерларни фатҳ қилишга киришиш ҳикматсизлик эмасми?!

Грузинлар ҳам мўғулларни ёқтирмас, уларнинг мўғуллардан чеккан жабрлари мусулмонларникидан оз эмасди. Мусулмонлар сиёсий ҳикмат ва фикҳга эга бўлиши ва керак бўлса мўғулларга қарши грузинлар билан иттифоқчилик тузиши керак эмасмиди? Ёки ҳеч бўлмаганда ёнида баҳайбат мўғул қуввати турганда грузинлар билан жанг қилмаслиги лозим эди, чунки бу мусулмонларнинг ҳам, грузинларнинг ҳам силласини қуритиши аниқ эди.

Ушбу даврда мусулмонлар соғлом дунёқараш, аскарый билимлар ва аниқ мақсаддан узоқ эдилар. Сафлар тарқоқ, амаллари бетартиб бўлиб, ишлари мужмал эди. Хуллас, гуржлар билан мусулмонлар орасида уруш бошланиб, иккала гуруҳдан ҳам катта сондаги йўқотиш бўлди. Сўнгра уруш тўхтади. Мўғулларга қарши бирлашиш имконияти чиппака чиқди, бу жангдан мусулмонлар бирон фойда кўрмади, аксинча, бу жанг уларнинг кучсизланиш сабабларидан бири бўлди. Иккала тарафда ҳам юзга келган катта йўқотишдан сўнг мусулмонлар гуржлар билан янгидан сулҳ тузди.²⁴⁸

Халифанинг Ғиёсиддинга қарши ҳаракати

Иккинчи воқеа: Мўғуллар енгилган минтақаларда Алоуддин Муҳаммад Хоразмшоҳ ўғилларидан бири кўзга ташлана бошлади. Унинг исми Ғиёсиддин Пиршоҳ бўлиб, ўша пайтлар Ҳиндистонда юрган Жалолоддин Мангубердиннинг укаси эди. Хоразмшоҳ ўғилларига мамлакатини тақсим қилганда унга Кармон, Кеш ва Макрон вилоятларини берган эди.²⁴⁹ Сўнгра у отасининг тақсимидан норози бўлиб, Ироқ ҳудудларига вакил қилинган акаси Рукниддиннинг ёнига боради, лекин Рукниддин отаси Хоразмшоҳга шикоят қилади. Шунда Хоразмшоҳ уни қамаб қўйишга амр қилади. Рукниддин мўғуллар кўлида “мардоновор” қатл қилингандан кейин, Ғиёсиддиннинг тарафдорлари уни озод қилишади. У ўз атрофига одам тўплайди ва мўғулларнинг нисбий хотимасидан фойдаланиб, ўша минтақаларни кўлга олади. Жумладан, Эроннинг катта қисми, Рой, Исфаҳон ва бошқа шаҳарларга ҳукмрон бўлади, ҳукмронлиги Покистондаги Кармон минтақасигача етди.²⁵⁰ Бу минтақага хануз мўғуллар етиб бормаган эди. Унинг султонлиги Эроннинг шимоли, ғарби ва жанубига чўзилди. Лекин

²⁴⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/415).

²⁴⁹ Насавий «Сийратус-султон» (144-бет).

²⁵⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/415).

Хуросон минтақаси, яъни Эроннинг шарқий қисми ва Афғонистоннинг шимоли-ғарбий қисми хануз мўғуллар қўл остида эди. Бошқача қилиб айтганда, мўғуллар Ғиёсиддиндан узоқ эмасди.

Ўшанда ажабланарли ҳодиса юз берди: Аббосийлар халифаси Носир Лидийниллаҳ номигагина халифа бўлган, ўша вақтлар унинг кадр-қиймати қолмаган халифа, Ғиёсиддин ибн Муҳаммад Хоразмшоҳни қўллаб-қувватламади, ҳолбуки, у хилофат билан мўғуллар ўртасидаги тўсиқ эди. Гарчи бу, исломий ухувватни сақлаш ва мусулмонларга ёрдам бериш учун бўлмаган тақдирда ҳам, уни қўллаш кераклиги мантикий эди. Энг камида муҳим стратегик нуқтаи назардан ҳамкорлик қилиши ақл тақозоси эди. Лекин халифа орадаги шу масофани ва узоқни кўра олмади, тарихчилар сифатлаганидек, золим, мустабид, халқнинг иқтисодий ҳолатига кўра янги-янги солиқларни мажбурий қилган, тантана, байрам, базму-жамшид, маишатлар, овчилик ва ўйин-кулгуларга ружу қўйган, сиёсий маразга гирифтор инсон эди. Унинг даврида фасод авжига чиққан, нарх-наво кўтарилган, хом ашёлар камайган эди. Халифа содир бўлаётган ҳодисаларга атрофлича қараш ва тўғри тушунчага эга эмасди. Шунингдек, хилофатнинг Хоразм давлати билан келишмовчиликлари унутилмаган эди. «Баъзи ривоятларга кўра, деб сўз очади Ибнул Асир раҳимахуллох, Халифа Ғиёсиддин ибн Хоразмшоҳ бошчилигида ўсиб келаётган янги давлатни парчалаб ташлашни фикр қилади ва шу мақсад ила Ғиёсиддиннинг тоғаси Иғон Тоисийни унга қарши исён қилишга қайрайди». ²⁵¹ У — байроқдор, Ғиёсиддин армиясининг қўмондони ва ўзига яраша катта киши эди. Халифа унга Ғиёсиддинга қарши инқилобида кўмакчи бўлиши ва мамлакатни унинг зиммасига беришини ваъда қилади. Унга кўшин, курол-яроқ бериб, «қимматли» маслаҳатларини аямайди. Халифа кўшни Эрон ерларида катта фитна юзага келишини мутлақо хаёлига келтирмади. Иғон Тоисий мағрурланиб, атрофига одам тўплади. Унга яна бир исёнчи Ойбек Шомий исмли амир ҳам қўшилди. Ҳеч қутилмаган ҳодиса рўй берди, Иғон Тоисий Эрон тахти учун жияни Ғиёсиддин ибн Хоразмшоҳга қарши уруш очди. Шу тариқа жуда катта жанг содир бўлди. Мусулмонлар жамоаси бир-бирлари билан тўқнашди. Улар ўртасида аёвсиз олишув кетди, мусулмонлар қиличидан беҳисоб мусулмонлар курбон бўлди. Сўнгра уруш Ғиёсиддин фойдасига ҳал бўлди. Иғон Тоисий қўшинида катта йўқотиш юз берган, у билан бирга баъзилар қочиб қолишган эди.

²⁵¹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/415–416).

Бу ҳодиса 620 йил жумадул-охир/1223 йил июл ойига тўғри келган эди.²⁵²

Халифа Носирнинг қилган ишга бир назар солинг, Оллоҳ таоло башариятни мана шундай разил қиёфада яратганми? Афсуски, уммат озми-кўпми бундай қиёфадаги инсонлар касофатига учраб турибди. Бундан кейин ҳам йўлиқиши табиий ҳол. Оллоҳ асрасин! Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Ўтмишда Ислом уммати бошидан кечирган ички урушларга ажаблансак, ҳозирда ҳам мусулмонлар ўртасида айни урушлар ва келишмовчиликларга гувоҳ бўлаяпмиз. Шу билан бирга, мусулмонлардан жуда озчилиги бу урушларга эътибор қаратиб, мулоҳаза юритмоқда. Уммат Ислом минтақаларидаги бундай хунук хуружлардан жафо чекмоқда! Шунингдек, кўпчилигимиз бу ҳодисаларга совуққонлик билан, беъэтибор, дард-аламсиз, мусибатни ҳис қилмай қараймиз. Худди шундай, мўғуллар замонида ҳам мусулмонлар ички низолар ва ўзаро урушларни совуққонлик билан, беъэтибор, дард-аламсиз, мусибатни ҳис қилмасдан, фақатгина эшитиб қўяр эдилар. Бу оғир фожиадир. Агар мусулмон киши фақат ўзини ёки оиласи ва яқинларинигина ўйлаб, уларгагина эътибор бериб, бошқа мусулмонларнинг қони тўкилса ёки уйи бузилса ёки ери тортиб олинса, ёинки аёли зўрланса, ҳеч бўлмаганда ачиниб, қайғу чекмаса, бу нарса Ислом ўлчови, биродарлик ўлчови, ҳатто инсонийлик ўлчовларида ҳам оғир мусибатдир. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Зеро, Пайғамбаримиз соллаллоҳу алайҳи ва саллам шундай марҳамат қилганларлар: *«Мўминларнинг ўзаро дўстлашиши, бир-бирига раҳм-шафқат кўрсатиши ва меҳр-оқибатли бўлишидаги мисоллари битта жасад мисолидирки, жасаднинг бир аъзоси оғривса, бошқа барча аъзолари бедорлик ва иситмада у билан бирга бўлади».*²⁵³

Мусулмон шахзода Анадолнинг насронийликни қабул қилиши

Учинчи воқеа: Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» китобида, «Бемисл ғаройиб ҳодиса» сарлавҳаси остида зикр қилади: «Гурж қабиласи мусулмонлар билан жанг қилганларидан сўнг, улар билан ўзаро сулҳ тузади. Гурж мамлақати турмуш қурмаган маликанинг қўлида қолади. Грузияга ҳоким бўлиш илинжида вазирлар, амирлардан совчилар келади, лекин у бўлажак эрининг подшоҳ ва шарафли

²⁵² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/415).

²⁵³ Аҳмад (18000), Бухорий (5581) ва Муслим (4692) ривояти.

хонадондан бўлишини хоҳлайди. Гурж қабиласининг ичида бундай сифатга эга одам йўқ эди. Шунда мусулмон подшоҳларидан бири бўлган Муғисуддин Тўғрулшоҳ ибн Қалж Арслон бу ҳақда хабар топади. У Салжукий подшоҳларидан бўлиб, Анadolу минтақасига, ҳозирги Туркиянинг шарқий ҳудудларига ҳоким эди. У катта ўғлига Гурж маликасининг қўлини сўраб, совчи бўлади, шунда малика мамлакатни бошига кўтариб, мусулмон кишига эрга тегмаслиги-ю, Гурж мамлакатига мусулмон кишининг бош бўлмаслиги ҳақида жар солади. Муғисуддин Тўғрулшоҳ ибн Қалж Арслон ўғлининг насронийликни қабул қилиши, ундан сўнг уйланишини айтади, у ҳам бунга қўнади. Шундай қилиб, ота ўғлини қистагач, мусулмон ўғил насронийликни қабул қилади ва Гурж маликасига уйланади. У давлатни бошқариш учун Гуржистонга келиб, насронийлигида қолади.²⁵⁴

Ўша замонда мусулмонлар диндан қайтиб, муртад бўлиш даражасига етдими?! Насронийликни қабул қилиб, бир давлатни бошқариш мусулмон подшоҳ ва ўғлининг ақлига қандай сиғди?! Исломдан воз кечиб, бутун ер юзини бошқариш ҳам асло ақлга тўғри келмайди-ку! Агар бир заиф қулдан бундай амал содир бўлганда, балки у бечора, бунга мажбурлангандир, дер эдик. Лекин бу Анadolуни бошқариб турган подшоҳдан содир бўлди, бунга нима ҳам дейишимиз мумкин? Мулк эгаси бўлган подшоҳдан бунинг юзага келиши ақл бовар қилмайдиган ҳодисадир. Бу подшоҳ Муғисуддин, яъни диннинг ёрдамчиси деган лақабни қаердан олган экан?! У қайси динга ёрдамчи бўлди?!

«Зеро, кўзлар кўр бўлмас, балки кўксларидаги қалблар кўр бўлур».

Йигит Гурж маликасига уйланди ва Гурж қамокхонасида насроний ҳолатда жон берди. Тўйдан кейин бир неча ой подшоҳлик қилди, сўнгра у Гурж маликасига ёқмай бошлади ва ундан айб ахтариб, уни қамокқа ташлатади. Ибнул Асирнинг хабар беришича, йигит маликани тўшакда бошқаси билан топиб олгандан сўнг, келишмовчилик юзага келади.²⁵⁵ Хуллас, у бечора насронийлигида қолиб, насроний ҳолатда ўлади. Ва лаа хавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Пайғамбар соллаллоҳу алайҳи ва саллам бўлиб ўтажак фитналардан хабар бердилар. «Саҳиҳ Муслим»да Абу Ҳурайра ва бошқалар ривояти билан келган ҳадисда, у зот айтадилар: *«Зулматли тун нарчалари каби фитналар келиб қолмасидан амаллар қилиб қолишга шошилингиз! (Ўша*

²⁵⁴ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/416–417).

²⁵⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/417).

*фитналар келган кунларда) киши мўмин бўлиб тонг оттириб, кечга бориб кофирга айланади ва мўмин бўлиб кеч киргизиб, кофир ҳолда тонг оттиради, дунё матоси эвазига динини сотиб юборади».*²⁵⁶

Мусулмон ўлкаларида чигиртка балоси

Тўртинчи воқеа: Бу ҳодисани кўпчилик тасодиф деб ўйлайди, лекин унинг юзага чиқиши жуда ғаройибдир. Ўша йилда мусулмонларга жуда кўп синовлар келди. Кўриб турганимиздек, иқтисодий ҳолат ёмонлашган, сиёсий, ҳарбий ва ахлоқий ҳолатлар ачинарли аҳволга тушган. Юқорида зикр қилиб ўтилган мусибатлар устига-устак, аксарият мусулмон ўлкалари катта ҳажмдаги чигирткалар ҳужумига мубтало бўлди. Натижада Ироқ, Жазира, Диёрбакр, Шом, Форс ва бошқа минтақалардаги кўплаб экинзорлар нобут бўлди.²⁵⁷ Бу тасодиф эмас, Оллоҳга қасамки тасодиф эмас,

«Агар у қишлоқларнинг аҳли иймон келтириб, тақводор бўлганларида эди, албатта, Биз уларга осмону ердан баракот (дарвозаларини) очиб қўйган бўлур эдик. Лекин улар (пайғамбарларимизни) ёлғончи қилдилар, бас, уларни ўзлари қилган гуноҳлари сабабли ушладик».²⁵⁸ Бу Оллоҳ таолонинг китоби билан собит бўлган ҳақиқатлардан биридир. Оллоҳ азза ва жалла Ўз китобида чигирткаларни алоҳида зикр қилгани, унинг йўлига эргашмаганларга Ўз қудратини намоён қилиш василаларидан бири эканига далолатдир,

«уларнинг устларига тўфон (сел) юбордик»,²⁵⁹ Хоразмдаги тўфон, бунга мисолдир.

«уларнинг устларига тўфон (сел) ва чигиртка юбордик»,²⁶⁰ Чигирткалар Оллоҳ таолонинг қўшинларидан биридир.

«Биз сенга ҳаргиз иймон келтиргувчи эмасмиз, деганларидан кейин устларига тўфон (сел), чигиртка, бит, бақа ва қон (балоларини) очик оят-мўъжизалар қилиб юбордик. (Лекин) улар кибр-ҳаво қилдилар ва жиноятчи — осий қавм бўлдилар».²⁶¹

Кунлаб, ҳафталаб Ислом оламига ҳужум қилган чигирткаларни кўрганмиз ёки эшитганмиз, бу тасодиф эмас. Бу мусулмонларнинг кўзини очиш, уларга тарихни эслатиш ва уларнинг Оллоҳ азза ва жаллага

²⁵⁶ Муслим (118), Термизий (3196).

²⁵⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/418).

²⁵⁸ Аъроф: 96.

²⁵⁹ Аъроф: 133.

²⁶⁰ Аъроф: 133.

²⁶¹ Аъроф: 133.

қайтишларига даъватдир. Оллоҳ таолонинг ғазабидан паноҳ тилаймиз ва
Ундан тақво ва ихлос беришини ва солиҳ амалга муваффақ қилишини
ўтинамиз.

ҲИЖРИЙ 621 ЙИЛНИНГ МУҲИМ ВОҚЕАЛАРИ

621/1224 йилда содир бўлган воқеалардан факат учтасига тўхталиб ўтамиз:

Форс минтақасининг тақсимланиши

Биринчи ҳодиса: Форс минтақасига ҳукмронлик қилаётган Ғиёсиддинга қарши айни минтақа амирларидан бири Саъдуддин ибн Дакла бош кўтарди, улар ўртасида узоқ жанг-жадал бўлди. Охир-оқибат, улар мамлакатни иккига бўлиб олишга қарор қилдилар. Саъдуддин ибн Дакла мамлакатнинг жануб, Ғиёсиддин эса шимол томониغا ҳоким бўлди,²⁶² деб хабар беради Сиржоний. Эроннинг шарқий қисми мўғуллар кўлида бўлган бир паллада мусулмонлар давлатни ўзаро тақсимлаш билан овора бўлдилар!²⁶³ Ва ла ҳавла вала қуввата илла биллаҳ...

Эронда бир гуруҳ мўғулларнинг иши

Иккинчи ҳодиса: Ҳижрий 621 йилда Ғиёсиддин ибн Хоразмшоҳ билан Саъдуддин ибн Дакла орасида жанг-жадал бўлиб турган айни замонда, 3 минг мўғул суворийлари Эронга бостириб кириб, Рой²⁶⁴, Саваҳ²⁶⁵, Қум²⁶⁶, Кошон²⁶⁷ ва Ҳамадон²⁶⁸ шаҳарлари аҳолисини қиличдан ўтказди.²⁶⁹ Уларга қарши номига ҳам қилич кўтарилмади. Ўша кунларда мусулмонларга хорлик туширилган, уларнинг кўзига мўғуллар кўп, мўғулларга эса мусулмонлар оз ва кучсиз қилиб кўрсатилган эди. Мўғулларнинг ҳайбати жуда юксалган, мусулмонларнинг ҳайбатидан эса, асар ҳам қолмаган эди. Мусулмонлар

²⁶² Сиржоний «Қиссатут-татар» (74-бет).

²⁶³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/420–421).

²⁶⁴ РАЙ, Рей, қад. Рага — Эрондаги қад. шаҳар. Техрондан 8 км шим.шарқда жойлашган. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Р» харфи бўлми).

²⁶⁵ Рус. Саве.

²⁶⁶ Ҳозирги Техрон шаҳрининг жанубида жойлашган.

²⁶⁷ КОШОН — Эроннинг марказий қисмидаги шаҳар, Техрон остонида. Транспорт йўллари тугуни. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («К» харфи бўлми).

²⁶⁸ ҲАМАДОН — Эроннинг ғарбий қисмидаги шаҳар. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Х» харфи бўлми).

²⁶⁹ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/419–420), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/126).

Ўзлари билан ўзлари овора, дўст ким, душман ким билмас эдилар. Бу дамда мусулмонлар бирлашиши лозим эди, билакс улар бўлиниб кетдилар. Бу эса фақат қалблардаги иймоннинг заифлиги, мол-дунёга берилгани, исломий тарбиянинг ёмонлигидан ёхуд узок замонлар бу тарбиянинг мутлақо йўқлигидан вужудга келган эди.

Чигиртка ва қурғоқчилик келиши

Учинчи ҳодиса: Мана шундай муҳит оқибатида бу йилда ёмғир камайиб, иккинчи бор чигирткалар чиқди. Чигирткалар қурғоқчилик натижасида униб чиққан озгина экинларни ҳам еб битирди. Ироқ, Мосул ва Жазирада нарх-наво ҳаддан ташқари кўтарилди.²⁷⁰ Бу даврда чигирткаларнинг чиқиши, қаҳатчилик, экин-текиннинг тақчиллиги каби табиий офатларнинг содир бўлиши, илоҳий қонунларга мувофиқ бўлган табиий ҳол эди. Агар қайси даврда нарх-наво кўтарилса, маҳсулотлар озайса, иқтисод қашшоқлашса, яшаш оғирлашса, мусулмонлар ўзларига келиши, ўзларини ҳисоб қилиши ва Оллоҳнинг китобига қайтишлари шарт бўлади. Агар содиқ бўлсалар, ўзларидаги маънавий касалликни англаши ва унинг давосини Оллоҳнинг китобидан топишлари аниқ, чунки Оллоҳ: **«Китобда бирон нарсани қўймай (ёзганмиз)»**²⁷¹, деб марҳамат қилган.

²⁷⁰ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/424).

²⁷¹ Анъом: 38.

ҲИЖРИЙ 622 ЙИЛ ВОҚЕАЛАРИ

Мангубердининг Эронга ҳукмронлиги

Мўғуллар қиссаси 616/1219 йил бошланган эди, шу онгача зикр қилганларимиз атиги олти йил ичида содир бўлди. Сўнгра 622–623/1225–1226 йилда мўғулларнинг ҳаракати сусайди, Хоразм давлатининг ғарби ва Эроннинг шимолига ора-сира хужум қилишгагина чекланди. Бутун эътиборларини эгаллаган кенг минтақаларда мустаҳкам ўрнашишга қаратди. Лекин бу йилларда янги ҳодиса юз берди, ҳодисалар сахнасига кутилмаганда Жалолоддин Мангуберди чиқди. Ҳиндистон Жалолоддинга торлик қилиб, у ерлар билан қаноатланмаган, шунингдек, Ҳиндистондаги ғурийлар билан алоқаси яхшиланмай, Эронга қайтишга қарор қилганди.

Жалолоддин кўлдан бой берган подшоҳлигини ахтариб Эронга қайтди. У валиаҳд эди ва шу сабаб Хоразмшоҳларга тегишли султонликни қайтариб олишни истади. Дастлаб ўзи билан Ҳиндистондан омон чиққан ҳачир ва сигирларга минган тўрт минг аскар билан Кармонга келиб, уни кўлга олди.²⁷² Жалолоддин ва аскарларининг бу аҳволдан у Ҳиндистонда қандай кунларни бошидан кечирганлигини англаб олсак бўлади. Кейин у Исфаҳонга ўтиб, уни ўзига бўйсундирди, бошқача таъбир билан айтганимизда, укасидан тортиб олди, у Хоразмшоҳнинг тахт вориси эди-да. Юқорида зикр қилганимиздек, бу минтақалар унинг укаси Ғиёсиддинга қарашли эди. Сўнгра Жалолоддин Форсдаги Шероз²⁷³ га қараб юрди.²⁷⁴ Ғиёсиддин Форс минтақасининг баъзи қисмларини Форс ҳокими Саъдуддиндан тортиб олган эди, Жалолоддин у жойларни укасидан олиб, Саъдуддинга қайтариб бериш эвазига у билан сулҳ тузди. Сўнгра Хузистон ерларига борди. Жалолоддин ва унинг кўшини ўта заиф бир ҳолатда эди, улар Хузистонни ва унинг халқини талаб, талон-тарож қилиб, от-улов ва ғаниматлар ундириб зарур бўлган кучни тўплаб оладилар.²⁷⁵ Жалолоддин 622 йил муҳаррам ойида/1225 йил февралда шу

²⁷² Насавий «Сийратус-султон» (174-бет).

²⁷³ ШЕРОЗ — Эроннинг жан. қисмидаги шаҳар. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» («Ш» ҳарфи бўлми).

²⁷⁴ Насавий «Сийратус-султон» (176-бет).

²⁷⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/426–427), Насавий «Сийратус-султон» (192-бет).

минтақадаги Шуштар²⁷⁶ шахрининг қамалига киришди. Бу шаҳарга халифа Носирнинг ишончли мамлукларидан бўлган, йиртқич важоҳати билан маъруф Музаффаруддин амир эди. У Жалолиддинга муносиб рақиблик кўрсатиб, уни шаҳарга киритмади. Бу орада Хоразм аскарлари атроф шаҳарларга тарқалишиб, борган жойларини талон-тарож қилишди, улардан бир қисми Басра ерларига бориб, у жойларни ҳам таладилар.²⁷⁷ Басраликлар қаттиқ қаршилик кўрсатади, икки тараф орасида қаттиқ жанг содир бўлади. Бироқ Хоразм аскарлари ғолиб бўлиб, шаҳарни қамал қилади. Басра халқи икки ой сабр билан туриб бергандан сўнг, Хоразм аскарлари кутилмаганда Басрани тарк қилади.²⁷⁸

Жалолиддин Мангуберди Форс минтақасининг жанубидан шимолига қараб босиб, Эроннинг ғарбигача етиб келиб, уни эгаллайди. Жалолиддин Мангуберди Ироқдаги Аббосийлар хилофатига яқин келиб қолганди, хилофат билан ўтмишдаги келишмовчиликларини ёдига олиб, хилофат устига лашкар тортишга қарор қилади.

Ўша вақтлардаги бошлиқлар сиёсатни тўғри баҳолашдан бебахра эдилар. Жалолиддин тарихда машҳур бўлган Баъкуба²⁷⁹ қишлоғига етиб келди. Бу қишлоқ Бағдод шаҳридан 7 фарсах²⁸⁰ (42 км атрофида) узоқликда эди. Жалолиддин Баъқуқодан Дақуқ²⁸¹ деган минтақага отланди ва етиб бориб, шаҳарни қамал қилади. Халқ шаҳар кўрғонига чиқиб, Хоразм аскарлари билан жанг қилиб, қаттиқ қаршилик қилади ва баралла такбир айтишади. Бу Жалолиддинга қаттиқ ботиб, қаҳр-ғазаб билан жангга киришишига сабаб бўлади. Охири Дақуқ аскарлари мағлуб бўлди, Жалолиддин уларни битта қўймай ўлдириб, шаҳарга кириб, аҳолини ҳам қиличдан ўтказди ва мол-мулкни талайди. Жуда озчилик омон қилиб, шаҳарни ташлаб қочиб қолишади.²⁸² Ва лаа хавла ва лаа куввата иллаа биллаҳ!

Аллома Ибнул Асир Дақуқ шаҳри аъёнларидан бири билан бўлган суҳбатини шундай баён қилади: «Мен Бану Яълонинг бойларидан бўлган Дақуқ аъёнларидан бирини кўрдим. Улар Жалолиддиннинг аскарлари томонидан талон-тарож қилинган, ўзи эса омон қолган экан.

²⁷⁶ Рус. Шуштер.

²⁷⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/426).

²⁷⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/426).

²⁷⁹ Рус. Баакуба.

²⁸⁰ Фарсах узунлик ўлчови бўлиб, 3 мил ёки 6000 метрга тенгдир. Жалол Шавқий.

²⁸¹ Рус. Дақуқ(Таук).

²⁸² Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/427), Насавий «Сийратус-султон» (193-бет), фақат Насавий бу ўринда халқнинг такбир айтганини эмас, койиб-сўкканларини айтиб ўтади.

Ўзи билан икки фарзанди ва озгина моли (пули) билан қочиб, Шомга борибди. Дамашқда битта фарзандидан айрилибди. Ҳоким у билан бўлганларга жон куйдириб ёрдам берибди. Мен у кишини жуда ночор ҳолатда кўрдим, унинг ночорлигининг қай даражада экани ёлғиз Оллоҳгагина аён. У мол-мулклари талангани, аҳлидан кўпчилик ўлдирилгани, саломат қолганлари мана шу арзимас нарсалар билан ватанларидан қочиб қолганини айтиб берди. Ундан савол сўрашга богинолмадик. Сўнгра у иккинчи фарзандини олиб, Мосулга кетди ва бир ой ўтар-ўтмас жон таслим қилди.²⁸³

Бу ҳодисаларни кўрган киши Жалолоддиннинг мақсадини ифодалаши жуда қийин. У бир томондан мўғулларга қарши курашган бирдан-бир қаҳрамон бўлса, бошқа томондан эса мусулмонларни ҳам қиличдан ўтказди. Буни қандай изоҳлаш мумкин?!

Мусулмон кишининг қонини тўкиш, ҳатто ғайри муслимнинг қонини ноҳақ тўкиш ҳам етти ҳалок қилувчи қабира гуноҳлар жумласидан-ку!

Бир инсонни ноҳақ ўлдириш бутун инсониятни ўлдириш билан баробар-ку!

«Кимки бирон жонни ўлдирмаган ва ерда бузғунчилик қилиб юрмаган одамни ўлдирса, демак, гуё барча одамларни ўлдирибди».²⁸⁴

Хуллас, бу ўринда Жалолоддиннинг ҳақиқий юзи намоён бўлди. Бунинг таҳлилини ўқувчининг ўзига ҳавола қилган ҳолда мавзумизга қайтамиз...

Жалолоддин Дақуқда турган кезде Хоразм аскарларидан бир бўлаги ал-Бат ва ар-Разон минтақаларига йўл олишди. Улар бу жойларга келиб халқни таладилар, халқ Тикрит тарафга қочишди. Хоразм аскарлари уларни таъқиб қилдилар. Тикритда Хоразм аскарлари қаттиқ қаршилиқка учради, икки тараф ўртасида шиддатли жанг содир бўлди. Голиб, мағлуб аниқ бўлмагач, Хоразм аскарлари Жалолоддиннинг ҳузурига қайтишга мажбур бўлишди.²⁸⁵

Жалолоддиннинг Бағдодга яқинлашганидан кўркувга тушган Халифа Носир ўзидан ва юридан айрилиб қолишдан кўрқиб, шаҳар кўрғонини кучайтирди ва қўшин ҳозирлади.²⁸⁶ Лекин у, жанг ва аскар

²⁸³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/427).

²⁸⁴ Моида: 32.

²⁸⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/427).

²⁸⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/132).

билимлардан беҳабар, жанг қилишни ҳам билмайдиган киши эди. Шунда халифа Носир хунук, жирканч, манфур ва ақлга ҳам сиғмайдиган бир ишга қўл урди. У Жалололиддинга қарши курашишга мўғуллардан ёрдам сўраб, элчи жўнатди. Ваҳоланки, у мўғулларнинг тарихи ва уларнинг мусулмонларга олиб борган қирғинларини жуда яхши биларди.²⁸⁷

Агарчи ҳамма ноҳақлик Жалололиддин томонда ва бутун ҳақиқат халифа томонда бўлса ҳам халифа мўғуллардан нажот сўраши керакмиди?!

Халифа мўғуллар Жалололиддиннинг ишини бир ёқли қилиб, кейин бевосита унга ўтишини билмасмиди?!

Мусулмонлар халифаси ҳокимиятини озгина вақтга чўзиш ва Жалололиддинга бўйсунушдан кўра мўғулларга қул бўлиб ўлишни хоҳладими?!

Жалололиддин ҳам халифадан яхшироқ иш қилгани йўқ. У мусулмонлар жамоасини парчалаб, кучини мусулмонларга кўрсатди ва «муштумзўр» бўлди. Жалололиддин ҳам сиёсий, ҳам ахлоқий жиҳатдан чегарадан чиққан бўлса, бу муаммоларни ҳал қилиш ва маънавий касалликларни даволаш, ҳаргиз хавfli ва даҳшатли кофирлар қувватини Ислом ўлкаларига киритиш билан бўлмаслиги керак. Аббосийлар халифаси гўё чўғдан сақланаман деб, оловдан ёрдам сўраган киши ёки уйига тушган ўғридан кутуламан деб, минтақанинг энг катта қароқчисидан ёрдам сўраган кишидек эди. Бу ўринда қароқчи нима қилади, деб ўйлайсиз? Ўғрини уйдан хайдаб, уйни ўзиники қилиши у ёқда турсин, ҳатто бутун бинони босиб олиши турган гап-ку.

Субҳонллоҳ, ўша вақтда мўғуллар бошқа ишлар билан банд бўлганидан халифага ёрдам қўлини чўзмади. Жалололиддин ҳам Бағдодга кира олмасдан уни тарк қилиб, бошқа тарафга қараб юрди.

Бу санада Жалололиддин Бағдоднинг атрофи, шимолий Ироқ, Форснинг шимолий минтақаларини эгаллаб, Озарбайжон ва унинг атрофидаги Ислом минтақаларга бостириб кира бошлади.²⁸⁸ Сўнгра у насроний Гуржистонга қўл узатди ва укаси Гиёсиддин билан муваққат сулҳ тузди.

Жалололиддин ва Хоразм армиясининг босқинлари мусулмон ўлкаларга йўналган бўлиб, ваҳшийлик ва бузғунчиликдан иборат эди. Улар гўёинки мўғуллардан қаҳри қаттиқликни таълим олгандек, бир

²⁸⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (77-бет).

²⁸⁸ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/428), Сиржоний «Қиссатут-татар» (78-бет).

неча йиллар мобайнида мўғул зулмидан эзилган халқларга раҳм-шафқат қилиш ўрнига Ислом диёрларида ўлдириш, асир олиш, талон-тарож ва вайрон қилиш ишларини амалга оширдилар. У ҳам халқларни азоблашда ўз ҳиссасини қўшди. Насавийнинг сўзини ёдга олсак, у Жалолиддинни шундай васфлаган эди: «У адолатни хуш кўрарди, фақат у яшаган даврда юз берган фитналар уни енгиб қўйди. Қўл остидаги одамларнинг оғир ҳаётини енгилаштиришни яхши кўрарди, аммо у яшаган даврдаги алғов-далғовлар, замон қонунлари уни зулм қилишга мажбур этди».²⁸⁹

Алҳол, Жалолиддиннинг султонлиги Форснинг жанубидан то Каспий денгизининг шимоли-ғарбий минтақаларигача етди. Бу минтақа анчагина кенг, бироқ унинг барча жойлари изтироб ва ғалаёнли бўлиб, буларга қўшимча бу минтақаларнинг аҳолиси қалбида адоват, нафрат чексиз эди. Жалолиддин сиёсий фикр ва сиёсий хусуматни отаси Алоуддин Муҳаммад Хоразмшоҳдан мерос олган бўлса керак.

Бундай сиёсат умматнинг бошига фақат оғир кулфатларни келтириши аниқ, кошки мусулмонлар буни англаб етсалар...

²⁸⁹ Насавий «Сийратус-султон» (384-бет).

ҲИЖРИЙ 623–624 ЙИЛЛАР ВОҚЕАЛАРИ

Зоҳир Биамриллахнинг халифалиги

622 йил рамазон ойининг охириг кунларида/1225 йил октябр ойида золим, мустабид халифа Носир Лидийниллаҳ ҳаётдан кўз юмди, у 47 йил халифа бўлган эди. Ундан кейин халифалик тахтига ўғли Зоҳир Биамриллах ўтирди. У халифа бўлганда 52 ёшда эди, Ибн Касир раҳимаҳуллоҳ «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*»да, Аббосийларга бу кишидан кўра кекса ёшли инсон халифа бўлмаган, деб ёзади.²⁹⁰

У отасининг бутунлай акси бўлиб, солиҳ, такводор инсон эди. Икки Умардек (Умар ибн Хаттоб ва Умар ибн Абдулазиз) адолат ва эҳсонни амалга оширганидан, ҳатто Ибнул Асир «*ал-Камил фит-Тарих*» китобида у ҳақда шундай дейди: «Агар бирор киши халифа Умар ибн Абдулазиздан сўнг хилофатга бу инсондек киши волий бўлмади, деса рост сўзлабди».²⁹¹

У отаси томондан тортиб олинган ерларни эгаларига қайтарди, халқнинг зиммасидаги катта солиқларни бекор қилиб, инсонларга ўз ҳуқуқларини қайтариб берди, мазлумларни маҳбусликдан озод қилиб, фақирларга садақалар берди, ҳатто унинг ҳақида бундай издан чиққан, бузилган даврда тамоман ғариб эканлиги айтилди.²⁹² Бир мозийга назар солсак, унинг отаси Носир Лидийниллаҳнинг халифалик замонида бир йилда халқ зиммасига солинган солиқ миқдори 80 минг динар бўлган.²⁹³ Бу миқдор, Бағдод ва унинг атрофидаги хилофат ҳудуди учун катта ўлчовдир.

Ибнул Асирнинг ушбу сўзларидан ажабланасан киши: «Мен унинг халифалик даври қисқа бўлишидан кўрқаман, чунки замонамиз ва халқимиз унинг хилофатига лойиқ эмас, деб дўстларимга қўп айтардим».²⁹⁴

²⁹⁰ Ибн Касир «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*» (17/133, 134, 136).

²⁹¹ Ибнул Асир «*ал-Камил фит-Тарих*» (12/441).

²⁹² Ибнул Асир «*ал-Камил фит-Тарих*» (12/441).

²⁹³ Ибн Касир «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*» (17/136), Ибнул Асир «*ал-Камил фит-Тарих*» (12/441).

²⁹⁴ Ибнул Асир «*ал-Камил фит-Тарих*» (12/441).

Ҳа, жамият шу даражада бузилган эди. Ибнул Асирнинг гумони рост чиқди, 623 йил 14 ражаб куни²⁹⁵ (Ибн Касир 13 ражаб жума куни,²⁹⁶ деб хабар берган)/1226 йил 18 июл куни мўминлар амири халифа Абу Наср Муҳаммад ибн Носир Лидийниллаҳ (лақаби Зоҳир Биамриллаҳ) халифа бўлганидан 9 ойдан кейин оламдан ўтди. Халифалик муддати 9 ойи 14 кун давом этган эди.²⁹⁷ Лекин шунга қарамай, ровийларнинг айтишларича, у йўқолиб кетган адолатни янгилади, унутилган эҳсонни хотирлатди. Унинг даврида нарх-наво жуда тушди, Ироқда 9 ой ичида иқтисод анча яхшиланди. Бу ҳолат оқил кишига сир бўлмаган аломатдир. Ер юзида ўзгармайдиган собит қонунларни ўрнатган Оллоҳ таолога ҳамдлар бўлсин! Халифа Зоҳирдан кейин халифаликка унинг катта ўғли (қунаси) Абу Жаъфар (исми) Мансур (лақаби) Мустансир Биллаҳ тахт вориси бўлди²⁹⁸...

Мангубердининг Халат²⁹⁹ шаҳрини қирғин қилиши

622/1225 йил Табриз Жалолиддинга таслим бўлди³⁰⁰, бунга қаноат қилмаган султон бошқа минтақаларни ҳам бўйсундиришда давом этди. У Гуржистон ерларига кириб, 60 минг аскардан иборат бўлган гурж ва арман насронийлари устидан ғолиб бўлди³⁰¹ ва Ани, Тблиси шаҳарларини эгаллади. Сўнгра Абхоз минтақаси сари йўл олди³⁰² ва у жойларда 10 кун атрофида қолиб, 623 йил 13 зулқайда куни/1226 йил 12 ноябрда яна орқага Малазгирт шаҳрига қайтади. У ердан чиқиб, 15 зулқайда душанба куни³⁰³ мусулмон Халат шаҳрига келади ва уни қамал қилиб, шаҳар атрофига 12 та манжаниқ ўрнатиб, ўққа тутди³⁰⁴ ва бир неча бор ҳужум уюштирди. Тарафлар ўртасида шиддатли жанг бўлди. Жалолиддин шаҳардаги жуда кўп халқни ўлдирди. Хоразм армияси бу ўлкадаги барча нарсани талон-тарож қилиб, халқни маҳрум қилди, ҳатто муслима аёлларни ҳам асир қилиб, ўзлаштириб олишди. Улар 23 зулҳижжа, яъни 22 декабр сешанба куни қаттиқ совуқ бошланиб, қор учқунлай бошлагандагина Халат шаҳрини тарк қилишди.

²⁹⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/456).

²⁹⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/148–149).

²⁹⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/456), Саллабий «ал-Мўғул» (140-бет).

²⁹⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/150–151), Саллабий «ал-Мўғул» (140-бет).

²⁹⁹ Ёки Ахлат.

³⁰⁰ Насавий «Сийратус-султон» (196-бет).

³⁰¹ Насавий «Сийратус-султон» (197–200-бет).

³⁰² Насавий «Сийратус-султон» (201-бет).

³⁰³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/461).

³⁰⁴ Насавий «Сийратус-султон» (299-бет).

Жалолиддиннинг Халат шаҳрини тарк қилишига бир тарафдан қаҳратон кишининг зийнати бўлган қор ёғиши бўлса, бошқа тарафдан туркман қабилалари Жалолиддиннинг Гуржистон билан, сўнгра Халат шаҳри билан бандлигидан фойдаланиб, Озарбайжон ерларига бостириб келгани ва у ерларда қароқчилик қилиб, ҳатто Табризга яқин келгани ҳақида Жалолиддиннинг рафикаси — собиқ Табриз шаҳри ҳокими Ўзбек ибн Паҳлавоннинг собиқ хотини хабар йўллагани эди. Қор учқунлаши билан бу хабар ҳамоҳанг бўлган ва Жалолиддиннинг орқага қайтишига сабаб бўлган эди.³⁰⁵

Бундай ахлоқий, фаҳмий ва сиёсий разилликнинг мантиқий ечимини топиш ўта мушкул. Агар бу ҳодисалар аксар манбаларда зикр қилинмаганда эди, ақлга тўғри келмайди, деган бўлар эдик, лекин... Ва ла ҳавла вала қуввата илла биллаҳ...

Чингизхоннинг ўлими

624 йил 4 рамазон/1227 йил 25 август куни муҳим ҳодиса юз берди: конхўр, золим, ваҳший, жинойтчи, қиличидан қон томган мўғул хони Чингизхон 72 ёшида ўлди.³⁰⁶ Унинг ҳаёти қонга, қон тўкишга, босқинчилик ва талон-тарожга тўлиб-тошган эди. Озми кўпми, рисоламизнинг шу жойигача бундан воқиф бўлдик.

У шарқдан Корейдан бошлаб, ғарбдан Форс минтақасини ўз ичига олган жуда кенг мамлакатнинг ҳокими бўлиб, бу мамлакатини башариятнинг, хоссатан мусулмонларнинг қирғини эвазига барпо қилганди. Лекин ҳамма айб мўғулларда эмас, мусулмонларни ўз ерларида душманнинг хоҳлаганча бузғунчилик қилишига қўйиб берадиган даражада заифлик ҳолатига олиб борганлар бу хунларга шерикдирлар.

Чингизхон ўлимидан сўнг атроф бўрон сўнгани каби нисбий осойишта ҳолатга келди. Мўғуллар тақрибан Эроннинг ярмини эгаллаган эди. Жалолиддиннинг мамлақати эса, Эрон ва Каспий денгизининг ғарбий минтақаларигача чўзилган эди. Уруш тўхтади ва ҳар иккала тараф эга бўлган жойларидан мамнун эдилар.

³⁰⁵ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/461–462).

³⁰⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/159–160), Саллабий «ал-Мўғул» (168-бет), Рашидуддин «Жомийут-таварих» (28-бет), «Абул-Фароҳ тарихи» (2/523).

ҲИЖРИЙ 624–627 ЙИЛЛАР ВОҚЕАЛАРИ

Уч йил 624–627/1227–1230 йиллар ораси нисбатан осойишта кечди. Бу босқичда мусулмонлар ўзаро хилоф, низо, нифок, адоват ва бузук ахлоқларида давом этдилар. Улар мўғул саркардаси Чингизхоннинг ўлими оқибатида мўғулларга етган катта мусибат замонидан фойдаланмадилар, сафларини бирлаштириб, Ислоом ўлкаларини мўғуллардан озод қилмадилар, аксинча ўзлари билан ўзлари овора, бир-бирлари билан жанг қилдилар. Бундай ҳолат фақат Ироқ ва Эроннинг ғарбий минтақалари, Жалолиддин билан Аббосийлар халифаси орасида содир бўлмади, балки бутун Ислоом оламида юз берди. Ислоом оламидаги барча минтақаларда фитна, жанжал, кўзғолонлар авжига чиққан эди. Шом ва Мисрда мусулмон амирлар ўртасида урушлар тўхтамади, гаплари бир жойдан чиқмади, ваҳоланки, бу минтақалар ҳокимлари Айюбийлардан бўлиб, улар орасида кучли қариндошлик ришталари бор эди. Шунга қарамай, баъзан ота-она бир, туғишган ака-укалар орасида уруш содир бўлди. Субҳоноллоҳ...

Байтул-Мақдиснинг насронийларга топширилиши

626 йил рабиул-охир ойининг бошлари/1229 йил март ойида ўта нохуш воқеа содир бўлди, бундан 40 йил олдин Салоҳиддин Айюбий салибчилар кўлидан сулҳ йўли билан озод қилган Байтул Мақдис насронийларга таслим қилинди. Шомдаги мусулмон амирлар Мисрга уруш қилишда ёрдам беришлари эвазига Байтул Мақдисни француз салибчиларига топширди.³⁰⁷ Ўша вақтдаги кулфат қай даражага борганини бир тасаввур қилинг-а!

Оллоҳ таолодан қувват ортидан заифлик, азизликдан сўнг хорлик ва нусратдан кейинги мағлубиятдан паноҳ сўраймиз. Мусулмон ўлкаларидаги бу ҳодисаларни кўрганингизда, бу бепоён минтақаларнинг аҳолиси ва бойликлари беҳисоб бўлган ҳолида мўғуллар уларни босиб олишининг сабабини англаб етасиз. Бу Оллоҳ таолонинг борлиқдаги ўзгармас қонунидир. Қайси давлатнинг аҳволи мана шундай бўлса, уни тоғутлар эгаллаб олиши турган гап. Оллоҳ азза ва жалла фақат ва фақат Ўзига ёрдам берганларга ёрдам беради,

³⁰⁷ Ибнул Асир «ал-Камил фит-Тарих» (12/482).

**«Агар сизларга Оллох ёр бўлса, ҳеч ким сизлардан ғолиб бўлмас.
Ва агар сизларни ёрдамсиз қўйса, Ундан ўзга ҳеч бир зот ёрдамчи
бўлмас».**³⁰⁸

³⁰⁸ Оли Имрон: 160.

ИККИНЧИ БЎЛИМ: ЎҚТОЙ ДАВРИ ВА ҒАРБ ИСТИЛОСИ

ИККИНЧИ МЎҒУЛ БОСҚИНИ

Хижрий 628 йил ходисалари

Чингизхон ўлгандан кейин икки йил мобайнида мўғуллар бошсиз қолиб, ўзларига хон сайлашда узоқ тараддуд қилдилар. Икки йилдан кейин, яъни 626 йил рабиул-аввал/1229 йил мартда 40 кунга чўзилган катта қурултойда мўғулларга унинг ўртанча ўғли Ўқтой³⁰⁹ хоқон бўлди.³¹⁰ Чингизхон Хоразмшоҳ давлатига юриш қилишидан олдин Ўқтойни валиаҳд қилиб тайинлагани ҳақида айтиб ўтган эдик.³¹¹ Рум давлатининг бошлиқлари «Қайсар», Форс давлатининг бошлиқлари «Кисро»га ўхшаш, «Хоқон» ҳам мўғул бошлиқларининг лақаби эди. Баъзи манбаларда ўтган икки йил давомида кенжатой Тулихон давлатни бошқаргани айтилади.³¹² 628/1231 йилга келиб мўғулларнинг янги хони Ўқтой Ислом диёрларига янгидан қўшин тортишни, Россия ерларини тўлиқ эгаллаб, Овропа минтақасига ўтишни мақсад қилди...

Ўша вақтлар Ўқтой Аббосийлар хилофатига уруш очишдан воз кечди, бунинг бир неча сабаблари бор эди:

Биринчи: Бағдод ўша пайтлар дунёдаги энг мустаҳкам қўрғонли шаҳарлардан бири эди. Зеро, бу шаҳарнинг хилофат марказига айланганига салкам 500 йил бўлган ва аҳолиси уч миллион ёки ундан ҳам кўп эди.

Иккинчи: Ўқтой Ироқ, Шом ва Мисрдаги мусулмонларни оёққа турғизиб юборишни истамади, хилофат гарчи заиф ҳолатда бўлсада, мусулмонлар учун ўта муҳим аҳамият касб этарди.

Учинчи: Ўқтой ўз босқинининг охирига қадамини Аббосийлар хилофати бўлишини фикр қилди, унга қадар Бағдоднинг атрофини ўраб турган минтақаларни эгаллаб, сўнгра бутун Ироқни забт этмоқчи бўлди.

³⁰⁹ ЎҚТОЙХОН, Ўқтой қоон, Ўгедей, Угэдэй. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («Ў» харфи бўлими).

³¹⁰ Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (1/217), Абул Фароҳ «Тариху абул-фароҳ» (2/526).

³¹¹ Рашидуддин «Жомийут-таворих» (1/442–443)/«Сборник летописей» (2/19) перевод с персидского Ю.П. Верховского.

³¹² Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (187-бет).

Мангубердининг аянчли хотимаси

Бу санада Жалолиддин анча кучсизланди, сабаби Ироқнинг шимоли ва Туркиянинг жанубий минтақалари амири Ашрофдан икки марта енгилган эди. Мўғул балоси мусулмон ўлкаларни қон қақшатаётган айни замонда 627/1230 йилда Жалолиддин ҳозирги Туркиянинг Эрзурум ва Сивас минтақалари орасидаги Ясси Чимен деган жойда Анадолу салжуқийлари ва Шом Айюбийларининг бирлашган қувватига қарши жангга кирди, бироқ жангда аччиқ мағлубиятга учраб, қурол-яроқ ва қийматли нарсаларидан ажралиб, Озарбайжонга чекинишга мажбур бўлди.³¹³ Бу билан Жалолиддин Эронда ташкил қилган давлатини мўғуллар босқинига ҳозирлаш ўрнига бобоси ва отаси йўл қўйган, асло кечириб бўлмайдиган катта хатога йўл қўйди. Бу хатолар дастлаб Аббосийлар халифаси билан, сўнгра Анадолу Салжуқийлари ва Шом Айюбий султони Ашроф билан савашганидир.³¹⁴

Гроссетнинг ифодасига кўшимча, афсуслар бўлсинки, бу порлок келажакли кўмондонда сиёсий зехният йўқ эди, дейди Аҳмад Ўздемир.³¹⁵

Исмоилийлар Жалолиддиннинг заифлашгани ҳақида мўғулларга хабар жўнатадилар.³¹⁶ Улар султондан шу тариқа ўч олмоқчи бўлган эдилар. Янги ҳокон Ўқтой Ислому оламига юриш қилишда улкан кўшин ҳозирлади ва унга моҳир лашкарбоши Шўрмағон³¹⁷ни бош қилиб, Ислому диёрларига сафарбар қилди.³¹⁸ Мўғуллар илк хужумни бошлаган диёр Жалолиддиннинг қўл остидаги Эроннинг ғарбий минтақаси бўлди.³¹⁹ Мўғулистондан ғарбга қараб йўлга чиққан Шўрмағон бошлиқ 30 минг³²⁰ мўғул кўшини 627/1229 йил қишда Хуросонга етиб келди. Мўғул кўмондони Жалолиддиннинг Озарбайжондалиги ва аскарларидан айрилиб, ўта кучсиз ҳолатга тушганини жуда яхши биларди.

³¹³ Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/489–490), Насавий «Сийратус-султон» (328–329), Жувайний «Тарих Жаҳонгуша» (2/149), Джувейни «Чингисхан. История завоевателя мира» (2/318–319), Абул Фароҳ (2/528–529).

³¹⁴ Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (190-бет).

³¹⁵ Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (190-бет), Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/495–496).

³¹⁶ Сиржоний «Қиссатут-татар» (84-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (141-бет).

³¹⁷ Рус .Чормаган.

³¹⁸ «Гизли тарих» (184-бет), Жувайний «Тарих Жаҳонгуша» (1/219), Абул Фароҳ (2/526).

³¹⁹ Саллабий «ал-Мўғул» (145-бет).

³²⁰ «Гизли тарих» (184-бет), Жувайний «Тарих Жаҳонгуша» (1/219), Абул Фароҳ (2/526).

Шўрмағоннинг тўппа-тўғри Озарбайжонга отланиши бунга ёркин далилдир.³²¹

Атрофида аскарлари ҳам қолмаган султон Жалолиддин ўзини ахтариб келаётган 30 минг мўғул қўшинидан хайиққани аниқ. Зеро, атрофида деярли аскарлари ҳам қолмаган бир султоннинг, бир замонлар етарли қўшини бўлганда уни мағлуб қилган, отасининг мулкини тортиб олган, ўзини эса жон ҳолатда Ҳинд дарёсининг совуқ сувига отиб аранг жон сақлашига мажбур қилган мўғулларга қарши бу аҳволда чиқиб келиши имконсиздир. Камига бундан бир неча ой олдин Анадолуда жиддий бир урушга кириб, аскарлари қирилиб кетганди.

Мана шунинг учун Султон Жалолиддин Мангуберди мўғулларга қарши майдонга киришни эмас, ортга чекиниш йўлини танлади. Дастлаб Ганжага, кейин Жазира минтақасига кетди. Мўғул қўшини эса, Жалолиддин ташлаб кетган жойларда «хўлу куруқ бор нарсани еб битирди» ва жуда қисқа вақт ичида Эронни тўлиқ эгаллади.

Жалолиддин Мангуберди 628/1231 йилда Амид (Диёрбакр) минтақасига етиб келди. У Дажла кўприги яқинида тунаб қолиб, ўша кеча жуда кўп шароб ичиб, маст ҳолида қаттиқ уйқуга кетди.³²² Тонг саҳар мўғул изкуварлари келиб атрофини ўраб олганини ҳам пайқамай қолди. Унинг атрофида ўшанда атиги 4 минг жангчилари бор эди, холос. Келинг, воқеанинг лўндасини Насавийдан эшитайлик, у шундай тасвирлайди: «Мен ўша кечани китобат билан бедор ўтказдим, фақат саҳар вақтига яқин кўзим илинибди, бир бола келиб: «Туриг, қиёмат қоим бўлди, деб уйғотганидагина шошганча ўрнимдан туриб, манзилдаги бор нарсаларимни ташлаганимча чоғиб ташқарига чиқдим. Мўғул изкуварлари маст ҳолатда ухлаб ётган султоннинг чодирини куршаб олишганди. Шунда бирдан Ўрхон байроқларини кўтарганича одамлари билан келиб, чодир атрофидаги мўғулларни ёриб ўтди. Ва хос кишилар чодирга кириб, Жалолиддиннинг кўлидан тутиб, чодирдан олиб чиқди ва отга ўтиргиздилар. Ўшанда унинг бошида оқ дўппи бор эди».³²³ Насавийнинг мана бу ифодалари бир тарафдан Жалолиддиннинг қандай «мусулмон» бўлганини ва ҳақиқий юзини кўрсатса, бошқа тарафдан рисоламизнинг кириш қисмида мусулмон раҳбарлар ҳақида айтган гапларимизни тўла қувватлайди...

³²¹ Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (191-бет).

³²² Насавий «Сийратус-султон» (377–378).

³²³ Насавий «Сийратус-султон» (378-бет).

Мўғул изкуварлари Жалололидинни кўриб, унинг ортидан таъкиб қилишди, шунда Ўрхон Жалололидинни бошқа тарафга йўналтириб, мўғуллар кўпчиликнинг ортидан эргашади, дея ўзлари бошқа тарафга юрдилар. Ваҳоланки, мана шу ишда хато қилгандилар.³²⁴

Шундан сўнг Жалололидин Ирокнинг шимолига ёлғиз, қочоқ бир ахволда етиб келди. У мўғуллардан беркиниб, якка ўзи қишлоқлар ичига оралаган ва бир неча ой ғойиб бўлган эди. Унинг тирик ё ўлиқлигини ҳеч ким билмасди. Ҳатто у ҳақида халқ оғзида афсоналар тўқиб чиқарилди. Майяфариқинга бориб, унинг ўлганига ишонч ҳосил қилдим, дейди Насавий.³²⁵

Мўғул изкуварлари Жалололидинни ахтариб, қишлоқларни остин-устун қилдилар ва ниҳоят унинг изини топишлари билан 15 мўғул суворийси унинг ортидан йўлга чиқди. Улар Жалололидинга йўлиқдилар, у мўғул изкуварлари билан олишди ва иккитасини ер тишлатди, қолганлари эса, кўрққанларидан қочиб қолишди. Сўнгра Жалололидин Омад тоғларига чиқиб кетаркан, йўлда курд қароқчиларига дуч келади. Улар ҳар доимийгидек ўзларининг ишларини қилиб, унинг нарсаларини тортиб олдилар ва энди ўзини ҳам ўлдирмоқчи бўлиб турганда у қароқчилар бошлиғининг қулоғига: «Мен Султонман, ўлдиришга шошилма, агар мени Музаффар Малик Шихобуддиннинг олдига олиб борсанг, сени бой қилади ёки мени ўзимнинг ўлкамга олиб борсанг, малик-бадавлат бўласан», деди. Шунда қароқчи уни ўзининг юртига олиб боришни мақсад қилиб, уйига олиб келади ва оиласининг ёнида қолдиради. Қароқчилар бошлиғи тоққа чиқиб кетганда, қўлида найза кўтариб олган бир курд келиб, қароқчининг хотинига: «Қани ўша хоразмлик, кўрсат менга, ўлдираман уни», дейди. У эса: «Эрим уни менга омонат қилган, бундай қилолмайсан», дейишига қарамай, у Халат шаҳрида ундан кўра яхшироқ бўлган акамни ўлдирган, деб уйга кириб, найзасини Жалололидиннинг кўксига қадайдди. Ўшанда иккинчи бор найза санчишга ҳожат қолмаганди.³²⁶

Бир муддатдан кейин Музаффар Малик ўша тоққа одам жўнатиб, султоннинг тортиб олинган нарсаларини, минган отини, эгари ва машҳур қиличини олиб келтирди, деб ёзади Насавий.³²⁷

Бу воқеадан бир асрдан кейин яшаган машҳур олимимиз Ибн Касир эса, бу воқеани шундай тасвирлайди: «У Майяфариқин қишлоқларидан

³²⁴ Насавий «Сийратус-султон» (378-бет).

³²⁵ Насавий «Сийратус-султон» (381-бет).

³²⁶ Насавий «Сийратус-султон» (382-бет).

³²⁷ Насавий «Сийратус-султон» (381–382-бет).

бирида курд миллатига мансуб бир деҳқоннинг уйига кўйнида тилла ва гавҳарлари билан келади. Буни кўриб ажабланган деҳқон: «Сен кимсан?» — деб сўрайди. Султон деҳқоннинг хузурида омонлик ва эҳтиром истаб, «Мен Хоразм шоҳиман», — дейди. Субҳонлох, Оллохнинг қадарига қаранг, бир пайтлар Хоразм аскарлари деҳқоннинг акасини ўлдирган экан! Деҳқон буни эшитган заҳоти макр қилиб: «Э, хуш келибсиз!» — деб, унга эҳтиром кўрсатиб, едириб, ичириб, меҳмон қилади. Жалололдин хотиржам уйқуга кетганида, уни болта билан чошиб ташлайди ҳамда тилла ва гавҳарларни олиб, унинг отига эга чиқади. Бу хабар Майяфариқин амири Шихобуддин Ғозийга етиб келганда у деҳқонни чақиртириб, Жалололдиннинг тиллалари, гавҳарлари ва отини ундан олади.³²⁸

Майяфариқин амири Шихобуддин Ғозий олдида Жалололдиннинг кўрбошиларидаан Ўтурхон келиб, Жалололдиннинг жасадини олмоқчи эканини айтади. Шихобуддин уни қишлоқдан олиб келтиради ва: «Қарагин, у Жалололдинмикан?» — дейди. Ўтурхон не кўз билан кўрсинки, қаршисида Жалололдиннинг руҳсиз бадани ётарди, у ўзини йиғидан туголмай хўнграб юбориб, «Ҳа, бу Жалололдин», — дейди. Сўнгра кечаси уни дафн қилдилар, қабри эса махфий қолдирилади. Қабри очилишидан кўркиб шундай қилгандилар.³²⁹

Дамашқ амири Малик Ашрофга Жалололдиннинг ўлими хабари айтилганда: «Сиз мени шу билан қутлаяпсизми, ҳали бунинг оқибати нима бўлишини кўрасизлар. У Яъжуж ва Маъжужларга қўйилган тўсиқ мисоли биз билан мўғуллар орасидаги тўсиқ эди. Оллохга қасамки, бу тўсиқнинг синдирилиши мўғулларнинг Ислом ўлкаларига хотиржам киришларига сабаб бўлади», деди.³³⁰

Шундай қилиб, Жалололдин Мангуберди қиссаси 628 йил 15 шаввол/1231 йил 23 августда фожиали ва мудҳиш суратда якун топди.³³¹

Жалололдин Хоразмшоҳ сийрати

Жалололдин Хоразмшоҳ ҳақида турли даврларда битилган ўнлаб асарлар орасида энг ишончли, холис ёзилган тарихий манбалардан бири Шихобуддин Муҳаммад Насавийнинг «*Сийратус-султон Жалололдин*

³²⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/192).

³²⁹ Собрий Салим «ал-Атрокул ховаризмийун» (36-бет).

³³⁰ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/192), Абдул-амир ар-Рофийий «ал-Ирок байна сукутид-давлатил-аббасийя вал-усманийя» (102-бет).

³³¹ Насавий «Сийратус-султон» (385-бет), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/192), Собрий «ал-Атрокул ховаризмийун» (35-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (146-бет).

Мангуберди», яъни «*Султон Жалолоддин Мангубердининг ҳаёт тафсилоти*» асаридир. Дарҳақиқат, умри мўғулларнинг муттасил хужуми, таъкибу-тазйиқи остида ўтган Жалолоддин Мангуберди, отаси Султон Алоуддин Муҳаммад томонидан бой берилган хоразмшоҳлар салтанатини, мамлакатнинг жанубий ва ғарбий қисмида янгидан тиклади ҳамда ўн бир йил босқинчилар билан жанг қилиб, мислсиз қаҳрамонликлар кўрсатди.

Насавий Жалолоддин Мангубердининг муншийси, шахсий котиби бўлган, фармонлар, ёзишмалар унинг қўли билан битилган, саройдаги қабулларда, сафарларда у доим султон ёнида бўлган. Муаллиф Жалолоддин тарихида бевосита ўзи иштирок этган ҳамда кўрган, билган воқеалар ва ишончли одамларнинг ҳикоялари асосида ҳаққоний ёритган.

Насавийга хос қимматли хусусият шундаки, гарчи воқеа-ходисаларни хоразмшоҳлар томонида туриб, ватанпарвар муаллиф нигоҳи билан ёритган бўлса-да, унинг услубида аниқлик ва танкидий нуқтаи назар устунлик қилади. Зеро, у ушбу асарини Жалолоддиннинг ўлимидан 10 йилдан кейин ёзган³³², яъни Хоразмшоҳлар сулоласи тамом бўлгандан кейин тарихни саҳифаларга битган. Шунинг учун, у бу жараёнда хушомад, мадҳ ва муболағалардан узоқ бўлган, дея оламиз. Насавий гарчи таниқли тарихчи бўлмаса ҳам, ўша даврнинг бошқа тарихчилари кўра олмаган тарихий ҳақиқатни теран илғай олган ва ўз асарида уни далиллар асосида холис акс эттиришга эришган. Насавий «*Султон Жалолоддин Мангубердининг ҳаёт тафсилоти*» асарида Жалолоддин Мангубердини куйидагича васфлайди: «Жалолоддин 1198 йил Алоуддин Муҳаммад ва унинг туркман канизаги Ойчечакдан туғилган. У бугдойранг, ўрта бўйли, туркий кифёвали ва туркийча гапирадиган киши эди. Шу билан бирга у форсийда ҳам сўзлаша оларди. Унинг мардлиги, жасурлигига келсак, юқорида ҳикоя қилганим жанглардаги фаолиятини эслаб ўтиш кифоя қилади. У шерлар орасида энг зўр арслон эди, довюрак чавандоз, лашкар орасида энг ботири бўлса-да ҳалим, мулойим инсон эди. У ниҳоятда жиддий, камгап, кулиш ўрнига, фақат жилмайиб кўярди. У адолатни хуш кўрарди, фақат у яшаган даврда юз берган фитналар уни енгиб қўйди. Қўл остидаги одамларнинг оғир ҳаётини енгилаштиришни яхши кўрарди, аммо у яшаган даврдаги алғов-далғовлар, замон қонунлари уни зулм қилишга мажбур этди».³³³

³³² Ҳофиз Аҳмад Ҳамдий «Сийратус-султон» (24-бет).

³³³ Насавий «Сийратус-султон» (384-бет).

Насавий Жалолиддинни олийжаноб, чиройли хулкли мусулмон бошлиқ сифатида тасвирлади. Лекин унинг охирги сўзига назар солсак, Жалолиддиннинг Ҳиндистондан қайтгандан кейинги хатти-ҳаракатларини балки қайсидир маънода изоҳлашимиз мумкин бўлар. Яъни, у нафақат мўғуллар ва насронийлар билан, ҳатто биродарлари мусулмонлар билан курашиб, ноҳақ қон тўкилишига йўл қўйиб берди. Буни Хоразм аскарларининг қилмишлари мисолида юқорида зикр қилдик.

Унинг жанг майдонидаги жасорати, шижоатига тарих шоҳид бўлгандек биз ҳам гувоҳ бўлдик. Муҳаммад Хоразмшоҳ мўғулларнинг жанг майдонидаги маҳорати ва қайтмаслигини кўргандан кейин қалбига кўрқув тушиб, улар билан очикчасига урушишга юраги бетламай, партизанча уруш йўлини танлаганда ўғли Жалолиддин отасига мардлик қандай бўлиши кераклигини сўзлар билан ифода қилганди. Ўшанда у отасига: «Сиз қўшинга буйруқ беринг-да, ўзингиз бир четда бизнинг ғалаба қозонишимизни кутинг», деган журъатли таклифни билдирган эди.³³⁴

Ҳатто Чингизхондек қаҳри қаттиқ, омилкор саркарда ашаддий душмани Жалолиддиннинг довьораклиги ва мардлигига тан бериб: «Довьорак эркак мана шундай бўлади ўзи», деган эди.³³⁵

Жувайний Ҳинд дарёси ёнидаги урушдан кейинги Чингизхоннинг хайратини шундай ифодалайди: «Чингизхон ўғилларига юзланиб: «Мана шундай ўғли бор ота бунчалар бахли бўлмаса! У ўзини сув ва ўт каби икки бало гирдобидан халос этиб, нариги соҳилга етиб олиди-я».³³⁶

Жалолиддиннинг рақобатчиси бўлган Шом амири, унинг ўлимини эшитганда ҳақиқатни сўзлаганди: «Сиз мени шу (яъни, унинг ўлими) билан қутлаяпсизми, ҳали бунинг оқибати нима бўлишини кўрасизлар. У Яъжуж ва Маъжужларга қўйилган тўсиқ мисоли биз билан мўғуллар орасидаги тўсиқ эди. Оллоҳга қасамки, бу тўсиқнинг синдирилиши мўғулларнинг Ислом ўлкаларига хотиржам киришларига сабаб бўлади»,

³³⁴ Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/105), Абул Фароҳ (2/514), Рашидуддин «Жамиъут-таворих» (1/347).

³³⁵ Саллабий «Ад-давалул мустақилла фил мағрибил ислабий» (188-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (137).

³³⁶ Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (2/116), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (177-бет).

деганди.³³⁷ Ҳа, шундай бўлди ҳам. Зеро, мўғулларга муносиб рақиб бўла олганлар ҳам Хоразмшоҳлар эди.

Лекин, агар тарихшунос ва шарқшунос олимларнинг фикрига мурожаат қилсак, Насавийдан бошқа тарихчилар Жалолиддиннинг жанг майдонидаги жасоратларини ҳисобга олмаганда унга қониқарсиз таъриф берганига гувоҳ бўламиз.³³⁸ Буни юқорида тафсилотлари ўтган ҳаётининг сўнгги йилларида қилган номаъқул ишларига боғлашимиз мумкин. Бошқа таъбир билан айтсак, у чин мусулмонликдан, Куръон ва суннатга тобеликдан узоқлашган, фосиқ табиат инсонга айланган эди, дарди ҳаёли дунё, салтанат ва обрў эътибор қозониш бўлиб қолди ва бу йўлда мусулмонларни қони тўкиш дейсизми, уларнинг молу жонлари, ҳурматлари-ю ирзларини топташ дейсизми, хуллас ҳар қандай разилликларни қилишдан таб тормади. Бу эса, фақат фосиқ инсонлардагина кўриладиган разил амаллардир. Балки шу сабабдан Оллоҳ унга мардларча жанг майдонида шаҳид бўлиш ўрнига тубан ва фожеали ўлимни битгандир, валлоҳу аълам...

Битлис шаҳрининг вайрон қилиниши

Бу санада мўғуллар Анадолу минтақасининг шарқида жойлашган Битлис шаҳрига бостириб бордилар. Бу шаҳар жуда мустаҳкам қўрғонли бўлиб, шаҳарга фақат тоғлар орасидаги тор йўлгина олиб борар эди. Бу эса катта сондаги душманни ҳам осон маҳв қилиш имконини берарди. Улардан баъзилари: «Агар бизда 500 суворийларимиз бўлгандами, мўғулларни битта қўймай қириб ташлаган бўлардик», дедилар. Бирок воқеликда эса, улар шаҳарни ташлаб, тоғларга қочиб кетишди. Мўғуллар шаҳарга келиб, уни батамом вайрон қилишди ва шаҳарга ўт қўйишди.³³⁹

Озарбайжоннинг босиб олиниши

629/1232 йил Шўрмағон босқинчиликни давом эттириб, Озарбайжонни қайтадан эгаллади. Жалолиддиннинг ўлимидан кейин бутун Форс минтақаси мўғулларга таслим бўлди, фақат Эроннинг кичик

³³⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/192), Абдул-амир ар-Рофиъий «ал-Ирок байна сукутид-давлатил-аббасийя вал-усманийя» (102-бет).

³³⁸ Тафсилотлар учун қуйидаги китобларга мурожаат қилишингиз мумкин: Ибнул Асир «ал-Камил фит-тарих» (12/495–496), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-ниҳоя» (17/184), Заҳабий «Сияр аълум ан-нубала» (22/326–329), Сиржоний «Қиссатут-татар» (77–78, 79, 80, 82, 84–85), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (190–193-бетлар), Кўпрулу «Хоразмшоҳлар» (7/1,275), Рене Гроссет «Бўзқир императорлиги» (254-бет).

³³⁹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (86, 87-бет).

ғарбий минтақасигина қолганди, у ерлар шиаларнинг Исмоилийя тоифаси қўл остида эди.

Сўнгра у урушни тўхтатишга ва бу минтақаларда султонлигини мустаҳкамлашга қарор қилди. 629–634/1232–1237 йил 5 йил мобайнида уруш нисбий маънода тўхтади. Бу даврда бирорта мусулмон ҳаракат қилиб, мўғулларга бош кўтармади. Ваҳоланки, Форс ва Озарбайжондан бошқа ерлар: Ироқ, Мосул, Миср, Ҳижоз, Шом ва бошқа ўлкаларда сон мингларча мусулмонлар бор эди. Лекин улар мўғулларга қарши курашиш фақат Форс ва Озарбайжондагиларга хос, омма мусулмонларнинг иши эмас, деб билишди. Мўғуллардан омонда бўлган шаҳарлар, мўғуллар зулмида қолган ўлкаларга ёрдам қўлини чўзишлари вожиблигини ва бир кун келиб, ўзларининг бошларига ҳам шундай кунлар келишини ҳис қилмадилар.

Форс, Озарбайжон ва Хоразм давлатидаги мусулмонлар ажам (араб бўлмаган) бўлиб, саҳиҳ исломий тушунчалардан биров узокроқ, дин асосларидан сал беҳабарроқ эди, десак, Ироқ, Шом, Миср ва Ҳижоз мусулмонлари аксарият араблар эди, улар бу нарсаларни яхшироқ билардилар, лекин араблар ажам биродарларини қўллаб-қувватламади, улар ўзларининг мўмин биродарларини беғоналардек кўрдилар. Лекин Оллоҳ таоло шундай марҳамат қилади: **«Мўминлар ҳеч шак-шубҳасиз оға-инилардир».**³⁴⁰

Араб миллатига мансуб мусулмон, биродари ҳисобланган турк, афғон, чечен, ҳинд ёки ўзбекнинг аҳволини ҳис этмаслиги, ўта манфур ва хунук иш бўлиб, Ислому умматининг белини синдирадиган амалдир. Ислому дини ирқчилик, миллатчилик, ранг, жинс ва насаб билан эмас, балки фақат Оллоҳ ва Расулига иймон, саҳиҳ ақида билан бирлашади.

Имом Аҳмаду Абу Назро раҳимахуллоҳдан мурсал санаду билан ривоят қилган ҳадисда Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам: *«Эй одамлар! Огоҳ бўлинг! Албатта, Раббингиз бирдир. Албатта, отангиз бирдир. Огоҳ бўлинг! Арабнинг ажамдан (яъни, араб бўлмаган кишидан), ажамнинг арабдан, шунингдек, қизил танлининг қора танлидан, қора танлининг қизил танлидан тақводан бошқасида афзаллиги йўқ»*, дедилар.³⁴¹

Имом Термизий Абу Ҳурайра разияллоҳу анҳудан ривоят қилиб, ҳасан ҳадис деган, шунингдек Абдуллоҳ ибн Амр разияллоҳу анҳумодан ҳам ривоят қилиб, ҳасан ғариб ҳадис деган ҳадисда айтилишича, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам Макка фатҳи куни туриб: *«Эй*

³⁴⁰ Хужурот: 10.

³⁴¹ Аҳмаду ривояти (5/411, 23536).

одамлар! Оллоҳ сизлардан жоҳилият такаббурлигини ва ота-боболарни улуғлашни кетказди. Огоҳ бўлингки, инсонлар Одамдан, Одам эса тунроқдан яралган», дедилар, сўнг Оллоҳ таолонинг: «Эй инсонлар, дарҳақиқат, Биз сизларни бир эркак (Одам) ва бир аёл (Хавво)дан яратдик ҳамда бир-бирларингиз билан танишинглар (дўст-биродар бўлишинглар) учун сизларни (турли-туман) халқлар ва қабила-элатлар қилиб қўйдик. Албатта, сизларнинг Оллоҳ наздидаги энг хурматлироғингиз тақводорроғингиздир. Албатта, Оллоҳ билгувчи ва огоҳдир»³⁴² оятини тиловат қилдилар³⁴³.

Диннинг олтин қонуни — Исломда ирқчилик ва миллатчиликка ўрин йўқ, инсонлар орасидаги фарқ фақат тақво биландир.

Аллома Ибнул Асирнинг оламдан ўтиши

Рисоламизда жуда кўп иқтибослар олинган, Ислом тарихини ва Ислом оламига мўғуллар босқинини нозик жиҳатлари билан холис ёритган, Ислом тарихига оид китоблар орасида етакчи ўринни эгаллаган асар «ал-Камил фит-Тарих» китоби эди. Бу китобнинг муаллифи Иззуддин Абул Ҳасан Али ибн Абдулкарим ибн Абдулвоҳид аш-Шайбоний Ибнул Асир ал-Жазарий бўлиб, у 555 йил 4 жумодул-охир куни Ибн Умар жазирасида таваллуд топган эди. У тасниф қилган китобларнинг машхурларидан «ал-Камил фит-Тарих» ва «ал-Ғоба фий асҳабис-саҳоба» китобларидир. Бу киши раҳимахуллоҳ 630 йил шаъбон ойида/1233 йил июн ойида 75 ёшда Мосулда оламдан кўз юмди.³⁴⁴ Оллоҳ уни Ўз раҳматига олсин.

³⁴² Хужурот: 13.

³⁴³ Термизий ривояти.

³⁴⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/209–210).

МЎҒУЛЛАРНИНГ ҒАРБГА ЮРИШИ

Арманистон, Грузия, Чеченистон ва Доғистоннинг забт этилиши

Мўғул саркардаси Шўрмағон Форс ва Озарбайжон ерларини эгаллаб, кейинги беш йилда ўзини анчагина ростлаб олди ва янги мўғул юришига қадам қўйди, лекин бу сафар унинг янги минтақаларга босқини ўзгача услуб ва сиёсат билан амалга ошди. Бу 634/1237 йилда содир бўлди. Бу санада Шўрмағон Каспий (Хазар) денгизининг ғарбий ноҳияларидан шимолий воҳаларигача босиб олди. Қисқа вақт ичида Арманистон, Грузия, Чеченистон ва Доғистон диёрларига хукмрон бўлди.

Ғарб юришида мўғул лашкарининг сони 120–150 минг атрофида бўлиб,³⁴⁵ тарих китобларида бу босқин «Қипчоқ юриши» деб номланган. Бу хужумда Ботухондан ташқари унинг акаси Орда-Ежен, укалари Шибон, Тангут³⁴⁶ ва Берке, Чигатойнинг ўғли Байдер ва невараси Бури, Ўқтойнинг ўғиллари Гуюкхон ва Кадан, Тулихоннинг ўғиллари Мангу ва Бучек, Чингизхоннинг бошқа хотиндан бўлган ўғли Куюлхон³⁴⁷ ва Чингизхоннинг укасининг невараси Аргасунлар иштирок этдилар.³⁴⁸ Улар 633 йил жумодул-охир/1236 йил феврал-март орасида йўлга чиқдилар.³⁴⁹

634/1237 йил Каспий денгизи шимолида мўғул лашкари Жўжихоннинг ўғли Ботухон қўмондонлигида уруш олиб борди.³⁵⁰ У Волга дарёси соҳилларида истиқомат қилувчи қабилалар устига бостириб келди. Сўнгра 635/1238 йил Россиянинг бепоён ерларига хужумга киришди. Бу минтақаларга кирганидан то чиқиб кетгунича рус насронийларини ваҳшиёна, аёвсиз суратда қиличдан ўтказди ва

³⁴⁵ Саййод «ал-Муғул фит-тарих» (187-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (176-бет), Р. П. Храпачевский «Военная держава Чингисхана».

³⁴⁶ Рус. Тангут.

³⁴⁷ Рус. Кюльхан.

³⁴⁸ Рашидуддин «Сборник летописей» (2/37), «Сокровенное сказание монголов» Перевод С.А.Козина.

³⁴⁹ Рашидуддин «Сборник летописей» (2/37).

³⁵⁰ Саллабий «ал-Мўғул» (176-бет), Махмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (Аббосийлар давлати, 2-қисм, 336-бет).

Россиянинг кўпгина шаҳарларни эгаллаб олди. Юқорида мўғулларнинг ҳеч кимни аяб ўтирмагани ҳақида айтгандик.

Буюк Рязан подшоҳлиги қўл остида бўлган Рязан шаҳри 1238 йил 21 декабрда 6 кунлик Боту ва Субутой бошлиқ мўғул хужумига дош беролмай мағлубиятга учради.³⁵¹ Сўнгра Коломна шаҳри эгалланди. Суздаль шаҳри ишғолидан кейин мўғул қўшини Россиянинг энг катта шаҳри — Москвага отланди. Москва шаҳри мўғулларга 5 кун қаршилик қилгандан сўнг, 20 январ куни босиб олинди. Рашидуддин Фазлуллоҳнинг хабар беришича, Владимир жуда катта шаҳар бўлишига карамай, бўрондек мўғул хужумига бор-йўғи 8 кун туриб берди, сўнг февралнинг дастлабки кунларида мағлубият сари юз тутди, шаҳар халқининг аксарияти қатл қилинди.³⁵² 1238 йилда юқорида зикр қилганларимиздан ташқари, Переяславль-Залесский, Юрьев-Польский, Стародубна-Клязьме, Тверь, Городец, Кострома, Галич-Мерьский, Ростов, Ярославль, Углич, Кашин, Кснятин, Дмитров, Вологда, Волок Ламский ва бошқа шаҳарлар забт этилди.³⁵³ 1238 йилнинг охири 1239 йилнинг бошларида Субутой³⁵⁴ бошчилигидаги мўғул лашкари Булгария, яъни ҳозирги Қозон минтақаси ва Мородовияни забт этиб,³⁵⁵ такрор Россияга кирди ва Нижний Новгород, Гороховец, Городец, Муром ва иккинчи бор Рязань шаҳарни ишғол қилди.

Россиянинг ер майдони 17 миллион км²га тенг улкан диёр бўлиши билан бир қаторда аҳолиси жуда кўп эди. Бундан ташқари, иклими каттик совуқ ва оғир шароитдан иборат эди. Шунга карамай, мўғуллар бу бепоён минтақани қисқа фурсат — икки йил ичида, яъни 635–636/1238–1239 йилларда ишғол этди. Мўғуллар қаршисида бирон кимса туришга тоқат қилолмади. Бу босқиндан сўнг мўғуллар икки йил сафларини тартиблаш ва келажак ишларини режалаштириш учун босқинни вақтинчалик тўхтатди.

³⁵¹ Т.Ў. Салимов, Ф.Э. Султонов»Жаҳон тарихи» (7-боб, 36-§. Олтин Ўрда хонлиги).

³⁵² Саййод «ал-Муғул фит-тарих» (187-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (176–177), Рашидуддин «Сборник летописей» (2/45–46).

³⁵³ Рашидуддин «Сборник летописей» (2/38–39).

³⁵⁴ Рус. Субэдей.

³⁵⁵ Саййод «ал-Муғул фит-тарих» (187-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (176-бет).

Украина, Польша, Можаристон (Венгрия), Словакия ва Хорватияга мўғуллар истилоси

638/1240 йилда мўғуллар Ботухон бошчилигида Украинага қараб йўл олди, 5 сентябр куни унинг пойтахти Киев шаҳрини қамал қилди ва 19 ноябрдагина уни ишғол қилиб, шаҳар халқини қиличдан ўтказди.³⁵⁶ Ботухон Украинанинг улкан жойларини яқсон ва аксарият халқини катағон қилди. Мўғул қўшини Россия ерларини тўлиқ эгаллагандан сўнг икки гуруҳга бўлинди, унинг биринчи бўлаги 639/1241 йил Байдер бошчилигида Украинанинг шимоли-ғарбий томонида жойлашган Польшага ҳужум уюштирди.³⁵⁷ Қўшиннинг сони 70 минг эди.³⁵⁸ Улар Польшага кириб, унинг катта шаҳарларини хонавайрон қилдилар. Польша кироли немис герцогларидан ёрдам сўрашдан бошқа чора топмади. Олмон герцоги Генрий келиб, Польша армияси билан шартнома тузди. 30 мингдан иборат Немис ва Польша қўшинлари мўғул қўшини билан тўқнашди. Мўғуллар бу икки қўшинни тор-мор қилди ҳамда Вроцлав шаҳрини ва Польша мамлакатини бутунлай босиб олди, улар ҳатто Берлин шаҳригача етиб бориб, шаҳарни вайрон қилишди ва халқини ўлдиришди. Ушбу минтақанинг ўзидан 270 минг одамнинг ҳаётига зомин бўлган эдилар.³⁵⁹

Мўғул қўшинининг иккинчи бўлаги эса, айна вақтда Ботухон, Кадан ва Субутой билан биргаликда 3 кунда Галич шаҳрини ишғол қилиб, Россиянинг ғарбида жойлашган Можаристонга³⁶⁰ жўнади. Мўғул қўшини билан можар қўшини ўртасида шиддатли уруш содир бўлди, мўғуллар можар армиясини битта қўймай кириб ташлади ва Можаристонни босиб олди. Унинг пойтахти Будапештни хонавайрон қилишди.³⁶¹ Мўғул саркардаси Байдер эса, Можаристондан чиқиб, жанубга йўл олган Ботухонга келиб қўшилди. Улар йўл-йўлакай, Словакия давлатини вайрон қилди ва ўз ҳукмига бўйсундирди.

Сўнгра мўғул лашкари Хорватияга қараб оқиб келиб, уни батамом ер билан яқсон қилди. Бу билан улар Хорватия ва Италияни иккига ажратиб турувчи Адриатик денгизига етиб келдилар. Шу ондан эътиборан, мўғул империяси шарқий Оврупанинг ярмини ўз

³⁵⁶ Саййод «ал-Муғул фит-тарих» (187-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (177-бет).

³⁵⁷ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (Аббосийлар давлати, 2-қисм, 336-бет).

³⁵⁸ Р. П. Храпачевский «Военная держава Чингисхана».

³⁵⁹ Саййод «ал-Муғул фит-тарих» (187-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (177-бет).

³⁶⁰ Венгрия.

³⁶¹ Саллабий «ал-Мўғул» (177-бет), Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (Аббосийлар давлати, 2-қисм, 336-бет).

мамлакатига қўшиб олган эди. Мўғул қўшини Италия, Австрия ва Олмония чегарасига келиб қолган ва боскинларини давом эттирса бўлар эди, лекин 639/1241 йил июлда ўта муҳим иш содир бўлди, мўғул хоқони Ўктой дунёдан кўз юмди.³⁶² Ботухон боскинни тўхтатиб, мўғул аскарига саркардаларидан бирини бош қилди ва ўзи эса, мўғул хоқони сайловида иштирок этиш учун ўша вақтлар Мўғулистоннинг пойтахти Қорақурумга йўл олишга мажбур бўлди. Ботухон ва Субутоилар Қорақурумга қурултой сари кетдилар.³⁶³

1243 йили Ботухон Волгабўйи даштларига қайтди. Шу тариқа Ботухон истило қилган Волгабўйи, Шимолий Қора денгиз соҳиллари, Шимолий Кавказ, Молдавия худудларида рус ёзма манбаларида «Олтин Ўрда»³⁶⁴ номини олган Жўжи улуси шаклланди.³⁶⁵

³⁶² Саййод «ал-Муғул фит-тарих» (188-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (177-бет), Рашидуддин «Сборник летописей» (2/42–43).

³⁶³ Саллабий «ал-Мўғул» (177-бет), Махмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (Аббосийлар давлати, 2-қисм, 336-бет).

³⁶⁴ XIII асрнинг 40 йиллари бошида Жўжихоннинг ўғли Ботухон (1236–1255) томонидан асос солинган давлат. 1224 йил Жўжи улуси Шимолий Хоразм ва Шимолий Кафказдан иборат эди. 1236–1240 йилларда Ботухоннинг юришлари натижасида Волга булғорлар юрти, Дашти Қипчок, Қрим, Фарбий Сибир Олтин Ўрдага қўшиб олинди.

³⁶⁵ Т. Ў. Салимов, Ф.Э. Султонов «Жаҳон тарихи» (7-боб, 36-§. Олтин Ўрда хонлиги).

ҲИЖРИЙ 639 ЙИЛДА ОЛАМНИНГ АҲВОЛИ

639/1241 йилдаги оламнинг ҳолатига назар солсак, куйидагиларнинг гувоҳи бўламиз:

Биринчи: Бу санада мўғул давлати шарқда Кореядан бошланиб, ғарбда Польшагача; шимолда Сибирдан бошланиб, жанубда Хитой денгизигача етди. Мўғул давлати бемисл кенгайиб, дунёда якка хукмронга айланди.³⁶⁶

Иккинчи: Ўқтойхондан кейин узоқ муддат бошсиз қолган мўғул империяси тахтига 644/1246 йил унинг катта ўғли Гуяохон ўтирди.³⁶⁷ У отаси Ўқтой ва бобоси Чингизхонлардек давлатни кенгайтириш, босқин сиёсатини олиб бормай, ишғол қилинган минтақаларда мўғулларнинг мустаҳкам ўрнашишига эътибор қаратди. У Овropa ва Ислom диёрларида мўғул ҳамласини вақтинчалик тўхтатди.

Учинчи: Мўғуллар Ислom оламининг шарқини забт этган ва Осиёнинг катта минтақаларини ўз давлатига қўшиб олган эди. Улар бу ўлкаларда таракқиёт манбаларини ва уларга қарши бош кўтарганларни тамоман йўқ қилган эди.

Тўртинчи: Ислom оламининг маркази, яъни Ироқ, Шом, Ҳижоз, Миср ва Яман минтақалари тарқоқлик ва бўлинишда давом этаётган бир пайтда, мўғул қўшини оламнинг катта мамлакатларни забт қилган, у ҳам етмагандай, мусулмонлар ўзаро урушаётган ва борган сари ўрталаридаги тарқоқлик ортаётган эди. Шунингдек, Ислom оламининг ғарбий қисми Ливия, Тунис, Мағриб ва Африканинг ғарбий минтақалари Муваҳхидлар давлати парчалангандан сўнг, бутунлай бўлиниб кетган эди. Бир оғиз сўз билан ифодалаганда, Ислom оламининг шарқий қисми мўғуллар томонидан эгалланган, ғарбий ва марказий қисмлари эса, тарқоқ эди.

Бешинчи: Овropa насронийлари мўғуллар билан ҳамкорлик эвазига мусулмонлар тотган аламдан ўзлари ҳам бахраманд бўлган эди. Улардан юз минглаб ёки миллионларча одамлар қиргин қилинди, черковлари вайронага айлантирилди, шаҳарларига ўт қўйилди. Мўғуллар Рим католиклари маконигача етиб боришди.

³⁶⁶ Саллабий «ал-Мўғул» (186-бет).

³⁶⁷ Саййод «ал-Муғул фит-тарих» (197-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (180–181), Маҳмуд Шоқир «ат-Тарихул Исламий» (Аббосийлар давлати, 2-қисм, 336-бет), Жувайний «Тариху жаҳонгуша» (1/268), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (199-бет).

Олтинчи: Насронийлар мўғулларнинг амалларини кўришди. Мўғуллардан омон қолган Оврупанинг ғарбий минтақаси — Франция, Англия, Италия ва Олмония подшоҳлари бу давр вақтинча ва албатта тўхтайди, яъни мўғуллар бир кунмас бир кун уруш қилишдан барибир тўхтайди, деб ўйлар, аммо мусулмонларга қарши салиб юришларининг умуман ниҳояси йўқ, деб билар эдилар. Насроний подшоҳлар мўғуллар томонидан беадад насронийлар қатл қилинганига қарамай, мусулмонларга қарши мўғуллар билан мукамал ҳамкорлик қилишимиз лозим, деб режа тузардилар.

Нима сабабдан салибчилар мусулмонлар билан уруш мунтазам, мўғуллар билан эса, вақтинчалигига ишонишар эди? Чунки «салб юриши», ақидавий уруш ва мусулмонлар билан салибчилар ўртасидаги душманлик, диний асосга кўра эди. Ўз навбатида, насронийлар икки тоифадан бири бошқасининг динига кирмагунича уруш ҳаргиз тўхтамайди, деб ишонар эдилар,

«Яҳудий ва насронийлар уларнинг динига кирмагунингизча ҳаргиз сиздан рози бўлмайдилар».³⁶⁸

«Улар қўлларидан келса то динингиздан қайтаргунларича сизлар билан уришаверадилар. Сизлардан ким ўз динидан қайтиб, динсиз ҳолда ўлса, ундай кимсаларнинг қилган амаллари дунёю Охиратда беҳуда кетур. Улар дўзах эгаларидир ва унда абадий қолажаклар».³⁶⁹

Мўғул босқини ақидавий кураш эмасди. Уларнинг ақидаси бир қанча динлар мажмуасидан иборат бўлиб, ўта кучсиз ва бузук эди. Бирорта мўғул саркардаси мустамлака қилган ўлкаларда ўз динларини ёйганини эшитмаганмиз, уларнинг мақсадлари — геноцид, яъни мўғуллардан бошқа халқларни қириш, босиб олиш, мол-дунё жамғариш, аёллар ва болаларни қул қилиш ҳамда маданий ёдгорликларни, тамаддунни йўқотишдан иборат эди. Ким мана шу сифатларга эга бўлса, унга ҳеч қачон давомийлик насиб қилмаслиги турган гап.

Овропа насронийлари мўғуллар томонидан қирғин қилинганига қарамасдан, мусулмонларга қарши ҳамлага шайлана бошлади, мўғуллар билан дипломатик алоқаларни тиклашга бор кучларини сарфлашга киришдилар.

Еттинчи: Мўғуллар Оврупанинг бир қисмини босиб олгандан кейин мўғул армиясида ақидавий ўзгаришлар содир бўла бошлади, бунга

³⁶⁸ Бақара: 120.

³⁶⁹ Бақара: 217.

сабаб кўпгина мўғул саркардалари овропалик насроний кизларга уйланишлари бўлди. Шу тариқа мўғул кошонасига насронийлик дини кириб келди. Бу эса, салибчиларнинг мўғуллар билан ҳамкорлик қилиш имкониятини туғдирар ҳамда Аббосийлар хилофати ва Шом диёрини ағдаришда салиб ва мўғул қувватининг жамланишига йўл очар эди.

Саккизинчи: Овропа салибчилари Миср ва Шомдаги мусулмонларга қарши жангда давом этди. Салибчилар мўғуллардан қаттиқ зарба еган бўлишига қарамай, мусулмонларга қарши урушни тўхтатмадилар. Ушбу кунлар Айюбийлар ҳукмронлиги ўзининг сўнгги кунларини кечираётган ва ўзаро ички урушларида давом этаётган эди. Мусулмонлар ўта хатарли учлик ўртасида, бир томондан салибчилар, бошқа тарафдан мўғуллар ва яна бошқа жиҳатдан мусулмон амирлар орасида қолган эди.

Тўққизинчи: 640 йил 10 жумодул-охир/1242 йил 12 декабр жума кунининг тонгида Аббосийлар халифаси Мустансир Биллаҳ 51 ёшда оламдан ўтди. У 16 йил 10 ойу 27 кун халифалик қилган эди. Унинг ўринини ўғли Мустаъсим Биллаҳ эгаллади.³⁷⁰ Ўша кунларда у 30 ёшда эди. У Қуръонни кўп тиловат қилиш, тафсир, фикҳ ва хайрли амаллари билан машхур, лекин сиёсатдан беҳабар ва инсонларни ажратиш қобилиятидан бебаҳра киши эди. У атрофига нобоп вазирлар тутгани учун халифаликнинг заифлиги ортди.

Ўнинчи: Мўғуллар билан Аббосийлар хилофати орасида фақатгина Форс минтақасининг ғарбий қисми, хатарли Исмоилийя тоифасининг худуди қолган эди. Бу минтақа кичик бўлишига қарамай, ўта муҳим жой эди, чунки Исмоилийя тоифаси урушқоқ ва жангари гуруҳ бўлиб, кўплаб қалъалар ва кўрғонлари бўлган тоғли худудда яшар эдилар. Улар Аббосийлар билан мунтазам келишмовчиликда бўлиб, улар ўрнашган жой Аббосийлар ҳамда мўғуллар учун жуда хатарли минтақа ҳисобланар эди.³⁷¹

Исмоилийя тоифаси Аббосийлар хилофатига қарашли сунний ҳокимларни жуда ёмон кўрардилар, шу сабабли улар суннийларнинг зиддига кўп марта Ислом душманлари билан тил бириктирган эдилар. Улар бир сафар насронийлар, бошқа сафар мўғуллар билан алоқа қуришга ҳаракат қилишди. Лекин мўғуллар Исмоилийя тоифасига ишонмадилар, чунки мўғуллар Ер қуррасида ўзларидан бошқа қувватга эга бўлган бирор тоифанинг бўлишини истамас эдилар.

³⁷⁰ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/260, 263).

³⁷¹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (91, 92, 93, 94-бет).

Хулоса шуки, янги мўғул хоқони Гуюк ибн Ўқтой бепоён мамлакатини мустаҳкамлар, салибчилар мўғуллардан қаттиқ зарба еган бўлсаларда, мусулмонларга қарши мўғуллар билан ҳамкорлик йўлларини ахтарар, мусулмонлар эса ўзаро келишмовчиликда давом этар эдилар. Омма мусулмонлар бир томондан мўғуллар, бошқа тарафдан салибчилар ва мусулмон амирлар босими остида эдилар.

Бирорта мусулмон амири мамлакатни қутқариш ва мусулмон асирларни озод қилишга киришмади. Уларнинг саъй-ҳаракатлари ўзларининг султонлигини, хоҳ кичик, хоҳ катта бўлсин, ўшани мустаҳкамлашдан иборат эди. Валаа ҳавла валаа куввата иллаа биллаҳ.

ҲИЖРИЙ 639–649 ЙИЛЛАР ОРАЛИҒИ

Мўғул босқинининг вақтинчалик тўхташи

Гуюк ибн Ўқтой жанг қилишни тўхтатиб, мамлакатини барқарор қилишга қарор қилди. Ўқтойдан сўнгги 7 йил 639–646/1241–1248 йиллар мобайнида мўғуллар бирор янги ҳудудга ҳужум уюштирамади, десак янглиш бўлмади. Буни кўрган Овропалик салибчиларнинг мусулмонларга қарши мўғуллар билан ҳамкорлик қилиш умидлари қайта уйғонди. Гуюкхоннинг онаси Туракина хотун³⁷² насронийликни қабул қилган эди.³⁷³ Бу эса, Гуюкхоннинг насронийларга йўл очиб беришига туртки бўлди.

Католик Рим папаси Иннокентий IV, 643/1245 йил Гуюкхонга мактуб ёзиб, делегация жўнатди.³⁷⁴ Ваҳоланки, Рим билан Мўғулистон пойтахти Қорақурум орасидаги масофа 12 минг км эди. Насронийлар Шом ва Мисрдаги мусулмонларга қарши урушда мўғуллар билан бирлашишни таклиф қилган эди. Овропа ва Россия насронийлари чекаётган мўғул зулмини кўтариш Рим папасининг хаёлининг бир чекасидан ҳам ўтмади, чунки мўғуллар босиб олган Овропанинг катта қисми ва Россия ўлкалари проваслав йўналишида эди.

Католик делегацияси Қорақурумга келишди ва Иннокентий IV нинг Гуюкхонга йўллаган мактубини унга тақдим қилишди. Гуюкхон мактубни ўқиди, унда мусулмонларга қарши ҳарбий амалиётларда бирлашиш истаги ва насронийликка даъват бор эди. Яъни Иннокентий IV ақида асосида жанг қилишни таклиф қилган эди.³⁷⁵ Мўғул ҳокони Рим папасининг бу таклифини ҳаддан ошиш, деб санади. Мактубда Ер қуррасидаги ҳукмрон давлат бошлиғидан динини ўзгартириш талаби кўйилган эди!

Мўғуллар ичига насронийлик кириб бораётган бўлсада, мўғул ҳокони буни чегарадан чиқиш, деб ҳисоблади. У делегацияни рад этди. Битта шарт билан уларнинг таклифини ижобат қилишини айтди, бу шарт

³⁷² Рус. Дорегене-хатун.

³⁷³ Саллабий «ал-Мўғул» (181–182), Рашидуддин Фазлуллох «Жомеъут таворих» (2-жилд, 8–9-бет).

³⁷⁴ Доктор Шафик «VII–VIII асрларда мусулмонлар зиддига мўғуллар ва насронийлар ўртасидаги келишувлар ва унинг таъсири» (3-бет).

³⁷⁵ Доктор Шафик «VII–VIII асрларда мусулмонлар зиддига мўғуллар ва насронийлар ўртасидаги келишувлар ва унинг таъсири» (4-бет).

— бутун ғарбий Овропа, яъни Англия, Франция, Олмония, Италия ва бошқа давлатларнинг қиролларининг Мўғулистонга келиши, мўғул хоқони билан дўстлашиши ва унга итоатда бўлиши эди. Шундан кейингина улар билан ҳамкорлик қилишини сўзлади, лекин бу шарт Овропа подшоҳларига маъқул келмади ва бу таклифни улар ҳам рад қилишди. Шундай қилиб, биринчи ҳамкорлик талаби сувга ёзилган битиклар каби сўнди.

Лекин католик папаси Иннокентий IV ноумид бўлмади, Ислом оламига хужум қилиш ҳамияти ва рағбати бор мўғул қўмондонларини қидиришга киришди. Мўғул давлатидан ғарбда Озарбайжон ва Форс минтақаларида ўрнашган, уруш қилиш ва тажовузни яхши кўрадиган машхур мўғул саркардаси Байжуни топди. Халифа Мустансир ўлиб, ўрнига Мустаъсим келган айни пайтда мўғулларнинг Эрондаги бошқарувчиси саркарда Шўрмоғон даври ниҳоялаб, Байжу нўён даври бошланган эди. Рим папаси Иннокентий IV муваффақиятсиз биринчи делегациядан икки йилдан сўнг, яъни 645/1247 йил Байжуга элчи йўллади. Байжудан катта умид қилди. У эса, салибчилар Шом ва Мисрға хужум қилса, ўша минтақадаги мусулмонлар Аббосийлар хилофати химоясидан машғул бўлишади, фурсатдан фойдаланиб, Ироқ ерларига бостириб киришга имконият туғилади, деб фикр қилди. Лекин унда Иннокентий IV ёки ундан бошқаси билан шартнома тузиш ваколоти йўқ эди. Шу сабабли у Гуякхонга боғланди, аммо у «хужум уюштирамаслик ва Оврупанинг катталари унга итоат учун келишлари лозим», деган фикрида туриб олди. Насронийларнинг иккинчи ҳамкорлик ўрнатиш йўлидаги саъй-ҳаракатлари ҳам бекорга кетди.

Ўша вақтларда Франция қироли Людовик IX Мисрға «Еттинчи салиб юриши» номи билан маъруф бўлган, машхур салиб жангига ҳозирланди. Людовик IX 646/1248 йил Қибрис (Кипр) оролида Ислом ўлкаларига уруш учун Франция ва бошқа насроний кўшинларни тўплай бошлади.³⁷⁶ Иккинчи бор ҳамкорлик таклифи ҳам натижа бермаган бўлсада, насронийлар мўғуллар билан иттифоқ тузиш умидидан воз кечмаган эди. Людовик IX Қибрис оролидан Гуякхонга учинчи делегацияни ҳадялар, совға-саломлар билан жўнатди. Делегация бош аъзолари икки роҳиб Девид ва Марклар эди. Улар мўғуллар пойтахти Қорақурумга келганида Гуякхон дунёдан кўз юмган эди.³⁷⁷ Бу ҳодиса

³⁷⁶ Доктор Шафик Жосир Аҳмад Маҳмуд «VII–VIII асрларда мусулмонлар зиддига мўғуллар ва насронийлар ўртасидаги келишувлар ва унинг таъсири» (5-бет).

³⁷⁷ Доктор Шафик «VII–VIII асрларда мусулмонлар зиддига мўғуллар ва насронийлар ўртасидаги келишувлар ва унинг таъсири» (5-бет).

647 йил 9 рабиул-охир/1249 йил июл ойига тўғри келди.³⁷⁸ Унинг ўрнига учала фарзанди ҳам кичик бўлгани учун бева хотини Ўғул Қўймиш³⁷⁹ бош бўлган эди. У 647–649/1249–1251 йиллар ҳокимият тепасида турди.³⁸⁰ Ўғул Қўймиш салиб делегациясини илик кутиб олди, лекин Гуюкхоннинг ўлими натижаси ўлароқ юзага келган муаммолар ва аёл кишининг бошлиқлигини ҳазм қила олмаган мўғул саркардалари саноқсизлиги туфайли уларга узр айтди. Зеро, мўғул империяси каттикқўллик, истибдод ва ҳукмронлик устига қурилган эди, шунинг учун, улар империя бошлиғи журъатли эркак киши бўлишини талаб қилар эдилар.

Хуллас, учинчи салиб делегацияси ҳам қуруқ қайтди. Шунда ҳам Людовик IX урушдан бош тортмади, 647/1249 йили Мисрдаги Думётга³⁸¹ бостириб келди ва уни эгаллади. Еттинчи салиб юриши бошланди...

³⁷⁸ Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (198-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (182-бет).

³⁷⁹ Рус. рус. Огул-Гаймыш.

³⁸⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (96, 97-бет), Рашидуддин «Сборник летописей» (2/128).

³⁸¹ Инг. Dametta.

**УЧИНЧИ БЎЛИМ: ҲУЛАГУ ДАВРИ ВА
ИСЛОМ ХИЛОФАТИНИНГ
АҒДАРИЛИШИ**

УЧИНЧИ МЎҒУЛ БОСҚИНИ

Мангухон хоқонлиги

Гуюкхоннинг хотини салтанат тепасида узоқ турмади, мўғуллар аёл кишининг бошқарувига унамадилар. 649/1251 йил ³⁸² (648 йил зулқаъда/1251 йил феврал ойида)³⁸³ мўғуллар шўросининг қарори билан Мангухон мўғул хоқони бўлди. Мангухоннинг мўғул салтанатининг тепасига келиши мўғуллар сиёсатида катта бурилиш ясади. У мўғул империяси асосчиси — бобоси Чингизхонга ва амакиси Ўқтойга ўхшаб каттик сиёсат юрита бошлади.

Мангухоннинг илк фикри Аббосийлар хилофатини ағдариш, Миср, Шом ва Африкани эгаллаш бўлди. Лекин минг афсус, ўша кундаги мусулмон амирларнинг савияси воқеликда содир бўлаётган ходисалардан анча орқада эди. Мўғуллар Гуюкхон, сўнгра хотини Ўғул Кўймиш даврида ўн йил — 639–649/1241–1251 йиллар давомида уруш қилмадилар, шу муддатда Ислом олами шарқий қисмининг ярми мўғуллар босимида бўлсаларда, ҳокимлар, халқлар, ҳатто кўпчилик уламолар ҳам бунини унутиб қўйдилар. Вахоланки, бу зулм кўраётган халқлар Аббосийлар хилофати, Шом, Миср ва Ҳижозга жуда яқин минтақаларда эди.

Бу даврдаги воқеаларни ёритган тарихчилар ҳам мўғуллар тўғрисида бирор нарса ёзмаганлар, десак муболаға бўлмайди. Мисол тариқасида Ибн Касирнинг «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*»сини олсак, 639–649/1241–1251 йиллар оралиғида мўғуллар ҳақида битта калима топмайсиз, гўё мўғуллар иши ҳал бўлган! Албатта, Ибн Касир раҳимаҳуллоҳ мўғуллар замонидан кейин яшаган ва ўша давр тарихчиларидан нақл қилган. Бироқ Ибн Касир ўша вақтларда Ироқ, Миср, Шомдаги воқеаларнинг жуда одатий ҳолатдек кечганини зикр қилади: иқтисодий қийинчилик сабабли халифа факирларга эҳсон қилган; вабо тарқалиб, сўнг йўқолган; кимдир мадраса, бошқаси зиёфатхона ва яна биттаси касалхона очган; фалончи адиб, шоир ёки пистончи вазир ўлган ва ҳоказо...

Минбарлар, илм халқаларида дарс берувчи, хутба қилувчи, мўғулларнинг хатарини баён этувчи, босиб олинган жойлардаги

³⁸² Сиржоний «Қиссатут-татар» (98-бет), Жувайний «Тариху жаҳонгуша» (3/15–16), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (207-бет).

³⁸³ Рашидуддин «Сборник летописей» (2/132).

мусулмонларнинг мусибатларини эслатовчи олимлар ва халқни жиҳодга hozирлаб, тайёргарлик тадбирини олувчи амирлар ўша замонда мавжуд эмасди, десак хато бўлмаса керак. «Касални яширсанг, иситмаси ошкор қилади», деганидек, бу даврда Ислоннинг ҳақиқатини, Оллоҳ йўлидаги жиҳодни баён қилувчи олимлар ва халқни эргаштирувчи амирлар йўқ эди. Мўғулларнинг хабари ва қилаётган ишлари мусулмонларга номаълум бўлганидан тарих китобларида ҳам зикр қилинмаган.

Ушбу кунлардаги ҳодисалар яқинда содир бўлган Чингизхон бошчилигидаги «Биринчи мўғул босқини» ва Ўқтой кўмондонлигидаги «Иккинчи мўғул босқини»га ўхшаш ёки ундан қаттиқроқ ва ёмонроқ янги мўғул ҳужуми юзага келишига ишора эди. Мусулмонларнинг қуллуқлари қанча ортса, мўғуллар ёки улардан бошқаларнинг уларга тамалари шунча зиёда бўларди. Ҳар қачон мусулмонлар бир нарсани безътибор қўйсалар, уммат душманлари даставвал ўша нарсага, сўнгра ундан бошқасига кўз олайтирардилар, бу ботил аҳлининг суннатидир.

Мангухоннинг ёрдамчилари

Мангухоннинг забардаст учта укаси бўлиб, тахтни осонлик билан қўлга олишда унга кўмакчи бўлган эдилар. У кучли, сермулоҳаза саркарда бўлиб, хоқон бўлган кездан бошлаб Аббосийлар хилофатини ағдаришни ўйлай бошлади.

Битта укаси Ариқ Буко Қорақурумда Мангухонга мамлакатни бошқариш ишларида ёрдамчи бўлди. Иккинчи укаси Кубулойга Хитой ва унинг атрофидаги шаҳарлар, учинчи укаси Хулагуга эса, Эрон, Шом, Миср, Рум ва Арманистон минтақалар ҳокимияти топширилди.³⁸⁴

Аббосийлар хилофати қаршисига чиққан мўғул саркардаси Хулагу ибн Тули³⁸⁵ экани кўпчиликка аён. У бобоси Чингизхонга жуда-жуда ўхшаган, қонхўр, золим, қиличидан қон томган, бирор инсонийлик туйғуси бўлмаган кимса эди.

Хулағунинг хилофатни ағдариш учун ҳозирлик кўриши

Хулағунинг қаршисида Ислон давлати тургани учун, унинг асосий адовати Ислон ўлкаларига бўлди. Гўё бутун нафрати Ислон умматига

³⁸⁴ Маҳмуд Шоқир «ат-Тарихул Исламий» (Аббосийлар давлати, 2-қисм, 336-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (185-бет), Рашид-ад-Дин «Сборник летописей» (3/23).

³⁸⁵ Хулоку, Хулагу, Хулокухон, Ҳалокухон. «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» (11-жилд, 390-бет).

қаратилгандек, асосан мусулмонларнинг қонини тўқди ва энг қаттиқ зарбани мусулмонларга берди. Унинг Дўқуз хотун исмли насроний динга эътиқод қилувчи тўнғич хотинининг мусулмонларга адовати чексиз эди.³⁸⁶ Мўғул ва насроний адоватлари жамланиб, нафрат ўти Аббосийлар хилофати, Шом ва бошқа мусулмон диёрларига сочила бошлади. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

Мўғул давлатининг ғарбий бўлаги Хулагуга топширилгандан сўнг, у Форс минтақасига ўрнашди ва Аббосийлар хилофатини ағдариш учун тадбирини кўра бошлади.³⁸⁷ Мўғулларнинг тайёргарлигига нисбатан мусулмонлар деярли ҳозирлик кўрмадилар, десак янглиш бўлмайди. Дунё аҳлидан кимда-ким нусрат сабабларини ушласа, гарчи у кофир бўлса ҳам, унга ғалабанинг берилиши ва нусрат сабабларидан узок бўлса, мусулмон бўлсада, унга мағлубиятнинг битилиши Оллоҳ азза ва жалланинг ўзгармас қонунларидан биридир.

«Ким (фақат) шу ҳаёти дунёни ва унинг зебу зийнатларини истайдиган бўлса, уларга қилган амалларини(нг ажр-мукофотини) шу дунёда комил қилиб берурмиз ва улар бу дунёда зиён кўрмайдилар».³⁸⁸

«У сизларни Ерда халифалар қилиб қўйган ва Ўзи ато этган неъматлар билан сизларни имтиҳон қилиш учун айримларингизни айримларингиздан юқориқ даражаларга кўтариб қўйган Зотдир. Албатта, Парвардигорингиз тезда жазолагувчидир ва албатта, У мағфиратли, меҳрибондир».³⁸⁹

Хулагу 649/1251 йил мўғул империясининг ғарбига қўмондон бўлганидан бошлаб катта тайёргарлик кўрди. Аббосийлар хилофатига нисбатан туйган нафратининг чексизлиги, хилофатнинг бисотидаги мол-мулкка иштиёқи ҳамда аскарининг етарли эканига қарамай, ҳужум қилишга шошилмади. Беш йил 649–654/1251–1256 йиллар сабр билан ҳозирлик кўрди.

³⁸⁶ Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 23, 27-бет)/ «Сборник летописей» (3/18).

³⁸⁷ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 336-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (185-бет).

³⁸⁸ Худ: 15.

³⁸⁹ Анъом: 165.

ҲУЛАГУНИНГ САБЪИ-ҲАРАКАТЛАРИ

Пойдеворни мустаҳкамлаш

Ҳулагу беш йил давомида тўртта асосий масала билан банд бўлди:

Биринчи масала: Инфраструктурага (давлат пойдеворига) эътибор. Хитойдан келувчи ҳарбий мадад узлуксизлигини таъминлаш. У бунинг учун куйидаги ишларни амалга оширди:

Тожикистон, Афғонистон, Форс ва бошқа кўпгина минтақалардаги тоғли ҳудудлар ва узок масофадан мўғул армиясининг бемалол келишини таъминлаш мақсадида Хитой билан Ироқ орасидаги барча йўлларни тузатишга киришди.

Йўллардаги барча дарё ва анҳорлар устига катта кўприклар курдириб, бу кўприкларга мўғул аскарларини кўриқчи қилди. Жумладан, Сайхун ва Жайхун дарёларига ҳам кўприк курилди.

Хитой-Бағдод йўналишида курул-аслаҳалар транспортировкаси учун улкан супертанкерлар (юк кемалари) ҳозирлади.

Хитойдан Ироққача бўлган минтақалардаги ҳар бир шаҳар ва марказий жойларга қўшимча мўғул ҳарбий кучларни йўллади.

Сўнгра жуда ажабланарли ишга қўл урди, бунинг асосида ўткир заковат ётади. Хитойдан Бағдодгача бўлган йўллар атрофини ўт-ўланлар ўсиб-униши ва от-уловларига ем-хашак бўлиши учун чорва ҳайвонларидан холи қилди.³⁹⁰ Бу уларнинг от-уловларига ем-хашак олиб юрмаслик учун қилган ишлари эди. От ва бошқа уловларга ем-хашак, автомобилга нисбатан ёқилғи манзилатида, ҳатто ундан-да юқорирок ўринда туради, чунки отлар ёқилғисиз қолган техника каби ҳаракатсиз ётавермайди, нобуд бўлишдан қутулганлари эса урушга ярамайди.

Биз енгилгина санаб ўтганларимиз: йўлларни тузатиш, кўприклар куриш, йўл атрофларидан чорва ҳайвонларни тозалашга бир неча йиллар кетди.

³⁹⁰ Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 235, 237-бет).

Сиёсий ва дипломатик тайёргарлик

Иккинчи масала: Сиёсий ва дипломатик тайёргарлик. Мўғуллар ўша вақтда ер юзидаги мавқеи баланд давлатлар билан сиёсий битимлар тузишга киришди. Бу мўғуллар сиёсатидаги катта бурилиш бўлиб, кўп меҳнат ва вақт талаб қилар эди, чунки мўғул давлати барпо бўлганидан буён бирорта сиёсий ҳамкорлик ва дипломатик келишувга қўл урмаган эди. Бу ишга шахсан мўғул ҳокони Мангухоннинг ўзи бош-қош бўлди. 647/1249 йил Думётни³⁹¹ эгаллаган, 648/1250 йил машхур: «ал-Мансура» ва «Фарискур» жангларида мағлубиятга учраган, асирга тушиб, катта миқдордаги пул эвазига жонини қутқарган Франция қироли Людовик IX, 651/1253 йил Мангухонни мусулмонлар зиддига бирлашишга чақириб, янги делегация йўллайди. Делегацияга францискалик роҳиб Уильям Робрук (William Rubruck) бош вакил этиб тайинланган эди.³⁹² Мангухон билан бу роҳиб қайсидир жихатдан келиша бошлади, лекин ҳамкорлик том маънода амалга ошмади. Чунки Мангухон келишув нималигини ва ғарб сиёсатиغا хос мулозаматни билмайдиган, тик сўзлайдиган киши эди. Шунингдек, Европаликларга хос мунофиқликнинг бирор кўриниши — бошқаларни ўзига ром қилиб, кўйнига кириб олиш, ортида нафратни яширувчи қалбаки табассумни билмасди. Балки жуда содда ва очиқ, истагини бевосита баён қилувчи инсон эди. У келишувнинг аввалини куйидаги сўзлар билан бошлади: «Мен оламда ўзимдан ўзганинг бош бўлишини қабул қилмайман, менинг назаримда дўст калимаси фақат менга итоатда бўлган, сўзимни икки қилмайдиган, дўстлиги ва итоатини эълон қилган кишидир. Душманам эса, менга қарши жанг қиладиган, менга итоат этмайдиган кимсадир».

У росмана оламда ягона қутбли сиёсатга тарғиб қилди, яъни оламни иккига: итоатдаги ҳамкор давлатлар ва итоатсиз рақобатчи давлатларга ажратди. Людовик IX нинг вакили Уильям Робрук Қорақурумда 5 ой турди, сўнгра Людовик IX билан кўришиш учун Шомга Акко шаҳрига қайтди.³⁹³ Якка ҳокимлик шарти асосида ҳамкорлик қилиш Франция қироли Людовик IX га маъқул келмади, мўғуллар ва Европа насронийлари ўртасидаги дастлабки келишув барбод бўлди. Бу битим гарчи охрига етмаган бўлсада, Мангухоннинг келишув учун илк ҳаракати эди.

³⁹¹ Рус. Дамьетта.

³⁹² Доктор Шафиқ «VII–VIII асрларда мусулмонлар зиддига мўғуллар ва насронийлар ўртасидаги келишувлар ва унинг таъсири» (1/7), Саллабий «ал-Мўғул» (185-бет), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (221-бет).

³⁹³ Саллабий «ал-Мўғул» (185-бет).

Арманистон подшоси билан ахдлашув

Ғарбий Овропа насронийлари ва подшоҳлари (кинязлари) Мангухонга тобе бўлишни рад этишди. Лекин бошқа подшоҳлар буни қабул қилди, жумладан, насроний Арманистон давлатининг подшоси Ҳайсум³⁹⁴ Мангухон истаганидек унга итоатда бўлиш шарти билан ҳамкорлик қилишни фикр қилди. Арманистон подшоси мўғулларнинг не қадар қувватга эгалигини билибгина қолмасдан, уни амалий суратда кўрган эди ҳам. Арманистон мўғуллар томонидан икки марта — биринчи гал Чингизхон, иккинчи марта Ўқтой томонидан ишғол этилган эди. Шунингдек, у давлатининг кучсизлиги, маҳобатли мўғул давлатига умуман бас кела олмаслигини яхши биларди. Арманистоннинг ер майдони 30 минг км²дан ошмайди. Устига-устак, Арманистон давлати бир томондан мўғуллар, бошқа тарафдан мусулмонлар қуршовида эди.

У мўғулларга ҳозир итоат этмаса, эртага бунга мажбур бўларди, лекин унда аҳвол бошқача бўлиши турган гап. Мўғуллар Ироқ ва Арманистонга бостириб кирганда, фурсат қўлдан кетган ва подшоҳ мулкидан ажралган бўлади. Бу фикрлар подшоҳ Ҳайсумни Овропалик насронийлар каби вафд (делегация) жўнатмасдан, шахсан ўзи мўғуллар пойтахти Қорақурум³⁹⁵ га Мангухон билан кўришиш учун боришига ундади, дейди Сиржоний.

Доктор Шафиқ Жосирнинг хабар беришича, кичик Арманистон подшоси Ҳайсум мўғуллар пойтахти Қорақурумга 645–646/1247–1248 йилларда укаси Симбадни (Смбат) бош қилиб делегация юборади. Сўнгра мўғул хоқони билан дўстлашмоқчи эканини таъкидлаш мақсадида вафд (делегация)нинг ортидан шахсан ўзи мўғуллар пойтахтига йўл олади.³⁹⁶ Мангухон насронийлар билан дастлабки битим амалга ошмаганидан ғазабнок бўлган ва шунинг учун сиёсат йўллари, чиройли сўзларни ишлатишни ўрганишга киришган эди. Мўғул хони Мангухон Ҳайсумни тантанавор, мулозамат билан расмий тарзда қаршилади. Ғарчи бу подшоҳ ва хизматкор мулоқоти бўлсада, унинг ҳурматини жойига қўйиб, унга подшоҳга лойиқ муомала кўрсатди. У иккиси ҳам қаршисида ким турганини яхши билар, фақат сиёсий расмиятчилик юзидан бир-бирларига мулозамат кўрсатаётган эдилар. Арманистон подшоси шарафига берилган катта базмдан сўнг, Ҳайсум ўзини Мангухоннинг хизматида эканини эълон қилди, Мангухон эса, унга порлоқ келажак ваъдаси ва катта совға-саломлар инъом қилди. Бу

³⁹⁴ Рус. Хегум I.

³⁹⁵ Рус. Каракорум.

³⁹⁶ Доктор Шафиқ «VII–VIII асрларда мусулмонлар зиддига мўғуллар ва насронийлар ўртасидаги келишувлар ва унинг таъсири» (1/7).

билан у Ҳайсумнинг дўстлиги ва тобелигини сотиб олган эди. Мангухон унга «фалонни қиласан, писмадонни бажарасан» демай, унинг хурматини жойига қўйди ва ҳадялар берди. Жумладан, қуйидагиларни ҳам берди:

Ҳайсумнинг шахсий мулкининг омонлиги, бу нарса подшоҳ учун энг муҳим ишлардан бири эди.

Мамлакатдаги барча черков ва монастирларни солиқдан озод қилди. Қолбуки, мўғуллар ҳаммага солиқни баробар соларди.

Арманларга мусулмон Салжуқийлар томонидан фатҳ қилинган шаҳарларни қайтариб олишларида ёрдамчи бўлишини ваъда қилди. Арманлар ва Туркиядаги Салжуқийлар ўртасида узоқ тарихлар совук урушлар бўлиб келарди.

Мангухон Арманистон подшоси Ҳайсумга Ғарбий Осиё ишларида катта маслаҳатчи мансабини тақдим қилди.

Мўғул ҳоконининг насроний подшоҳга илтифоти замирида бир неча сабаблар бор эди:

Биринчидан: Мусулмонларга уруш қилишда Арманистон подшоси малакасидан фойдаланиш. Зеро, арманлар ва мусулмонлар ўртасидаги душманлик алоқалари анчагина қадимий эди. Арман подшоси Мангухонга мусулмон ўлкалари ва ундаги шарт-шароитлар хабарини оқизмай-томизмай айтиб берди. Бу эса, Ислом ўлкаларининг босиб олинишида етакчи рол ўйнаши турган гап.

Иккинчидан: Мўғуллар кенг Ислом диёрларини бошқаришда ўша ўлканинг ўзидан ёки қўшнисидан бўлган айғоқчиларга муҳтож бўлиб, бу минтақадаги халқларнинг тилини топиш имконини берарди.

Учинчидан: Мўғулларнинг бу қадами ғарбдаги насронийлар билан янгидан келишувлар тузишга қурилган кўприк эди, чунки арманлар ғарблик насронийлар каби католик эътиқодида эдилар. Келажакда Арманистон подшоси мўғуллар ва ғарбий Овропа ўртасида ишончли вакил бўлиши эҳтимолдан холи эмасди. Зотан, мўғуллар билан Овропаликлар орасида қора кунлар юз берган ва миллионларча насронийлар мўғуллар қиличидан ўтказилган эди. Мангухон Аббосийлар хилофатини батамом яқсон қилиш илинжида насронийлар билан алоқаларни тиклаш орзусида бўлди.

Тўртинчидан: Мўғуллар билан Арманистон мамлакати алоқалари ва ҳарбий амалиётларининг бирлашиши, мусулмонлар маънавиятига қаттиқ таъсир қилиши турган гап. Бинобарин, мўғуллар билан жанг

килиш бошқа, бирлашган кучларга қарши жангга кириш бутунлай бошқа нарсадир. «Бирлашиш» калимасининг ўзиёк, инсонлар руҳиятига ўзгача таъсир этади. Шу боис «бирлашган армия», деб ном қозониш мақсадида қувватли давлатлар эътиборга молик бўлмаган давлатлар билан ҳам ҳамкорлик қиладилар.

Бешинчидан: Арманистонга Ислон диёрларида баъзи хатарли ишларни амалга ошириш вазифаси юкланди. Мўғуллар ўзларига тегишли ҳаракатларнинг баъзисини арманларга топширди, яъни муҳим ишларни арманлар воситасида амалга ошира бошлади. Кўриб турганимиздек, мўғуллар бу келишувдан ҳеч нарса йўқотмади.³⁹⁷

Оламдаги қувватли давлатлар ҳам эътиборсиз кичик ва заиф давлатлар билан шартнома ва битимлар тузади, сўнгра уларга, яъни кичик ва кучсиз давлат раҳбарларига катта ваколатлар беради. Баъзан мўғуллар каби бу подшоҳларга мўғул давлатининг Ғарбий Осиёдаги катта вакил ёки содиқ подшоҳ, ҳамкор давлат ёки давлатлараро кадрдонлик алоқалари ва бошқа бирор-бир қийматга эга бўлмаган фахрий лақабларни кўйишади. Бироқ воқеликда ҳақ-ҳуқуқлар фақат кучлилар томонидан тайин қилинади.

Хуллас, Арманистон подшоси Хайсум кўнгли тоғдек бўлиб, фахр билан юртига қайтди. Халки олдида халоскордек гердайиб келди, чунки у ҳамкорлик сиёсати ила мамлакатини қаҳрли мўғул бўронидан асраб қолган эди.

Насроний подшоҳликлар билан аҳдлашиш ҳаракати

Юқорида зикр қилинган ҳодисалар мўғул давлатининг сиёсий ва дипломатик ҳаракатларидан бўлиб, биринчи салиб делегацияси муваффақиятсиз яқун топган, аммо Арманистон подшоси билан алоқа ўрнатилган эди. Мангухон Шомдаги салибчи амирликлар билан ҳамкорлик қилишни режа қилди. Шом ва Туркия ҳудудларида,

³⁹⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (106, 107, 108-бет).

жумладан, Антакия³⁹⁸, Тарабулус³⁹⁹, Сайда⁴⁰⁰, Хайфа, Акка⁴⁰¹ ва бошқаларда католик насроний амирлик ва подшоҳликлари мавжуд эди. Мангухон бу амирликлар билан тил бириктиришни истади. Сабаби Туркия ва Шом минтақаларидаги мусулмонларни насронийлар билан банд қилиб, уларни Аббосийлар хилофатининг ҳимоясидан чалғитиш эди. Шу сабаб Мангухон салиб амирликларини қитиклаб қўйиш ва уларни оёққа турғизиш учун Арманистон амири Хайсумни улар билан иттифоқчилик тузишга жўнатди.

Мўғул хони Шомдаги салиб амирларига Аббосийлар хилофатини ағдаришда кўмаклашсалар, уларга ҳадя тариқасида Байтул Мақдисни тухфа қилишини ваъда қилди. Байтул Мақдис мўғулларнинг кўлида тургандай гўё! Маълумингизки, Байтул Мақдис 626/1229 йил Шом мусулмонлари томонидан салибчиларга таслим этилган эди.⁴⁰² Сўнгра у 643/1245 йил ўша вақтлардаги Миср подшоси Нажмиддин Айюб кўли билан озод қилинган эди.

Антакия кинязи Бухманд⁴⁰³ дан бошқа Шом амирлари мўғуллар билан ҳамкорлик қилишга тараддудланди. У эса, шу заҳоти мўғуллардан келган таклифни қабул қилиб, мўғуллар сафига қўшилди. Қолган амирлар эса, икки сабаб билан мўғуллар таклифига рад жавобини беришди: биринчи сабаб, мўғулларнинг ҳеч қандай аҳдга вафо қилмаслиги, ўзларини текин сотиб олиниши ва арзимаган нарсага қурбон қилиниши мумкинлигини билганлари бўлса, иккинчи сабаб, улар ўзларини мусулмонларнинг қалбларида душман сифатида барҳаётлиги ва мўғулларнинг хатари билан мусулмонларнинг хатари баробар ёки мусулмонларники ундан ҳам яқинроқлигини билганлари сабаб мўғуллар билан ҳамкорликни рад қилдилар. Шунингдек, улар мўғуллар ва мусулмонлар орасидаги жанг ниҳояси, яъни қайси томон ғолиб

³⁹⁸ АНТАКИЯ — Туркиянинг жан.даги шаҳар. Ўрта денгиз яқинида. Хатай элининг маъмурий маркази. Шаҳарга мил. ав. 300 й.да Оронт дарёси бўйида Салавк I асос солган ва Антиохия деб атаган. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («А» ҳарфи бўлими).

³⁹⁹ ТРИПОЛИ, Тарабулус Ғарб—Ливия пойтахти. Ўрта денгиз соҳилида жойлашган. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («Т» ҳарфи бўлими).

⁴⁰⁰ Рус. Сидон. Сайда — Ливаннинг ғарбий қисмидаги шаҳар. Жан. Ливан муҳофазасининг маъмурий маркази. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («С» ҳарфи бўлими).

⁴⁰¹ АККА — Ўрта денгиз соҳилидаги шаҳар. Исроил давлатида. Қадимда Акко деб аталган. Жан. Финикиянинг йирик савдо маркази бўлган. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («А» ҳарфи бўлими).

⁴⁰² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/173).

⁴⁰³ Рус. Боэмунд VI.

бўлишини кутишни ва дарҳол ғолиб томонга қўл чўзишни фикр қилдилар. Улар буни сиёсат деб атадилар.

Мангухон Шом ва Ироқдаги амирликлардан ташқари, Ислом давлати қошида яшовчи омма насронийлар билан иттифоқчилик қилишга ҳаракат қилди. Бу иттифоқчилик расман эълон қилинмади, бироқ бу ҳамкорлик насроний ва пастирлар (қавмга раҳбарлик қилувчи рухонийлар)нинг катталари билан махфий тарзда бўлди. Бу Ислом давлатининг ичига мўғулларнинг кириши ва хабарларни мўғулларга, мўғуллардан уларга келишини осонлашишини таъминлади.

Мангухон Ироқ ва Шомдаги насроний бошликларга, жумладан, Бағдоддаги бош париарх (православие черковининг бошлиғи) билан алоқа ўрнатди. Сўнгра у Гурж мамлакати билан мусулмонларга қарши келишув тузди. Вахоланки, мўғуллар уларнинг бошига қора кунларни солган, яъни Гурж мамлакатини уч марта вайронага айлантирган эди. Лекин мусулмонлар билан ақидавий адовати борлиги сабаб ўз фойдасини кўзлаган гуржлар, мўғуллар билан ҳамкорлик битимини имзолади. Оллоҳ таоло улар хусусида шундай дейди: **«Улар қўлларидан келса то динингиздан қайтаргунларича сизлар билан уришаверадилар».**⁴⁰⁴

Баъзи мусулмон амирликларининг келишуви

Сўнгра мўғуллар баъзи мусулмон амирлар билан иттифоқчилик тузди. Мангухон уларни менсимаганидан Ҳулагуни вакил қилди. Бу амирлар Муаззам, Ашроф, Азиз ва Саид каби ўзларига умуман номуносиб буюк лақабларга эга эдилар, яъни бу лақаблар уларга ҳайф эди. Заиф мусулмон амирлар кучли мўғуллар олдига чопиб келишди.

«Бас, сиз дилларида мараз бўлган кимсалар: «Бизга бирон бало етишидан қўрқамиз», деган ҳолларида улар (кофирлар) томонга шошаётганларини кўрасиз. Шояд, Оллоҳ мусулмонларга ғалаба берса ёки ўз ҳузуридан (бу мунофиқ кимсаларни шарманда қиладиган) бирон ишни келтириб, улар ичларида яширган нарсаларига надомат қилувчиларга айланиб қолсалар».⁴⁰⁵

Мосулнинг амири Бадриддин Луълуъ ва Форс минтақаси амирларидан Отабек Абу Бакрлар Ҳулагу билан аҳдлашдилар.⁴⁰⁶ Бу билан курдлар истиқомат қиладиган Ироқнинг шимолий минтақаси

⁴⁰⁴ Бақара: 217.

⁴⁰⁵ Моида: 52.

⁴⁰⁶ Саллабий «ал-Мўғул» (194-бет), Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-кисм, 240-бет)/ «Сборник летописей» (3/25).

мўғулларга Бағдоднинг шимолидан бемалол кириши учун йўл очиб берадиган бўлди. Туркия минтақасидаги Салжуқий султонлари Иззуддин Кай Ковус II ва Рукниддин Қилич Арслон IV Ҳулагуга қўл бердилар.⁴⁰⁷ Улар мўғул лашкарининг Туркия худудларидан Ироққа кириши учун йўл очиб беришга келишдилар.

Жумладан, Ҳалаб ва Дамашқнинг амири Носир Юсуф⁴⁰⁸, Ҳимснинг амири Ашроф Айюбийлар мўғуллар билан ҳамкорлик битимларини туздилар.⁴⁰⁹ Носир Юсуф Салоҳиддин Айюбийнинг невараси бўлсада, у кишига ахлоқ, шижоат, довюраклик ва бошқа хислатларда мутлако ўхшамас эди. Пасткашликда шу даражага етдики, ҳатто Ислом умматини парчалаб ташлаш учун шайланаётган мўғуллар сафига қўшилишга рози эканини билдириб, ўғли Азизни Ҳулагунинг ҳузурига йўллади. Мўғуллар Ироқнинг ҳамма томони — шимоли, ғарби, шаркидан ўраб оладиган даражадаги қувватга молик бўлдилар. Бу келишувлар ўша вақтдаги мусулмонларнинг руҳияти ва маънавиятини даҳшатли кўринишда тубанликка юз тутганидан далолат эди. Омма мусулмонлар бу сотқин амирларнинг қилмишларига гувоҳ бўлганларида, уларнинг мўғулларга қарши оёққа туриш, сафларни бирлаштириш, йўлбошчиларга бўлган ишончлари тамоман синди.

Мусулмонларнинг бу иттифоқчиликлари ҳар қанақасига катта жиноятдир. Мўғуллар Аббосийлар саройигача кириб келишди, яъни халифа Мустаъсим Биллаҳдан кейинги мақомдаги, хилофатнинг иккинчи одами, вазирларнинг каттаси Муаййиддин ибн Алқамийгача етиб келдилар. Бу вазир рофизийлардан бўлиб, ифвогар, бузгунчи, ярамас киши эди. У икки халифа Абу Бакр Сиддиқ ва Умар разияллоху анҳумоларни халифалигини тан олмас, суннатни ва суннийларни ҳаддан ташқари ёмон кўрар, кўргани кўзи-ю, отгани ўки йўқ эди. Лекин унинг суннийлар хилофатида бундай юқори мансабга кўтарилгани жуда ажабланарлидир. Бу эса, халифа Мустаъсим Биллаҳнинг калтафаҳм, нодон ва ёмон сиёсатчи эканини кўрсатади.

Абу Саид ал-Худрий разияллоху анҳудан ривоят қилинади: Расулуллоҳ соллаллоху алайҳи ва саллам шундай дедилар: *«Оллоҳ бир халифани тайин этса, албатта, унинг икки тур яқин кишилари бўлади:*

⁴⁰⁷ Саллабий «ал-Мўғул» (205-бет), Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 240-бет) / «Сборник летописей» (3/25), Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (3/80–90), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (232-бет).

⁴⁰⁸ Саллабий «ал-Мўғул» (326-бет).

⁴⁰⁹ Саллабий «ал-Мўғул» (350-бет).

*бири яхшиликка буюриб, унга далолат қилади; иккинчиси эса, ёмонликка буюриб, унга тарғиб қилади».*⁴¹⁰

Янада ёмонроғи, бу фосид вазир бир-икки ой ёки бир-икки йил вазирлик қилмади, балки 642–656 йиллар давомида 14 сана, яъни хилофат ағдарилгунга довур ўз мақомида турди. Маълумингизки, халифа Мустаъсим Биллаҳ 640 йил тахтга ўтирган⁴¹¹, ундан икки йил ўтар-ўтмас бу кимса вазир бўлган эди.⁴¹² Ҳулагу Муаййиддин ибн Алқамийга боғланди, мўғул қўшинини Бағдодга осонгина киришида унинг разил таклифларидан фойдаланишга келишди. Ҳулагу буларнинг муқобилига Аббосийлар хилофати ағдарилгандан сўнг унга Бағдоднинг бошқарув курсисини ваъда қилди. Кўриб турганимиздек, разил бош вазир мансабидан «унумли фойдаланган», яъни суистеъмол қилган эди.

Ушбу ҳодислар Мангухон ва Ҳулағунинг 5 йилга чўзилган дипломатик ва сиёсий хатти-ҳаракатлари эди. Насронийлардан Арманистон ва Грузия подшоҳлари, Шомдаги биргина Антакия амири, Шом ва Ироқдаги омма насронийлар билан ҳамда мусулмонлардан баъзи амирлар ва хоин вазир Муаййиддин ибн Алқамий билан иттифоқчилик алоқалари ўрнатилган эди.

Маънавий жанг

Учинчи масала: Мусулмонларга қарши маънавий жанг. Ҳулагу хилофатга уруш очиш, Бағдодни ағдариш олдидан маънавий жангга киришди. У бу жангни бир неча кўринишда олиб борди. Ироқнинг атрофидаги минтақаларда силлани қуритувчи террор хужумларини бошладики, бу билан мусулмонларга Чингизхон ва унинг ўғли Ўқтойхонлар замонидаги даҳшатли қирғинни эслатишни хоҳлади. Чунки улардан кейин бу минтақаларда 639–649 йиллар 10 йил мобайнида уруш-босқинлар юз бермаган эди.

Ҳулагу 650/1252 йилда Ироқнинг шимоли ва унинг атрофида, яъни Жазира, Суруж, Роъсул-айн минтақаларига келиб, мўғуллар одатига кўра, қирғин, қатл, вайрон, талон-тарож, қул қилишга тушди. Улар бу диёрларда бир неча ўн минглаб мусулмонлар ҳаётига зомин бўлишди.⁴¹³ Бу ҳам етмагандай, Ироқнинг иқтисодини синдириш мақсадида йўлтўсар ва қароқчилик қилиб, тижорат қарвонларини талон-тарож

⁴¹⁰ Бухорий ривояти (7198 ва 6611).

⁴¹¹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/260).

⁴¹² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/273).

⁴¹³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/316).

қилди. Мўғуллар Ҳаррон ва Роъсул-айн орасида кетаётган тижорат карвонини талаб, 600 минг диноар ва Мисрда тайёрланган 600 туяга юкланган шакарни қўлга киритдилар.⁴¹⁴ Бу эса, Аббосийлар хилофати иктисодига берилган қаттиқ зарба бўлиб, мусулмонлар руҳиятининг заифлашишига сабаб бўлди.

Мусулмонларга маънавий зарба беришда мўғулларнинг яна бир воситаси мусулмон адиб ва шоирларни ўзларига хизматкор қилиш эди. Улар Ислом диёрларида ўткир қалами ва бурро тиллари билан уруш ҳақида ёмон хабарларни тарқатишга бел боғлади. Улар ҳатто бирорта мусулмон мўғулларга қарши курашишни хаёлига ҳам келтирмасин дея, бу хабарларда мўғуллар имкониятларининг чексизлиги муқобилида мусулмонларнинг кучсизликларини ёрита бошладилар. Буларга куйидагиларни мисол қилиш мумкин:

- Мўғуллар инсонлар аҳволдан хабардор, инсонлар эса мўғулларни билмайди;
- Мўғул аёллар эркаклар мисоли довжорак;
- Мўғул отларининг емга ҳожати йўқ, зеро, улар туёқлари билан ерни қавлаб ўсимлик илдизи билан озикланади;
- Мўғуллар ҳарбий мадад ва таъминотдан беҳожат;
- Мўғуллар ҳар қандай этни, ҳатто бани одамни-да ейдилар...

Ўша асрларда мўғуллар бугунги кунимизда кўпчилигимиз унга алданиб келаётган ахборот воситасининг таъсир кучини яхши тушунган эдилар. Натижада барча инсонларга қўрқув солишга муяссар бўлдилар. Ҳатто мусулмон эркаклар мўғул аёллардан қўрқа бошлади. Мусулмонларнинг маънавиятига зарба беришда мўғуллар ишлатган яна бир восита — улар шоирларга таҳдидий мактубларни ёздирди ва шунга муносиб ҳозирлик ҳам кўрди. Улар бу мактубларни ёздирешда мусулмонлар орасида юрган мунофиқ шоирлардан фойдаланди, улар мўғул тилидаги мактубларни араб тилида маромига келтириб ёзиб беришди. Ушбу мактублар таъсири ўлароқ мусулмонларнинг дилларига қўрқув ўрнашди.

Мусулмонларнинг руҳиятини тушишига олиб келган яна бир восита — мусулмон амирларнинг ҳамда бошқаларнинг мўғуллар билан иттифоқ тузганини эълон қилиш эди. Жумладан, нафақат мўғуллар билан, балки уларнинг иттифоқчилари бўлмиш Арманистон, Гуржистон, Антакия ва бошқаларнинг бирлашган қуввати билан уруш қилишига

⁴¹⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/316).

тўғри келишини эълон қилди. Бу ҳам мусулмонлар қалбига кўркув солиши турган гап эди. Булар ҳақида омма халқ олдида жар солинди. Омма халқ мусулмон амирларнинг мўғулларга сотилганини эшитганида, уларнинг дилларида қарши туриш, ҳимояланиш ва жиҳод туйғуси тамоман барбод бўлди. Шу тариқа мўғуллар мусулмонларнинг маънавиятини синдириш имконига эга бўлган ва Бағдодга хотиржам бостириб кириш учун муносиб муҳит яратган эдилар.

Аббосийлар армиясининг кучсизланиши

Тўртинчи масала: Аббосийлар армиясининг кучсизлантирилиши эди. Ҳулагу бузғунчи вазир Муаййиддин ибн Алқамий Шиъийга халифа Мустаъсим Биллахни армия сафини озайтириш, уларга сарфланаётган харажатни камайтириш, уларни шаҳар ободонлиги, деҳқончилик, саноат ишларида фойдаланиш таклифи билан аврашга буюрди.⁴¹⁵ Вазир халифага биз тинчлик тарафдоримиз, аскарлар жанг тадоригини четга суриб, деҳқончилик, қурилиш, чорва ишлари билан машғул бўлсин, деган манфур фикрни халифага уқтириши лозим эди. Фосиқ вазир халифага юқоридаги таклифларни билдирган эди, халифа ҳам бу фикрни қўллаб-қувватлади.

Сўнгра халифа армиянинг сони ва бюджетини озайтирди. Ҳатто Мустаъсим Биллахнинг отаси Мустансир Биллах хилофатининг охири кунлари 640/1242 йил Аббосийлар хилофати армиясида 100 минг суворий бўлган бўлса, 654/1256 йилга келиб, хилофат армиясида бор-йўғи 10 минг⁴¹⁶ (20 минг)⁴¹⁷ суворий қолган, бу ҳам етмагандай армия ўта ночор аҳволга тушган, ҳатто аскарлар ейишга бир бурда нон топмасдан, бозорларда тиланчилик қилишга мажбур бўлган эди.⁴¹⁸

Хилофат армияси ҳарбий машғулот ва тайёргарликни унутди ҳамда бутун бошли мунтазам армия нафақат қўмондонларсиз, ҳатто идора қилиш, тартибланиш ва бошқарувга лаёқатли кишиларсиз қолди. Мусулмонлар жанг ва аскарлик илмларидан бебаҳра бўлиш билан бир қаторда уларнинг зехнларидан ҳимояланиш ва жиҳод тушунчаси тамоман чиқиб улгурди. Бу улкан хиёнат ва буюк жиноятдир. Ибн Касир раҳимаҳуллоҳ «*ал-Бидая-ту ван-Ниҳоя*» китобида вазир Муаййиддин ибн Алқамийни халифага берган бу насихати учун комил суратда

⁴¹⁵ Доктор Абдуллоҳ Саид Ғомидий «Жихадул-мамолийк зид ал-мўғул вас-салибийин» докторлик рисоласи (52-бет).

⁴¹⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/360).

⁴¹⁷ Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 272-бет).

⁴¹⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/357–358).

маломат қилган,⁴¹⁹ лекин мен халифанинг ўзини маломат қиламан, дейди Сиржоний ҳафизахуллоҳ.

У бу шармандалиқни қабул қилган ва хорликка рози бўлган халифа эди. Ҳоким сифатида халқнинг тинчлик омонлиги, юртни босқинчилардан ҳимоя қилиш, армияни жиҳозлаш ва қувватлаш, нафақат армия, балки омма халқни ҳам Оллоҳ йўлидаги жиҳодни ардоқлаб, Оллоҳ йўлида ўлишни севишга тарғиб қилиш каби энг муҳим вожиблар Ислом уммати халифасининг ҳаёл кўчасидан ўтмади ҳам. Халифа бу вожибларни бажармади, ҳолбуки, ҳукм чиқариш ва қарор қабул қилиш унинг иши эди. Зотан, жиддий ва масъулиятли қарорларни руҳияти заиф кимсалар чиқара олмайдилар...

Юқорида санаб ўтилган ишлар Ҳулагу ва Мангухоннинг тайёргарликлари бўлиб, ҳақиқатан зўр таассуротга эга катта ҳозирлик бўлган эди.

Биз ҳақ диндаизми, демак, нусрат биз томонда бўлиши муқаррар, деган ҳаёлларга берилиб қолганмиз. Ваҳоланки, нусратнинг қилиниши лозим бўлган сабаблари бор. Шунингдек, мағлубиятнинг ҳам сабаблари бор. Мағлубият сабабларининг энг хатарлилари бўлиниш, тарқоқлик ва ўзаро рақобатдир. Мағлубият сабабларининг бу кўринишлари мўғуллар Бағдодга ҳужум қилишга киришаётган даврда мусулмон жамиятда етилиб бўлган эди.

⁴¹⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/273, 358, 359).

МЎҒУЛ ЛАШКАРИНИНГ ҲУЖУМГА ҲОЗИРЛАНИШИ

Тўлиқ беш йилдан сўнг, 654/1256 йил Ҳулагу Аббосийлар хилофатига хотиржам ҳужум қилиш мумкинлигини ҳис қилиб, жуда катта мўғул лашкарини Бағдод сари сафарбар қилишга киришди. Бир сўз билан айтганда, Мўғул империяси ташкил топгандан ўша кунгача мўғулларнинг ўзлари ҳам бунча катта қўшинни кўрмаган эди. Ироқнинг шимоли, шарқи ва жанубидаги ҳамда Мўғулистон билан Ироқ орасидаги йўллар ҳимояси, курол-яроқ ва озик-овқат ташиш вазифаси юкланган аскарлар, шунингдек, атрофдаги шаҳарларга юборилган қўшимча армиядан ташқари, биргина Бағдодни қамал қилиш вазифасидаги қўшин сони 200 мингдан зиёдроқ эди.⁴²⁰

Мўғул қўшини таркибини ўн нуқтада баён қилсак:

Биринчи нуқта: Асосий мўғул армияси узок вақтлардан бери Форс, Озарбайжон ва Ироқнинг шарқий минтақаларида жойлашган эди.

Иккинчи нуқта: Ҳулагу Россия ерларини ишғол қилган, Волга дарёси соҳилини ўзларига қароргоҳ тутган, қўмондонлари машҳур саркарда Ҳулагунинг акаси Ботухоннинг уч ўғли бўлган катта мўғул қўшинини чақирган эди.

Учинчи нуқта: Ҳулагу Оврупанинг шарқий қисмларини эгаллаган, ўша вақтлар Анадолу минтақаси атрофини ўзларига марказ қилиб олган мўғул лашкарининг ҳам келишини талаб қилди. Ҳулагунинг талаби билан буюк мўғул қўмондонлари Шўрмағон ва Байжу бошлиқ мўғул қўшини Бағдод сари йўл олди.⁴²¹

Тўртинчи нуқта: Ҳулагу дўсти бўлмиш Арманистон подшосига элчи жўнатди, подшоҳ Ҳайсумнинг шахсан ўзи арман лашкарини олиб, Ҳулагунинг сафига қўшилди.

Бешинчи нуқта: Гурж мамлакати подшоси ҳам бу ишга жалб қилинган заҳоти лаббай деб, Бағдодни қамал қилишга келган эди.

Олтинчи нуқта: Ҳулагу камондан оловли ўқ отиш билан шуҳрат қозонган 1000та моҳир Хитой мерганларини чақиртирди.⁴²²

⁴²⁰ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 338-бет).

⁴²¹ Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 281-бет).

⁴²² Жувайний «Тариху Жаҳонгуша» (3/89–90), Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2/235)/ «Сборник летописей» (3/23), Абул Фароҳ (2/556).

Еттинчи нукта: Хулагу мўғул лашкарига ўша вақтдаги энг уддабурон мохир саркардани бошлиқ қилиб тайинлади. Унинг исми Китбуга нўён бўлиб, у ўта мохир кўмондон бўлиши билан бирга насроний ҳам эди. Хулагу атай уни шу ўринга танлаган эди, чунки у насроний бўлгани учун катта сондаги насроний иттифоқчилар Арман, Гурж ва Антакияликлар билан осон тил топиша олар эди. Мўғуллар учта: Хулагу, Китбуга нўён ва Байжу кўмондонлиги қаноти остида бирлашди.

Саккизинчи нукта: Хулагу Антакия амири Бухмандни Шомга уруш очишдан тўхтатиб, Бағдод ишғолига чорлаб элчи юборди. Ўша пайтда у бутун кучини йиғиб, Шомга уруш очишга тайёр турган эди. Хулагу Бағдодни забт этгандан сўнг, Шомга у билан баробар урушга киришга ваъда берди.

Тўққизинчи нукта: Мўғул кўшини таркибида мусулмонлар гуруҳи ҳам бўлиб, уларнинг кўмондони Дамашқ волийсининг ўғли, Салоҳиддин Айюбий раҳимахуллоҳнинг невараси Азиз ибн Носир Юсуф Айюбий эди. Улар ҳам Ирокни ағдаришда мўғулларга кўмак берадиган бўлдилар.

Ўнинчи нукта: Бу мусулмон гуруҳидан ташқари, Бағдод ишғоли учун Мосулнинг амири Бадриддин Луьлуь мусулмон армияни Хулагу хузурига йўллади.⁴²³ Ҳатто Ироқликлар ҳам ҳақир дунё, мансаб, эътибор истаб ёхуд ҳаёт илинжида мўғуллар билан иттифоқчилик қилишди. Мўғуллар сафидаги бу мусулмон армия ҳеч қандай қийматга эга эмасди, бироқ бунинг замирида мўғул кўшини сафида мусулмонлар иштирок этаяпти, деган катта-катта маънолар бор эди.⁴²⁴

Исмоилийя тоифасининг қиличдан ўтказилиши

Олий суратдаги тайёргарлик натижасида катта қувватга эга бўлган улкан мўғул лашкари Форсдан Ироққа қараб бўрондек эса бошлади. Хулагу жанг учун қадамини олға босди. Шунда унга Бағдодга киришини тўсиб турган тоғли ҳудуд Форснинг ғарби ва Ироқнинг шарқини ўзларига макон тутган шиаларнинг Исмоилийя тоифаси рўбару келиб қолди. Аҳд ва бурчга бевафо, хилофат билан қаттиқ мурасасиз, қудратлиларга тилёғламачи мунофиқ эканини яхши билгани учун Хулагу улар билан иттифоқ бўлишдан кўнгли тўлмаган эди. Чунки бу тоифа жанг қилиш ва мустаҳкам қўрғонлари билан шуҳрат қозонган ва мўғуллар сингари аҳдга бевафо, ўта хатарли, қутилмаганда мўғулларга хужум қилиб қолиши ҳам эҳтимолдан холи эмас эди. Шу боис, Хулагу

⁴²³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/356).

⁴²⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (122, 123, 124-бет).

гарчи вақти ва кучи кетса-да, бу тоифа ишини ҳаллаб, шундан сўнг Бағдодга киришга қасд қилди.

Ҳулагу 653 йил зулҳижжа/1256 йил январ ойида катта лашкари билан Амударёни кесиб ўтиб,⁴²⁵ Балх шаҳри яқинидаги Шибарғон ўтлоқларига етиб келди ва у ердан Исмоилийларнинг қалъаларига йўналди. Саркарда Китбуга Ҳулагудан олдинлаб, Қохистон ерларига бориб, у ердаги бир неча Исмоилийларнинг қалъаларини ишғол қилди.⁴²⁶ Сўнгра Ҳулагу бош лашкари билан қўрғонли Исмоилийларнинг қалъаларига етиб келди ва гоҳида куч билан, гоҳида эса ҳийла билан уларни бирин-кетин ишғол қилиб, 654 йилнинг охирлари/1257 йилнинг бошларида сўнгги қалъа «Ўлик қалъа»ни эгаллаш ила Исмоилийя тоифасини ишини ҳал қилди. Исмоилийларнинг бошлиғи Рукниддин Хуршоҳ Ҳулагуга бас кела олмади, Ҳулагунинг қаршисида ерни ўпган ҳолатда унга таслим бўлди. Шу тариқа мўғуллар адади юзларча бўлган Исмоилийларнинг қалъаларини тўлиқ ишғол қилишди.⁴²⁷

Сиржонийнинг маълум қилишича, катта мўғул қўшини тўғри Исмоилийя тоифаси томон йўл олиб, уни ҳар тарафдан ўраб олади. Икки гуруҳ ўртасида аёвсиз, шиддатли жанг бошланиб, оқибатта Исмоилийя тоифаси тўлиқ қиличдан ўтказилади ва минтақа тамоман тозаланади. Шу тариқа Бағдод сари йўл очилади. Бу уруш 655/1257 йилнинг ичида содир бўлди.⁴²⁸

Бу воқеаларга юзаки назар қилинса, «мусулмонлар ҳақ йўлда бўлсалар, нима учун Оллоҳ таоло уларни қатлиом қилишга бел боғлаган, бундай даҳшатли кўринишда уларнинг ҳурматларини тўкишни ўзларига мақсад қилиб олган мўғул-татарларга изн берди?» деган савол туғилиши табиий. Мўғуллар ҳодисасига теран фикр билан назар қилинса, юқоридаги каби саволларга жавоб топилиши тайин. Агар мусулмонларнинг фақат якка Оллоҳга ибодат қилишлари томонидан қаралса, бу ҳодиса буюк фожиа ва улкан мусибат бўлди. Бирок, бошқа жиҳатдан улар жанг тадоригини кўрмаган ва нусрат сабабларини ушламаган эдилар. Шундай экан, нусратнинг рўёбга чиқиши амримаҳолдир. Тарихга назар солсак, яҳудий, насроний, бутпараст,

⁴²⁵ Рашид-ад-Дин «Сборник летописей» (3/25).

⁴²⁶ Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 240, 241, 243, 245-бет)/ «Сборник летописей» (3/26–27), «Ўзбекистон миллий энциклопедияси» (11-жилд, 390-бет).

⁴²⁷ Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 243, 255-бет)/ «Сборник летописей» (3/31–32).

⁴²⁸ Сиржоний «Қиссатут-татар» (125–126).

хиндус, атеист комунистлар моддий ва ҳарбий жихатдан бўлган сабабларни ушлаган, мусулмонлар эса бу сабабларни тарк қилганида, уларнинг мусулмонлар устидан ғолиб бўлганига гувоҳ бўлганмиз. Оллоҳ таолонинг қонунлари ўзгармайди ва алмаштирилмайди.

Сўнгра Ҳулагу катта маслаҳатчиларини тўплаб, мўғуллар тарихидаги энг муҳим ҳарбий мажлисни курди. Бу қора ниятли мажлис Ҳамадон шаҳрида бўлиб ўтди. Бу машваратда Ҳулагу маслаҳатчиси астроном олим Насируддин Тусийнинг маслаҳатини олади, бу маслаҳат пойтахт Бағдодга лашкар тортиш ва Ислом хилофатининг томирини кўпориш фикри эди.⁴²⁹ Бинобарин, Ҳулагу асоси бутпарастлик бўлган динга эътиқод қиларди, шунинг учун у бирор катта ишга кўл урса, мунажжимлар башорати ва фолларга қараб иш кўрарди. Бу йиғилишда Ҳусомуддин исмли мунажжим унга агар Аббосийлар хилофатига ҳужум қилса, олтита катта мусибат рўй беришидан огоҳлантирди. Улар куйидагилар эди:

- Отларнинг барчаси нобут бўлиб, аскарларга касаллик тегиши;
- Қуёшнинг чиқмаслиги;
- Ердан ўсимликларнинг умуман унмаслиги;
- Мутлақо ёмғир ёғмаслиги;
- Совуқ шамол туриб, каттиқ zilzilалар бўлиши;
- Ушбу йил буюк хон Мангухоннинг ўлиши;⁴³⁰

Аmmo Ҳусомуддин сунний мусулмон бўлгани учун унинг сўзидан Ҳулагунинг кўнгли тўлмади. Насируддин Тусий «Илгари ҳам халифалар қатл қилинган, бироқ ҳеч қандай ғайритабиий ҳодиса юз бермаган», деди. Бу фикр Ҳулагуга маъқул келди ва Бағдод сари ҳужумга киришди.⁴³¹

Ҳулагу қўшин ичидаги мусулмон аскарларнинг хиёнат қилишидан хавотир олиб, уларга кўз-қулоқ бўлиб туришни назардан қочирмади. Шу сабаб Ҳулагу уларни кузатиб юрувчиларни тайин қилди. Ҳолбуки, Ҳулагу сафига қўшилган мусулмон амирлар, унга хиёнат қилишни етти ухлаб тушида ҳам кўрмаган эди, десак муболаға бўлмайди.

⁴²⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/358), Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 281-бет)/ «Сборник летописей» (3/38–39).

⁴³⁰ Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 259-бет), Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 279-бет)/ «Сборник летописей» (3/38–39).

⁴³¹ Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 259-бет), Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 279, 280-бет)/ «Сборник летописей» (3/39).

Сўнгра мўғул лашкари Ҳамадондан Ирокқа қараб кўзгалди, орадаги масофа 450 километрни ташкил қиларди. Ҳулагу кўшинни уч қисмга тақсим қилди:

Биринчи қисм, кўшиннинг асоси бўлиб, унга Ҳулагунинг ўзи бошчилик қилди. Бу гуруҳ мўғул лашкарининг энг муҳим бўлаги ҳисобланиб, Россия фатҳидан қайтган мўғул армияси, Арманистон ва Гуржистон мамлакатларидан келган насроний кўшинларни ўз таркибига олган эди. Улар Форснинг ғарбидаги тоғли ҳудуддан ўтиб, тўғри Бағдодга отланди. Йўл асносида Кармоншоҳ шаҳридаги Исмоилийя тоифасини тамоман йўқ қилиб ўтди⁴³² ва Бағдоднинг шарқий томонидан қамал қилишга киришди.

Иккинчи қисм, мўғул кўшинининг чап қаноти бўлиб, унга моҳир саркарда Китбуга нўён⁴³³ қўмондон эди. Бу гуруҳ аввалги гуруҳга нисбатан жануб томондан Бағдодга йўл олди. Йўлларда мусулмон разведкачилар бўлиши мумкин, деган эҳтимол билан Ҳулагу бу гуруҳларни иккига айирди. Ваҳоланки, бундай катта кўшинни 450 км масофадан йўлларда яширин ҳолда олиб юриш мумкин эмаслиги турган гап бўлса-да, Ҳулагу эҳтиёт чорасини кўрган эди. Китбуга нўённинг кўшини Ирокқа ҳамирдан қил суғургандай силлиқ кирди ва Бағдоднинг жануб томонидан қамал қилишга шошилди. Аббосийлар мўғул кўшини бостириб келаётганини фақат 50 километрдан озроқ масофа қолганидагина пайқадилар.

Учинчи қисм, Оврупанинг шарқий минтақаларини ишғол қилган, қўмондони машҳур Байжу бўлган, Анадолунинг атрофидан Бағдод сари йўлга отланган мўғул армияси эди. Бу гуруҳ шимол томондан жанубга қараб юриб, Бағдодни шимол томонидан қамал қилиш учун етиб келди. Сўнгра бу гуруҳ Бағдодни ғарб томонидан ҳам қуршовга киришди.⁴³⁴

Хуллас, Бағдод шарқдан Ҳулагу, жанубдан Китбуга нўён ҳамда шимол ва ғарбдан Байжу томонидан ўраб олинди.⁴³⁵ Байжу бошлиқ учинчи гуруҳнинг Ҳулагу ва Китбуга билан бир вақтда Бағдодга етиб келиши, мусулмонларнинг шармандалиқ даражаси қай ҳолатга келганини белгилаб берувчи мезон эди, десак янглиш бўлмайди.

⁴³² Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 260-бет).

⁴³³ НЎЁН, нўёнлар (мўғулча нойон, поуап, поуип — жаноб, князь) — ўрта асрларда Мўғулистондаги олий табақа вакиллари. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («Н» харфи бўлими).

⁴³⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (129–130), Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 338-бет).

⁴³⁵ Саллабий «ал-Мўғул» (193-бет).

Чунки учинчи гуруҳ мўғул кўшини Бағдодга етиб келиши учун 1000 км масофани босиб ўтиши лозим эди. Бу масофанинг 500 км Туркия минтақаси, шунингдек, қолган 500 км Ироқ ерларига тўғри келарди. Яъни мўғул лашкари 1000 км масофани Ислоом олами ичидан босиб ўтди. Бироқ унга бирорта мусулмон қарши чиқмагани етмагандай, 950 км масофа юриб, Бағдодга 50 км қолганидагина Аббосийлар бундан хабар топган эдилар!⁴³⁶

Байжу Ислоом ўлкаларини мусулмонларнинг иккита катта нуқсони ёки мусибати сабаб хотиржам кесиб ўтди:

➤ Аббосийлар армияси ҳарбий ва жанг олиб боришда малака ва билимларидан беҳабарлиги ҳамда бу майдонларда мусулмон разветкачиларининг йўқлиги.

➤ Очиқ хиёнат. Анадолу ва Мосулнинг амирлари-ю, халқи мўғулларга барча дарвозаларни кўш-қўллаб очиб бермаса, мўғуллар Бағдодга осонликча етиб бормаган бўлар эди. Анадолунинг амири Кай Ковус II ва Рукниддин Қилич Арслон IV хиёнатни роса дўндирган эдилар. Мосулнинг амири Бадриддин Луълуънинг сотқинлиги бу иккисидан ҳам ошиб тушган эди. У мўғулларга ён босгани етмагандай, йўлларни очиб берди ва мўғул кўшинининг Бағдод сари бориши учун Дажла⁴³⁷ дарёсига кўприк қурди. Хулагу унинг ироқлик эканини билса-да, хилофатни тўнтариш амалиётига уни ҳам жалб қилган эди. У камида 80 ёшда эди, баъзи ривоятларда 100 ёш бўлгани айтилган. Бадриддин Луълуъ ўзининг буюк хиёнатидан ва хилофат ағдарилгандан бир неча ой ўтар-ўтмас руҳини таслим қилди. Оллоҳ субҳонаху ва таолодан ёмон хотимадан паноҳ сўраймиз.

⁴³⁶ Сиржоний «Қиссатут-татар» (131-бет).

⁴³⁷ Рус. Тигрис.

АББОСИЙЛАР ХИЛОФАТИНИНГ АҒДАРИЛИШИ

Мўғул босқини вақтида Бағдоднинг аҳволи

Бағдод шаҳри ўша замонда деворлар билан кўрғонланган шаҳарларнинг энг мустаҳками эди. Зотан, у Ислом хилофатининг 5 асрдан буён пойтахти бўлиб келган шаҳар бўлиб, бу кўрғонлар шундай мустаҳкам ҳолига келгунича қанча-қанча харажат ва меҳнатлар сингган ва бунга неча йиллар ёки асрлар кетган бўлса?! Наҳот, бу шўринг қурғир кўрғонли шаҳар ҳам уни ҳимоя қиладиган рижолларга муҳтожлигини ақлли инсонлар англамаса?! Нима ҳам дердик, ўша дамлар хилофатда ғурурли йигитлар нодирлаша борган экан-да.

Халифа Мустаъсим Биллаҳ сийрати

Ўша вақтда Аббосийлар хилофатининг бошида Аббос авлодларининг 37-си ва охиргиси бўлган Мустаъсим Биллаҳ ўтирар эди.⁴³⁸ Номи улуғ, вазифаси унданда буюк эди бу халифанинг. Суютийнинг «*Халифалар тарихи*» ёки Ибн Касирнинг «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*»сига ўхшаш тарих китобларида халифа Мустаъсим Биллаҳнинг ҳаёт тарзи ҳақида келган саҳифалар ўқилса, ажабланарли нарсаларнинг гувоҳи бўласиз.

У кишининг шахсий ҳаётида фозил инсонлиги-ю, ўзи билан атрофидагилар орасини узиб қўйган Хоразмшоҳга хилоф ўлароқ, одамлар билан алоқаси яхши бўлганини топасиз. Лекин муаммо нимада эди? Келинг, Ибн Касирнинг у кишини қандай васфлаганига бир назар солайлик: «У фозил ва хуш бичим инсон бўлиб, виждонли, саҳиҳ ақидада эди. Адолат қилиш, очик қўллик, уламолар ва халққа икром борасида отаси Мустансир Биллаҳ изидан борган, салафларга эргашган сунний мусулмон эди».⁴³⁹

Ибн Касир раҳимаҳуллоҳ салафларга эргашган сунний эди, деганида нимани қасд қилганини билмайман, дейди Сиржоний.⁴⁴⁰ Наҳотки, салафи солиҳ мазҳабида Оллоҳ йўлидаги жиҳод-у, жангга ҳозирлик кўриш йўқ бўлса?!

⁴³⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/366).

⁴³⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/365–366).

⁴⁴⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (133-бет).

Салафлар мазхабида ер юзидаги шарт-шароитлар ва оламдаги кувватлар мувозанатини ўрганиш, мусулмонларни ҳимоя қилиш ҳамда уларнинг қасосини олиб бериш йўқми?!

Салаф мазхабида бирдамлик, қалбларнинг улфатлиги ва ўзаро ҳамкорлик наҳот бўлмаса?! Ваҳоланки, ўша вақтлар Ироқнинг ёнгинаси Форс, Озарбайжон, Афғонистон, Покистон ва бошқа Ислом диёрларида мусулмонларнинг қонлари-ю обрўлари тўкилиб, оёқ ости бўлган эди.

Маълумотларга таяниб айтамикки, халифа Мустаъсим Биллаҳ шахс сифатида яхши инсон эди, лекин мусулмон ҳоким беъътибор бўлиши мумкин бўлмаган ишлар — бошқарув, мустақиллик ва душманлар устидан ғолиб бўлишга умид ва эътибор, ер юзига Оллоҳ таолонинг динини ёйиш, муносиб вақтда жангга кириш ва жанг қилиш қарорини белгиловчи шижоатга ҳафсаласизлик қилди. У сафларни ва қалбларни бирлаштириш, бўлинишнинг олдини олиш, ягона Ислом байроғини баланд кўтариш имконига эга бўлмади. Ҳатто ўзига содиқ кишиларни ҳам танлай олмаганидан мамлакат ўғри вазирлар, золим зобитлар ва ожиз аскарлар ҳамда ёмон маслаҳатчи-ю, ёрдамчиларга тўлиб кетди. Ҳамма томонни фасод босиб, давлат мулкани ўмариш, порахўрлик, таниш-билишчилик учига чикди. Ўйин-кулгу, фасод, ахлоқсизлигу, бузуклик кенг тарқалиш баробарида очикчасига баралла айтилиш даражасига етди. Бу Ислом диёрида раққосалар ва масхарабозлар халойиқ олдида ўзларига ошқора эълон қила оларди (яъни, реклама қила оларди). Халифа намозхон, рўза тутувчи, закот берувчи, фақирлар ва олимларга муҳаббатли, ширинсўз эди. Бироқ бу хусусиятлар унинг ўз нафси олдидаги масъулиятидир. Жамият ва уммат олдидаги масъулияти қаерда қолди? Дарҳақиқат, у халқнинг масъулиятини кўтаришга тамоман ожизлик қилди. Халифа ўша пайтлар пиёда ва ўқчи аскарлардан ташқари, 120 минг суворий ҳозирлашга қодир эди. Лекин халифа ич-ичидан мағлуб бўлганидан қарши туриш деган кўтаринки руҳдан бебаҳра эди. У халқини Оллоҳ йўлида курашиш, ҳимояланиш руҳида тарбия қилмади, уларга аскарний билимлар, сувда сузиш, камондан ўк отиш, чавондозлик кабиларни таълим бермади. Мўғул-татарлар замонида уммат ўғлонларини мўғулларга қарши курашга тайёрловчи ҳарбий лагерлар йўқ эди. Уммат жанг ва жиҳодий ҳаётга маънан тайёр эмасди. Бинобарин, Мустаъсим Биллаҳ 16 йил (15 йил 8 ойу бир неча кун)⁴⁴¹ халифа бўлган, бу муддат давлатни ислоҳ қилиш, жангга тайёргарлик кўриш, Ислом давлатнинг ҳайбати ва шаънини юксалтириш, қўшин ҳозирлаш учун етарли вақт эди. Буларнинг урдасидан чиқа олмаслигига кўзи етган заҳоти, ҳеч бўлмаганда бунга

⁴⁴¹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/366).

қодир бўлган бошқа бирига ўрнини бўшатмоғи лозим эди. Ваҳоланки, халифалик оила ёки қабила масъулияти эмас, инсонлар учун чиқарилган энг яхши буюк уммат масъулияти эди. Аммо халифа уни ҳам, буни ҳам қилмади. Бу мўғуллар бостириб келган вақтдаги хилофат ва халифанинг аҳволи эди.

Бағдод ҳукуматининг аҳволи

Халифанинг ҳамтавоқлари бўлмиш ҳукумат ундан зиғирча ҳам фарқ қилмас, хилофатнинг армияси каби руҳан тушкун ва заиф бир ҳолатда эди. Вазирларнинг бутун дарди хаёли дунё жамғариш, бойлик, ўз ҳокимиятларини кенгайтириш, халқни кул қилиш, бир-бирлари билан шон-шарафда мусобақалашиб, қаср ёки мансаб ёхуд бир жория талашиб ўзаро курашишдан иборат эди. Бу вазирларнинг каттаси юртини ва халқини сотган, уммат душманини ўзига дўст тутган, умматга адоват захрини сочган хоин вазир Муаййиддин эди. Бу вазир мусулмонларнинг бошига битган бало бўлиб, унинг халқ билан алоқаси биродарлик эмас, хўжайин ва кул муносабати каби эди. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Бағдод халқининг аҳволи

Бағдод халқининг аҳволига келсак, халқ бу халифадан жафо чекувчи эмасди. Зеро, бошлиқ халқ ичидан чиққани учун уларга жуда мос эди. Ўша вақтлар Бағдод ер юзидаги энг катта шаҳарлардан бири бўлиб, аҳолиси камида уч миллионни ташкил қаларди. Дарҳақиқат, Бағдод халқи тўкин-сочин, тинч ва фаровон ҳаётга мослашган эди. Халқнинг бироз бинойилари назарий билим олиш, намозларни жамоат билан масжидларда ўқиш, Куръон тиловатигагина кифояланиб, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам Исломнинг энг баланд чўққиси эканини хабар берган ва уни умматига фарз қилган Оллоҳ йўлидаги жиҳодни унутган эдилар. Аҳолининг қолганлари ва аксар қисми эса, шахват ва лаззатларга бурканган, таомлар ва либосларнинг турли-туманларини ейиш ва кийиш, жория ва қуллар, дала ҳовлилар, боғ-роғлар, отуловларни кўпайтириш борасида мусобақалашар эдилар.

Шунингдек, уларнинг ичида Куръон ва ҳадисни кўйиб, куй ва мусиқа тингловчилари, ҳаром ичимлик ичувчилари, ўғрилиқни касб қилганлари-ю, золимлари бор эди. Бу ҳам етмагандай, Афғонистон, Ўзбекистон, Туркменистон, Форс, Озарбайжон, Чеченистон ва бошқа Ислом ўлкаларидаги биродарларининг ваҳшиёна қирғини, муслималарнинг кул қилингани, мусулмон гўдакларнинг ўлдирилгани-

ю ўғирлангани, муслима қизларнинг зўрлангани, мол-дунёлари таланиб, диёрлари вайрон этилгани, Оллоҳнинг уйи бўлмиш масжидлар ёқилганини эшитиб, улардан бирортаси ҳаракат қилмаган эди. Ҳатто халифа Носир Лидийниллаҳнинг Хоразмшоҳларга қарши мўғуллар билан иттифоқ тузишга бел боғлаганини эшитганларида ҳам, бепарволик билан эшитишдан нарига ўтмаган эдилар. Қилмиш-қидирмиш деганларидек, жазо ҳам амалнинг жинсида бўлиши тайин. Бир кун келадики, унда мўғуллар Бағдод халқининг бошига ҳам ўша қора кунларни солади, улар вақтида биродарларига ёрдам қўлини чўзмаганларидек, уларнинг аҳволини эшитган бошқа мусулмонлар ҳам томоша қилишдан бошқа чора кўрмайдилар. Улар Хоразмшоҳларга қарши мўғулларга ёрдам берганидек, мусулмонлар ҳам уларнинг зарарига мўғуллар билан ҳамкорлик қиладилар. Жумладан, Сурия, Форс ва Туркия амирлари Ироқнинг ишғолида мўғулларга ёрдам беради. Мана шундай, тақдир чархпалак мисоли айланиб туради.

Уламолар, риждоллар, билаги кучга тўлган уммат ўғлонлари-ю, мужоҳидлар қани? Маъруфга буюриб, мункардан қайтарувчилар қаерда қолди? Бундай бузук жамиятнинг ислоҳчилари қаерга кетди? Дин асллари ва шариат мақсадларининг соғлом тушунчаси қани? Наҳот, Бағдодда ҳақ йўлда юрувчи бирор киши қолмаган бўлса?!

Бағдод қамали

656 йил 12 муҳаррам/1258 йил 26 январь⁴⁴² куни буюк шаҳар Бағдоднинг шарқий девори қаршисида тўсатдан Ҳулагу бошлиқ мўғул лашқари пайдо бўлди ва шаҳарни қамал қилишга киришди. Айни вақтда чап қанотдан Китбуга нўён шаҳарни жануб томонидан қамалга ўтди. Бағдод ўраб олинди, шаҳар атрофига манжаниқ ва бошқа ўқотар мосламалар ўрнатилди.⁴⁴³ Оллоҳ таолонинг қадарини тўсиб қолувчи бирор нарса йўқ, «**Оллоҳнинг (ўлим учун белгилаб қўйган) муддати келган вақтида асло ортга сурилмас**».⁴⁴⁴

⁴⁴² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/356–357), Сиржоний «Қиссатут-татар» (138-бет). Қамалнинг қайси куни бошлангани борасида тарихчилар ихтилоф қилганлар, жумладан: Рашидуддин 656 йил 11, Ибнул Фути 12, Заҳабий 14, Туси, Абул Фароҳ ва Ибн Тиктика 15 муҳаррамда ва ниҳоят, доктор Саййод ва Саллабий сешанба 22 муҳаррамда бошланганини айтадилар.

⁴⁴³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/356–357), Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 281-бет).

⁴⁴⁴ Нух: 4.

«Аниқки, то бирон қавм ўзларини ўзгартирмагунларича Оллох уларнинг аҳволини ўзгартирмас. Қачон Оллох бирон қавмга ёмонлик — бало юборишни ирода қилса, бас, уни қайтариб бўлмас. Ва улар учун Ундан ўзга ҳоким йўқдир».⁴⁴⁵

Ҳаёжондан довдираган халифа зудлик билан хоин вазир Муаййиддин ибн Алқамий бошчилигидаги катта маслаҳатчиларини тўплади. Сотқин вазир Муаййиддин ибн Алқамий мўғулларни тинчлантириш ва тинчлик йўли билан музокара қилишни таклиф қилди. У бу ўриндаги ягона ечим бирор-бир шартларсиз омонлик сўраш, деди. Бирок, бу умматда яхшилик тамоман йўқ бўлмайди, вазирлардан Мужоҳиддин Ойбек ва Сулаймоншоҳлар фақат курашиш керак, деган фикрни ёқлаб чиқишди. Бу калима Аббосийларнинг бу авлодлари учун биринчи бор эшитилган янги сўз эди гўё. Жиҳодга чакириқ жуда кеч бўлган, тайёргарлик вақти-ю, қўшинни оёққа тургизиш замони қўлдан бой берилган эди. Халифа гўё икки ўт орасида: бир томондан сотқин халифанинг таклифи, иккинчи томондан Довутдор Соғийр Мужоҳиддин Ойбек ва Сулаймоншоҳларнинг даъватлари орасида қолган эди.

Халифа мўғуллар ўз тарихида ҳеч қачон омонлик бермаганини билар, шунингдек, ота-боболаридан «ҳақ-ҳуқуқлар берилмайди, балки олинади», қабилидаги сўзларни эшитган эди. Заиф ва тарадудли халифанинг боши қотди, бинобарин, бу ҳолатда жанг қилишдан фойда ҳам оз эди. Чунки жанг таваккал қарор эмас, мужоҳидлар ҳам тўсатдан пайдо бўлиб қолмайди, шунингдек, жанг тажриба усули ҳам эмас. Жиҳод — иймоний, моддий, маънавий, жисмоний ва бошқа жиҳатлардан тайёргарлик кўриш, тарбия олиш, жонни фидо қилиш, юксакликка то Исломнинг чўққисигача кўтарилишдир.

Халифа умрида биринчи марта қўшинни жангга ҳозирлашга киришди. Аббосийлар армиясининг бу авлоди илк бор жангга отланган ва биринчи карра ҳарбий амалиётга жалб қилинган эди. Ҳолбуки, улар аскарий амалиётлардан озод қилиниб, шаҳар ободончилиги, саноат, қурилиш, чорва ва деҳқончилик ишларига бурилган эди. Хилофат армиясидан Довутдор бошлиқ заиф бир қўшин Ҳулагунинг улкан ва қувватли лашкарини қарши олишга чиқди. Хилофат армиясининг сони 10 мингдан ошмас,⁴⁴⁶ аксарият аскарлар шаҳар ва дала ишларига жалб

⁴⁴⁵ Раъд: 11.

⁴⁴⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/357). Хилофатнинг аскар сони ҳақида тарихчиларнинг ихтилофи бор: Бенакети 30, Жузжоний 20 минг бўлганини айтади. Рашидуддин эса, мўғул қиличидан ўлган хилофат аскарларининг сонини 12 минг

қилинган эди. Шунчалар хор ҳолатга тушганларидан, ҳатто бозорлар ва масжидлар дарвозалари олдида тиланчилик қилиш даражасига етган эди. Буларнинг барчаси бош вазир Муаййиддин ибн Алқамийнинг ташаббуси билан бўлган эди.⁴⁴⁷ Бунга сабаб бир йил олдин, яъни 655 йил⁴⁴⁸ Бағдодда суннийлар билан рофизийлар ўртасида катта фитна чиқиб, рофизийларнинг жойи бўлган Карх вайрон қилинган ва вазирнинг яқинлари ҳам бу уруш қурбони бўлган эди. Чунончи, вазир рофизийлардан эди. Бағдод шахри бунёд бўлгандан буён бунчалар хунук ходисага гувоҳ бўлмаган эди. Шу воқеадан сўнг мўғуллар ҳузурига биринчи бўлиб борган киши вазир Муаййиддин ибн Алқамий эди, деб ёзади Ибн Касир раҳимахуллоҳ.⁴⁴⁹

Бу мусулмон аскар Бағдод кўрғонларидан чиқиб, шарққа Ҳулагу лашкари томон йўналди. Шу дамда кўмондон Довутдор Мужоҳиддин шимол томондан Байжунинг лашкар тортиб келаётганини эшитиб, Бағдод ҳамма томондан қамал қилинмасин, деган фикрни олға суриб Ҳулагуни қўйиб, Байжу томонга отланди. Чунки Байжу Бағдоднинг шимол ва ғарб томонини қамал қилса, шаҳар барча томондан душман қуршовида қолиши аниқ эди. Довутдор лашкари Байжу бошлиқ мўғул лашкари билан бундан 600 йилдан олдинроқ буюк қаҳрамон Холид ибн Валид разияллоху анҳу томонидан эришилган улкан ғалабага гувоҳ бўлган Анбар минтақасида юзма-юз келдилар. Лекин минг афсус, бу гал Холид ҳам, унинг қўшини ҳам йўқ! Довутдор Соғийр бошлиқ хилофатнинг қўшини билан Байжунинг лашкари ашуро куни тўкнаш келди.⁴⁵⁰ Мусулмон лашкари Анбар ерларига секин-аста кириб борар ва у ерда ер билан яқсон қилинар эди. Бу орада Ҳулагу 200 минг⁴⁵¹ мўғул лашкари билан Бағдоднинг шарқий қисмига равона бўлди. Мурасасиз давом этган жангда Довутдор Соғийр озгина қўшини билан Бағдодга қочиб қолишга мушарраф бўлган, лашкарнинг катта қисми жанг майдонида қурбон бўлган эди.⁴⁵² Бу аянчли жанг муҳаррам ойининг 19

ўларок зикр қилади. Бундан аскар сонининг 12 мингдан кўпроқ бўлганини тахмин қилишимиз ҳам мумкин.

⁴⁴⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/357–358).

⁴⁴⁸ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 337-бет).

⁴⁴⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/358).

⁴⁵⁰ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 338-бет).

⁴⁵¹ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 338-бет).

⁴⁵² Рашид-ад-Дин «Сборник летописей» (3/43).

куни,⁴⁵³ яъни Ҳулагу Бағдод деворларининг шарқий тарафида пайдо бўлганидан бир ҳафта кейин содир бўлган эди.

Мўғуллар билан Аббосийлар хилофати ўртасидаги музокаралар

Байжу вақтни бой бермай, дархол Анбар ерларидан тўғри Бағдоднинг шимолига отланди ва уни қамал қилди. Бағдод йиртқич учлик: Ҳулагу, Байжу ва Китбугалар қуршовида қолди. Фурсатдан фойдаланган хоин вазир Муаййиддин халифага: «Энди мўғуллар билан музокарага киришмасак бўлмайди», деди. Халифа кучли билан заиф ўртасида музокара эмас, бўйсинишдан бошқа нарса бўлмаслиги-ю, бош эгиб турган киши шарт қўйиш у ёқда турсин, эътироз ҳам билдира олмаслигини яхши билгани ҳолда таслим бўлишни мувофиқ кўрди, яъни музокарага кўнди.

Халифа Ҳулагу ҳузурига қалби Аббосийлар хилофатига нисбатан нафрат, ғазаб ва ҳасадга тўла вазир Муаййиддин ибн Алқамий Шиъий бошчилигидаги расмий делегацияни йўллади. Унга насроний патриарх Макикани (Макаха) шерик қилиб жўнатди.⁴⁵⁴ Бутун бошли Ислом хилофатидан шартнома тузишга борган делегация икки кишидан иборат бўлиб, уларнинг бири шиъ тоифасидан бўлса, иккинчиси эса насроний эди!

Ҳулагу билан хилофатнинг икки кишидан иборат делегацияси ўртасидаги музокара жуда тез якунланди. Ҳулагу уларга катта ваъдалар берди, бу ваъда Бағдод ишғол қилингандан сўнг бошқарув уларга топширилиши эди. Шарт ҳам битта, хилофатни ағдаришда бор имкониятларини ишга солиб, ёрдамчи бўлиш. У иккиси Ҳулагудан халифага бир неча мўғул шартлари ва ваъдаларини олиб келишди:

➤ Икки давлат ўртасидаги урушга нукта қўйиш ва тинчлик алоқаларини ўрнатиш.

➤ Юз минглаб мусулмонлар қонини тўккан мўғул хокони Ҳулагунинг қизи халифанинг ўғли амир Абу Бакрга никоҳланиши.

⁴⁵³ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 338-бет).

⁴⁵⁴ Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 286, 287-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (61, 62-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (142-бет).

➤ Рум ҳокими ўз мансабида қолдирилганидай, Мустаъсим Биллаҳнинг бошқарув курсида қолдирилиши. Бу эса, у учун энг асосий нарсалардан бири эди.

➤ Агар шаҳар дарвозаларини очиб берсалар, бутун Бағдод аҳлига омонлик бериши.⁴⁵⁵

Аммо шартларга келсак, уларнинг энг муҳимлари қуйидагилар эди:

Биринчи шарт: Бағдодда эълон қилинган жиҳодга чек қўйиш. Чунки жиҳод даъвати барча «тинчлик музокара»ларини барбод қилиши турган гап эди. Шунинг учун халифа жиҳодга даъват қилиб турган икки бошлик Довутдор ва Сулаймоншоҳларни Хулагуга таслим қилиши керак эди.⁴⁵⁶

Иккинчи шарт: Ироқ кўрғонларини бузиш, хандақларни тўлғазиш ва қуролларни топшириш.

Учинчи шарт: Бағдод бошқаруви мўғуллар раҳнамолиги остида бўлиши.⁴⁵⁷

Хуллас, икки элчи ўз шаҳрига адолат, ҳуррият ва омонлик ваъдаларини олиб қайтди. Агар халифа юкоридаги шартларга рози бўлса, мўғуллар Ироқда ўз дастурларини қолдириб, юртни уларга топшириши ва ўзлари Мўғулистонга қайтишларини айтишди.

Муаййиддин ибн Алқамий халифага, бу музокаралар жуда қоникарли, шартлар ҳам енгил, мўғуллар ваъда ва аҳдларига вафодор, Хулагу ҳам ажойиб инсон, деди. Халифа хатарли ўринда турар, бир томондан шартлар ўта қаттиқ бўлганидан тараддудланиб, уларни қабул қилишга ботина олмаса, иккинчи томондан вазирлари Хулагуга итоат қилмасангиз, яшашдан умидингизни узаверинг, деб тинимсиз уни кўндиришга ҳаракат қилардилар. Бунинг оқибатида кўнгли хотиржам бўлмасада, бунга рози бўлишга мажбур эканини ҳис қиларди. Халифа иккиланса-да, хор ва тубан ҳаётда яшашни, барча нарсани арзимаган қийматга сотишни фикр қилади.

Бағдод халқи ҳам тараддудда эди, зеро, жиҳод қилиш нидоси жуда кам оғизлардангина чиққан, омма инсонлар қалбини шаҳарни қуршаб олган мўғуллардан бўлган кўркув эгаллаган ва дунё ўта ширин кўринган эди. Ўша кунларда Бағдодда чиркинликлар жуда кўпайган эди.

⁴⁵⁵ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 337-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (144-бет).

⁴⁵⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/357), Рашид-ад-Дин «Сборник Летописей» (3/42).

⁴⁵⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (144-бет).

Маълумингизким, чиркинлик-нопок ишлар қанча кўпайса, ҳалокат ҳам шунча яқин бўлади.

Бағдоднинг ўққа тутилиши

Халифа ўйлаб кўришга озгина вақт истади, бироқ Хулағунинг вақти йўқ эди. Зеро, улкан кўшин учун ҳар кун жуда катта харажат кетиши турган гап. Устига-устак камал кунлари 656 йил муҳаррам ойи/1258 йил январ-феврал ойига — қахратон қиш, аччиқ совуқ кунларга тўғри келган эди. Хулагу узоқ вақт кутмади, тош ва ўтдан бўлган замбарак ўқлари билан бомбардимонни бошлаб юборди. 656 йил 22 муҳаррам/1258 йил 5 феврал сешанба куни шаҳар девори дарз кетиб, мўғул аскарларидан кўпи шаҳарга кирди.⁴⁵⁸ Биринчи замбарак ўқи тушиши билан халифанинг юраги ёрилаёзди.

Бомбардимон тўрт кун давом этди. Ибн Касир «*ал-Бидая-ту ван-Ниҳоя*» китобида бу воқеани қисқача зикр қилади: «Мўғул-татарлар халифа қасрини қуршаб, уни ҳар томондан ўққа тутди, ҳатто халифа хузурида рақсга тушиб, уни хушнуд айлаётган Арафа исмли маъшуқаларидан бири бўлган канизакка деразадан кирган дайди ўқ тегди ва канизак унинг кўз ўнгида жон берди. Халифа бунинг натижаси ўлароқ хавотирланиб, каттиқ саросимага тушди. Жорияга теккан ўқни келтиришди, унда: «Агар Оллоҳ таоло қазои қадарини амалга оширишни истаса, ақл эгаларининг ақларини кетказади», маъносидаги бир неча сатрлар битилган мактуб бор эди. Шунда халифа огоҳликни кучайтириб, ўз қасрининг ҳимоясини орттиришга амр қилди».⁴⁵⁹

Бундан кўринадики, ўша вақтлар Бағдоддаги инсонларнинг, айниқса, халифанинг қалбига дунё ўрнашган эди. Ислом умматини ҳимоя қилиш вазифаси юкланган халифа, бундай хатарли ўринда беҳуда ишлар билан банд эди.

Тўғри, канизак унинг қўл остидаги мулки, яъни у учун ҳалол эди, лекин Ислом хилофатининг пойтахти камал қилинган, биров муддатдан сўнг ўлимга юз тутиш аниқ бўлган, мўғуллар бор кучи билан тошбўрон қилаётган, оловли ўқ таъсирида шаҳарга ўт кетган, инсонлар ўта танг ҳолатда бўлган бир вақтда халифа раққосалар билан кўнгилхушлик қиладими? Ҳикмат ва ақл қани? Жориялар рақси худди еб-ичиш каби уруш вақтида ҳам тарк қилинмайдиган даражада қон-қонга сингиб кетган эдими? Халифа шаҳри, халқи, ҳатто ўзи ҳам шундай қаттиқ

⁴⁵⁸ Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 261-бет), Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 286-бет).

⁴⁵⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/356–357).

кийинчилик ҳолатида турганда, рақс томоша қилиш сингари ишлар билан машғул бўлишни қандай ўзига эп билди?

Мўғуллар халифага ўқ билан йўллаган мактубдаги «Агар Оллох таоло қазои қадарини амалга оширишни истаса, ақл эгаларининг ақллари кетказди», жумласи Оллох таоло Бағдоднинг ҳалокатини тақдир қилди ҳамда халифанинг, унинг аъёнлари ва халқининг ақлини кетказди, дегани эди. Бу иборалар ҳам, мўғуллар уста бўлиб кетган маънавий урушнинг бир кўриниши эди. Бу фожиа, яъни канизакнинг ўлдирилишидан сўнг халифа халқни жангга ҳозирламасдан, фақатгина ўз қасрининг ҳимоясини кучайтиришга амр этганининг ўзи унинг фикрининг қосирлигига кифоя қиладиган далилдор.

Бомбардимон 656 йил 1 сафардан 4 сафаргача давом этди ва тўртинчи куни Бағдоднинг шарқий девори кулади...

Халифанинг хўрланиши

Шаҳарнинг шарқий деворининг қулаши хилофатнинг ағдарилгани ва халифанинг озгина муддат умри қолганидан далолат эди. Вазир Муаййиддин ибн Алқамий Ҳулағунинг қаршисига чиқди. Халифа ҳузуридан чиққан элчи Ҳулағунинг йўлига пешвоз чиқиб, халифанинг таслим бўлиши хабарини берди. Ҳулағу халифа ўзи билан вазирлари, фақиҳлари, уламолари, амирлари ва аъёнларини ҳам олиб келсин, деб буйруқ қилди. 656 йил 1 сафар/1258 йил 14 феврал пайшанба куни хилофатнинг муҳим одамлари бўлган Довутдор Соғийр билан Сулаймоншоҳлар таслим бўлишди. Шу йилнинг 2 сафар/15 феврал жума куни Довутдор Соғийр Мужоҳиддин Ойбек қатл қилинди.⁴⁶⁰

Ёлғон ваъдаларга алданган халифа 4 сафар куни 3 ўғли: Аҳмад Абул Аббос, Абдуррахмон Абул Фазл ва Муборак Абул Маноқибларни етаклаб, 3 мингдан иборат шаҳар қозилари, фақиҳлари, амирлари ва аъёнларини олиб Ҳулағунинг қаршисига чиқди.⁴⁶¹ Халифанинг мўғул хонининг айтганларини бажаришдан бошқа чораси йўқ эди. Шу сабабли Бағдоддаги қозилар, фақиҳлар, сўфилар, амирлар ва давлат катталари ҳамда аъёнлардан иборат 700 отлик вафд (делегация)ни тўплаб, Ҳулағу ўтирган чодир томон чиқди.⁴⁶² Улар қўрқувдан кўзёшлари тошқотган, томирларидаги қонлар музлаган, юраклари така пука, саросимали бир

⁴⁶⁰ Рашид-ад-Дин «Сборник Летописей» (3/43).

⁴⁶¹ Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 338-бет), Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 290, 291-бет)/Рашид-ад-Дин «Сборник Летописей» (3/44).

⁴⁶² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/358).

аҳволда чиқиб келишар эди. Ваҳоланки, халифа одатига кўра, амирлар ва подшоҳлардан иборат вафдларни қасрида, юмшоқ ўриндиғида ўтириб кутиб олар эди. Бу сафар ҳаётида биринчи марта, лекин хор ва ночор бир ҳолатда ёнига хоин вазири Муаййиддинни олиб, ўзи чиқиб борар эди. Ҳулагунинг чодирига яқинлашгач, мўғул соқчилари уларнинг баравар киришига изн бермади.⁴⁶³

Соқчилар, халифа билан фақат 17 кишигина киради, қолганларини синчиклаб текширамай, дейишди. Халифа билан бирга 17 киши Ҳулагу ҳузуруга киришди, қолганлар соқчилар айтганидек текширилмади, балки отлари ғанимат қилиниб, ўзлари битта қолдирилмай ўлдирилди.⁴⁶⁴ Уларнинг орасида Сулаймоншоҳ ҳам бор эди.⁴⁶⁵ Шу тариқа Бағдод аҳлининг олимлари, фақиҳлари, вазирлари, амирлари ва аъёнларидан иборат вафд (делегация)нинг асосий қисми дунёдан кўз юмди. Ҳулагу халифани ўзининг бир неча ғаразларида фойдаланиш мақсадида ўлдирмади ва дастлабки дақиқалардан бошлаб, унга такаббуруна ва қаҳр билан муомала қила бошлади. Унга бутун вафдининг қатл қилинганини айтди. Халифа ўшандагина мўғуллар бирон аҳдга ва ваъдага вафо қилмаслигига ишончи комил бўлди, лекин энди кеч бўлган эди. Зеро, Оллоҳ таоло кофирлар хусусида шундай марҳамат қилган: **«Улар бирон мўмин хусусида на аҳдга ва на бурчга риоя қиладилар. Улар тажовузкор кимсалардир».**⁴⁶⁶

Шунингдек, ҳақни ҳимоя қилувчи куч бўлиши лозимлиги, агар киши ҳаққини ҳимоясиз қўйса, ундан сўнг фақат ўзинигина маломат қилиши мумкинлиги халифага аён бўлди, бироқ, минг афсус, энди вақт ўтган эди.

Қонхўр Ҳулагу кескин буйруқларни бера бошлади:

Биринчи буйруқ: Халифанинг халқига қуроқларини таслим қилиши ва қаршилиқ қилмасликка буйруқ бериши. Ҳолбуки, қўлига қурол кўтарган инсоннинг ўзи қолмаган эди.

Иккинчи буйруқ: Халифанинг қўлига кишан, бўйнига занжир сиртмоқ солиб, Аббосийлар хазиналарини кўрсатиб бергунича шаҳар бўйлаб сазойи қилиш.

Учинчи буйруқ: Халифанинг икки ўғли Аҳмад ва Абдурраҳмонларни отасининг кўз ўнгида ўлдирилиши. Халифанинг 15

⁴⁶³ Саллабий «ал-Мўғул» (194-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (148–149-бетлар).

⁴⁶⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/358).

⁴⁶⁵ Рашид-ад-Дин «Сборник Летописей» (3/43).

⁴⁶⁶ Тавба: 10.

ёшли тўнғич ўгли Аҳмад Абул Аббос ва 13 ёшли ўртанчаси Абдурраҳмон Абул Фазллар қатл қилинди. Кенжа ўгли Муборак асир қилинди.⁴⁶⁷

Тўртинчи буйруқ: Халифанинг уч опа-сингли: Фотима, Ҳадича ва Марямларнинг асир қилиниши. Унинг уч опа-синглисидан ташқари халифа саройидан мингга яқин бокира қизлар асир олинди.⁴⁶⁸

Бешинчи буйруқ: Вазир Муаййиддин Бағдоддаги аҳли суннат уламолари, ҳофизи Қуръонлар ва масжид имом хатибларининг исмларини ёзиб бериши. Сўнгра уларни оила, бола-чақаси билан бирга шаҳар ташқарисига Холлал қабристони ёнига олиб чиқиб, қўй-моллар бўғизланганидек бўғизлаш, хотин ва болаларини қул қилиш ёки ўлдириш.⁴⁶⁹

Юқорида зикр қилинган суратда машҳур Ислом олими шайх Абул Фароҳ Ибн Жавзий раҳимахуллоҳнинг ўгли, халифа қасрининг устози шайх Муҳиддин Юсуф ва унинг уч ўгли: Абдурраҳмон, Абдуллоҳ ва Абдулқаримлар сўйилди.⁴⁷⁰

Халифани тарбия қилган Шайхул-шуйух Садруддин Али Найяр шу йўсинда қатл қилинди.⁴⁷¹ Ундан сўнг масжид имом хатиблари ва ҳофизи Қуръонлар сўйилди. Халифа буларга гувоҳ бўлиб турди. Халифа қанчалар дарду-алам, надомат ва кўрқувни хис қилди экан?! Агар халифа илгарироқ оқибат шундай бўлишини тасаввур қилганида, балки бутунлай бошқа йўлни тутган бўлардимиз? Лекин ўтган кунлар ортга қайтмайди, бу Оллоҳнинг қонунидир.

7 сафар/20 феврал чоршанба куни Ҳулагу аскарига Бағдоднинг шарқ ва ғарбидан омматан ҳужумга ўтишига буйруқ қилди, хандақлар кўмилиб, шаҳар деворлари бузилди ва мўғуллар шаҳарга киришди. Шаҳарни ва масжидларни вайрон қилишди.⁴⁷²

⁴⁶⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/361).

⁴⁶⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/361).

⁴⁶⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/362), Сиржоний «Қиссатут-татар» (149–150-бетлар).

⁴⁷⁰ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/361–362), Сиржоний «Қиссатут-татар» (150-бет).

⁴⁷¹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/362), Сиржоний «Қиссатут-татар» (150-бет).

⁴⁷² Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 291-бет)/ «Сборник Летописей» (3/44), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (62, 63-бет), Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (279-бет).

9 сафар/22 феврал жума куни Хулагу халифанинг қасрига кириб, халифани келтирди ва Аббосийларнинг бутун хазина ва мол-давлатини таслим қилишини талаб қилди, сўнгра уларни одамларидан бирига топширади.⁴⁷³

Сўнгра рофизий вазир бир неча ой давомида Бағдод масжидларини, ундаги жамоатлар ва жумъаларни бузишга киришди. У суннийларнинг масжид ва мадрасаларини йўқ қилиб, ўрнига рофизаларнинг бузук эътиқодини тарқатишга киришди. Лекин Оллоҳ унга изн бермади, бу ходисадан бир неча ойдан кейин унинг жонини олди. Бу ишга бел боғлаган унинг ўғли ҳам отасининг ортидан равона бўлди, Оллоҳ у иккисини дўзахнинг қаърида жамлагандир, валлоху аълам,⁴⁷⁴ дейди Ибн Касир раҳимахуллох.

Халифанинг ўлими

Халифа ва унинг 17 одами Хулағунинг хузурида, вафддан қолган кишилар ва шаҳарнинг барча олим, фақиҳ ва қорилари ўлдирилгандан кейин, мўғул аскарлари Бағдоднинг кўча-кўйларига селдек оқиб киришди. Хулагу Ислом пойтахти Бағдодни оёқ ости қилиб топташга буюрди, яъни мўғул аскарлари хаёлларига келган бузғунчилик, қатл, асир олиш, талон-тарож қилиш, зино, босқин, вайрон, ўт қўйишга буюрилди. Ҳар бир аскар билган номаъкулчилигини қилишга киришди. Йиртқич мўғул армияси бўри ўз ўлжасини бурда-бурда қилгани каби мусулмонларни тилка-пора қила бошлади... Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Буюк шаҳар Бағдоддан неқадар мужоҳидлар жангларга сафарбар бўлган эди? Бу шаҳарда қанча-қанча уламолар инсонларга динни таълим берган эди? Не-не толиби илм Бағдод сари йўлга отланган эди? Мана ҳозир Бағдодда ҳеч ким қолмади! Қани Халид ибн Валид? Қани Мусанна ибн Ҳориса? Қоъқоъ, Нўъмон, Саъд қани? Рижолларнинг ҳамияти ва ғурури қаерда қолди? Мусулмон ёшлардаги довчилик, шижоат қани? Жаннат харидорлари-ю, Оллоҳ йўлида жанг қилувчилар қани? Номуслари, аёллари, фарзандлари, мол-давлати ва ватаннинг химоячилари қаерда қолди? Афсуски, уларнинг биронтаси йўқ. Бирор қаршиликсиз шаҳар дарвозалари очиб берилди. Бағдодда бирорта рижол қолмаган, фақат уларга қайсидир жиҳатлари ўхшаганлар қолган эди, холос. Имом Абу Ҳанифа, имом Шофеъий ва Аҳмад ибн Ханбаллар шаҳри, Рошид ва Амурия фотиҳи Муътасимнинг диёри, беш асрдан буён

⁴⁷³ Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 292-бет)/ «Сборник Летописей» (3/44), Гомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (63-бет).

⁴⁷⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/362).

Ислом оламининг пойтахти бўлган Бағдод шаҳри оёқости қилинди. Мўғуллар шаҳарда ақл бовар қилмайдиган ишларни қилишди, улар кўча-кўйлар, хонадонлар, боғу-роғлар, масжид-у, мадрасаларда мусулмонларни таъқиб қилиб ўлдиришди. Мусулмонлар дуч келган жойга қочишдан бошқа чора топмадилар.

Бир мусулмон уйга беркиниб, эшикни қулфлаб маҳкамласа, мўғул аскарлари эшикни ё бузиб, ё синдириб ёки ўт қўйиб бўлса ҳам уйга кирар ва уни ўлдиради эди. Мусулмон томга чиқса, мўғул аскарлари унинг ортидан томга чиқиб, ўша ерда унинг ҳаётига зомин бўлар эди. Шу қадар кўп кон тўқилганидан тарновлардан одамзот қони ёмғир мисоли оқди, иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожиъун.⁴⁷⁵ Мўғуллар биргина эркакларни эмас, ҳатто қариялар, аёллар, бундан кўзларига чиройли кўринганлари мустасно, уларни асир қилишарди, болалар ва чақалокларни ҳам ўлдиради эдилар.

Бир бадбахт мўғул аскарлари йўл ёқасида оналари қатл қилинган 40та чақалокқа дуч келади ва уларга «онасиз оч қолмасин, дея раҳм қилганидан» ҳаммасини ўлдиради.⁴⁷⁶ Дарҳақиқат, мўғулларнинг қалблари тошдек, ҳатто ундан-да қаттиқроқ бўлиб кетган эди. Мусулмонлар тинимсиз ўлдирилганидан, кун сайин шаҳарда ўликлар сони ортганидан ортди. Мусулмонларнинг қалбларига мўғуллар енгилмайди, жароҳатланмайди, қолаверса ўлмайди ҳам деган тушунча даҳшатли кўрқувни олиб кирган, бунинг натижаси ўлароқ мўғул босқинчиларига номига бўлсада, қаршилик қилинмаган эди. Буларнинг барчаси халифанинг тириклигида амалга оширилди ва халифа бу ходисаларни кўзлари билан кўриб турди. Бу ваҳшийликларнинг қаршисида турган халифанинг қалб кечинмалари, алами ва ҳасратини бир тасаввур қилинг-а! Халифа от ёки эшак сингари буюк шаҳар бўйлаб етаклаб юрилди, унинг ёнида сотқин вазир Муаййиддин ибн Алқамий ва Насируддин Тусийлар мўғул аскарларига олтин, қумуш ва дуру-гавҳарлар жойларини кўрсатиб борарди.⁴⁷⁷

«Қани, мана шу (кундан) илгари ўлиб кетсам-у, бутунлай унутилиб кетсам эди».⁴⁷⁸

⁴⁷⁵ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/359, 360).

⁴⁷⁶ Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 265-бет), Сирожний «Қиссатут-татар» (153-бет).

⁴⁷⁷ Маҳмуд Шоқир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 338-бет).

⁴⁷⁸ Марям: 23.

«Менга мол-дунёйим асқотмади-я! Мулку салтанатим ҳам халок бўлиб кетди-я!»⁴⁷⁹

«Токи қачон улардан бирига ўлим келганида: «Парвардигор, мени (яна ҳаётга) қайтаринглар. Шояд, мен қолган умримда яхши амал қилсам», деб қолур. Йўқ! (У асло ҳаётга қайтарилмас). Дарҳақиқат, бу (ҳар бир жон бераётган) айтадиган сўздир. Уларнинг ортида то қайта тириладиган кунларигача (дунёга қайтишларидан тўсиб турадиган) бир тўсиқ бўлур».⁴⁸⁰

Шу каби рухий кечинмалар халифанинг қалбига найза мисоли қадалган бўлса ажабмас. Бу хорлик ва зорликнинг сабаби аниқ.

Абдуллоҳ ибн Умар разияллоху анхумодан ривоят қилинади: «Мен Расулуллоҳ соллаллоху алайҳи ва салламнинг: *«Агар ийна (рибо тури) билан савдо-сотик қилсангиз, сизирларнинг думини тутсангиз ва фақат экин-тикин билан машгул бўлиб, жиҳодни тарк қилсангиз, Оллоҳ таоло сизларга хорликни келтириб қўяди ва то динингизга қайтмагунларингизча, уни устингиздан кўтармайди», деганларини эшитганман, деди».*⁴⁸¹

Бағдод халқи зироъат, тижорат, саноат, қолаверса, илм ва таълим ишларини ўз йўлига қўйган, бироқ Оллоҳ йўлидаги жиҳодни тарк қилган эдилар, натижада уларнинг устига хорлик туширилди.

Ҳулагу Бағдодга кириб, халифанинг қасрига борди, унга кириб, халифани олиб келишларига амр қилди. У бу кунни байрам қилишни қасд қилди ва халифага: «Биз меҳмонмиз ва сен мезбонсан, шундай экан, меҳмоннинг ҳурматини жойига қўйиб, зиёфат қилиш сенга вожиб», деди. Халифа буни тасдиқлади. Уни даҳшат тутиб каттиқ кўрққанидан эс-ҳушидан ажралишига оз қолган, ҳатто хазиналарнинг калитларини қаерга қўйганини билолмаслик даражасига етган эди. Шунда у хазина кулфларини бузишга буйруқ қилди ва икки минг кийим-бош, ўн минг динор, қимматбоҳо буюм ва бир қанча жавоҳирларни чиқариб, Ҳулагуга тақдим қилди. Бироқ Ҳулагу уларга қайрилиб қарамади ва аскарларига тақсимлаб юборди. У «Булар аскарларнинг ҳаққи эди, энди менга ер остига кўмилган бойликларни кўрсат», деди. Халифа сарой ўртасида ховузга кўмилган олтинлар борлигини эътироф қилди, ишора қилинган жой кавланди, ажабо, ҳақиқатан у ерда бир ховуз тўла ҳар бир бўлаги

⁴⁷⁹ Ал-Ҳакко: 28–29.

⁴⁸⁰ Муъминун: 99–100.

⁴⁸¹ Абу Довуд (3462), Ахмад (4987) ривоятлари, Албоний «Ас-силсилатус-саҳиха»да (11) саҳих санаган.

100 мисколдан бўлган соф олтинлар бор эди.⁴⁸² Сўнгра Хулагу халифанинг қасрини тинтув қилишга буюрди, унда 700 аёл ва канизаклар ҳамда 1000 та хизматчи бор эди.⁴⁸³

Халифа Мустаъсим Биллаҳ Аббосийлар хазиначарини кўрсатиб бўлгандан сўнг, охириги манзил сари ҳайдаб борилди. Хулагу халифага ўта ёмон муомала қилди, дастлаб уни таомдан маҳрум қилди. Халифа қаттиқ очликни ҳис этгандан сўнг, таом сўраб ёлворди, шунда Хулагу бир тавоқ тиллани унинг қаршисига қўйиб:

— Ол, е! – деди. Халифа бунга жавобан:

— Тиллани ҳам еб бўлармикан? – деди.

— Тиллани еб бўлмаслигини биларкансан, нимага уни аскарларингга тақсимламасдан жамғариб юрибсан. Уларни аскарларингга бериб, мерос бўлиб ўтган мулкнинг душманлардан химоя қилдирсанг бўлмасмиди? Мана бу темир дарвозалардан ўқ ясаиб, мени Жайхун дарёсидан ўтишимга тўсқинлик қилсанг бўлмасмиди? – деди. Шунда халифа:

— Оллоҳнинг тақдири шундай бўлиши керак экан-да, – деди. Ундан бу жавобни эшитган Хулагу:

— Бундан кейин бошингга тушадиган нарсалар ҳам Оллоҳнинг тақдири экан-да, бўлмасам, – деди.⁴⁸⁴

Бошқа бир ривоятда, Хулагу халифага юқоридаги саволларни кўндаланг қилганида, халифа жавоб бермасдан сукут сақлашни лозим кўрганлиги баён қилинади.⁴⁸⁵

Мўғуллар халифанинг қони ерга тўкилмасин, дея уни бир қопнинг ичига солишди, сўнгра Хулагу халифани тепкилаб ўлдиришга буюрди.⁴⁸⁶ Валлоху аълам. Иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожиъун.

⁴⁸² Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 265-бет), «Тарих мухтасар ад-дувал» (271-бет), Абул Фарож (2/569), Рашид-ад-Дин «Сборник летописей» (3/44).

⁴⁸³ «Тарих мухтасар ад-дувал» (271-бет), (Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 266–265-бет), Рашид-ад-Дин «Сборник летописей» (3/44).

⁴⁸⁴ Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 267-бет).

⁴⁸⁵ Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 267-бет).

⁴⁸⁶ Ибн Касир «ал-Бидаятун ван-Ниҳоя» (17/359). Ибн Касир раҳимахуллох халифанинг осиб (бўғиб) ёки чўктириб ўлдирганини ҳам накл қилганлар бор, деб айтиб ўтган. «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 268-бет), «Мухтасар фи ахбарил башар» (3/203).

Подшоҳ ва амирларни бу тарзда ўлдириш мўғулларнинг одати эди. Улар ғолибан подшоҳ ва амирларнинг қонини тўкмасдан ўлдирар эдилар.⁴⁸⁷

Бу ходиса 656 йил 14 сафар/1258 йил 27 феврал чоршанба куни рўй берди.⁴⁸⁸ Ўшанда халифа 47 ёшда⁴⁸⁹ бўлиб, халифалик даври 15 йилу 8 ой давом этган эди.⁴⁹⁰ Сўнгра мўғуллар одатига мувофиқ уни номалум ерга дафн қилишди.⁴⁹¹ Халифа билан бирга унинг икки ўғли ўлдирилган⁴⁹², учинчи ўғли учта опа-синглиси билан бирга асир қилинган эди⁴⁹³.

Фақат Бағдод эмас, у билан бирга Бани Аббос халифаларининг охиргиси ҳамда шаҳар халқи маҳв этилди. Бу воқеа Бағдод дарвозалари очилганининг 10-куни содир бўлган эди. Фожиа биргина халифанинг ўлдирилишига чекланмади, Хулагу ўз қўшинига Бағдодда қатлиом амалиётини давом эттиришга амр қилди. Қирғин 5 ёки 10 кун эмас, 40 кун узлуксиз давом этди.⁴⁹⁴ Бунда сон минглаб, миллионлаб мусулмон эркаклар, аёллар, болалар ва гўдаклар қатл қилинди. Тарихчилар ривоятида, Бағдод шаҳрида ўлдирилганлар сонининг ўртача миқдори 800 мингдир.⁴⁹⁵ 2300000 (икки миллион уч юз минг), 1800000 (бир миллион саккиз юз минг)га етган деган тарихчилар ҳам бор.⁴⁹⁶

Бағдодда фақат санокли насронийларгина тирик қолган эди. Мана шундай кулфатдан сўнг мусулмонлар қандай оёққа турганига, иншаоллоҳ ҳали шохид бўламиз. Ўша вақтлар мусулмонлар бундай катта мусибатдан ўзларини ўнглаб олган бўлсалар, Оллохнинг мадади билан ҳозирда биз ҳам устимизга ўзининг қора соясини солиб турган булут мисоли мусибатлардан чиқа оламиз.

⁴⁸⁷ Аҳмад Абдулвахҳоб Нувайрий «Ниҳаятул араби фи фунунил адаб» (269-бет).

⁴⁸⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/361, 364, 365, 366), Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 270-бет), Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 294, 295-бет)/ «Сборник летописей» (3/45).

⁴⁸⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/364, 365). 46 ёш, 4 ой (17/361, 366).

⁴⁹⁰ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/361, 366).

⁴⁹¹ Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 270-бет).

⁴⁹² Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 294, 295-бет)/ «Сборник летописей» (3/45).

⁴⁹³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/366).

⁴⁹⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/361), Сиржоний «Қиссатут-татар» (157-бет). Қатлиом 34, 30 кун давом этганини айтган тарихчилар ҳам бор.

⁴⁹⁵ Заҳабий «Ислому давлатлари» (2/123), Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 265-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (196-бет).

⁴⁹⁶ Аҳмад Ўздемир «Мўғул истилоси» (281-бет).

Бағдод кутубхонасининг оқибати

Мўғул қўшинининг бир қисми мусулмонларни ўлдириш билан овора бўлган бир пайтда қўшиннинг бошқа бир бўлаги юртдаги тамаддун ва маърифат манбаларини йўқотиш билан банд бўлди. Зеро, мўғуллар ўзлари билан мусулмонлар орасидаги илм-маърифат ва маданиятда осмон билан ерчалик фарқ борлигини кўриб, нафратлари-ю, адоватлари кўксиларига сиғмай кетаёзган эди. Дарҳақиқат, мусулмонлар илм-маърифат, маданият ва ахлоқда мукаммал асос ва узун тарихга эга, диний ва дунёвий илмлар борасида ўн мингларча мўътабар олимлари бор эди. Шу билан бир қаторда, бу олимлар Ислом тамаддунига доир миллионлаб китоблар тасниф этганлар. Мўғуллар эса, маданиятга эга бўлиш у ёқда турсин, Хитойнинг шимолидаги сахроларда пайдо бўлган қавм бўлиб, ўрмон қонунига таянган халқ эди. Ҳайвонлар сингари уруш қилиши етмагандай, улар каби яшар эдилар. Мусулмонлардек ер юзини обод этиш ёки дунёни ислоҳ қилиш ўрнига вайрон қилиш, бузиш ва яксон этишни ўзларига касб қилган эдилар.

Ислом уммати нафақат мўғуллардан, балки Ер юзидаги бошқа миллатлардан тубдан фарқ қилиб келган ва шундай давом этади ҳам. Бағдод тарихидаги биз гувоҳ бўлиб турган бу фожиа буюк Ислом уммати тарихини ҳаргиз ўчира олмайди.

Мўғул аскарининг бир бўлаги Бағдодда жойлашган, ўша вақтлар Ер юзидаги кутубхоналарнинг энг катталаридан бўлган, 600 йиллик тарихни ўз бағрига олган, илм-маърифат, одоб-ахлоқ ва тафсир, ҳадис, фикх, ақида каби шариат илмлари ва тиббиёт, фалаккиёт, муҳандислик, кимийё, физика, жўғрофия каби ҳаётга тааллуқли фанлар ҳамда сиёсат, иқтисод, жамият, тарих каби жамиятга алоқадор фанларни, шунингдек, миллион байтларча шеърлар, ўн мингларча қиссалар ва насрларни ҳамда инглиз, юнон, форс, ҳинд ва бошқа жаҳон тилларига таржима қилинган илмий бойликларни ўз ичига олган кутубхонага қараб келдилар. Ушбу кутубхонага машҳур Аббосий халифаларидан бўлган Ҳорун ар-Рашид (170–193 халифа бўлган) асос солган, ундан сўнг бу кутубхона халифа Маъмун (198–218 халифа бўлган) замонида гуллаб яшнаган эди.⁴⁹⁷ Бу кутубхона ҳар томонлама беназир бўлиб, улканликда фақат Андалусдаги «Қуртуба» исломий кутубхонасигина у билан рақобатлаша оларди. Кутубхона бир қанча хужралардан иборат ва унда юзларча хизмат қилувчи ходимлар бор эди.⁴⁹⁸ Бағдод ишғол қилинишидан 20 йил олдин

⁴⁹⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (160-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (200-бет).

⁴⁹⁸ Саллабий «ал-Мўғул» (200-бет).

Куртуба кутубхонаси Камбис исмли Овропалик насроний томонидан ёқиб, кули кўкка созурилган эди.

Мўғуллар адади миллионларча бўлган қийматли, бебаҳо китобларни кутубхонадан олиб чиқиб, Дажла ⁴⁹⁹ дарёсига ташлашди. Бу мўғулларнинг ўтакетган нодонлиги эди. Улар бу китобларни Мўғулистон пойтахти Қорақурумга фойдаланиш учун олиб кетсалар, ўзлари учун катта ютуқ бўлар эди. Ҳолбуки, мўғуллар маданият ва тараққиётда ҳали гўдаклик босқичида эдилар. Бироқ улар ўқиш ва ёзишни билмайдиган, таълим олиш уларга ёт бўлиб, айшу-ишрат ва шахватларига қул бўлиб яшайдиган, дунёдан кўзлаган бирдан-бир мақсадлари вайрон қилиш бўлган ёввойи уммат эди. Дарёга улоқтирилган сон минглаб китоблардаги сиёҳларнинг сувга чиқиши натижасида Дажла дарёси суви қоп-қора рангга бўялди. Ҳатто мўғул отлиги бу қирғоқдан у қирғоққа дарёга ташланган китоблар устидан ўтиб қайтарди. Иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожиъун.

Тарихда Ислом кутубхоналарининг мунтазам талофат кўргани

Бағдод кутубхонасининг дарёга оқизилиши нафақат мусулмонлар, қолаверса, бутун инсоният учун улкан бахтсизлик ва жиноят эди. Бу каби жиноятларга тарих кўп гувоҳ бўлган. Жумладан, насронийлар Андалусдаги буюк Куртуба кутубхонасига ўт кўйишди, бундай ҳолат миллионлаб китобларни ўз ичига олган Гранада кутубхонасида ҳам рўй берди, салибчилар унга ҳам ўт кўйишди. Сўнгра салибчилар Андалусда Толедо, Севилья, Валенсия, Сарагоса ва бошқа шаҳарларда жойлашган кутубхоналарни ҳам айни кўринишда вайрон қилдилар.

Насронийлар Шомда уч миллион китобни ўз бағрида сақлаган Тарабулус ⁵⁰⁰ кутубхонасига ҳам ўт кўйдилар. Тарабулус кутубхонасининг Бағдод кутубхонасига рақобат қиладиган ҳоли йўқ эди. Энди Дажла дарёсига оқизилган Бағдод кутубхонасидаги китобларнинг сонини бир тасаввур қилинг!

Насроний салибчилар Фаластиндаги Ғазо, Қуддус ва Асқалон кутубхоналарини ҳам шундай хунук аҳволга солишди. Сўнгра XXI асрга келиб, янги Овропа босқинчилари Ислом ўлкаларига бостириб келишди, бироқ улар аждодларига қараганда бироз ақллироқ эканлар шекилли, улар Ислом давлатларидан ўғирлаган китобларни аждодлари сингари

⁴⁹⁹ рус. Тигрис.

⁵⁰⁰ Рус. Триполи.

ёқмасдан, ўзлари билан олиб кетишди. Ҳозирда Оврупанинг катта кутубхоналаридаги китобларнинг асосий қисмини мусулмонлардан ўғирлаб кетилган китоблар ташкил қилади.

Дарҳақиқат, Ислом душманлари узун асрлар оша илмнинг қайси тури бўлмасин, бу умматни унга боғланишдан китобларни ёқиш, ё дарёга окизиш, ёки ўғирлаш, ёхуд таълим манҳажини ўзгартириш орқали маҳрум қилишга ҳаракат қилиб келдилар. Бу билан улар умматни асосий ва муҳим илм, дин ва ахлоқдан узоқлаштиришни хоҳладилар ва кайсидир жиҳатдан бунга эришдилар ҳам. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Бағдодга ўт кўйилиши

Кутубхонани дарёга чўктириб бўлган мўғул кўшинининг бир бўлаги гўзал ва ҳашаматли биноларга қараб йўл олдилар ва уларни вайрон қилиб, ўт кўйдилар. Кўзларига чиройли кўринган қимматбаҳо нарсаларни ўзлари билан олар, эътиборларини жалб қилмаган нарсаларни ёқар эдилар. Ўша вақтлар Ер қуррасидаги буюк шаҳар харобага айланган, олов ва тутун етиб бормаган жой қолмаган эди.

Бағдод халқидан баъзиларининг тирик қолдирилиши

Қатлиом бошланганидан 40 кундан сўнг, Бағдод тамоман хароб кўринишга келди. Шаҳарда баъзи инсонлар тирик қолган, кўчаларда ўликлар баланд тепалик мисоли тўпланиб ётарди. Ўликлар устига ёмғирлар ёғди, натижада улар ирий бошлади ва бутун шаҳарга бадбўй хид тарқалди. Об-ҳаво ўзгариши оқибатида пайдо бўлган вабо Шом диёригача етиб борди. Вабо (ўлат) жуда кўп инсонлар ҳаётига зомин бўлди.⁵⁰¹

Ҳулагу аскарларига мусулмонларни ўлдиришни бас қилишларига буюриб, қиличдан омон қолган Бағдод халқига омонлик берди. Ҳулагу бу минтақада вабо тарқалиб, лашкарининг ҳам қирилиб кетишидан кўрққанидан шу қарорга келганди. Ортиқ мусулмонларнинг яширинишга эҳтиёжларининг йўқлигини ва беркинган жойларидан чиқиб ўликларини кўмишларини эълон қилди.

Бағдодда омонлик садоси янграганида хандақлар, кабристонлар ва ташландик қудуқларга жон ҳолатда беркинган одамларнинг секин-аста

⁵⁰¹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/362), Сиржоний «Қиссатут-татар» (163-бет).

чикиб келиши, худди қабрларидан тирилик чикқан ўликлардек эди гўё. Улар бир-бирларини танимас, ҳатто ота боласини, ака укасини танимас аҳволда эди.⁵⁰² Кимдир отасини ё қизини, яна кимдир онасини ёки боласини ахтаришга тушди. Лекин адади миллионга етган ўликларни дафн қилиш осон эмасди. Тирик қолган мусулмонлар биродарларининг мурдаларини кўмиб улгурмасларидан шаҳарда даҳшатли суратда ўлат ва вабо тарқалди. Натижада қолган инсонлар ҳам ўлиб кетди. Қилич тигидан омон қолганлар шаҳарда тарқалган ўлат ва вабо эпидемиясидан қутула олмади, улар ўзларидан илгари оламини тарқатган ўликлар сафига қўшилдилар.⁵⁰³ Бу Бағдоднинг янги фожияси эди. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ...

Муаййиддин ибн Алқамийнинг Бағдодга ҳоким қилиниши

Сўнгра Ҳулагу шу йилнинг жумодул-аввал ойида Бағдодга Фахриддин Дамғоний ва Муаййиддин ибн Алқамийни ҳоким, яъни мўғулларнинг вазири қилиб тайинлади,⁵⁰⁴ бироқ унга ҳокимнинг номидан бошқа нарса тақдим қилмаган эди. Алҳол, ҳар қандай қарор ва буйруқлар мўғуллар томонидан белгиланар, ҳоким эса бажаришдан нарига ўта олмас эди. Янги ҳокимга нафақат Ҳулагу ҳатто оддий мўғул аскарлари ҳам бемолол буйруқ берарди, бу бир томондан ҳокимни хорлаш бўлса, иккинчидан бошқарувда унинг ҳеч қандай кадр-қиймати ва қуввати йўқлигини уқдирар эди. У мўғулларга тобе бўлиб, хорликнинг охириги даражасига етди. Мана шундай, кимки дини, ватани ва обрўсини сотса, ёрдам берган душманлари қаршисида ҳам кадрсиз бўлиб қолади. Сотқинлар душман назарида ҳам зиғирчалик кадрга эга бўлмайдилар. Хоин вазир Бағдодга волий бўлгандан сўнг бироз муддат хор бўлиб юрди ва ўз уйида бир неча ойдан кейин, 2 жумодул-охир/13 июн пайшанба куни жон таслим қилди.⁵⁰⁵ У бу хоинлиги эвазига Бағдодни сотгандан сўнг хорлик ҳаётида 3 ой яшади.⁵⁰⁶ Ҳокимлиги, мулки ва хиёнатидан бирор фойда кўрмади. Бу ҳодиса ҳар бир хоин учун ибрат бўлиши керак.

⁵⁰² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/362, 363), Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 338-бет).

⁵⁰³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/362, 363), Доктор Саййод «ал-Мўғул фит-Тарих» (1-жилд, 266-бет).

⁵⁰⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/363), Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 294, 295-бет)/ «Сборник летописей» (3/43), Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 339-бет).

⁵⁰⁵ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/362, 363, 380), Рашидуддин «Сборник летописей» (3/47), Саллабий «ал-Мўғул» (203-бет).

⁵⁰⁶ Саллабий «ал-Мўғул» (203-бет).

«Парвардигорингиз (аҳли-эгалари) золим бўлган шаҳарларни ушлаганида, мана шундай ушлар. Унинг ушлаши-азоби аламли ва қаттиқдир».⁵⁰⁷

Сўнгра мўғуллар вазирнинг ўғли Шарофуддин (Иззуддин) Абул Фазлни Бағдодга волий қилишди,⁵⁰⁸ отанинг мероси болаларига қолганидек, хиёнат ҳам унга ота мерос бўлган эди. Бироқ бу мансаб унга бахтсизлик келтирди, Бағдодга волий бўлган хоин вазирнинг ёш новқирон ўғли Бағдод ишғол қилинган йили 656 йилнинг ўзида оламдан кўз юмди.⁵⁰⁹ Дунёга тирмашган кимсанинг ҳалокатга учраши ҳеч ажабланарли эмас. Халифа дунёга маҳкам ёпишганида ҳалок бўлди, сўнгра хоин вазир, ундан сўнг унинг дунёга хирс қўйган ўғли отасининг ортидан равона бўлди. Бағдод халқи дунёга берилганида ҳалокатга юз тутди. Бу Ер юзида жорий бўлган қонундир...

⁵⁰⁷ Худ: 102.

⁵⁰⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/363, 380), Рашидуддин «Сборник летописей» (3/47), Саллабий «ал-Мўғул» (203-бет).

⁵⁰⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/363, 380), Маҳмуд Шокир «ат-Тарихул Исламий» (6-жилд, Аббосийлар давлати, 2-қисм, 339-бет). Саллабий Жувайнийдан нақл қилишича, вазирнинг ўғли ҳижрий 657 йил зулҳижжа ойида, яъни Бағдод ишғолидан бир йилдан сўнг ўлган ва девон ишлари Ато Малик Жувайнийга топширилган, «ал-Мўғул байнал-интишор вал-инкисор» (204-бет).

БАҒДОДНИНГ АҒДАРИЛИШИНИНГ АСОРАТЛАРИ

Бағдоднинг мўғуллар томонидан ишғол қилиниши бутун оламга яшин тезлигида тарқалди. Бу Ислом оламига ҳазм қилиш мутлақо қийин бўлган дахшатли зарба бўлган эди, чунки Бағдод шунчаки бир шаҳар эмасди. Бағдод ўша замонда Ер куррасидаги энг катта шаҳар бўлиши билан бирга илм-маърифат, тараққиёт, маданият мужассам бўлган Ислом уммати хилофатининг пойтахти эди. Мусулмонлар эсанкираб қолишди: «Бағдод ишғол қилинди», дегани нимаси? «Халифа ўлдирилиб, ўрнига бошқа халифа тайин қилинмади», дегани-чи? – каби саволлар одамлар орасида жавобсиз қоларди.

Мусулмонлар халифасизлик қандай бўлишини ақлларига сиғдира олмасди. Улар учун хилофат ўта муҳим аҳамият касб қиларди. Ўша вақтда Аббосийлар хилофати ўта заиф ҳолатда бўлсада, бир кун келиб хилофат албатта кучаяди, деган умид уларнинг зехнида барҳаёт эди. Мўғулларнинг чиқиши, мусулмонларнинг мағлубияти, Бағдод ва хилофат ағдарилгандан сўнг мусулмонларнинг тушкунликлари, уларни «бу қиёмат аломати, энди Маҳдий чиқади ва мўғуллар устидан нусратга эришади», деган эътиқодга етаклай бошлаган эди.

Бир кун келиб Маҳдий чиқади, Исо алайҳиссалом тушади ва Қиёмат қоим бўлади, бунга иймонимиз комил, иншаоллоҳ. Аммо Қиёмат кунининг қачон бўлишини ҳеч ким билмайди,

«Одамлар сиздан (қиёмат) соати (қачон бўлиши) хақида сўрайдилар. «У (соатнинг) илми ёлғиз Оллоҳнинг ҳузуридадир», деб айтинг. Қаердан билурсиз, эҳтимол у соат яқин келиб қолгандир».⁵¹⁰

Нега мағлубият ва муваффақиятсизлик кезларида инсонлар онгида бу каби дунёқараш пайдо бўлади? Балки мусулмонлар тушкунлик сабаб, Оллоҳнинг ва ўзларининг душманлари мўғулларга қарши ғалаба қилишга кўзлари етмай, осонроқ ечимни ахтаришгандир. Имом Маҳдий чиқса ёки бирор-бир мўъжиза рўй берса-ю, мўғуллар устидан ғолиб бўлсак, деб тасаввур қилгандирлар. Валлоҳу аълам.

Бу орада насронийлар хурсандликларидан ўзларини қўярга жой топмаётган эдилар. Мўғулларнинг Ислом оламига берган бундай каттик зарбасидан сўнг салибчилар Шом ва Миср ўлкаларига юришларини янгидан бошлашларида шубҳа йўқ.

⁵¹⁰ Ахзоб: 63.

Мўғуллар Бағдодни эгаллашди, унинг мол-мулкани талашди. Қонхўр кимса ҳеч қачон хунрезликка тўймайди. Оқил кишига аёнки, мўғуллар Бағдодни ишғол қилиш билан чекланмайдилар ва янги хазиналар излашлари аниқ.

ШОМ ДИЁРИ ИСТИЛОСИ

Баъзи мусулмон амирларнинг мўғулларга яқинлашуви

Ироқнинг махв этилиши мўғулларнинг Ислом оламига бўлган босқинининг сўнгги бекати эмаслиги, балки уларнинг қатлиомлари Ислом ўлкаларининг янги худудларида давом этиши кундек равшан эди.

Хулагу Бағдодни ер билан яқсон қилгандан сўнг Форсдаги Ҳамадонга отланди. Сўнгра Урмия кўли⁵¹¹ қирғоғида жойлашган Шоҳа қалъасига қараб юрди. Бу кўл Эроннинг шимоли-ғарбий томонида жойлашган. У бу қалъага Аббосийлар қасридан, мусулмонларнинг байтуллоидан, тижоратчи ва мулкдорлардан талон-тарож қилиб, тортиб олган катта бойликларни кўйди.⁵¹² Албатта, бу ўлжаларнинг бир қисмини ҳокон Мангуга йўллашни унутмади.⁵¹³

Хулагу Бағдод атрофига мўғул посбонларини қўйиб, ўзи эса янги хужум ҳақида фикр қилди. Бу босқин Сурия минтақасига бўлишида шакшубҳа йўқ. У Сурияни ўрганишга киришди. Хулагу бу минтақанинг заиф ва қувватли нуқталарини ўрганишга бел боғлаган чоғда, баъзи мусулмон амирлар унга дўстлик изҳорини кучайтира бошладилар. Бағдоддаги миллионлаб мусулмонларнинг тўкилган қонлари қотмасидан бу амирлар мўғул қўмондони Хулагу билан дўстлик ва иттифоқлик алоқаларини янгидан тиклаш мақсадида расмий вафдлар юборишга киришдилар. Бироқ бу амирлар ўз ҳамкорликларида кадр-қиймат топмадилар. Хулагу билан улар ўртаси осмон билан ер мисоли эди. Шунга қарамай, улар арзимаган нарсага эришиш мақсадида «йўқдан кўра бор» қабилида иш тутдилар. Энг камида Хулагунинг ёмонлигидан сақланиб қолишарди-да!

«Шубҳасиз, ораларингизда (жангга чиқишдан) четда қоладиган, агар сизларга бирон мусибат етса, «Оллоҳ ёрлақаб улар билан бирга бўлмадим», (акс ҳолда ҳалок бўлур эдим) дейдиган кимсалар ҳам бор».⁵¹⁴

Улар Ироқ ва Бағдод ҳимоясида иштирок этмаганларига ич-ичларидан хурсанд бўлишар, гарчи у золим ва кофир бўлишидан қатъий

⁵¹¹ УРМИЯ (собик Ризоия) — Эроннинг шим.ғарбий қисмидаги окмас шўр кўл. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («У» ҳарфи бўлими).

⁵¹² Сирожий «Қиссагит-татар» (171-бет), Рашидуддин «Сборник летописей» (3/47).

⁵¹³ Рашидуддин «Сборник летописей» (3/47).

⁵¹⁴ Нисо: 72.

назар ғолибга яқинлашишга шошилар эдилар. Бу амирлар ўз халқи олдида уларни уруш талофатларидан асраб қолган ҳокимлар киёфасида кўриниш берар, аслида эса оташин оловга ҳозирланган ёғочлар мисоли эдилар.

«Сўзлаганларида эса сўзларига (оҳангдор, фасоҳатли бўлгани учун берилиб) **қулоқ солурсиз.** (Лекин уларнинг диллари иймон ва яхшиликдан холи бўлгани учун) **улар гўё (деворга) йўлаб қўйилган (чирик) ёғочларга ўхшайдилар».**⁵¹⁵

Бу турдаги амирларнинг саъй-ҳаракатларини қўллагувчи, ишларига баракотлар тилагувчи ва халқни уларга эргашишга ва қилган амаллари қандай бўлса ҳам ундан рози бўлишларига тарғиб этувчи уламолари бўлгани ажабланарли эмас. Бу «олимлар»: «Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам Худайбияда мушриклар билан сулҳ тузганларида, нима учун биз мўғуллар билан сулҳ тузмайлик?! Набий соллаллоҳу алайҳи ва саллам Мадинада яхудийлар билан аҳдлашган бўлсалар, нимага энди биз Бағдоддаги мўғуллар билан аҳдлашолмаймиз?! Мўғуллар сулҳга мойил бўлиб турибди, зеро, Оллоҳ таоло шундай деган-ку: **«Агар улар сулҳга майл қилсалар, сиз ҳам унга мойил бўлинг ва Оллоҳга таваккул қилинг! Албатта, Унинг Ўзи эшитгувчи, билгувчидир»**⁵¹⁶, каби мисолларни Қуръон ва суннати набавиядан келтиришарди. Мўғуллар сулҳ тузишга рози бўлса, келишув ва ҳамкорликни истасалар-у, сизлар эса, Раббимиз азза ва жалланинг каломини эшитиб, билиб туриб, шариятга хилоф қилишни хоҳлайсизми?! Қон тўкилишини истайсизми?! Юртнинг вайрон бўлиши сизларга керакми?! Иқтисоднинг янада танглашишини истайсизми?! — каби саволларни ёғдирашарди. Оллоҳ таоло улар борасида шундай марҳамат қилади: **«Улардан яна бир гуруҳи борки, сизлар Китобдан бўлмаган нарсани Китобдан деб ўйлашингиз учун Таврот китобини тилларини буриб (бузиб-ўзгартириб) ўқийдилар ва Оллоҳнинг ҳузуридан келмаган (ўзларининг сўзларини) «Оллоҳнинг ҳузуридан келган», дейдилар. Улар билиб туриб Оллоҳ ҳақида ёлғон сўзлайдилар».**⁵¹⁷

Сайидлари Ҳулагунинг ҳузурига у бизнинг ҳамкорлигимизни қабул этармикан? – деган саволларни ўзаро бир-бирларидан сўраган, хаяжон ва хавотирдан қалблари кўксиларидан чиқиб кетгудек бўлиб, шошилганларича йўлга отланишди. Мосулнинг амири Бадриддин

⁵¹⁵ Мунофиқун: 4.

⁵¹⁶ Анфол: 61.

⁵¹⁷ Оли Имрон: 78.

Луълуъ⁵¹⁸, Форс отабеги Абу Бакрнинг ўғли Саъд, Туркиянинг маркази ва ғарб томони — Анадол минтақасидан амир Кай Ковус II ва амир Рукниддин Қилич Арслон IV,⁵¹⁹ Ҳимс амири Ашроф Айюбий, Дамашк ва Ҳалаб амири Носир Юсуфлар Ҳулағунинг ҳузурига бўйин эгиб келишди.⁵²⁰ Бу амирлар шимолий Ироқ, Форс, Шом ва Туркия минтақаларининг катталари эди, бу эса Ҳулағунинг қаршисида ғов бўлиб турган муаммоларнинг ечими, шунингдек, ўша минтақаларнинг жангу-жадалсиз қўлга киритилиши эди.

⁵¹⁸ Мақризий «ас-Сулук» (1/499-бет), Рашидуддин «Сборник летописей» (3/47).

⁵¹⁹ Рашидуддин «Сборник летописей» (3/48).

⁵²⁰ Рашидуддин «Сборник летописей» (3/49).

МАЙЯФАРИҚИН ҚАМАЛИ

Ҳеч кутилмаганда Ҳулагунинг қаршисида бир муаммо пайдо бўлди, бу муаммо Айюбий амирларидан бири унга бўйсунушдан бош тортгани етмагандай, охирги томчи қони қолгунича унга қарши жанг қилишга қарор қилгани эди. Ҳулагу уни бу минтақалардаги «тинчлик-осудаликка» раҳна солувчи шунчаки бир хунрез, деб эътибор қилди.

Ўз қадри ва динини ҳимоя қилиш учун оёққа турган мусулмон амир Комил Муҳаммад Айюбий⁵²¹ раҳимахуллоҳ эди. У ҳозирги Туркиянинг шарқи, Ван кўлининг ғарбида жойлашган Майяфариқин⁵²² минтақасининг амири эди. Комил Муҳаммаднинг аскарари Туркиянинг шарқи ҳамда шимол тарафдан Дажла ва Фурот дарёлари орасидаги жойларни ўз ичига олган Жазира минтақасини назорат қилар эди.⁵²³ Бир сўз билан айтганда, амир Комил Муҳаммад Туркиянинг шарқи, Ироқнинг шимоли-ғарбий ва Суриянинг шимоли-шарқига ҳоким эди.

Мўғуллар Бағдод кўрғонлари қаршисида турган вақтда амир Комил Муҳаммад Дамашққа Носир Юсуфнинг олдига йўл олди. У Бағдодга ёрдам бериш фикрини олға сурди. У Носир Юсуфга мўғулларга қарши жиҳод қилишни, керак бўлса шу йўлда шаҳид бўлишни таклиф қилди. Комил Муҳаммад нусратга эришмаган тақдирда ҳам азиз ҳолатда шаҳид бўлишни ихтиёр қилди. Дамашқ амири Носир Юсуф эса, қарор қабул қилиш замонида кўрқоклиги, маънан заифлиги, хайрати, тараддуди сабаб зарур қарорни қабул қилишдан ожизлик қилди. Комил Муҳаммад Бағдод ишғол қилинганини эшитгунича Дамашқда қолиб кетди. Сўнгра Майяфариқинга қайтди.⁵²⁴ Хуллас, Комил Муҳаммад жиҳод фикрини кўллаб-қувватлаганича бир ўзи яккаланиб қолди.

Ҳулагу Сурия ерларини босиб олишни истади, аммо у айна вақтда Комил Муҳаммад Айюбийнинг қўл остида бўлган Жазира минтақасини босиб ўтмасдан ва шимолий Ироқдан юрмасдан бу мақсадига эриша олмасди. Шимолий Ироқнинг катта амирлари дини-ю, ватанига хоинлик қилиб, душманга бўйсуниб, Ҳулагунинг ишини қулайлаштирган бўлса-да, Майяфариқин амирлигини куч билан қайириб ўтиши лозим эди. Майяфариқин шаҳри жуда ҳам мустаҳкам кўрғонли шаҳар бўлиб, Қора тоғлар тизими орасида жойлашган ва уни ишғол қилиш анчагина

⁵²¹ Комил ибн Шиҳоб Ғозий ибн Одил. «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя».

⁵²² Ҳозирги кунда Туркиянинг Диёрбакр минтақасидаги Силван шаҳридир.

⁵²³ Ғомидий «Жиҳадул-мамолийк» докторлик рисоласи (75-бет).

⁵²⁴ Саллабий «ал-Мўғул» (332-бет).

машаққатли эди. Хулагу бирон талофат кўрмасдан осонлик билан йўлни давом эттириш пайида бўлди.

Хулагу мусулмон амирни курашиш фикридан чалғитиш ниятида унинг атрофидаги барча амирлар қатори шартларсиз таслим бўлишга қақриб, элчи йўллади. Комил Муҳаммаднинг ёлғиз ўзи мўғулларга қарши турган, қолган амирларнинг барчаси шармандаларча мўғулларга таслим бўлган эдилар. Хулагу илоннинг ёғини ялаган, айёрликда тулкини ҳам чангида қолдирадиган маккор эди. У мўғулни эмас, қиссис (яъни поп) Ёкубий исмли насроний арабни элчи қилиб юборди. Бу элчи амир Комил Муҳаммадга Хулагунинг мақсадини, унинг куч-қуввати-ю, қанчалар ваҳшийлигини чиройли суратда, амирнинг она тили бўлган араб тилида мукамал баён қилиб бера олиши билан бирга, у насроний ҳам эди, бу эса мўғуллар насронийлар билан ҳам иттифоқчилик тузган деганини англатарди. Бу Комил Муҳаммад учун ўта хатарли бўлиб, муҳим стратегик аҳамият касб қилар эди. Чунки Майяфариқин амирлиги Туркиянинг шарқида жойлашган бўлиб, шарқ ва шимоли-шарқдан мўғуллар билан иттифоқдош бўлган насроний Арманистон ва Гуржистон мамлакати билан чегарадош эди.

Амир Комил Муҳаммад икки ўт орасида қолганди, агар элчини рад этса, худди кичик мусулмон оролчаси мисоли барча томондан улкан мунофиқ, мушрик ва насронийларнинг қуршовида қолиши турган гап эди. Яъни:

- ✓ Шарқдан насроний Арманистон;
- ✓ Шимоли-шарқдан насроний Гуржистон (Грузия);
- ✓ Жануби-шарқдан мўғуллар иттифоқчиси мусулмон Мосул;
- ✓ Ғарбдан мўғулларга қуллуқ қилиб турган Салжуқий амирлари Кай Ковус II ва амир Рукниддин Қилич Арслон IV;
- ✓ Жануби-ғарбдан Ҳалаб амири Носир Юсуф қуршовида эди.

Амир Комил Муҳаммадда бирор қутулиш йўли мавжуд эмасди, у хоҳ мусулмон ўлкалардан, хоҳ насронийлар томонидан бўлсин. Устига-устак мўғул қўшини Майяфариқин минтақасини қамал қилишга тайёр эди. Хуллас, у ўта хатарли ва қалтис вазиятда турарди. Бироқ Комил Муҳаммад Айюбий насроний элчи қиссис Ёкубийни қўлга олди ва қатл қилди. Амир Комил Муҳаммад «элчига ўлим йўқ» қоидасига хилоф иш қилиши билан мусулмонларнинг қалбларини ўзининг темир тирноғи билан тимдалаётган қасос ўтини бироз бўлса-да тин олдириш учун Хулагуга очикдан-очик уруш эълон қилган эди. Шариатда элчининг ўлдирилиши борасида ҳали батафсил баён қиламиз, иншаоллоҳ.

Қиссис Ёқубийнинг ўлдирилиши Ҳулағунинг таслим бўлиш ҳақида берган буйруғига равшан жавоб эди. Ҳулағу Шомга Комил Муҳаммад ишини битирмасдан киролмаслигига кўзи етиб, бу ишга бошини қотира бошлади. У кўп ўйлаб ўтирмасдан катта қўшин ҳозирлади ва қўшиннинг бошига ўғли Ашмут⁵²⁵ни қўмондон этиб, у билан бирга Илка нўён ва Сунтой нўённи қўшиб Майяфариқинга сафарбар қилди.⁵²⁶ Ашмут катта мўғул лашкарини олиб, Мосул амири Бадриддин Луълунинг шаҳридан ўтиб, бевосита Майяфариқинга йўналди ва келиб шаҳарни қамал қилди. Сўнгра амир Комил Муҳаммадга элчи йўллади. Агар таслим бўлсанг, ўлимдан ҳамда юртингнинг вайрон қилинишидан сақлаб қоласан. Борди-ю, исён қилсанг, ўласан ва юртингни харобага айлантирамиз, дея таҳдид қилди. Бироқ Комил Муҳаммад таслим бўлишга очиқ эътироз билдириб: «Мен сизларнинг ширин сўзларингизга ҳаргиз алданмайман ҳамда мўғул қўшинидан зиғирча ҳам қўрқмайман. Модомики тирик эканман, сизлар билан жанг қиламан», дея жавоб йўллади.⁵²⁷

Бу вақтда икки мамлакат Арманистон ва Грузия қўшинлари шаҳарнинг шарқ томондан қамалга киришган эди. Бу шиддатли қуршовнинг бошланиши Бағдод вайрон қилинганидан 4 ойдан кейин, яъни 656 йил ражаб/1258 йил июл ойига тўғри келган эди.⁵²⁸

Қахрамон шаҳар каттиқ қаршилик қилиш билан жонбозлик кўрсатди. Амир Комил Муҳаммад халқини собитқадамлик ва Оллоҳ йўлидаги жиҳодга тарғиб қилган ҳолда нодир суратдаги шижоатни гўё қайта тирилтирди. Дарҳақиқат, у нобакорлар даврида лаёкатли, кўрқоқлар замонида ҳақиқий довьюрак, калта ва бефаҳмлар яшаб турган онда оқил ва фаросатли киши эди. Комил Муҳаммад халқининг руҳиятини кўтариш учун ҳазиналарида бор тилла, кумуш ва қимматбаҳо нарсаларни уларга тарқатиб, шаҳар мудофаасига ишлатди. Бутун Майяфариқин халқи бирлашиб, юртларини вайрон қиламиз деб турган тажовузкор мўғулларга қарши жанг тадоригини кўрдилар.⁵²⁹

Майяфариқин шаҳри ҳар томондан аёвсиз қамалда турганда ёндош мусулмон амирликларига ёрдам қўлларини чўзишлари фарз эди, лекин ундай бўлмади. Уларга на қурол-аслаҳа, на озиқ-овқат ва на дори-дармон

⁵²⁵ Юшумут.

⁵²⁶ Рашидуддин «Жомиғут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 319-бет)/ «Сборник летописей» (3/49), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (75-бет).

⁵²⁷ Рашидуддин «Жомиғут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 319-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (75-бет).

⁵²⁸ Сиржоний «Қиссатут-тагар» (177-бет).

⁵²⁹ Рашидуддин «Жомиғут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 320-бет), Ибн Шаддод «ал-Иёлоқ ал-Хотийро» (3-жилд, 2-қисм, 490-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (76-бет).

жўнатдилар. Майяфариқиндаги ака-ука, опа-сигил, ўғил-киз, ота-оналари бўлмиш мусулмон биродарларини четга суриб, ўша пайтда Ер юзиди ўзини якка куч соҳиби, деб эътибор қилаётган мўғулларни эҳтиром қилишди...

Майяфариқиннинг ёрдамсиз қолиши сабаблари

Мусулмон амирларнинг хоинликларига кўз юмсақ, Ислом ўлкалари Дамашк, Ҳалаб, Мосул, Туркия ва бошқалардаги омма мусулмонларнинг қилмишларига беъэтибор бўлиш қийин иш. Бу халқлар қаерда эди? Уларнинг орасида Майяфариқиндаги мусулмонлар билан қон-қариндош бўлгани қанча-ю, борди-келди қилувчилари қанча эди? Амирлар кўриб турганимиздек разил ахлокли бўлсалар, халққа нима бўлган эди? Исломий биродарликни ҳисобга олмаганда ҳам, соғлом фитратнинг ўзи душман қуршовида турган қариндошларига озиқ-овқат, қурол-аслаҳа ва дори-дармонларни етказиб туришларини тақозо қиларди-ку! Нима учун бу минтақадаги Ислом уммати жим турди? Ваҳоланки, улар нафақат дин ва ақида, ҳатто қон ва насаб жиҳатдан оға-ини эдилар-ку!

Дарҳақиқат, халқ лом-мим демади, уларнинг сукутлари бир неча хатарли ишлардан дарак эди:

Биринчи: Халқлар ҳам ҳокимларидан кўп фарқ қилмас ҳамда қандай сурат ва шаклда бўлмасин, дунё ҳаётига ружуъ қўйган эдилар.

Иккинчи: Бу минтақаларда халқларини давомли суратда туб моҳиятдан бурувчи амалиётлар, ўзларининг чиройли тарзда «тинчлик» сиёсатини юргизаётганини уларнинг онгларига сингдирувчи амирлар, вазирлар ва олимлар бор эди. Бу ҳокимлар дини, обрўси, ватани ва халқини, балки бутун мусулмонлар шаънини ҳимоя қилишга бел боғлаган амир Комил Муҳаммадни таъна тошларига кўмиб ташлаган бўлсалар ажабмас:

— Комил Муҳаммад халқини уруш гирдобига солиб, юртини вайрон қилинишига сабаб бўлганидан кўра ўрнини бўшатгани яхши эмасмиди?

— Комил Муҳаммад қурол-аслаҳаларини топширганида муаммо ҳал бўларди, лекин у Ер қуррасидаги ҳукмрон давлат — мўғулларга қарши чиқди-я!

— Бу хато Майяфариқин халқини тамоман қирилиб кетишидан бошқа нарсага олиб келмайди.

— Ҳулагу Майяфариқинга фақат Комил Муҳаммадни тахтдан олиш учун келаётгани ва унинг халқига адовати йўқлигини баён қилувчи

мактуб йўллагани ҳам аниқ, деган сўзларни айтувчилари бўлганида шубҳа йўқ. Асл моҳиятдан узоқлаштирувчи амалиётлар халқнинг иштиёқини ўчириб, унинг муруати ва ғурурини ўлдирган эди.

Учинчи: Халқдан гап-сўзлар, хужжату-далилларга қаноат қилмаганларига қилич ва қамчин билан англатилар эди. Алҳол, бу минтақалар халқлари қаҳр ва зулм билан бошқариб турилар, ҳокимлар ва халқ бир-бирларини хуш кўрмас эди.⁵³⁰

Бундай шароитларни кўриб, Майяфариқин амирлигининг том маънода қаттиқ душман қуршовида қолганини фаҳмлай оламиз. Шунингдек, бу минтақанинг атрофидаги Ислом амирликларидан бирорта мусулмон ҳоким ёки халқ ҳаракат қилмаганидан, Майяфариқин халқини тирик ўликлар сафига қўшиб қўйсак ҳам бўлаверади!

Майяфариқин қамалида Носир Юсуфнинг тутган ўрни

Мосул ва Салжуқий амирларининг виждонсизлиги ва шармандалигини биров тушундик ҳам дейлик, Ҳалаб ва Дамашқ амири Носир Юсуф⁵³¹ Айюбийникини тасаввурга сиғдира олмаймиз. Унинг Комил Муҳаммад билан дин, ақида ва қўшнилик алоқаларидан ташқари, ўта муҳим стратегик боғлиқликлари ҳам бор эди. Майяфариқин амирлиги Ҳалабнинг шимоли-шарқида жойлашган бўлиб, агар у ағдарилса, мўғулларнинг навбатдаги қадами Ҳалаб бўлиши турган гап эди. Устига-устак, бу амирларнинг иккаласи ҳам Айюбийлардан бўлиб, қон-қариндошлик алоқалари ҳам бор эди. Буюк қахрамон Салоҳиддин Айюбий оламдан ўтганига атиги 70 йил бўлган эди. Маълумингизки, у киши 589 йилда вафот этган. Унинг бу невараси Носир Юсуф қандай шармандаликка қўл уради экан? Унинг Майяфариқинга қўмаклашишдан ожизлик қилганини на шаръий ва на ақлий жиҳатдан оқлаб бўлади. Амир Комил Муҳаммад Носир Юсуф Айюбийдан мўғуллар ва иттифоқчилари насронийлар қуршовида қолиб, аҳволи қийинлашиб бораётган Майяфариқин халқига озик-овқат, қурол-аслаҳа ва дори-дармон юборишини сўради. Бироқ Носир Юсуф иккиланмай, очиқчасига мадад қўлини чўзишдан бош торди. Алҳол, у бор-бутини сотиб, эвазига мўғулларнинг дўстлигини сотиб олган эди, холбуки, у уларнинг аҳд ва бурчларга риоя қилмаслигини яхши биларди. Мўғуллар аҳдларига вафо қилди ҳам дейлик, агарчи бутун дунёнинг хазиналарига эга бўлиш

⁵³⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (177, 178-бет).

⁵³¹ Носир Салоҳиддин Юсуф ибнул Азиз Муҳаммад ибн Абу Зоҳир. «ал-Бидаяту ван-Нихоя».

эвазига бўлсада, мусулмонларни душманларга топшириш энг катта хоинлик эмасми?! Афсуски, шундай бўлди ҳам...

Носир Юсуф билан Ҳулагу алоқасининг ўзгариб қолиши

Носир Юсуф Комил Муҳаммадни ёрдамсиз қўйгани ва Майяфариқин камалида иштирок этгани етмагандай, Бағдод ишғолида мўғулларга ёрдамга жўнатган ўғли Азизни Ҳулагунинг хузурига мактуб билан жўнатди.⁵³² Мактубда Мисрдаги Мамлуқлар салтанатига ҳужум қилиши ва уни эгаллаши учун Ҳулагудан мўғул армиясини ёрдамга жўнатишини илтимос қилган эди. Шундай даврда у Мисрга ҳужум қилишни Ҳулагудан сўради. Субҳоноллоҳ! Дарвоқе, Носир Юсуф янги дўсти Ҳулагуга улкан совға-салом йўллашни ҳам унутмаган эди.⁵³³

«Ёмон макр-хийла эса фақат ўз эгаларини ўраб ҳалок қилур».⁵³⁴

Ҳулагуга Носир Юсуфнинг ўзи келмасдан ўғли Азизни жўнатиши ёқмади. Ҳолбуки, унинг хузурига барча амирларнинг ўзлари келишар эди. Устига-устак, Носир Юсуфнинг кучайиб бораётгани ва Ҳулагудан ўз ҳудудини янада кенгайтиришида кўмакчи бўлишини талаб қилаётгани уни ажаблантирди. Чунки Ҳулагу мутлак ўзидан ўзганинг қаршисида бўлишини истамас эди. Ҳулагу сенинг юртингга шахсан ўзим бораман, деди. Бундан қурқувга тушган Носир Юсуф хотин, бола-чақасини Карак шахри⁵³⁵ га жўнатди.⁵³⁶ Мўғуллар Фуротдан ўтибди, деган хабарни эшитган Дамашқ халқининг аксарияти қаттиқ кўрқувдан қахратон қиш бўлишига қарамасдан, Мисрга қараб кўчишди. Уларнинг кўпчилиги йўлчилик асносида ўлиб кетишди, қолганлари мўғуллар томонидан талон-ғарож қилинди...⁵³⁷

Ҳулагунинг Носир Юсуфга йўллаган мактуби

Ҳулагу ўша заҳоти ёзувчи югурдак мусулмон адибларини хузурига чорлади ва Носир Юсуфга жавоб ҳозирлади. У мактубда қуйидагиларни сўзлади:

⁵³² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/386), Мақризий «ас-Сулук» (1/500-бет).

⁵³³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/386), Мақризий «ас-Сулук» (1/500-бет).

⁵³⁴ Фотир: 43.

⁵³⁵ Урдуннинг ғарб томонида жойлашган шаҳар.

⁵³⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/386), Рашидуддин «Сборник летописей» (3/50).

⁵³⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/386).

«Оллоҳ таоло азиз китобида Сабаъ маликаси ҳақида: **«У айтди: «Аниққи, подшоҳлар қачон бирон қишлоққа (бостириб) кирсалар, уни вайрон этурлар, аҳолисининг обрў-эътиборлиларини эса ҳорзор қилурлар. Уларнинг қилмиш-одатлари шудир»**⁵³⁸, деб ҳикоя қилганидек, биз ҳам Бағдодни Оллоҳнинг қиличи ила ишғол этиб, суворийларини қатл қилдик, биноларини вайрон айлаб, халқини асир олдик. Унинг халифасини тутиб келиб, баъзи калималарни, яъни хазина ва сир-асрорлари ҳақида сўрасак, ёлғон сўзлади. Сўнгра уни надомат олди ва йўқ қилишимизга лойиқ бўлди. Дарҳақиқат, халифа нафис бойликларни жамлаган разил инсон эди, мол-мулк тўплаган-у, рижолларни эътибордан четда қолдирган эди. Унинг номи-ю, қадри баланд эди. Биз эса, Оллоҳдан тўқислик ва мукамалликдан паноҳ сўраймиз!»

Ҳулагу такводорликнинг юқори манзилатида гўё!

«Бу мактубим қўлингга теккани он одамларинг, мол-мулқинг ва суворийларинг билан Ер куррасининг султони «Шоҳаншоҳ», «Рўйизамин»нинг тоатига шошил! Оллоҳ таоло улуғ китобида: **«Инсон учун фақат ўзи қилган саъй-ҳаракатигина бўлур** (яъни, ўзгаларнинг қилган яхши амалларидан унга бирон фойда етмас). **Унинг қилган саъй-ҳаракати эса яқинда кўринур. Сўнгра у** (ўша саъй-ҳаракати учун) **тўла-тўқис жазо-мукофот олур»**⁵³⁹, деб айтганидек, унинг (яъни, Шоҳаншоҳнинг) ёмонлигидан эҳтиёт бўлда, яхшилигига эришгин! Шунингдек, бизнинг элчимизни хузурингда ушлаб турма, **«Сўнгра яхшилик билан сақлаш ёки чиройли суратда ажрашиш** (лозим)».⁵⁴⁰

Бизга келган хабарларга қараганда, Шом ва бошқа жойлардаги тижоратчилар мўғулларнинг шаҳар дарвозалари қаршисида турганидан хабар топиб, мол-мулклари ва хотинларини олиб, уруш бўлаётган ерлардан узоққа Карвонсаройга (мўғуллар ўз тилларида Мисрни шундай атарди)⁵⁴¹ кетганмиш... Агар улар тоғларда бўлсалар, тоғларни супуриб ташлаймиз. Агар ерда бўлсалар, ерни ўпириб юборамиз. Гапнинг лўндаси, қочганлар учун нажот йўқ. Шудрингу сувларга ҳам мен хўжайинман. Ҳайбатимиздан шерлар хурқади, амир-у вазирлар чанғалимиздадир».⁵⁴²

Бу мактубни ўқиб, Носир Юсуфнинг юраги ёрилаёзди. У Ҳулағунинг мақсадини яхши англаган эди. Ҳулагу унинг мукамал

⁵³⁸ Намл: 34.

⁵³⁹ Нажм: 39, 41.

⁵⁴⁰ Бақара: 229.

⁵⁴¹ Макризий «ас-Сулуқ» (1/506-бет).

⁵⁴² Макризий «ас-Сулуқ» (1/506-бет), Суютий «Тарихул Ҳулафо» (473, 474-бет).

тарзда таслим бўлиши талабида эди. Унга халки ва тижоратчилардан кочиб кетганларнинг пайига тушишини, Аббосийлар халифасининг оқибати нима бўлганининг хабарини бериб, «сен ҳам мол-мулкингни таслим қилмасдан, яшириб юрмагин. Борди-ю, шундай қилсанг, халифанинг куни бошингга тушмасин яна», дегани эди. Бундан сўнг у учун нима чора қолган эди? Мол-мулк ва султонлик муҳаббати Носир Юсуфнинг қонида жўш уради, шу юздангина мўғул хонига куллуқ қилиб, у билан дўстлашган эди. Энди эса Хулагу унга: «Қани, зудлик билан ёнимга кел, дунёни фақат менгина тақсим қиламан. Агар келмасанг, Аббосийлар халифасининг кунини сенинг ҳам бошингга соламан, деяётган эди...

Бундан сўнг Носир Юсуф қандай қарорга келди? Амир Комил Муҳаммадни ва Майяфариқин халқини қандай қунлар кутиб турибди, келинг биргаликда ўрганамиз.

Носир Юсуфнинг жиҳодга даъвати

Носир Юсуф бутун ҳаётида бир бўлсада ҳаёл кўчасидан ўтмаган қарорга келди, бу қарор мўғулларга қарши уруш қилиш даъвоси эди. У тахтида арзимаган муддат қолиши эвазига барча нарсани сотишга тайёр ҳамда дин ва ақидани ҳимоя қилмайдиган, муруатсиз ва ғурусиз инсон эди. Унинг жиҳод аҳлидан эмаслигини ҳамма яхши биларди, шунинг учун унинг жиҳод даъвати кулгули эди. Лекин бу иш амалий суратда содир бўлди. Носир Юсуф «Оллоху акбар» деб ёзилган байроқни баралла кўтариб, шаҳар давозасига ўрнатди. У халқини замирида тожутахт бўлган жиҳодга тарғиб қила бошлади. Илгари Байтул Мақдиси Франция қироли Людовик IX га таслим қилиш эвазига Мисрга қарши урушда ёрдам беришини кофирлардан сўраган шу Носир Юсуф эди.⁵⁴³ Бағдод ишғолида ёрдам қўлини мўғулларга чўзган⁵⁴⁴, Майяфариқин амири Комил Муҳаммадни ёрдамсиз қолдирган, ҳатто озик-овқат улашишдан ҳам ожизлик қилган,⁵⁴⁵ сал олдин Мисрга уруш очишида Хулағунинг ёрдамини кутган шахс айнан Носир Юсуф эди.⁵⁴⁶ Шундай ярамас тарихга эга бўлган киши Оллоҳ йўлида сафарбарлик эълон қилди. Бу жуда ажабланарли иш. Дарҳақиқат, у ёмон хулқи, бузук ақидаси ва бефаҳмлиги билан инсонлар орасида танилган эди. Баъзиларнинг Оллоҳ

⁵⁴³ Муҳаммад Суҳайл «Тарихул-Айюбийин фи Миср ва биладил Шом ва иқлимил Жазира» (398-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (309,310, 311-бетлар).

⁵⁴⁴ Саллабий «ал-Мўғул» (326-бет).

⁵⁴⁵ Саллабий «ал-Мўғул» (331, 332-бетлар).

⁵⁴⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/386), Мақризий «ас-Сулуқ» (1/500-бет).

таоло шундай одам билан Исломга Ўз нусратини беришини фикр қилмоқлари ғирт аҳмоқлик эди, «**Зеро, Оллоҳ бузғунчи кимсаларнинг ишини ўнгламайди**».⁵⁴⁷

Баъзи ҳиссиётга берилганлар Носир Юсуфнинг чақирғига ижобат қилиб, унинг байроғи остида жанг қилиш учун келишди. Лекин тарих ва воқелик унинг ва унга ўхшаганларнинг душман қаршисига келганда, маърака майдонида озгина турар турмас, ҳатто жанг бошланишидан олдин майдонни ташлаб қочиши турган гаплигини хулоса қилади. Бу қизиққонли инсонлар вақти соати келганда қўлтиқларидан тарвузлари тушиб, ҳафсалалари пир бўлади. Шунинг учун ақлларини ишлатишлари лозим эди. Бошлиқлари жуфтакни ростлаб қолганида умидларининг пучга чиқиши, уларнинг катта хатолари эмас, балки Носир Юсуф ва у кабилар Оллоҳ йўлидаги кураша олади, деб эътиқод қилишлари, уларнинг энг катта хатолари эди. Зеро, Оллоҳ йўлидаги жиҳод исломнинг энг олий чўққисига олиб чикувчи ибодатдир. Унга фақат ва фақат ҳақиқий рижолларгина содиқлик билан даъват қила оладилар. Шу сабабдан Оллоҳ йўлидаги жиҳод даъвати қулоқларга чалинса, унга чақирувчи инсонга бир назар солиш фойдадан холи бўлмайди.

Алқисса, Носир Юсуф уруш эълон қилди ва ҳарбий лагерини Дамашқнинг шимолидаги Барза деган қишлоққа қурди. Қолбуки, ҳарбий лагернинг Ҳалабга қурилиши мақсадга мувофиқ эди. Чунки Ҳалаб ҳали унинг қўлида ва Майяфариқиннинг ёнида бўлиб, мўғуллар Майяфариқиннинг ишини битириб, кейин Ҳалабга кириши муқаррар эди. Аммо у ҳарбий лагерини жуда узоққа жойлаштирди. Бу унинг борди-ю Ҳалаб мўғуллар томонидан ишғол бўлса, Дамашқдан ҳам қочиб қолишга улгуриши учун тузган режаси эди. Ҳалаб Дамашқдан 300 км узоқликда бўлиб, жуфтакни рослаб қолишга етарли масофа эди.

Носир Юсуф тайёргарликка киришди ва атрофидаги амирликларни мўғулларга қарши бирлашишга чорлаб чопарлар йўллади. Ал-Карак амирлиги амири Муғис Фатҳуддин Умарга одам жўнатди.⁵⁴⁸ Ал-Карак ўлик денгизи⁵⁴⁹ нинг шарқ томонида, ҳозирги кундаги Урдунда жойлашган минтақадир. Ал-Карак мустақил амирлик бўлиб, унинг амири фақат ўз нафсига муғис-ёрдамчи эди. Шунингдек, Умар разияллоху анҳуга ҳам бирор жиҳатдан ўхшамасди. Носир Юсуф каби гоҳо мўғуллар билан урушиб, гоҳида улар билан келишадиган; баъзида

⁵⁴⁷ Юнус: 81.

⁵⁴⁸ Гомидий «Жиҳадул-мамолийк» докторлик рисоласи (93-бет).

⁵⁴⁹ Ал-бахрул-маййит.

салибчилар билан курашиб, баъзан улар билан ҳамкорлик қиладиган инсон эди.

Сўнгра Носир Юсуф ҳеч кимнинг хаёлига келмаган яна бир амирга, яъни Миср амирига мўғулларга қарши ёрдам беришини сўраб элчи юборди.⁵⁵⁰ Ҳолбуки, бундан олдин у Ҳулагудан Мисрни фатҳ қилишида кўмакчи бўлишини сўраган, лекин ундан рад жавобини олган эди.⁵⁵¹ Энди эса, ўз фойдасини кўзлаб, Миср амиридан мўғулларга қарши курашда ёрдам сўраяпти. Унга жавобан, Миср ҳокими ноиби Музаффар Қутуз «Агар сен менинг ёрдамимни ихтиёр қилган бўлсанг, мен аскарларим билан сенга ёрдам учун бораман. Борди-ю, менинг боришимдан хотиржам бўлмасанг, ҳузурингга ўзинг истаган аскарларни жўнатаман», дея мактуб йўллади.⁵⁵²

Мўғуллар ва насронийлар ўртасидаги алоқа

Ҳулагу Шоҳа қалъасидан Эрондаги Ҳамадон шаҳрига қайтди. У ерда Ўрта Шарқ минтақасидаги ҳарбий ишларни идора қилувчи марказий бошқармаси бўлиб, Бағдоддан 450 км узоқликда жойлашган эди. Ҳулагу янги босқич учун ишларни тартиблаш, ловуллаб турган долзарб Ўрта Шарқ минтақаси масаласини ҳал қилиш ва келажак ойларда юзага келиши мумкин бўлган ҳодисаларни таҳлил қилишга киришди. У бу жараёнда қуйидагиларни кўра олди:

Биринчи: Мўғуллар насронийлар билан алоқа боғласа, катта куч юзага келарди. Ҳулагу бу муносабатларни янада кенгроқ кўламда мустаҳкамлашга эҳтиёж сезди. Исломиё намоёндалардан саналган амир Комил Муҳаммад ва унга ўхшаган келажакда чикувчи исёнчиларни бостириш ва уларнинг танобини тортиб қўйиш учун мўғуллар бир томондан насронийларнинг қувватига эҳтиёжи бўлса, иккинчи жиҳатдан уларнинг малакасига ва учинчи тарафдан эса, Шом эгаллангандан кейин у ердаги ишларнинг бошқарувида насронийларнинг ўзларига муҳтожлиги бор эди. Шу сабаб мўғуллар насронийларнинг дўстлигини комил суратда сотиб олишни режаллади. Ҳулагу Арманистон подшоси Ҳайсумга, Гуржистон подшосига ва Антакия амири Бухмандга ҳадялар ва мукофотлар тақдим қилди.

Иккинчи: Майяфариқин амирлигининг қамали Ҳулағунинг ўғли Ашмут томонидан давом этаётган эди. Комил Муҳаммад ҳар қанча

⁵⁵⁰ Саллабий «ал-Мўғул» (337-бет), Ғомидий «ЎЖихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (90-бет).

⁵⁵¹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/386), Макризий «ас-Сулуқ» (1/500-бет).

⁵⁵² Қосим Абдуҳ «Султон Музаффар Сайфиддин Қутуз» (86-бет).

жасорат ва матонат кўрсатмасин, куршовнинг қаттиқлиги сўнги хукмнинг ўқилганидан далолат эди. Бундан ташқари, қамалда Арманистон ва Гуржистон қуролли кучлари ҳам иштирок этаётган ва бирорта мусулмон амирликлари бу қамални бузиб, Майяфариқин мусулмонларига ёрдам қўлини чўзмаётган эди. Буларни кўрган Хулагу Майяфариқин қамалидан кўнгли хотиржам бўлди.

Учинчи: Ҳалаб ва Дамашқнинг амири Носир Юсуф Айюбий билан Хулагу ўртасида адоват учкунлари пайдо бўлган ва Носир Юсуф Дамашқнинг шимолида ҳарбий лагер ҳозирлаб, жангга тайёргарлик кўраётган эди. Лекин Хулагу Носир Юсуфнинг кимлигини ва имкониятларини яхши билгани боис унга кўп ҳам эътибор бермай, парво ҳам қилмади.

Тўртинчи: Ироқнинг маркази, хусусан Бағдод шаҳри мўғулларга тўла таслим бўлган, шунингдек, Мосулнинг амири Хулагуга том дўстлигини билдирган ва Ироқнинг шимоли-шарқий минтақаси ҳам таслим бўлган эди. Хулагу бу минтақалардан кўнгли тўқ эди.

Бешинчи: Шомдаги энг катта шаҳарлар Ҳалаб ва Дамашқ бўлиб, борди-ю мўғуллар бу иккисини қўлга киритса, Шом тўлиқ эгалланди ҳисоб эди.⁵⁵³

Хулагу бу таҳлилни қилгандан сўнг икки шаҳардан бирига ё Дамашққа, ё Ҳалабга юришни қарор қилиши керак эди. Агар Ҳалабга юргудек бўлса, биринчи Ироқнинг шимолидан ўтиб, сўнгра Суриянинг шимоли-шарқидан кириши лозим эди. Бу билан у Суриянинг шимолидан, Туркияга ёнма-ён ҳолатда юриб Ҳалабга етиб борарди. Бу минтақаларда кўплаб дарёлар, жумладан, Дажла ва Фурот дарёси ва бир талай табиий ғовлар бор эди. Устига-устак, қўшин жуда катта, аммо айни вақтда бу минтақалар кўкаламзор ва серсув жойлар ҳисобланарди. Яъни яйловлар ва сув мўл бўлганидан лашкар катта бўлишига қарамай, озуқа ва сувдан хотиржам эдилар. Бунга қўшимча, бу минтақа Майяфариқинга яқин жойлашган бўлиб, агар Ашмутнинг мададга эҳтиёжи бўлиб қолса, отаси Хулағунинг бош лашқари ёнгинасида эди.

Даставвал Ҳалабга ҳужум қилишнинг бир қанча афзалликлари бор эди, бу минтақаларда сув ва озуқа мўл, Майяфариқинга яқин ҳамда тинч ва осойишта ерлардан, яъни иттифоқдоши Мосул амирининг ҳудудидан ва Носир Юсуф бўлмаган Суриянинг шимолидан ўтиб боради.

Агар биринчи Дамашққа юриш қилса, бу Дамашқдаги мусулмонлар учун қутилмаган зарба бўлиб, улар ўйламаган томондан мўғуллар кириб

⁵⁵³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (184, 185-бет).

келган бўларди. Муслмонлар мўғулларнинг шимолдан, Ҳалаб ноҳиясидан келишини гумон қилиб туришганди. Агар улар шарқдан — муслмонлар умуман хаёлларига келтириб кўрмаган сахро томондан келса, бу муслмонларга катта фожиа бўлиши ва Ҳулагу бевосита Носир Юсуфнинг қароргоҳига келиб, унинг ишини ҳал қилиши мумкин эди. Бунда Носир Юсуф қочишга имкон топмас эди. Агар Ҳулагу Дамашққа қараб юрса, Бағдоддан Дамашққача чўзилган Шом сахроси орқали ўтиши керак. Бу сахро ҳаддан зиёд қурғокчил бўлиб, катта қўшин билан бу сахродан юриш ўта хатарли эди. Ҳулагу лашкарини бундай хатарга қўйиши мумкин эмасди. Борди-ю, шундай қилганида, Носир Юсуфнинг қўшини довдираб қолган ва муслмонлар мўғулларнинг бош лашкарига рўпара келган бўларди. Натижада, Шом тўлиқ ишғол бўларди.

ХУЛАГУНИНГ ХАЛАБГА ЮРИШИ

Хулагу табиий ғовлар кўп бўлса ҳам лашкарининг омонлигини ўйлаб, Суриянинг шимоли орқали Халабга юришни ихтиёр қилди. Бу воқеадан роппа-роса олти аср олдин бу каби кенг имкониятларсиз Холид ибн Валид разияллоҳу анҳу Ироқдан Шомга қараб, Дамашқ яқинида Рум лашкарини доғда қолдириш мақсадида шу улкан қурғоқчил саҳрони босиб ўтган эди. Ўшанда Хулагуниинг ушбу ҳолатига айни кўриниш юзага келган эди. Бироқ Холид ибн Валид Халабга боришни эмас, Дамашққа боришни ихтиёр этган эди. Ўшанда Холид разияллоҳу анҳу бирор-бир талофатсиз мутлақ зафар қозонган эди. Саҳобий жалил Холид разияллоҳу анҳу қайда-ю, зolim Хулагу қаерда!

Хуллас, Хулагу ўғли Ашмутни Майяфариқин қамалида қолдириб, ўзи лашкари билан Халабга йўналди. Мўғул лашкари саркардалари бошчилигида Ҳамадондан Сурияга қараб йўлга чиқди ва Эроннинг ғарбидаги тоғларни ошиб ўтди. Сўнгра Ироқнинг шимоли-шарқий худудига кириб, дастлаб Арбил⁵⁵⁴, кейин Мосул шаҳридан ўтди ва Дажла дарёсига келиб қолди. Дажла дарёси бу минтақадаги биринчи ва хатарли табиий тўсиқ эди. Улар бу тўсиқни кесиб ўтдилар. Улкан мўғул лашкари ҳеч бир муаммосиз бу дарёни кесиб ўтиб, унинг ғарбий қирғоғига Туркиянинг жанубида жойлашган Нусайбин шаҳрига бориш учун Жазира ерларига йўналди.

Нусайбин шаҳри Майяфариқин шаҳридан 170 км жанубда жойлашган эди. Хулагу бу шаҳарни деярли қаршиликсиз эгаллади. Сўнгра Туркиянинг жанубида жойлашган Ҳаррон, ар-Роҳа⁵⁵⁵ ва ал-Бира⁵⁵⁶ шаҳарларига қараб йўл олди.⁵⁵⁷ Бу минтақалар Кай Ковус II ва Қилич Арслон IV нинг қўл остидаги жойлар эди. Лекин улар эътироз билдира олишмади. Ал-Бира шаҳрига келганда мўғул лашкари катта Фурот⁵⁵⁸ дарёсининг шарқидан ғарбига қараб кесиб ўтди.⁵⁵⁹ Шу тарика улар бу минтақадаги иккинчи сувли табиий ғовдан эсон-омон ўтган эдилар. Мўғуллар Туркия-Сурия чегарасига яқин келиб, тўппа-тўғри

⁵⁵⁴ Рус. Эрбиль.

⁵⁵⁵ Ҳозирги кунда Туркиянинг «Şanlıurfa» шаҳридир.

⁵⁵⁶ Ҳозирги кундаги Туркиянинг «Birecik» шаҳридир, рус. Биреджик.

⁵⁵⁷ Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (194-бет), Рашидуддин «Сборник летописей» (3/49).

⁵⁵⁸ Рус. Евфрат.

⁵⁵⁹ Рашидуддин «Сборник летописей» (3/49).

кўрғонли Ҳалаб шахрига отландилар. Туркия чегараси билан унинг орасида бор йўғи 50 км атрофидаги масофа бор эди. Бу мўғул лашкари тўлиқ бир йил давомида хижрий 657 йил дастлаб Форс ерларини, сўнгра Ирок, кейин Туркия, ундан сўнг Сурия ерларини босиб ўтган, бу юриш бевосита Бағдод забт этилган санадан бошланган эди.⁵⁶⁰

Ҳалаб шахри қамали

Хулагу одатига кўра, хужум олдидан Ҳалаб волийсига огоҳлантирувчи ва таслим бўлишга чақирувчи мактубини йўллади. Бирок подшоҳ Муаззам Айюбий унга: «Сизлар бизнинг хузуримиздан фақат қиличнинг зарбинигина олишингиз мумкин», дея жавоб йўллади, сўнгра шаҳар мудофаасига киришди ва шаҳар деворларига химоя куролларини ўрнатди.⁵⁶¹

Мўғуллар 657 йил зулҳижжа ойининг охириги 10 кунлиги/1259 йил декабр ойида Ҳалаб шахрини қасд қилиб, Саламийя қишлоғига келишади. Сўнгра Ҳайлан ва Ҳарий деган қишлоқларигача етиб боришади. Бу икки қишлоқ Ҳалабга қарашли жой эди. Бир гуруҳ мусулмон аскарлар улар томон келишади ва уларнинг кўпчилигини кўриб ортларига қайтишади. Улар мўғуллар тўғрисидаги хабарни Туроншоҳга етказганида, у Ҳалаб шахрининг ички томондан қувватни оширишга буйруқ берди.⁵⁶² Кейинги кунлар мўғуллар Ҳалабга қараб юрди, тоғ олдига келишганида мусулмон аскарлари улар томон чиқиб келди. Буни кўрган мўғуллар макр қилиб, орқага чекинди. Мусулмонлар уларнинг ортидан соатларча таъқиб қилдилар. Улар шаҳардан анчагина узоқлашгандан сўнг, мўғуллар яширинган жойларидан чиқиб келишди. Шунда мусулмонлар шаҳарга қараб чекиндилар. Мўғул лашкари жуда кўп эди. Мусулмонлар Банқуса тоғига етиб келишди, у ерда мусулмон лашкарининг қолган қисми бор эди. Улар ҳаммаси биргаликда шаҳар тарафга чекинишди, мўғуллар уларнинг ортидан қувиб борарди. Ўшанда мусулмон армиянинг ва авом халқнинг кўпи ўлдирилди. Ўша куни мўғуллар Ҳалабнинг охиригача бориб, сўнгра Ҳалабнинг шимоли-ғарбий тарафида жойлашган Аъзоз шахрига ўтдилар. Аъзоз шахри мўғуллардан омонлик сўради, уларга омонлик берилди.⁵⁶³

⁵⁶⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (186–187-бетлар).

⁵⁶¹ Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (194-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (89-бет).

⁵⁶² Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (89-бет).

⁵⁶³ Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (90-бет).

Хулагу 658 йил 2 сафар/1260 йил 25 январ куни Ҳалаб шаҳрига қайтиб келди ва мусулмон шаҳарни ҳамма тарафидан қуршаб олди.⁵⁶⁴ Шаҳар атрофига одам бўйи баробар, эни тўрт зироъ келадиган хандақ қазишди. Сўнгра баландлиги беш зироъ бўлган девор бунёд қилиб, унинг атрофига 20 та манжаниқ ўрнатиб, шаҳарни ўққа тутишди.⁵⁶⁵ Ҳалаб амири Носир Юсуф шаҳарда йўқ бўлишига қарамай, шаҳар аҳли мўғулларга таслим бўлишдан бош тортди. Чунончи, Носир Юсуф Ҳалабдан 300 км узоқда ўзи даъво қилаётган жиҳодга тайёргарлик кўраётган эди. Мўғулларга қарши халқни оёққа тургизган киши Носир Юсуфнинг амакиси Туроншоҳ ибн Султон Салоҳиддин Юсуф ибн Айюб эди.⁵⁶⁶ Туроншоҳ ёши улуг киши эди, бироқ у жияни Носирга ўхшаб кўрқоқ эмас, балки ҳақиқий мужоҳид инсон эди. У кишининг лақаби малик Муаззам эди. Ҳалаб шаҳри Носир Юсуф эга бўлган шаҳарларнинг энг аҳамият касб этгани бўлса-да, у Ҳалабга ёрдам қўлини чўзишни хаёлига ҳам келтирмади.

Майяфариқин шаҳри ишғоли

Ҳалаб шаҳри ҳамма томондан ўраб олинган, халқ мўғуллар ҳамласига қаршилиқ кўрсатиб турган бир пайтда Ҳалабдаги мусулмонларга аччиқ хабар келди. Бу хабар Майяфариқин шаҳрининг мўғуллар томонидан ишғол қилингани эди. Майяфариқин шаҳри қаттиқ қаршилиқ кўрсатди, ҳатто Ҳулағунинг ўғли Ашмут, Илка нўён ва Сунтойлар бошчилик қилаётган қуршов заифлашди ҳам. Шунда Ҳулагу Ариқту⁵⁶⁷ бошлиқ мўғул лашқарини мададга жўнатди. У Илка нўён тарафдан қамалга қўшилди. Узоқ муддат қамал натижасида шаҳар ичида қаттиқ қаҳатчилик турди ва ўлат, вабо тарқалди. Ҳатто аҳолининг аксарияти ўлиб кетди.⁵⁶⁸ 1 йилу 6 ой⁵⁶⁹ мунтазам зарба, қураш ва жанг билан давом этган қамал натижасида улкан мўғул қўшини шаҳарга кирди. 18 ой мобайнида Носир, Ашроф, Муғис ва бошқа мусулмон амирлар ва подшоҳлардан бирортаси ҳаракатга келмади. Бу амирлар фақат вазиятни четдан томоша қилишдан нарига ўтмадилар ва қалбларидаги ҳамиятлари кўзғалиб қўймади ҳам. Вақтики Майяфариқин шаҳри ишғол қилинганида Ҳулағунинг ўғли Ашмут шаҳарнинг амири

⁵⁶⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/395).

⁵⁶⁵ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/511-бет), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (194-бет), Гомидий «Жиҳадул-мамолийк» докторлик рисоласи (90-бет).

⁵⁶⁶ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/511-бет).

⁵⁶⁷ Арақту.

⁵⁶⁸ Гомидий «Жиҳадул-мамолийк» докторлик рисоласи (76-бет).

⁵⁶⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/386).

Комил Муҳаммаднинг аламига алам кўшилсин, деган мақсадда уни тирик колдириб, бутун шаҳар аҳолисини қиличдан ўтказди. Атрофдаги барча ўлкаларга қаршилик қилишнинг оқибатини кўрсатиш учун шаҳарда учига чиққан ваҳшийликларни амалга оширди.⁵⁷⁰

658/1260 йил шаҳар девори йиқитилди, мўғуллар Майяфарикин шаҳрига киришди. Шаҳар аҳолиси қирилиб кетган, фақат 70 кишигина чалажон ҳолатда тирик қолган эди. Сўнгра амир Комил Муҳаммад қўлга олинди.⁵⁷¹

Ашмут Комил Муҳаммадни отаси Хулағунинг олдига олиб бориб, унга топширди. Хулағу бор ғазабини жамлаб, ботир амир Комил Муҳаммад Айюбийдан интиком олди. Дастлаб қўл-оёқларига кишан солиб, чормихга (хочга) тортди, сўнгра баданидан этларини кеса бошлади. Кейин бурнидан тортиб, оғзига ўзининг кесилган этини солиб, ютишига мажбур қилди. Шу тариқа у кишининг жисмидан кесилар ва кесиб олинган эт зўрлаб, бураб оғзига тикилар эди. Бу жирканч, ваҳший қийноқлар мужоҳиднинг руҳи Оллоҳнинг изни билан Яратувчисининг хузурига кўтарилгунга қадар давом этди.⁵⁷² Иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожиъун.

«Оллоҳ йўлидаги жангда ўлдирилган зотларни ҳаргиз ўликлар деб ўйламанг! Йўқ, улар тириклардир! У зотлар Оллоҳ Ўз фазлу карами билан берган неъматлардан хушнуд ҳолларида бахраманд бўлмоқдалар ва ҳали ортларидан етиб келмаган биродарларига ҳеч қандай хавфу хатар йўқлиги ва ғамгин бўлмасликлари ҳақида хушхабар бермоқдалар. Улар Оллоҳ томонидан бўлган неъмат ва фазлу карам ҳақида ҳамда ўзларига жароҳат етганидан кейин ҳам Оллоҳ ва расулига бўйинсунган мўминларнинг ажри — мукофотини Оллоҳ зое қилмаслиги ҳақида хушхабар берадилар».⁵⁷³

Абу Хурайра разияллоҳу анҳудан ривоят қилинади: Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам айтдилар: *«Шаҳид ўлим оғриқ-аччиғидан фақатгина сизлардан бирингизни (искабтопар) чақишидан топганчалик оғриқни топади».*⁵⁷⁴

⁵⁷⁰ Доктор Мунзир «ал-Алақоту ад-Дувалия фи асрил хурубис-салибийя» (2/54).

⁵⁷¹ Гомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (76-бет).

⁵⁷² Ибнул Вардий «Татимматул мухтасар фи ахбарил башар» (2/205–206), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (193-бет), Гомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (76-бет).

⁵⁷³ Оли Имрон: 169–171.

⁵⁷⁴ Термизий ривояти.

Анас ибн Молик разияллоҳу анхудан ривоят қилинади: Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам айтдилар: *«Жаннатга кирган ҳеч бир киши бутун ер юзидаги нарсалар уники бўлиши эвазига ҳам яна дунёга қайтишни истамайди, фақат шаҳид (жаннатда) кўрган ҳурмат-эҳтиромлари боис яна дунёга қайтиб, яна ўн марта ўлдирилишни орзу қилади»*.⁵⁷⁵

Кофирларга қарши курашган амир Комил Муҳаммад ҳам, таслим бўлиб қаршилиқ қилмаган халифа Мустаъсим Биллаҳ ҳам ўлдирилди. Лекин кўлида қилич тутиб, қадди рост ҳолатда ўлиш қаерда-ю, эгик бош-у, таслимдан кўтарилган қўллар ила хорликда ўлиш қаерда?! Жанг майдонида кўксига ўқ қадалиб ўлиш билан жангдан қочиб орқасидан ўқ еб ўлишнинг орасидаги фарқ ҳаммага равшан. Комил Муҳаммад оламлар Раббиси томонидан белгилаб, ўлчаб қўйилган вақтда ўлди. У бу вақтдан бир лаҳза олдин ёки бир лаҳза кейин ҳам ўлмади. Халифа Мустаъсим ҳам белгиланган муддатда ўлди. Шунингдек, умматга хиёнатнинг турфа кўринишларини қилган Носир Юсуф ҳам Оллоҳ таоло белгилаб қўйган муҳлатдагина ўлади. Ундан бир лаҳза олдин ёки кейин ўлмайди. Кўрқоклик харгиз умрни узайтирмайди, шижоат эса уни қисқартмайди. Лекин яқийн иймон қаерда қолди?

Зулмат қоплаган кенг оламда порлаб ёритиб турган нур мисоли бўлган қахрамон амир Комил Муҳаммад Айюбий шаҳид қилинди. Қонхўр Ҳулагу унинг бошини танасидан жудо қилиб, бошини узун найзага ўрнатди, сўнгра найзага тикилган амирнинг боши бутун Шом диёри бўйлаб айлантириб юрилди. Бу билан мусулмонларнинг қалбларига кўркув солиш мақсад қилинган эди. Узилган бошни айлантириш Дамашқда ниҳоясига етди, у бир муддат Дамашқ дарвозаларидан бири бўлган Фародис дарвозасига осиб қўйилди⁵⁷⁶, сўнгра унинг яқинидаги бир масжидга кўмилди. Бундан сўнг бу масжид «Бошли масжид» номи билан танилди.⁵⁷⁷ Комил Муҳаммаднинг ўлими фидокорлик ва шаҳодатда намуна бўлган эди.⁵⁷⁸ Оллоҳ субҳонаҳу ва таолодан у кишини жаннат аҳлидан қилишини сўраб қоламиз.

⁵⁷⁵ Муттафақун алайҳ.

⁵⁷⁶ Ибнул Вардий «Татимматул мухтасар фи ахбарил башар» (2/205–206), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (193-бет), Фомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (76-бет).

⁵⁷⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/386, 387).

⁵⁷⁸ Доктор Мунзир «ал-Алақоту ад-Дувалия» (2/54).

Ҳалабнинг таслим бўлиши

Ҳалабга мўғулларнинг бомбардимони кучайгандан кучайди. Комил Муҳаммаднинг ўлдирилиши ва Майяфариқиннинг ишғол қилиниши мўғул лашкарининг шижоатини оширган айни замонда бундай фожиали зарбанинг натижасида мусулмонларнинг қувватига путур етган, қахрамон Комил Муҳаммад раҳимахуллоҳнинг қатли уларнинг маънавиятларини чўктирди. Шаҳар куршови 7 кун давом этди, холос.⁵⁷⁹ Сўнгра мўғуллар агар халқ шаҳар дарвозаларини очиб берсалар, уларга омонлик ваъда қилдилар. Лекин бошлиқлари подшоҳ Муаззам Туроншоҳ бунинг алдов эканлиги, мўғуллар ҳеч қачон аҳдларига вафо қилмаслиги ва уларга омонлик бермаслигини айтди. Бироқ Ҳалаб халқи Майяфариқиннинг ағдарилиши, амирлари Носир Юсуф уларни ёрдамсиз ташлаб қўйганидан қаттиқ руҳий тушкунликка тушган эди. Уларга атрофдаги бирорта мусулмон амирликлар ёрдам бермади. Холбуки, уларнинг ўзлари ҳам бундан илгари Майяфариқинни ёрдамсиз қўйган эди. Қилмиш қидирмиш, дейдилар. Мана шу тушкунлик халқни таслим бўлишга ундади. Халқнинг аксарияти шаҳар дарвозаларини Ҳулагу учун очиб беришга юзландилар. Лекин бошлиқлари Туроншоҳ ва баъзи мужоҳидлар бундан бош тортиб, шаҳар ичидаги қалъага ўрнашишди.

Мўғул лашкари 658 йил 9 сафар/1260 йил 1 феврал куни⁵⁸⁰ Ҳалаб шаҳрига тўғон бузилганда сув тўфон бўлиб оққанидек, оқиб киришди ва шаҳарни эгаллашдида, одатларига кўра жирканч, хабис ишларни қилишга бел боғлашди. Ҳалаб аҳли амирлари қахрамон мужоҳид Туроншоҳ огоҳлантирган мўғулларнинг бевафоликларини шу он англадилар ва уларнинг кўзлари очилди, аммо энди жуда кеч эди. Сўнги пушаймон ўзинга душман, дейдилар. Мана ҳозир мўғуллар уларнинг бошларидан қилич юргизмоқда, Ҳулагу лашкарига шаҳардаги насронийларни қолдириб, мусулмонларни қатл қилишга амр қилди. Бу иш кумнинг устига кумдан қасрлар қурмоқчи бўлган халқнинг хатоси эди. Шу тариқа Ҳалаб шаҳрида 7 кун⁵⁸¹ (ёки 5 кун)⁵⁸² давомида эркаклар, аёллар ва гўдаклар ваҳшиёна қиличдан ўтказила бошлади ва шаҳар тамоман вайронага айлантирилди. Айтишларича, Ҳалаб шаҳридан асир олинган аёллар ва болалар сони 100 мингдан зиёд эди. Яхудийларнинг

⁵⁷⁹ Ибн Қасир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/395, 396).

⁵⁸⁰ Мақризий «ас-Сулук» (1/511-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (90-бет).

⁵⁸¹ Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (294-бет), Рашидуддин «Сборник летописей» (3/49).

⁵⁸² Мақризий «ас-Сулук» (1/511-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (90-бет).

канисаларида ва маълум кишиларнинг уйларида жон сақлаганлар сони 50 минг киши эди, холос.⁵⁸³

Ҳалаб қалъасининг ишғоли

Ҳулагу қалъани қамал қилишга киришди. Қалъа шиддатли суратда бомбардимон килинди. Ўқ қалъанинг ҳамма томонидан ёғиларди, шунга қарамай мужоҳидлар қарши туриш, ҳимояланиш билан тўлиқ 4 ҳафта туриб бердилар.⁵⁸⁴ Сўнгра қалъа девори кулади, Ҳулагу қалъага кириб, уларнинг амири подшоҳ Муаззам Туроншоҳдан бошқа барчани қатл қилди. Уни Комил Муҳаммад каби қатл қилмади, балки унинг жонини сақлаб қолди. У кишининг ёши улуг бўлиб, бу ҳодисадан бир неча кундан сўнг оламдан кўз юмди.⁵⁸⁵ Бу ўринни изоҳлаб баъзи шарқшунослар ва илманийлар шундай деганлар: «Ҳулагу ёши улуг Туроншоҳнинг шижоатига қоил қолганидан, уни тирик қолдирган эди. Бу эса, фотиҳ Ҳулагунинг мардлиги ва олийжанаблигидир». Мен эса, Ҳулагу у доворакка Оллоҳ йўлида қийналиб мардонавор жон беришдай лаззатни раво кўрмаган, аксинча марднинг юраги тириклай мағлубиятни кўрса янада қаттиқроқ азобланишини билиб шундай қилганида шубҳа қилмайман.

Ҳулагу шунчалар разиллик ва жиноятларни қилгандан кейин ҳам, уни олийжаноб ва мард саркарда, деб сановчиларнинг борлиги жуда ажабланарли ва айна пайтда бу ақлга зиддир! Бу сифатлар Ҳулагуга мутлақо номуносиб. Уни ҳеч қачон исёнчилар қойил қолдирмаган, шунингдек, у олийжаноб ва мардлик каби рижоллар сифатланадиган сифатлар билан ҳаргиз ва ҳаргиз васфланмаган. Ҳулагу Туроншоҳни бундан бошқа жирканч мақсад ва ғаразлар сабабидан ўлдирмаган эди. Бу бир томондан маккорона сиёсий ўйин бўлиб, бутун Шом бўйлаб тарқалган Айюбийлар ғазабидан сақланишнинг бир йўли эди. Алҳол, Ҳулагу бундан бироз олдин Комил Муҳаммад Айюбийни қатл қилган, шунингдек, уларнинг кўпи Ҳулагу билан иттифоқчилик алоқаларини ўрнатган эди. Жумладан, дўстлашганлар орасида Ҳимсининг амири Ашроф Айюбий ҳам бор эди. Агар у Айюбийларнинг бошлиқларини бирин-кетин ўлдираверса, уларнинг ғазабларига дучор бўлиши турган

⁵⁸³ Ибнул Вардий «Татимматул мухтасар фи ахбарил башар» (2/291, 291), Макризий «ас-Сулуқ» (1/511-бет), Ғомидий «ЎЖиҳадул-мамолийк» докторлик рисоласи (90-бет).

⁵⁸⁴ Ибн Касир «ал-Бидаятун ван-Ниҳоя» (17/396), Абул Вафо «Мухтасар фи ахбарил башар» (201-бет), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (294-бет), Сиржоний «Қиссагут-татар» (191-бет).

⁵⁸⁵ Макризий «ас-Сулуқ» (1/511-бет).

гап эди. Ҳулагу эса, Шомдаги вазият тескари айланиб кетишини истамасди.

Бошқа томондан, у Туроншоҳни тирик қолдириш билан ўзининг ўта мулойим ва меҳрибон, тинчликпарвар, олийжаноб ва мард саркардалигини исботлагандай эди гўё. Бу билан мусулмон амирларга қаршиликсиз таслим бўлиш эшикларини очишни истади. Ўзига қарши бош кўтарган исёнчи амирни тирик қолдиргандан кейин, ўзи таслим бўлиб келган амирни қандай қаршилаши мумкинлигини кўрсатиб қўймоқчи эди.

Яна бошқа жиҳатдан, Туроншоҳ Дамашкнинг хоин ҳокими Носир Юсуфнинг амакиси эди. Унинг тирик қолиши, Ҳулагу учун келажакда Носир Юсуф билан савдолашиш воситаси бўлиши эҳтимолдан холи эмасди. Юқорида ишора қилинган вазлар, қонхўр Ҳулагунинг табиатига жуда мосдир.

Ҳулагу Ҳалабга етиб келди. Шаҳар унга бўйсундирилди, ҳамма қаршиликлар бартараф этилиб, шаҳарнинг барча девор ва қалъалари вайрон қилинди. Сўнг Ҳулагу Шомнинг бошқа ерларига боришни истади ва унинг иттифоқдошларидан бўлган Ҳимс амири Ашроф Айюбийни ҳузурига чорлади. Ҳулагу унга ғайриоддий марҳамат кўрсатди, яъни унга Ҳалаб шаҳрининг султонлигини тақдим қилди.⁵⁸⁶ Носир Юсуф ҳижрий 646 йил бу жойларни ундан тортиб олган эди. Шунингдек, Ҳулагу уни Шом минтақасига ноиб қилди.⁵⁸⁷ Бу билан Ҳулагу унинг дўстлигини тамоман сотиб олди. Бироқ Ҳулагу ўзининг нозик, мўғулий марҳаматини ҳам унутмади, унинг ёнига мўғул саркардаларидан бирини қўйди. Шундай қилиб, Ашроф Айюбий Ҳалаб шаҳрига ҳоким бўлди, лекин у халқнинг назаридагина ҳоким манзилатида эди, асосий буйруқ ва қарорлар мўғул аскарлари томонидан қабул қилинар эди.

Ҳалаб ишғол этилгандан сўнг, Ҳулагу ғарбга Ҳалабдан 50 км узоқликдаги Ҳарим шаҳрига қараб юрди. У бу шаҳарга етиб келиб, уни қамал қилди. Мўғуллар шаҳар қўргонини бузиб шаҳарга кирди ва унинг халқини битта қўймай қиличдан ўтказди.⁵⁸⁸

⁵⁸⁶ Ибнул Вардий «Татимматул мухтасар фи ахбарил башар» (2/292), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (295-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (92-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (192-бет).

⁵⁸⁷ Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (295-бет).

⁵⁸⁸ Рашидуддин «Сборник летописей» (3/50), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (295-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (192-бет).

Бундан сўнг Ҳулагу нима қарорга келди? Ҳалаб эгалланди, навбатда Дамашқ турибди, Дамашқда эса, Носир Юсуф қўшин тўплаб турибди. Унинг иши нима бўлади, келинг бунга ўзингиз гувоҳ бўлинг...

Ҳулагунинг амирларга муомаласи

Ҳулагу Ҳалаб ва Ҳарим шаҳарларини ишғол қилгандан сўнг, ғарбга Туркиянинг жанубида жойлашган Антакия амирлигига қараб йўл олди. Бу амирлик Ҳулагунинг иттифокдоши насроний амир Бухмандга қарашли эди. Ҳулагу Антакия шаҳридан ташқарида ҳарбий лагер ўрнатди, сўнгра барча ҳамкорларини янги Ўрта Шарқ вазиятининг музокараси учун қурилган қурултойга чақирди. Барча минтақалардан мўғул иттифокдошлари Ҳулагунинг ҳузурига равона бўлишди. Жумладан, Арманистон подшоси Ҳайсум, Антакия амири Бухманд, Салжуқий амирлари Кай Ковус II ва унинг укаси Рукниддин Қилич Арслон IV лар келишди.

Мажлисида Ҳулагу бирма-бир қарор ва буйруқлар мажмуасини санай бошлади:

➤ Бағдод, Майяфариқин ва Ҳалабнинг ишғолида ёрдамни дариг тутмагани учун Арманистон подшоси Ҳайсумни Ҳалабдан тушган ғаниматлардан катта мукофот билан тақдирлади.⁵⁸⁹

➤ Ҳулагу икки султон, яъни салжуқий амирлари Кай Ковус ва Рукниддин Қилич Арслон зарарига ҳукм ўқиди. Бу ҳукм, илгари мусулмонлар арманлар билан жанг қилиб, фатҳ қилган шаҳар ва қалъаларни Арманистон подшосига қайтариб бериши эди.⁵⁹⁰ Бу қарорга иккала султон ҳам эътироз билдиришга ҳадлари сиғмади.

➤ Ҳулагу ўзини қўллаб-қувватлагани учун Антакия амири Бухмандга мусулмон Лазиқия шаҳрини тақдим қилди.⁵⁹¹ Чунончи, бу шаҳар салибчилар қўлидан Салоҳиддин Айюбий замонларида озод қилинган ва ўша лаҳзадаёқ мусулмон бўлган эди. Энди эса, бир оғиз калима билан насронийларга топширилди. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

➤ Ҳулагу томонидан берилган бу қарор жуда ғаройиб эди. Унда Антакия ва Арманистон подшоҳларининг зарарига ҳукм қилинди. Бу

⁵⁸⁹ Абдуссалом Фаҳмий «Тарих ад-давлат ал-мўғул фи эрон» (141-бет), Саййод «Ал-мўғул фит-тарих» (1-жилд, 294, 295-бет).

⁵⁹⁰ Абдуссалом Фаҳмий «Тарих ад-давлат ал-мўғул фи эрон» (141-бет), Саййод «Ал-мўғул фит-тарих» (1-жилд, 294, 295-бет).

⁵⁹¹ Абдуссалом Фаҳмий «Тарих ад-давлат ал-мўғул фи эрон» (141-бет), Саййод «Ал-мўғул фит-тарих» (1-жилд, 294, 295-бет).

қарор бундан буён тизгин уларнинг янги саййидлари Ҳулагунинг қўлида экани ва иттифокдош амир ва подшоҳларнинг ҳеч ким эмаслигига урғу бериш ҳамда Ҳайсум ва Бухмандлар биз Ҳулагу билан тенг ҳуқуқлимиз, деган ўйларининг хомхаёл эканини исботлаш йўлида қилинган тадбир эди. Бу қарор, Антакия канисасига (черковига) янги патриарх тайинлаш қарори эди. Аслини олганда бу иш насронийларнинг вазифаси ҳисобланар, Ҳулагунинг эса насронийликдан хабари ҳам йўқ эди. Лекин у эски патриархни вазифасидан олиб, янгисини қўйиш қарорини берди. Устига-устак янги патриархни Юнонистондан олиб келишини билдирди, яъни бошқача қилиб айтганда католиклар канисасига ортодоксал йўналишдаги патриархни бошлиқ қилишини айтди. Бу насронийлар тарихида учрамаган ўта хатарли ҳодиса эди. Католик ва ортодоксал (православ) тоифалари орасидаги муносабатнинг жуда кескинлиги ҳаммага маълум. Ҳулагу италиялик роҳиб ўрнига юнонистонлик роҳиб Юмнимиусни тайин қилди.⁵⁹² Шомдаги барча канисалар католик мазҳабида эди. Ҳулагунинг бундай йўл тутиши замирида бир неча сабаблар ётарди:

Биринчи: Ўзларини бош деб санамасликлари учун Арманистон ва Антакия амирларининг попугини пасайтириб қўйиш.

Иккинчи: Минтақада ғалаёнлар юзага келиши, яъни бу жойлардаги амир ва подшоҳларнинг доимий мурасасиз бўлишига муҳит яратиш.

Учинчи: Ҳулагу маълум бир муҳлатга буюк Византия давлати императори билан мураса қилишни ихтиёр қилган эди. Мусулмон ўлкаларни забт этиб бўлгандан сўнг, уни ҳам эгаллашни дилида сақлагани ажабланарли эмас.⁵⁹³

Католикларнинг устига ортодоксал йўналишдаги патриархни келтирилишига Антакия амири эътироз билдира олмади. Салиб амирликларининг бунга қаршилиги эса бирор қийматга эга эмасди.

Ҳамах шаҳрининг таслим бўлиши ва мўғулларнинг Дамашқ сари отланиши

Ҳулагу Суриянинг шимоли ҳамда Туркиянинг жанубини эгаллади. Даставвал жанубга юриб, Ҳамах⁵⁹⁴ шаҳрини қўлга киритишни, сўнгра унинг ордидан Ҳимс⁵⁹⁵ шаҳрига юришни режа қилди. Ҳимс шаҳри хоин

⁵⁹² Сиржоний «Қиссатут-татар» (193, 194 -бет).

⁵⁹³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (194 -бет).

⁵⁹⁴ Рус. Хама.

⁵⁹⁵ ҲИМС — Суриянинг ғарбий қисмидаги шаҳар. Ҳимс муҳофазасининг маъмурий маркази. «Ўзбекистон Миллий энциклопедияси» («Ҳ» харфи бўлими).

амир Ашроф Айюбийнинг ўлкаси эди. Ҳулагу Ҳимсдан кейин Дамашкнинг шимолига — Носир Юсуфнинг ишини битириш учун юришни қасд қилди. Мўғул лашкари жануб сари ҳаракатлана бошлади. Шу вақт Ҳамаҳ шаҳри аъёнлари ва катталаридан иборат вафд Ҳулагунинг ҳузурига келиб, шаҳар калитларини топширишди. Ҳулагу уни қабул қилиб, шаҳарга омонлик берди.⁵⁹⁶ У бу иши билан бошқа шаҳар ва қалъаларни ҳам қаршиликсиз таслим бўлишларига қизиқтирган эди.

Ҳулагу Ҳамаҳ шаҳрини тарк қилиб, дўсти Ашроф Айюбийнинг мамлакати Ҳимсга қараб юрди, бироқ унга ҳам кирмасдан тўғри Дамашк сари отланди. Чунончи, Ҳимс билан Дамашк орасидаги масофа бор-йўғи 120 км эди. Бу орада амир Носир Юсуфга шумхабар келди. Бу хунук хабар қўрғонли Майяфариқин амирлигининг ишғоли ва унинг амири Комил Муҳаммаднинг қатли, Ҳалаб ва Ҳаримнинг забт этилиши ҳамда Ҳамаҳ ва Ҳимснинг таслим бўлиши эди. Шунингдек, у Ҳулагунинг навбатдаги қадами Дамашк эканини жуда яхши биларди.

Ҳулагу Дамашк халқига элчилар юборди. Элчилар шаҳарга 658 йил 17 сафар/1260 йил 9 феврал душанба куни кириб келишди. Пешин намозидан сўнг шаҳар халқига таслим бўлиши муқобилида омонлик ваъда қилинган фармон ўқилди.⁵⁹⁷ Шунда Дамашк аҳлидан баъзи катта аъёнлар ва амир Зайниддин Ҳофизий бошлиқ халқ Ҳалабнинг куни бошимизга тушмасдан олдин таслим бўлайлик ва мўғуллардан омонлик талаб қилайлик, дейишди. Аммо Рукниддин Бейбарс Бундукдорий бошлиқ Баҳрий мамлуклар ва шаҳар аҳлининг баъзилари бу фикрни рад қилишди. Қалбида исломий ҳамияти жўш уриб турган Бейбарс, амир Зайниддинни «Мусулмонларнинг ҳалокатига сизлар сабабчисизлар», дея маломат қилди. Амир Носир Юсуф эса, амир Зайниддиннинг фикрини маъқул кўрди. Шунда Бейбарс Баҳрий мамлукларга Носир Юсуфни ўлдириб, қалбида иймони, уммат ғами ва ҳамияти бор одамни амир қилиш қарорини берди. Бундан хабар топган Носир Юсуф Дамашк қалъасига беркинди. У Бейбарс ва Баҳрий мамлукларни Ғазога кетганидан хабар топгандан сўнг қалъадан чиқди.⁵⁹⁸

Кўрқоқликда машҳур Носир Юсуф нима қиларини билмай довдираб қолди. Ваҳоланки, ўзи мўғулларга қарши уруш эълон қилиб қўйган эди.

⁵⁹⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/396), Ибнул Вардий «Татимматул мухтасар фи ахбарил башар» (2/289–290), Сабкий «Тобақот аш-шафиъйя» (8/275), Ғомидий «Ҷихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (97-бет).

⁵⁹⁷ Сабкий «Тобақот аш-шафиъйя» (8/275), Ғомидий «Ҷихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (93-бет).

⁵⁹⁸ Ғомидий «Ҷихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (94-бет).

Энди нима қилиш керак, деган ўй унинг ич-ичини кемира бошлади. У ўйлар оламида кўп ҳаялламасдан, армия сардорлари ва катталарини тўплаб мажлис қурди. Машварат тортишув ва баҳслар билан узок чўзилди, охири шаҳарни ҳимоя қилолмаймиз, қочишдан бошқа чора йўқ, деган қарорни ёқлаб чиқишди. Аслини олганда шаҳарнинг ҳимояси хақида гап-сўз бўлмади, десак муболаға бўлмас. Амир Носир Юсуф, унинг амирлари ва армияси Дамашқ шаҳри ва унинг халқини ҳимоясиз, ёрдамсиз ҳолатда ташлаб, ўзлари қочиб қолиш қарорига келишди. Носир Юсуф 658 йил сафар/1260 йил феврал ойининг ўрталари жума куни ўзига эргашганларни олиб, Барзадан Ғазага отланди. Мустаҳкам кўрғонли буюк шаҳар амирларсиз ва тамоман ҳимоясиз қолди.⁵⁹⁹ Иннаа лиллаҳи ва иннаа илайҳи рожиъун.

Носир Юсуф Ҳалабга 23 йилу 7 ой, жумладан Дамашққа 50 кун кам 10 йил волийлик қилган эди.⁶⁰⁰

⁵⁹⁹ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/511-бет), Абул Фадо «ал-Мухтасар фи ахбарил-башар» (3/209–210), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (295–296-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (95-бет).

⁶⁰⁰ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/511-бет).

ДАМАШҚНИНГ ТАСЛИМИ

Дамашқ халқи эсанкираб қолди, чунки амирлари ва мунтазам армия шаҳарни ташлаб қочиб қолган, мўғул лашкари бир неча кундан кейин етиб келади ва ҳеч кимни аямайди, хўлу-куруқ бирор нарсани саломат қўймайди. У ҳам етмагандай, халқ урушга тайёргарлик кўрмаган ва жанг сирларидан беҳабар эди. Шу боис Дамашқ аҳли саросимага тушиб, нима қиларини билмай қолди. Шунда Дамашқ аъёнлари ва катталари жамланишди ва Ҳамаҳ халқи қилганидай, улар ҳам шаҳар дарвозалари калитларини Ҳулагуга топшириш муқобилида омонлик сўраш қарорига келишди. Озгина мужоҳидларни демасак, бошқа барча ушбу қарор тарафдори бўлган эди. Ўша оз сондаги мужоҳидлар Дамашқ қалъасини ўзларига қўрғон тутиб, охириги лаҳзагача туриб беришди.

Ҳулагунинг Ҳамаҳ шаҳрига берган омонлиги ўз самарасини бера бошлаган эди. Дамашқ ҳам жанг-жадалсиз таслим йўлини танлади. Дамашқ аъёнларидан иборат делегация Ҳулагунинг ҳузурига келиб, совға-саломлар билан шаҳар калитларини таслим қилишди ва итоатларини изҳор қилиб, омонлик талабида бўлишди.⁶⁰¹

Бирок Ҳулагу бу вафдга бироз ишонқирамади ва саркарда Китбугани Дамашқда ҳақиқатда аҳвол қандайлигини билиш учун жўнатди. У шаҳарга келганида халқ ундан омонлик сўради, сўнгра у шаҳар аъёнларини такрор Ҳулагунинг ҳузурига йўллади. Шаҳарда мусулмонларнинг ҳолати шу қадар тубанликка етгани ва ақалли бир киши ҳам бош кўтармаганидан тарихчи Рашидуддин ҳодисани шундай тасвирлайди: «Мўғуллар шаҳарга бирор муҳосара ва жанг-жадалсиз кириб бордилар»⁶⁰², яъни мўғулларнинг мушугини пишт дейдиган одамнинг ўзи бўлмади. Сўнгра Ҳулагу шаҳарга бир гуруҳ мўғулларни ҳамда шаҳар аҳлидан уч кишини бошқарувга тайин қилди.⁶⁰³

⁶⁰¹ Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 307, 308-бет), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (296-бет), Фомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (96-бет).

⁶⁰² Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 307, 308-бет)/ «Сборник летописей» (3/50).

⁶⁰³ Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 307, 308-бет)/ «Сборник летописей» (3/50), Фомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (96-бет).

Дамашқ калъаси қамал қилиниб, атрофига тошотар қуроллар ўрнатилиб ўққа тутилди. Ва ниҳоят шу йилнинг жумодул-аввал ойининг ўртасида бўйсундирилди ва ундаги бор нарса талон-тарож қилинди.⁶⁰⁴

Мўғул хоқони Мангухоннинг ўлими ва мўғулларнинг дамашққа киришлари

Хулагу Дамашққа боришга энди шай бўлиб турганда кутилмаган ходиса юз берди, бу ходиса мўғуллар учун катта мусибат эди. Мўғуллар учун нохуш, бутун олам учун хушxabар бўлган бу ходиса мўғул хоқони Мангухоннинг ўлими эди. Мангухоннинг укаси ҳамда мўғул хонлигига номзод Хулагу Дамашққа кириш ё кирмаслигини билмай қолди. Зеро, Хулагу кенг миқёсда ғалаба қозонган, мусулмонлар тарихида ўчмас қора из қолдирган, Аббосийлар хилофатини ағдарган шахс эди. Хулагу Шом ва унинг атрофидаги минтақалар ҳокимлиги эмас, бутун бошли мўғул империясига ҳукмрон бўлиш ҳавасида лашкарини ташлаб, ўзи Қорақурумга шошилди.⁶⁰⁵ У Эроннинг Табриз шахрига етганида ўзи учун каттиқ зарба бўлган воқеадан хабардор бўлди, мўғул давлати хоқонлигига акаси Қубулой сайланган эди. Шунда у Қорақурумга бўлган сафаридан воз кечди, Шомга ҳам қайтмади. Табризда туриб, эгаллаган кенг мамлакатдаги вазиятни кузатиб туришга қарор берди.

Хулагу Шомдаги мўғул лашкарига Китбуга нўённи ўринбосар қилиб қолдирган эди. У Дамашқ аъёнларидан олган шахар қалитлари эвазига Дамашқ аҳлига омонлик берди ва лашкари билан буюк шахар Дамашқ сари йўл олди. Бир пайтлар Умавийлар хилофатининг пойтахти бўлган Дамашқ, Аббосийлар пойтахти Бағдод сингари ишғол қилинди. Дамашқ Ислом оламидаги катта шахарлардан бири бўлибгина қолмай, энг муҳим жиҳод майдони ва юксак илм даргоҳи ҳам эди. Дамашқ мўғул лашкарига тўлди, улар сафар ойининг охирларида бирор қаршилиқ ва жанг-жадалсиз шахар дарвозаларидан хотиржам кириб келишган эди.⁶⁰⁶

Ох, Шомнинг дури гавҳари! Ох, Ислом оламининг қалби!

Убайда ибн Жарроҳ қани?

Холиб ибн Валид, Язид ибн Абу Суфён, Амр ибн Ос, Шурахбил ибн Ҳасана разияллоҳу анҳумлар қани?

⁶⁰⁴ Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (296-бет).

⁶⁰⁵ Рашидуддин «Сборник летописей» (3/50), Сиржоний «Қиссатут-татар» (198–199-бетлар).

⁶⁰⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/396).

Бундан олти аср олдин бу кўрғонли шаҳарни фатҳ қилган фотихлар қани?

Бу ўриндан туриб бутун дунёга ҳукм қилган Муовия разияллоху анху қани?

Бани Умайя халифалари қани?

Галаба ва фахрий жанглари билан тилларда дoston бўлган Имоуддин Зинкий ва Нуриддин Маҳмудлар қани?

Айни дамда Дамашқ тупроқларида ётган Салоҳиддин Айюбий-чи?

Кунлар ўтиб, мусулмонлар тушларида ҳам кўрмаган ишларга гувоҳ бўлишади. Насроний амирларидан учтаси лашкар бошида мағрурона Дамашқ дарвозаларидан кириб, буюк Ислоом шаҳри кўчаларида викор билан айланиб юришларига гувоҳ бўладилар. Мўғул лашкари олдида уларнинг сардори насроний Китбуга нўён ва унинг ҳамроҳлари Арманистон подшоси Хайсум билан Антакия амири Бухманд кириб келишади.

14 хижрийда ислomий фатҳлар бўлган кезлар Рум қайсари Ҳиракл замонида Румон лашкарининг амирлари Дамашқни тарк қилгандан буён, бу шаҳарга илк бор насроний амирларнинг қадам қўйиши эди.⁶⁰⁷ Ва лаа хавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Мўғуллар қалъани ўзларига кўрғон қилган мужоҳидлардан бошқа ҳеч кимни ўлдирмадилар. Дамашқ 658 йил сафар ойининг охирлари/1260 йил феврал ойида, яъни Бағдод ағдарилганидан икки йилдан сўнг ишғол қилинди.⁶⁰⁸ Бу икки йил мобайнида мўғуллар Ироқ, Туркия ва Суриянинг бир қатор шаҳарларини забт этишди.

Китбуга 658 йил 6 рабиул-аввал/1260 йил 27 феврал кечкурун Ҳулагудан фармон олиб, мужоҳидлар кўрғон қилган қалъани қамал қилишга киришди. Қалъа атрофига 20 дан ортиқ манжаниклар ўрнатиб, қалъани ўққа тутди. Ва ниҳоят, шу йилнинг 22 жумодул-аввал, яъни 12 май куни қалъани ишғол қилишди.⁶⁰⁹ Ундаги ҳамма нарсаларни бузиб, вайрон қилишди. Мужоҳидлар бошлиғи Бадриддин ибн Муҳаммад Қормажоҳ ва унинг ёрдамчиси Жамолиддин ибн Сайрафий Ҳалабийни қўлга олиб, қатл қилишди.⁶¹⁰

⁶⁰⁷ Саййид ал-Урайний «Ал-мўғул» (248-бет).

⁶⁰⁸ Сиржоний «Қиссатут-татар» (201-бет).

⁶⁰⁹ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/513-бет), Ғомидий «Ҷихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (97-бет).

⁶¹⁰ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/397).

Дамашқда насронийлар ҳукмронлиги

Мўғуллар Дамашқ шаҳрини насронийлар воситасида идора қила бошлади. Насронийларни улуғлаб, уларга ҳурмати баланд бўлган Эбел Сиян исмли мўғул шаҳар бошқарувига қўйилган эди. Дамашқ ўз тарихида жуда ғаройиб даврни бошидан кечира бошлади. Ибн Касир раҳимаҳуллоҳ «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*»да бу ҳолат тафсилотини шундай тасвирлайди: «Эбел Сиян насроний епископ ва руҳонийларни тўплаб, уларни жуда улуғлади ва канисаларини зиёрат қилди. Унинг юзидан улар ҳам давлат, ҳам савлат топдилар. Улардан бир гуруҳи совғасаломлар билан Табризга Ҳулагунинг ҳузурига боришди. Ҳулагу уларни чиройли қаршилади, сўнгра улар ҳадяларни тақдим қилиб, эвазига ундан омонлик олишди».⁶¹¹

Улар Дамашқнинг Тумо эшиги⁶¹²дан қўлларида ёғочга ўрнатилган хоч билан киришди. Улар хочларини баланд кўтариб олишган ва «Тўғри дин бўлмиш Масих дини ғолиб бўлди», деган ўзларининг манфур шиорларини айтган ҳолатда кириб келишарди.⁶¹³

Ислом дини ва мусулмонларни хўрлаган ҳолатда хамр (ароқ) солинган идиш ва шишаларни кўтариб олиб, бирор масжид ёки мусулмонларнинг олдидан ўтсалар, идишдаги бу нажас — хамрни унинг эшиклари ёки мусулмонларнинг юзларига сепмасдан ўтмас эдилар. Бу ходиса муборак ой рамазон кунларига тўғри келган эди.⁶¹⁴ Кўча-қўй ва бозорларда юрган мусулмонларни хочлари қаршисида қад ростлаб туришига буюрар эдилар. Уларнинг хатиби бозорнинг бир бурчагидаги дўконнинг қаршисида келиб, насронийлик динини мадҳ этиб, Ислом дини ва мусулмонларни мазаммат қилди. Сўнгра улар масжидга киришди, киришларидан олдин унинг эшикларига май сепишди. Шунда мусулмон қозилар, гувоҳлар ва фақиҳлар Эбел Сианга шикоят қилиб, унинг ҳузурига боришди. У мусулмонларни хўрлаб, насроний катталарининг сўзини уларга тақдим қилиб, баъзиларини уриб ҳузурдан қувиб солди.⁶¹⁵

⁶¹¹ Ибн Касир «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*» (17/397, 398).

⁶¹² Бу эшик қадимги Дамашқ дарвозаларидан бири бўлиб, шаҳарнинг шимоли-шарқий томонида жойлашган ва унинг номи 12 насроний элчилардан бири бўлган Сент Томаснинг шарафига қўйилгандир.

⁶¹³ Ибн Касир «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*» (17/398).

⁶¹⁴ Мақризий «*ас-Сулук*» (1/512-бет), Заҳабий «*Дувалул-ислам*» (2/125), Саййод «*ал-Мўғул фит-тарих*» (296-бет).

⁶¹⁵ Ибн Касир «*ал-Бидаяту ван-Ниҳоя*» (17/398, 399), Заҳабий «*Дувалул-ислам*» (2/125), Саййод «*ал-Мўғул фит-тарих*» (296-бет).

ФАЛАСТИН ИШҒОЛИ

Сўнгра Суриядаги мўғул сардори Китбуга нўён лашкаридан бир қисмини Фаластинга жўнатди. Бу мўғул лашкари Фаластинни ишғол қилди, сўнгра Наблус⁶¹⁶ ни қўлга киритди. Кейин мўғул қўшини Фаластиндан ўтиб, деярли қаршиликсиз Ғазо шаҳрини ишғол қилди.⁶¹⁷ Лекин улар Сурия ва Ливанда насроний амирликларига тегмаганларидек, Фаластиндаги салиб амирликларига ҳам яқинлашмади. Шундай қилиб, Фаластин мўғуллар ва насронийлар орасида тақсимланди. Мўғуллар Фаластинни ишғол қилган ондан эътиборан, улар бутун Ироқ, Туркиянинг катта худудлари, Сурия, Ливан ва Фаластинни эгаллаган эдилар. Буларнинг барчаси атиги икки йил, яъни 656–658/1258–1260 йиллар орасида юз берди.⁶¹⁸

⁶¹⁶ Ёки Набулус.

⁶¹⁷ Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (296–297-бет).

⁶¹⁸ Сиржоний «Қиссатут-татар» (204-бет).

**ТЎРТИНЧИ БЎЛИМ:
АЙН-ЖАЛУТ ҒАЛАБАСИ ВА МЎҒУЛ
ҚУВВАТИНИНГ СИНДИРИЛИШИ**

МИСР МЎҒУЛЛАР ҚАРШИСИДА

Мўғулларнинг навбатдаги қадами Миср эди. Уларнинг олдида Миср худудигача бор йўғи 35 км масофа қолган эди, холос. Ўша пайтлар Миср Мамлуклар ҳукмида эди. Мўғулларнинг Мисрга юриш қилишларининг бир неча сабаблари бор эди:

➤ Мўғулларнинг босқинчилик сиёсати. Бундан маълум бўладики, улар бир давлатни босиб олсалар, албатта, бошқасига ўтардилар. Энди уларнинг навбатдаги қадами Фаластиннинг ён қўшниси Миср диёри эди.

➤ Ислом олами ичида мўғулларга таҳдид солиш қувватига эга бўлган биргина Мисрнинг қолган эди. Хоразм давлати, Бағдод, Ҳалаб, Дамашқ ва бошқалар маҳв этилди. Ислом оламидаги охирги бекат Миср минтақаси бўлиб, борди-ю у ҳам забт этилса, Ер куррасида мусулмонларнинг қадри қолмаслиги турган гап эди.

➤ Миср ўта муҳим стратегик мавқега эга эди. Миср қадимдан дунё марказларидан бўлиб, у орқали тижорат йўллари ўтган эди.

➤ Миср Африканинг эшиги ҳисобланарди. Агар Мисрни қўлга олсалар, мўғуллар шимолий Африкани бутунлай қўлга киритар эдилар, чунки ўша дамлар шимолий Африка айтарлик қувватга эга эмасди.

➤ Миср аҳолисининг кўплиги. Ўша вақтларда Мисрнинг аҳолиси бошқа Ислом минтақаларига қараганда анча кўп эди. Бу эса ўз навбатида ҳар қандай душманга ҳақиқий хатарни туғдириши табиий эди.

➤ Миср аҳлида юксак диний ҳамият ва исломий сергаклик мавжуд эди. Мўғуллар қўрққан нарса ҳамиятли, ғурурли ва исломий жиҳатдан уйғоқ халқ орасидаги ғажур, исломни ардоқлаган солиҳ мужоҳидлардан бири уларга бош бўлиб, вазиятни ўзгартириши ва мўғулларни бу минтақаларга киришини ман қилиши мумкин эди.⁶¹⁹

Мисрдаги ҳолат

Мўғулларнинг Мисрга ҳужум қилишига доир воқеалар ҳақида сўзлашдан олдин, Миср минтақасидаги ҳолат ва Мамлуклар тарихига оид маълумотларни зикр қилишни лозим топдик. Бунинг тафсилоти янги мавзуга киришимизни тақозо қилади. Оллоҳ таолодан тавфиқ сўраган ҳолда унинг изоҳига киришамиз, иншаоллоҳ. Дарҳақиқат, Ислом

⁶¹⁹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (205, 206-бет).

тарихида чуқур из қолдирган Мамлуклар давлати тарихидан нафақат омма мусулмонлар, ҳатто зиёлий мусулмонларнинг аксарияти ҳам беҳабардир. Бунинг бир неча сабаблари бор. Жумладан, Мамлуклар давлати пайдо бўлган кезларда Ислом уммати катта бўлиниш ва тарқоқликка юз тутган ҳамда унинг ичида кўплаб амириклар ва давлатчалар юзага келган эди. Тарихнинг бу даврини ўрганиш ўқувчидан зўр бериб тиришишни талаб қилади. Чунки Мамлуклар фақат маъруф бўлган бешта ёки олтита шаҳаргагина ҳукм юргизган. Уларнинг пайдо бўлиши Ислом оламининг бир қатор жойларида пайдо бўлган амириклар билан ҳамоҳанг бўлган ва Мамлуклар тарихини билиш учун улар билан замондош бўлган ҳамда у билан бирга тарихий воқеаларни бошдан кечирган бу минтақаларнинг барчасини ўрганиш зарур бўлади. Бу эса, шубҳасиз мураккаб ва ўзига яраша машаққат ҳам.

Мусулмонларнинг Мамлуклар тарихини билишдан узоқ бўлишларига олиб келган сабаб ва омиллардан яна бири, Мамлуклар давлатида волий ва султонларнинг кўп бўлганидир. Агар бир волий ёки султон узоқроқ муддат бошқарув курсида ўтирса, бу даврни яхшироқ фаҳмлаш мумкин. Аммо султонларнинг тинимсиз алмашилиб туриши ўша даврни билишни қийинлаштиради. Мамлуклар давлатининг аввали айнан шундай бўлган. Бу давлатни бир неча босқичларга бўлиш мумкин, унинг илк босқичи «ал-Мамолийк ал-Бахрия» давлати деб аталган ва 144 сана давом этган. Бу даврда 29 та султон ўтган, яъни ўрта ҳисобда ҳар 5 йилда давлат бошлиғи алмашиб турган.⁶²⁰ Бу билан ҳар бир султон қатъан 5 йилдан ҳоким бўлди, демоқчи эмасмиз, уларнинг ичида бир неча йиллар ёки бир-икки йил султон бўлганлари бўлган, албатта. Лекин шу муддатда ўшанча ҳоким ўзгарганини айтмоқчимиз, бу эса ўша даврнинг тарихини ўрганишни қийинлаштириши аниқ. Ҳаммасидан ҳам Мамлуклар тарихининг мавҳумлашишига олиб келган сабаб — Ислом тарихини сохталаштиришдир. Шарқшунослар ва уларга мафтун ҳолатда эргашган баъзи мусулмонлар бу сохталикни бўрттириб юбордилар. Чунончи, Мамлуклар Ер қурраси тарихида, айниқса, Ислом тарихида ўта муҳим ва порлоқ муваффақият соҳиблари бўлишига қарамай, бу шарқшунослар улар ҳақидаги маълумотларни нотўғри талқин қилиб, бузиб кўрсатдилар. Бу муваффақиятларнинг энг муҳими — Мамлуклар давлати Ислом умматини парчалаб ташлашга бел боғлаган Ер юзидаги икки қувват: Мўғул ва салиб қувватларига катта тўсиқ бўлиб келганидир. Мамлуклар тарихининг турли босқичларида бу икки тажовузкор гуруҳларга қарши мунтазам жанг қилиб келди.

⁶²⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (207-бет).

Мамлуклар давлати Ер юзида роппа-роса 270 йил Ислом байроғини кўтариб келди. Усманийлар хилофати мусулмонлар байроғини кўлга олгунча уни баланд кўтардилар. Мамлуклар қиссасига киришдан олдин бироз орқага қайтамиз, яъни Мисрда ҳукм юргизган Мамлуклар давлатидан олдинги Айюбийлар давлати ҳақида озроқ тўхталамиз.

АЙЮБИЙЛАР ДАВЛАТИГА ЧИЗГИЛАР

Айюбийлар давлатига 569/1174 йил Ислом оламининг буюк қахрамони Салоҳиддин Айюбий раҳимаҳуллоҳ асос солган эди. Бу саналар ниҳоятда аҳамиятлидир, буларни ҳар бир мусулмон кишининг билиши фойдадан холи бўлмайди. Салоҳиддин Айюбий бу давлатни оламдан кўз юмгунича, яъни 589/1193 йилгача 20 йил мобайнида бошқариб келди. Ўша дамлар Миср ва Шом ўлкалари бир бутун давлат эди. У киши буюк иқтидор билан салиб подшоҳликларига қарши жанг қилди ва улкан ғалабаларга эришди. Жумладан, бу ғалабаларнинг энг машҳури 583 йил рабиул-охир/1187 йил ёз ойларига тўғри келган «Ҳиттийн» ғалабаси эди. Бу сана ҳар бир мусулмон ёдида сақлаши шарт бўлган тарихий саналар жумласидандир.

У зот «Ҳиттийн» ғалабасидан 3 ойдан сўнг, ражаб ойида Байтул Макдиси фатҳ қилди. Салоҳиддин Айюбий ўзидан кейин Миср, Шом, Ҳижоз, Яман, Ироқнинг юқори қисмлари, Туркиянинг маълум жойлари, Ливия ва Нубанинг муайян бўлимларини ўз ичига олган катта давлатни қолдирди. Бу давлат ниҳоятда қувватли эди. Ўша вақтлар салибийлар Ўртаер денгизи соҳилидаги кичкина жойга сиқиб қўйилган эди. Салоҳиддин Айюбий Шомда мавжуд бўлган салиб амирликларини тўлиқ яқсон қилган бўлмаса-да, Шом ва Фаластин ерларининг аксариятини салибчилардан озод қилган эди.

Салоҳиддин Айюбий вафотидан сўнг салибчиларга қарши кураш анча сусайди, мол-дунё ва кенг давлат қаршисида Салоҳиддин Айюбийнинг фарзандлари қаттиқ фитнандилар. Натижада, Айюбийлар давлати бир қанча бўлақларга бўлиниб кетди. Бунинг тафсилотларини салиб юришлари ҳақидаги баҳсимизда баён қиламиз, иншаоллоҳ.

Улар ўртасидаги курашлар 59 йил муттасил давом этди. Яъни хижрий 589 йилдан, яъни Салоҳиддин Айюбий вафотидан то 648 йилгача давом этди. Бу кураш нафақат айтишув ва тортишув билан, ҳатто қилич кўтариб, жанг қилиш ва мусулмонлар қўли билан мусулмонларнинг қони тўкилиши орқали содир бўлди. Бу эса, Ислом оламида кучли тарқоқликка олиб келди. Салоҳиддин Айюбий кучли давлат барпо қилиб, уни ўзидан кейин умматга қолдириб кетгани ва у кишидан сўнг бундай жанг-жадаллар содир бўлгани ажабланарли эмас, дунё шундай нарсаки, унинг дастидан ҳалокатга гирифтор бўлмаган

озчиликгина қолади. Тарихлар оша ҳалокат ва фитна манбайи бўлган дунё фитнаси Ислом умматини ҳам ўз домига тортмай қўймади.

Зайд ибн Собит разияллоҳу анҳудан ривоят қилинган саҳиҳ ҳадисда Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам айтадилар: *«Кимники гами дунё йиғиш бўлса, унинг йиққанини Оллоҳ тарқатиб юборади ва камбағаллигини унинг икки қўзи орасига ўрнаштириб қўяди. Зеро, у кимсага фақат тақдирига ёзиб қўйилган ризқигина келади. Кимники нияти охират бўлса, Оллоҳ унинг ишини жамлайди ва бойлигини қалбига жойлаштириб қўяди. Дунё унга бўйсуниб келади»*.⁶²¹

Салоҳиддин Айюбий Оллоҳ йўлидаги жиҳодни ва Оллоҳнинг сўзини олий қилишни ўз олдига ягона мақсад қилиб олганида Оллоҳ таоло у кишининг ишини жамлади ва бойлигини қалбида қилди ҳамда унга дунёни хоҳламаса ҳам берди. Аммо ундан кейинги султонларнинг бутун ташвишлари дунё жамғариш бўлганида, Оллоҳ уларнинг ишларини тарқок қилдики, ҳатто тўғрини нотўғридан, ҳақни ботилдан ажрата олмайдиган бўлиб қолдилар. Гоҳида мусулмонлар, гоҳида салибчилар, баъзан эса мўғуллар билан бирга бўлишди. Оллоҳ таоло уларнинг фақирликларини кўз ўнгида қилиб қўйди. Уларнинг орасида хор бўлиб ёки фақир, қочоқ ва маҳбус бўлиб ўлганлари бўлди. Бу ходисалар Салоҳиддин Айюбийнинг вафотидан кўп ўтмай рўй берди.

Мисрда Солиҳ Нажмиддин Айюб волийлиги

Айюбий султонлари ўртасида 60 сана давом этган ички низо ва жадалларга батафсил тўхташимиз узоқ вақт талаб қилади, шу боис дастлабки 50 санада бўлган воқеаларни енгил зикр қилиб, охириги 10 йилга эътибор қаратамиз. 637/1240 йил Мисрда Айюбийлар тахтига Нажмиддин Айюб ўтирди.⁶²² Унинг лақаби Солиҳ подшоҳ бўлиб, Салоҳиддин Айюбийдан кейин Айюбий султонларининг энг афзали эди. Лекин минг афсус, нафақат аксарият мусулмонлар, ҳатто мисрликлар ҳам у кишининг ҳаёт тафсилотидан жуда оз маълумотга эгадирлар. Бу инсон ўзидан олдин ўтган, у билан замондош ва ундан кейинги Айюбий амирларидан бутунлай ажралиб турадиган солиҳ киши бўлиб, мартабаси Салоҳиддин Айюбийдан кейинги ўринда туради. У 637/1240 йил Мисрга ҳоким бўлди, яъни Ислом олами ва Оврупани қон қақшатган мўғул ҳокони Ўқтой даврида Миср ҳокимиятининг тепасига келган эди.

⁶²¹ Ибн Можа, Табароний, Ибн Ҳиббон ривоятлари.

⁶²² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/247–248).

Шом ва Миср ўртасидаги низо

Шомдаги Айюбий амирлар Мисрга уруш очишга ҳозирлик кўрди. Улар ўртасида урушлар содир бўлди, бу келишмовчиликлар Шомдаги Айюбийларнинг бирлашиши ва насронийлар билан тил бириктиришигача бориб етди. Бу воқеалар 641/1244 йил, яъни подшоҳ Солиҳ Миср тахтига ўтирганидан 4 йилдан кейин юз берди. Айюбийлар ва насронийлардан иборат катта қўшин Мисрга ҳужум уюштиришга ҳозирланганидан хабар топган подшоҳ Солиҳ Айюб, бирлашган қувватни қарши олиш учун қўшин тўплашга киришди. Қўшиннинг бошига етук саркарда Рукниддин Бейбарсни тайин этди. Бироқ Миср лашкари бирлашган Шом ва салиб лашкарига нисбатан оз ва кучсиз эди. Подшоҳ Солиҳ бир вақтлар Муҳаммад ибн Такаш ва Жалолиддин Хоразмшоҳ сафида бўлган Хоразм аскарларидан ёрдам сўрашга мажбур бўлди. Улар ўша вақтлар мўғуллар хонавайрон қилган Хоразм ерларига ўрнашган ёлланма жангарилар бўлиб, ким кўпроқ ҳақ тўласа, ўшанга хизмат қиларди. Яъни аскарий хизматларини пул эвазига бажарардилар. Подшоҳ Солиҳ Айюб ҳақ бериш бадалига улардан ёрдам сўради.⁶²³

642/1245 йил ҳозирги Фаластиннинг Ғазо шаҳри яқинида подшоҳ Солиҳ Айюбнинг Хоразм армиясидан ташкил топган қўшини билан Айюбийлар — Дамашқ амири Солиҳ Исмоил, Карак амири Носир Довуд ҳамда Ҳимс амири Мансур ва салибчилардан иборат бирлашган қувват ўртасида катта жанг содир бўлди. Бу жанг «Ғазо жанги» номи билан тарих саҳифаларига битилди. Бу маъракада подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюб улуг ғалабага эришди.⁶²⁴ Салибчиларнинг катта қисми — уч мингдан зиёдроғи қатл қилинди. Салибчи ва Айюбий амирларидан катта жамоат асир олинди.⁶²⁵

Солиҳ Айюб фурсатдан фойдаланиб, салибчилар қўрғонлари ва Байтул Мақдисга бостириб кирди ҳамда муборак Қуддус шаҳри ва Байтул Мақдисни озод қилди. Бу ҳодиса 643/1245 йил содир бўлди. Бундан сўнг насронийларнинг аскарлари тўлиқ етти аср давомида Қуддус шаҳрига киролмадилар. Фақатгина Мустафо Камол Отатуркнинг хиёнатидан кейингина, 1917 йил 16 ноябр куни биринчи жаҳон урушида Британия аскарлари бу муқаддас ерларга киришга муваффақ бўлди.⁶²⁶

⁶²³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/267).

⁶²⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/273–274).

⁶²⁵ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/274).

⁶²⁶ Сиржоний «Қиссатут-татар» (212-бет).

Оллоҳ таолодан Байтул Макдисни ҳақиқий эгаларига қайтаришини ўтиниб қоламиз.

Бундан сўнг Солиҳ Айюб шимолга юришни давом эттириб, Дамашққа кирди ва Миср билан Шомни янгидан бирлаштирди.⁶²⁷ Сўнгра салибчиларнинг қўлида бўлган баъзи Ислоом шаҳарларини озод қилишга киришди. 645 йил 10 сафар/1247 йил 23 июн куни Табарияни, шу йил жумодул-охир ойининг охирлари, яъни ноябр ойида Асқалонни⁶²⁸ ва бошқа шаҳарларни озод қилди.⁶²⁹

Хоразм қўшинининг ажралиб кетиши

Кейин Подшоҳ Солиҳ Айюб қўшинида катта йўқотиш содир бўлди, бу ҳодиса ёнланган Хоразм армиясининг Солиҳ Айюбнинг қўшинидан ажралиб кетиши билан бўлди. Улар Шом амирларидан бирининг кўпроқ ҳақ тўлаши эвазига Солиҳ Айюб қўшинини тарк қилишди. Улар ажралиб кетишга чекланмасдан, ҳатто Солиҳ Айюбга қарши жанг ҳам қилдилар. Бу маърақада Солиҳ Айюб қўшинидан саркарда Рукниддин Бейбарс бошлиқ асосий аскаргина собитқадам турди.⁶³⁰

Бу ҳодиса сабабли подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюб эришган кўп нарсани йўқотди. Бу жангдан сўнг у киши мол-дунё эвазига хизмат қилувчилар эмас, ҳақиқий фидокор мужоҳидларга муҳтожлигини ҳис қилди. У Хоразм армиясининг ўрнига янги гуруҳга суяна бошлади, бу лашкар «Мамлуқлар» номи билан тарих саҳнасидан катта жой эгаллади.

⁶²⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/278).

⁶²⁸ рус. Ашкелон.

⁶²⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/292), Мақризий «ас-Сулуқ» (1/431-бет).

⁶³⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (212-бет).

МАМЛУКЛАР ҚИССАСИ

Мамлуклар арабча «Мамолийк» калимасидан олинган бўлиб, унинг луғавий маъноси: «куллар» ёки «бандалар» деганидир. Бироқ «Мамолийк» сўзи Ислом тарихида истилоҳий маъно касб этиб, «Мамолийк» деганда шунчаки куллар эмас, балки муайян аср (замон)даги куллар жамоаси кўзда тутилади. Мамлуклар қиссасини ўрганишга киришсак, бироз орқага, яъни ҳижрий 198–218 йиллар Аббосийларнинг машҳур халифаси Маъмун ва ундан сўнг 218–227 йиллар халифа бўлган унинг укаси Мўътасим замонларига қайтишимиз лозим бўлади.

Бу икки халифа замонида жуда кўп куллар келтирилиб, кул бозорида сотилган ва улар сотиб олиниб, ҳарбий аскар сифатида фойдаланилган. Шу тариқа Мамлуклар вақт ўтиши билан асосий армия вазифасини ўтайдиган гуруҳга айланди. Улар баъзан бир неча Ислом ўлкалари ичида ягона мунтазам армия вазифасини ўтар эди. Илк бор Ўрта Осиё халқларига мансуб туркий миллатлардан иборат кулларни аскар қилиб, катта армия барпо қилган шахс бу халифа Мўътасим (218–227/833–842) эди.⁶³¹ Ўшанда унинг армиясидаги мамлуклар сони бир неча ўн мингга етган эди.⁶³²

Айюбий давлати амирлари ҳам мамлакатда ўз ҳукмронлигини мустаҳкамлашда мамлукларга суянган эдилар. Айюбий давлатининг турли босқичларида улардан фойдаланилган бўлсада, мамлуклар муайян доирага чекланган эдилар. Подшоҳ Солиҳ Айюбийлар бошига келиб, унинг қўшинида Хоразм армиясининг ажралиб кетиши фитнаси рўй берганда у киши мамлуклардан кенгроқ суратда фойдаланишга мажбур бўлди. Шу тариқа Нажмиддин Айюб ўз армиясини мамлуклар ҳисобига кучайтирди ва уларга суянди. Шу сабаб мамлуклар сони янада ортди.

Мамлукларнинг асосини урушда асир олинган ва кул бозорларидан сотиб олинган куллар ташкил қиларди. Мусулмонлар мамлукларни Мовароуннаҳр ўлкалари, яъни Туркменистон ва Афғонистоннинг шимолидан оқиб ўтиб, уларни Ўзбекистон ва Тожикистондан ажратиб турувчи Жайхун дарёси атрофидаги минтақаларда кенг тарқалган кул бозорларидан сотиб олишар эди. Бу минтақаларда урушлар мунтазам

⁶³¹ Муҳаммад Аҳмад ан-Назр «Тарих байтул Макдис фи асрил мамлукий» (47-бет).

⁶³² Саллабий «ал-Мўғул» (257-бет).

давом этгани сабаб ҳар доим кул бозорлари урушдан асир тушганлар ва бошқа тоифа қулларга сероб бўларди. Бу ўлкаларда асосан туркий миллатлар истиқомат қилгани учун мамлукларнинг аксариятини туркий миллатлар ташкил қиларди.⁶³³ Ўша вақтлар қуллар энг кўп бўлган жойлар Қирим, Қўқоз, Қипчоқ ва Мовароуннаҳр — Самарқанд, Фарғона ва Хоразм шаҳарлари эди. Шу билан бирга бу ерларга 100 йиллар мобайнида асли армани, мўғул ва Овропалик бўлган қуллар ҳам олиб келинарди.⁶³⁴

Мамлуклар саййидларига нисбатланадилар

Одатда мамлуклар уларни сотиб олган саййидлари (хўжайинлари)га нисбатланишар эди. Подшоҳ Солиҳ сотиб олган мамлуклар «Мамолийкус-Солиҳия», подшоҳ Комил сотиб олганлари «Мамолийкул-Комилия» ва ҳоказо... деб аталарди.⁶³⁵

Кейинги даврда Солиҳ Айюб сотиб олган «Мамолийкус-Солиҳия»ларнинг сони жуда кўпайди. Бу мамлуклар орасида курд миллатига мансуб қуллар кўп эди.⁶³⁶ Подшоҳ Солиҳ Айюб Айюбийлар орасида мамлукларни аскар сифатида энг кўп сотиб олган Айюбий амири эди. У киши Нил дарёси соҳилига ўзига қаср қуриб, унинг ёнверидан 637–638/1239–1240 йилда мамлуклар учун қалъа бунёд қилди ва ўзи ҳам улар билан бирга яшади. Унинг қасри ва бу қалъа ҳозирги кунда Қоҳирадаги Равзо минтақасида (оролида) жойлашган.⁶³⁷

Ўтмишда Нил дарёси денгиз деб аталарди, Солиҳий мамлуклар шу денгиз атрофида истиқомат қилганлари ҳамда уларнинг ичида Қора денгизнинг шимоли Қипчоқ ўлкаларидан, Қозвин⁶³⁸ денгизига яқин Қўқоз ўлкаларидан олиб келинган қуллар кўп бўлгани учун «Мамолийкул-Баҳрия», яъни «денгизлик мамлуклар» номи билан танилди.⁶³⁹

⁶³³ Аҳмад ан-Назр «Тарих байтул Мақдис» (47-бет).

⁶³⁴ Саллабий «ал-Мўғул» (257-бет).

⁶³⁵ Саллабий «Тарихул мўғул ва турк» (69-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (260-бет).

⁶³⁶ Саллабий «Малик ас-Солиҳ Айюб» (110-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (261-бет).

⁶³⁷ Саллабий «Малик ас-Солиҳ Айюб» (114-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (262-бет).

⁶³⁸ Каспий.

⁶³⁹ Саллабий «Фит тарихил Айюбий вал мамлукий» (86-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (263-бет).

Нажмиддин Айюбнинг мамлукларга муносабати

Солиҳ Айюб мамлукларни гўдаклик босқичидан етуклик давригача тарбия қилди. Келажақда қад ростловчи Мамлуклар давлати султонлари шу тарбия асосида улғайдилар. Мамлукларнинг аксарияти мусулмон бўлмаган давлатлардан ёки мусулмон бўлса ҳам араб тилини билмайдиган куллардан иборат эдилар. Улар Мисрга келтирилиб, ўша ерда тарбия қилина бошладилар. Бу подшоҳ Солиҳ Айюб ва мамлуклардан бўлган унинг издошлари бўлган амирлар ҳаётидаги муҳим нуқтадир. Уларга ҳеч қачон куллардек муомала қилинмади, балки улар Солиҳ Айюбнинг фарзандлари манзилатида эдилар. Уларнинг ўзаро муносабатлари хожа билан кул ёки подшоҳ билан хизматкор каби бўлмай, устоз-шогирд, ота-бола ёки оила боши билан оиланинг қолган аъзоларининг муносабатидек эди. Бу алоқа қаҳр ёки моддият эмас, муҳаббат асосига таянганидан, ҳатто мамлуклар хўжайинларини «устоз» лақаби билан чақирар эдилар.

Бу давр алоҳида эътибор беришимизга лойиқ, чунки бу босқич Мисрдаги ҳолат тубдан ўзгариши унга бориб тақалган нуқтадир. Мўғуллар қаршисида мардонавор тура олганлар ҳам айнан шу авлоддир. Мамлуклар даврини озроқ мулоҳаза қилган инсон уларнинг тарбияси бир неча босқичларда намунали суратда олиб борилганига гувоҳ бўлади:

Биринчи босқич: Болаликдан вояга етгунгача бўлган давр. Арабийзабон бўлмаган Мамлуклар ҳаётининг илк босқичи араб тили таълими бўлди, сўнгра Қуръони Карим ўргатилди. Ундан кейин бошланғич исломий фикҳ ва шариат одоблари ҳамма мамлукларга барорбар берилди.⁶⁴⁰ Бу таълим ёш мамлукларга ўзининг ижобий таъсирини кўрсатди. Улар Ислом динини бағоят улуғлаган ҳолатда вояга етдилар. Илм ва уламолар қадри мамлукларнинг ҳаёт босқичларида юксак ўринларни эгаллади. Бу эса, мамлуклар замонида юзага келган илмнинг юксалишини изоҳлайди. Мамлуклар даврида талайгина таниқли олимлар етишиб чиқди. Жумладан, Изз ибн Абдуссалом, Нававий, Ибн Таймия, Ибн Қоййим Жавзийя, Ибн Ҳажар Асқалоний, Ибн Касир, Мақризий, Ибн Жамоа, Ибн Қудома Макдисий раҳимаҳумуллоҳ ва бошқалар шулар жумласидандир.

Иккинчи босқич: Ёш мамлуклар балоғат ёшига етганларида чавондозлик, мерганлик, қиличбозлик каби аскарый билимларни таълим олишди. Уларнинг жанг маҳорати ва жисмоний қувватлари жуда юқори

⁶⁴⁰ Саллабий «ал-ҳамалат ас-салибийя» (338-бет).

даражага етди. Шу тариқа улар машаққат ва қийинчиликларга бардошли бўлиб шаклландилар.⁶⁴¹

Учинчи босқич: Олий аскарый босқич. Улар бошқарма ишларига жалб қилинди. Уларга ҳарбий режалар тузиш, ҳарбий масалаларни ечиш ва қалтис ишларда тасарруф қилиш таълими берилди. Ва жанг майдонига тушириб, уриштирилди. Ҳатто улар жанг машаққатлари ва ўлим билан юзма-юз бўлишни ўргандилар.⁶⁴² Шундай қилиб, Мамлуклар олий мақсадли, ҳамиятли ва исломий ғайратга қўшимча аскарый ва идорий масалаларда етук инсонларга айландилар.

Бу тарбия босқичларининг барчасида уларни сотиб олган саййидлари султон Солих Нажмиддин Айюб ўта диққат билан назорат қиларди. Баъзан уларнинг озиқ-овқатлари ва роҳатларидан кўнгли хотиржам бўлиши учун улар билан бирга овқатланар ва улар билан бирга ўтирар эди. Бутун бошли Миср ҳокими ўз мамлуклари-қуллари муҳаббатини ушбу хислати билан қозонган эди.⁶⁴³

Мамлуклар мавқеининг ортиши

Охирги вақтларга келиб мамлукларнинг аскарый ва диний иқтидори ортиб, ўзлари каби оддий мамлукларга сардор бўлишдан ташқари, поғонама-поғона мансаблари ҳам юксалиб бордилар. Уларнинг иқтидорлари ошган сари янада эътиборга кириб бордилар. Уларга давлат ичида катта ерлар берилибгина қолмай, ҳатто амир даражасига кўтарилди, яъни армияда катта зобит, генерал мақомигача чиқдилар. Бу эса мамлукларнинг амалдорликка рағбатини оширди.

Подшоҳ Солих Айюб давлатида мамлуклар юқори мансабларга кўтарилди. Армия кўмондонлари мамлуклардан эди. Подшоҳ Солих Айюб даврида армияга кўзга кўринган мамлуклардан Форисиддин Ўқтой кўмондон эди, ундан кейинги ўринда эса етук саркарда Рукниддин Бейбарс турарди.⁶⁴⁴

⁶⁴¹ Саллабий «ал-Мўғул» (267-бет).

⁶⁴² Саллабий «ал-Мўғул» (268-бет).

⁶⁴³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (216-бет).

⁶⁴⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (217-бет).

ЕТТИНЧИ САЛИБ ЮРИШИ

647/1249 йил подшоҳ Солиҳ Айюб сил касали билан касалланди ва тўшакка миҳланиб қолди.⁶⁴⁵ Бу паллада Франция қироли Людовик IX мўғуллар Ислом оламининг шарқига ҳужум қилаётганидан фойдаланиб, Миср ва Шом ерларига бостириб киришни режа қилади. Бу ҳақда юқорида сўз юритгандик. У Мўғул хокони Гуюкхондан мадад сўраб вафд жўнатади, бу делегация икки кўли бўш ҳолда қайтсада, Людовик ҳамла қилиш ниятидан қайтмади.

Думёт ишғоли

Людовик 647 йил 21 сафар/1249 йил 12 июн шанба куни Думёт соҳилига келиб тушди. Мусулмон кўшин билан салибчилар ўртасида шиддатли жанг кетди. Бу жангда салибийларнинг кўли баланд келди ва мусулмонлардан кўп шаҳид берилди. Кечқурун бўлганда мусулмон амир Фахриддин Юсуф аскарлари билан Думётни тарк қилиб, Ашмум Таноҳ кишлоғига йўл олди. Буни кўрган думётликларнинг барчаси уларга эргашдилар, шаҳарда бирор жонзот қолмади. У султон Солиҳ Айюбни касалдан ўлган деб гумон қилган эди.⁶⁴⁶

Людовик ўз армияси билан 22 сафар, яъни 13 июн якшанба куни Думёт шаҳрига келди, не кўз билан кўрсинки, шаҳарда бирон тирик жонзот йўқ! Дастлаб, бу ҳийла, пистирма бўлса керак, деб ўйлади. Бирок вақт ўтиши билан ундай эмаслигини кўрди. У бу шаҳарни ҳеч бир қаршилиқ ва қуршовсиз эгаллади, ундаги қурол-аслаҳалар, озиқ-овқатларни ўзлаштирди.⁶⁴⁷ Ўша ердан Миср ва Шомга ҳужум қилишга бел боғлади. Бу уруш тарих саҳифаларига «Еттинчи салиб юриши» номи билан битилди.

Ал-Мансура жанги

Подшоҳ Солиҳ салибчилар Думётни эгаллаганидан хабар топди, оқибатта унинг паришонлиги ортди ва касали оғирлашди. Салибчилар Мисрни тўлиқ ишғол қилиш мақсадида Нил дарёсидан ўтиб, унинг пойтахти Қоҳирага юриш қилади, деб тахмин қилиб, Думёт билан Қоҳира ўртасида уларни қарши олишга қарор қилди. Думётдан Қоҳирага

⁶⁴⁵ Мақризий «ас-Сулук» (1/443-бет).

⁶⁴⁶ Мақризий «ас-Сулук» (1/438-бет).

⁶⁴⁷ Мақризий «ас-Сулук» (1/438, 439-бет).

қараб келиш мумкин бўлган Нил дарёси йўналишига назар солди ва салибчилар аниқ Мансура шаҳри орқали келади, деб мўлжал қилди. Шу сабабли аскарини Мансура шаҳрида тўплашга қарор қилди ҳамда ўзи ҳам оғир касал бўлишига қарамай йўлга отланди. Ўша ерда мисрлик аскарлар ва мамлуклардан иборат мусулмон аскар Форисиддин Ўктой ва Рукниддин Бейбарс бошчилигида салибчиларга қарши тайёргарлик кўра бошлади. Нажмиддин Айюб гумон қилганидек, насронийлар 647 йил 12 шаъбон/1249 йил 27 ноябр куни Нил дарёсидан ўтиб, жанубга — Қоҳирага йўл олишди.

Салибчилар Мансурага етиб келишларидан олдин, 647 йил 14 шаъбон/1249 йил 29 ноябр душанба кечаси подшоҳ Солих Нажмиддин Айюб Мансура шаҳрида 44 ёшида оламдан ўтди.⁶⁴⁸ Унгача ўз аскарлари билан шаҳар қўрғонларини мустаҳкамлаб улгурган эди. Оллоҳ азза ва жалла у кишини Ўз мағфирати ва раҳматига мушарраф айлаб, шаҳидлар мартабасига етказсин!

Подшоҳ Солих 50 кун кам 10 йил Мисрга волийлик қилган эди.⁶⁴⁹

Бу ҳодиса мусулмонларга улкан мусибат бўлди. Бошлиқлари Солих Айюбдан айрилиш бир мусибат бўлса, унинг ўринбосари йўқлиги иккинчи бир мусибат эди. Мамлакат қаттиқ изтироб ҳолатида қолди, бир томондан Думёт порти эгалланган, иккинчи томондан салибчилар ҳамласи...

Султон Нажмиддин Айюбнинг хотини Шажаратуд-Дур⁶⁵⁰ ўта ҳикматли ва оқилона иш тутди. Бу аёл асли турк миллатига мансуб эди, баъзи ривоятларда айтилишича, армани бўлган.⁶⁵¹ Уни Султон Нажмиддин Айюб сотиб олган ва озод қилиб, сўнгра никоҳига олган эди. У доимо султон билан бирга бўларди, ҳатто сафарларда ҳам ундан ажралмасди.⁶⁵²

Шажаратуд-Дур подшоҳ Солих вафот этганида, унинг ўлими хабарини яшириб, қўл остидаги лашкарига қарата: «Табиблар уни зиёрат қилишни тақиқлади»⁶⁵³, деб зудлик билан Солих Айюбнинг ўғли Туроншоҳга вазиятни англатувчи мактуб йўллади. Туроншоҳ ўша

⁶⁴⁸ Макризий «ас-Сулук» (1/441-бет), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/304), Рашидуддин «Сборник летописей» (2/151).

⁶⁴⁹ Макризий «ас-Сулук» (1/441-бет).

⁶⁵⁰ Дурли дарахт маъносини билдиради.

⁶⁵¹ Макризий «ас-Сулук» (1/459-бет).

⁶⁵² Макризий «ас-Сулук» (1/459-бет).

⁶⁵³ Макризий «ас-Сулук» (1/445-бет).

кунларда Ҳасанкейф⁶⁵⁴ шахрида ҳоким эди.⁶⁵⁵ Мактубда отасининг вафот этгани ҳамда тезда келиб, Миср ва Шом ҳукмронлигини қўлга олиши баён қилинган эди.

Сўнгра Шажаратуд-Дур Солиҳ Айюбнинг катта вазирларини ҳузурига чорлаб, Туроншоҳ келгунига қадар мамлакатни Фаҳриддин Юсуф бошқариб туриши ҳамда Форисиддин Ўқтой ва Рукниддин Бейбарсга Мансурада жангга ҳозирликни давом эттиришлари ваколатини топширди. Шу тариқа улар подшоҳ Солиҳнинг вафоти сабаб тушган изтироб исканжасига асир бўлмадилар. Ишлар ўз ўрнида ва жой-жойида давом этди. Форисиддин Ўқтой ва Рукниддин Бейбарслар насроний Француз лашкарини қарши олиш учун ғоят мукамал режа тузишди ва уни Шажаратуд-Дурга кўрсатишди. Унга бу режа маъқул бўлди, шундан сўнг улар бу режани амалга оширишга киришди. Ўша вақтлар Шажаратуд-Дур солиҳ Айюбнинг ўғли Туроншоҳ келгунига қадар гўё давлат бошлиғи манзилатида бўлди. 647 йил 4 зулқаъда/1250 йил 15 феврал куни катта «Мансура жанги»⁶⁵⁶ содир бўлди. Бу ўта муҳим тарихий сана бўлиб, унда мусулмонлар салибчилар устидан улкан ғалабага эришдилар. Сўнгра қирол Людовик IX Мансура шахридан ташқарида 647 йил 7 зулқаъда/1250 йил 18 феврал куни янги ҳужумга ўтди.⁶⁵⁷ Унинг бу ҳужуми каттиқ кураш билан бартараф қилинди.

Фарискур жанги

Туроншоҳ ибн Солиҳ Айюб салибчиларнинг охирги ҳужумидан 10 кундан сўнг, яъни 647 йил 17 зулқаъда/1250 йил 21 феврал куни Мансурага етиб келди.⁶⁵⁸ У келиб отаси Солиҳ Нажмиддин Айюбнинг вафотини ҳамда Миср ва Шом ҳокимиятини қўлга олганини расман эълон қилди. Сўнгра Туроншоҳ салибчиларга қарши янги ҳужум режасига киришди. Мансура жангидан сўнг салибчилар анчагина заифлашган ва Думётга қайтган эди. Зудликла мусулмон лашкари уларнинг ортидан йўлга чикди.

Миср мусулмон лашкари салиб лашкари билан Думёт яқинидаги Фарискур шахрида юзма-юз келди. Бу тўқнашув 648 йил 3 муҳаррам/1250 йил 14 апрел пайшанба куни⁶⁵⁹, яъни катта Мансура

⁶⁵⁴ Ҳозирда Туркиянинг «Hasankeyf» вилоятидир.

⁶⁵⁵ Рашидуддин «Сборник летописей» (2/151).

⁶⁵⁶ Мисрдаги Мансура шахрига нисбатланган.

⁶⁵⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (220-бет).

⁶⁵⁸ Саллабий «ал-Мўғул» (277-бет).

⁶⁵⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/307), Саллабий «ал-Мўғул» (277-бет).

жангидан икки ой ўтар-ўтмас содир бўлган ва бу жангга янги подшоҳ Туроншоҳ ибн Нажмиддин Айюб раҳбарлик қилган эди. У Форисиддин Ўқтой ва Рукниддин Бейбарсларнинг ҳарбий амалиётларини назорат қилиб борди. «Фарискур жанги» Ислом оламидаги жанглarning энг муҳимларидан ҳисобланади. Фарискур жангида⁶⁶⁰ Франция кироли Людовик IX асирга тушди, унинг насроний лашкари ўлим билан асирлик орасида қолди. Бу жангда салибчилардан 30 мингги ўлдирилиб, 10 мингларча рицарлар асир олинди.⁶⁶¹

Людовик Мансура шаҳрига занжирбанд ҳолатда олиб келинди ва Фахриддин Иброҳим ибн Луқмоннинг ҳовлисида ҳибсада сақланди.⁶⁶² Унга асирликдан ўз жонини кутқариши муқобилида катта баҳо қўйилди. Унинг жон гарови 800 минг тилла динор қилиб белгиланди. У бу миқдорнинг ярмини озод қилинган заҳоти, қолган ярмини кейин бериши керак эди.⁶⁶³ Туроншоҳ салибчи асирларни фидянинг қолган қисмини ундириш, мусулмон асирларни озод қилиш, Думётни мусулмонларга таслим қилиш ва 10 йил муддатга тинчлик ўрнатилиши бадалига тирик қолдирди.⁶⁶⁴ Ҳақиқатан, бу жанг барча миқёсда улкан ютуқ бўлган эди. Насронийлар Франция ва бошқа насроний ўлкалардан фидянинг ярмини базўр тўплаб, подшоҳлари Людовикни озод қилди ва уни Аккага олиб кетишди. Акка ўша вақтлар салиб амирлиги қўл остида эди. Ҳозирги кунда у яҳудларнинг ҳукмидадир. Оллоҳ бу шаҳарни ҳақиқий эгаларига қайтарсин!

⁶⁶⁰ Мисрдаги Фарискур шаҳрига нисбатланган.

⁶⁶¹ Мақризий «ас-Сулук» (1/455-бет), Рашидуддин «Сборник летописей» (2/151), Саллабий «ал-Мўғул» (278-бет).

⁶⁶² Мақризий «ас-Сулук» (1/455-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (278-бет).

⁶⁶³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (221-бет).

⁶⁶⁴ Саллабий «Тарихул айюбийин» (389-бет) китобидан нақл қилади, «ал-Мўғул» (279-бет).

ТУРОНШОҲНИНГ ҲОКИМЛИГИ ВА ЎЛИМ ҚИССАСИ

Мусулмонлар салибчилар устидан ғалаба қозонди. Бадхулқ ва ношуд Туроншоҳ бу ютуқларга номуносиб эди. Бундан ташқари, у сиёсатдан ҳам узоқ эди. Франция қироли Людовикни енгандан кейин, атрофидаги ғаниматларни кўриб ғурурланиб кетди ва отасининг хотини Шажаратуд-Дурга таъна тошларини ёғдириб, уни отасининг мулкини яширишда айблай бошлади. Ундан ўша мулкни талаб қилибгина қолмай, қаттиқ таҳдид ҳам қилди. Эрининг ўлимидан сўнг унинг мулкини ўғли Туроншоҳга қўшқўллаб топширган, қаттиқ изтиробли кунда Солиҳ Айюбнинг ўлимини халойиқдан яшириб, уни чақиртиргани унутилди. Туроншоҳ бирор машаққатсиз Миср волийсига айланиб, энди у буларнинг барчасини унутди ёки эслашни хохламади. Воқеалар ўз-ўзидан шундай бўлиши керак, мен бунга ўзимнинг уддабуронлигим сабаб эришдим, деб ўйлаган бўлиши ҳам эҳтимолдан холи эмас. Бунинг устига у Форисиддин Ўқтой ва Рукниддин Бейбарс бошлиқ мамлуқларнинг қатталарига таъна қилди. Уларнинг Мансура ва Фарискурдаги қатта ютуқларини инобатга олмади ҳам. Балки уларнинг қилган меҳнатларини арзимас деб баҳолади. Шу тарзда Туроншоҳ уларнинг масъулият ва вазифаларини қисқартирди. Бошқа жиҳатдан эса, у ўзи билан Ҳасанкейфдан келган кишиларнинг мартабаларини кўтаришга киришди. Унинг Миср мамлақати ва армиясига қатта ўзгариш киритишга бел боғлагани ҳаммага аён бўлиб қолди. Булар Фарискур жангидан кейинги уч ой давомида содир бўлган ҳодисалар эди.

Шажаратуд-Дур ўзидан кўркиб мамлуқларга, хоссатан Форисиддин Ўқтой ва Рукниддин Бейбарсларга махфий тарзда Туроншоҳдан кутиш мумкин бўлган нобопликларни баён қилди ва ундан имкон қадар тезроқ қутулиш лозимлигини билдирди. Мамлуқлар Шажаратуд-Дурни хурмат-эҳтиром қилишарди, чунки у устозлари марҳум Солиҳ Айюбнинг завжаси эди. Устоз-шогирт алоқаси баъзан, ота-бола алоқасидан кучлироқ ва мустаҳкамроқ бўлади. Солиҳ Айюб билан мамлуқларнинг алоқаси айнан шу мақомга етган эди. Устоз ўлимидан кейин ҳам бу алоқа ўз таъсир доирасида қолган эди. Шажаратуд-Дур хаёлига келган Туроншоҳ ҳақидаги ўйларини уларга сўзлаганида, уларда ҳам Туроншоҳдан ёмонлик содир бўлмасидан уни Миср ҳокимлигидан четлатиш фикри уйғонди. Шу тарзда уни мулкидангина эмас, балки руҳини жасдидан четлатиш режасини тузишди.

Мамлуклар назарида қон тўкиш анча енгил масала бўлиб, шубҳанинг ўзиёқ қатл қилишга кифоя қиларди. Бир кишининг хиёнат қилганида шубҳа қилсалар, бас, ўша қатл қилишга сабаб бўла оларди. Қонни ҳалол қилиш масаласидаги бу енгил қараш, мамлуклар ҳаётининг тақрибан барча босқичларида шундай бўлган. Мамлуклар тарихида уларнинг кўплаб амирлари ва катталари хиёнат қилишда гумонланиб қатл қилингандир. Бу эса, улар ўта жиддий ва қаттиққўллик билан аскарӣ тарбия олганларининг натижаси эди. Улар қаҳри қаттиқ, қаттиққўл ва ҳикматсизликка йўл қўйган, ҳамма ишларни гўдаклик чоғидан қўлларида кўтариб ўрганган қилич билан ҳал қилишни яхши кўрардилар. Қизиғи шундаки, булар мамлукларнинг диний ва фикхий тарбияда улғайганларининг аҳволи! Энди етимхоналардан олиниб, бедин ва бемехр қилиб тарбияланган, фақат фармонни бажариб, оқибатини ўйлаш қобилиятидан мосуво қилинган ёнланма аскарү қотилларнинг не қадар тошбағир бўлишини гапиришга ҳожат ҳам йўқ!

Мамлуклар хиёнатда ёки жамоатдан ажралишда гумон қилган одамни ўлдирибгина қолмай, гоҳида қотил халқ орасида «сотқинни» ўлдиргани билан фахрланарди ҳам. Ҳатто бирини ўлдириб, унинг тахтига ўтирар экан, виждони сал бўлсада кийналмасди ҳам. Бу тўкилган қон Оллоҳ таоло наздида ва инсонлар олдида бирор кийматга эга эмасдай гўё! Бу Туроншоҳ ва унга ўхшаган бошқа биронтасининг оқлови эмас, ўлдирилган гарчи бадхулқ, хоин, золим кимса бўлгани тақдирда ҳам, Исломдаги укубат-жазонинг биз эмас, бутун оламлар Раббиси белгилаб қўйган муайян чегараси ва ўзига хос ўлчови бор...

Мамлукларнинг ёки улардан бошқаларнинг васваса ва гумонлари харгиз қатл қилишга кифоя қилувчи шаръий далил бўлолмайди. У фақатгина уни ажратиб қўйиш ва кузатиш ёки ундан юз ўгириш ёки ҳибс қилиш ва шу каби жазоларга асос бўлиши мумкин, холос.

Хуллас, Шажаратуд-Дур Форисиддин Ўқтой, Рукниддин Бейбарс ва бошқа Солиҳий Баҳрий мамлуклар билан Туроншоҳни ўлдиришга иттифоқ қилди. 648 йил 27 муҳаррам⁶⁶⁵ (28 муҳаррам душанба)⁶⁶⁶/1250 йил 9 май куни ҳукм ижро қилинди. Бу ҳодиса Туроншоҳ Ҳасанкейфдан Мисрга келганидан 70 кундан сўнг юз берди. У шунча масофани ҳокимиятни қўлга киритиш учун эмас, жонини таслим қилиш учун келган эди. Туроншоҳ ибн Нажмиддин Айюбнинг ўлими Мисрдаги Айюбийлар султонлигининг ниҳояси бўлди...

⁶⁶⁵ Сиржоний «Қиссатут-татар» (225-бет).

⁶⁶⁶ Саллабий «ал-Мўғул» (284-бет).

МАМЛУКЛАР ДАВЛАТИ

Мамлуклар давлатига илк одимлар

Солиҳ Нажмиддин Айюб Шомдаги Айюбийлар ва насронийлар устидан ғолиб бўлгандан сўнг, Миср ва Шомни бирлаштирган эди. Туроншоҳнинг Мамлуклар томонидан ўлдирилиши Мисрда жуда катта сиёсий бўшлиқни пайдо қилган, бошқа тарафдан эса, Шомдаги Айюбийлар Мисрга тама қилишда давом этаётган эди. Шунингдек, Айюбийлар сулоласидан бўлган Туроншоҳнинг ўлдирилиши мамлукларга нисбатан Айюбийлар қалбида чексиз адоват ва қасос ўтини аланга олдирди. Мамлуклар Айюбийларнинг қасос олишга ҳаракат қилишларини жуда яхши биларди. Бироқ мамлуклар ўзларининг Мисрда ва унинг армиясида мустақкам ўринлари борлиги ҳамда «Мансура» ва «Фарискур» жангларида ғалабанинг асосий сабабчилари ўзлари бўлатуриб, кадрларининг пастлатилиши ва вазифаларидан четлатилиши билан зулм қилинганларини яхши билардилар. Бу нарсалар мамлукларни Миср тарихида илк бор бевосита ҳукумат бошқарувини кўлга олишлари мумкинлигини фикр қилишларига олиб келди.

Биз ғолибмиз, нима учун салтанат бизники бўлиши мумкин эмас?

Бу савол биринчи маротаба мамлукларнинг зеҳнларига отилган ўк мисоли қадалди. Дарҳақиқат, Мамлуклар 254–292/868–905 йиллар мобайнида Мисрда ҳукм юритган Бану Толунларга хизмат қилди, сўнгра Толунлар давлатидан кейин 292–323/905–935 йилгача Аббосийлар давлатига, сўнгра 323–358/935–969 йиллар Ихшидлар давлатига, сўнгра 358–566/969–1171 йиллар Фотимийлар давлатига, ундан кейин 567/1171 йилдан бошлаб Айюбийлар давлатига хизмат қилиб келди.⁶⁶⁷ Бу даврларнинг барчасида Мамлуклар давлат зирҳи вазифасини ўтаб келди. Шунга қарамай, улар ҳеч қачон салтанатни ўз қўлларига олишни хаёлларига келтирмаган, ҳамиша подшоҳлар қўл остида хизмат қилиб келган эдилар, холос. Мамлуклар асли сотиб олиниб, сўнгра сотиб юбориладиган, таниқли бирор оилага нисбатлана олмайдиган ва янги-янги ўлкаларда яшашга тўғри келгани учун доим ғариблик ҳисси билан ҳаёт кечирувчилар жамоаси эди. Шунингдек, улар хур фикрдан маҳрум, ҳамиша кимгадир тобе, у хўжайиндан бу хўжайинга кўчиб турувчи мато каби эдилар...

⁶⁶⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (226, 227-бет).

Ҳозир эса, аҳвол бутунлай ўзгача, уларнинг замони келган, қуёш улар томондан чиққан эди. Алҳол, подшоҳлар заиф, куч-қувват мамлуклар қўлида. Бошқарувни ҳам бир тажриба қилиб кўришдан тўсадиган нарсанинг ўзи йўқ. Аммо уларнинг бевосита бошқарув курсисига ўтиришлари жуда таажжубли эди, сабаби одамлар мамлукларнинг асли кимлар, сотиб олиниб, сотиладиган қуллар эканини яхши билар эди. Қулликдан озод қилинган бўлсалар ҳам, инсонларга ҳоким бўлишлари, гарчи бой ва бадавлат бўлиб, ихтиёрлари ва ваколатлари кўпайган тақдирда ҳам буни қабул қилишлари ўта мураккаб иш эди. Гарчи бирор-бир минтақа ва майдонларига ҳоким бўлсалар-да, охир-оқибат улар мамлук, яъни қуллардан келиб чиққан эдилар. Уларнинг ҳукумат тепасига кўтарилиши, буни қабул қилолмайдиган инсонларни қаноатлантиражак ҳужжатга муҳтож эди.

Буларнинг ҳаммаси Туроншоҳ ўлдирилгандан кейин Мамлуклар қаршисига чиқди. Улар Туроншоҳдан сўнг бевосита ҳукуматни қўлга олишни хоҳладилар, лекин бунинг учун ўтиш даврига эҳтиёжлари бор эди, яъни бу давр одамлар уларнинг бошқарув курсисига ўтиришларини хазм қилишлари учун керак эди. Улар султонликни истасада, мамлук бўлганлари учун ҳукмронликдан маҳрум қилинишлари мумкин, бу эса уларнинг қаршисида ечимсиз масала эди...

Шажаратуд-Дур шахсияти

Шажаратуд-Дур тарихда жуда кам учрайдиган ажойиб табиатли аёл эди. У жуда кучли, шижоатли, довиорак, ўта ақлли, ҳикматли ҳамда киёдий ва идорий қобилиятли эди. Шажаратуд-Дур ўзидаги бу сифатларни билар ҳамда имкониятлари ва ўзидаги қобилиятга қаттиқ ишонар эди. Булар эса, Ислом оламида, айниқса уммат тарихининг ўша даври учун тамоман янгича фикрни келтириб чиқарди. У Миср тахтига кўтарилишни фикр қилди.

Бу жуда катта иш бўлиб, жўшқин тўлқинга қарши сузиш билан баробар эди. Лекин Шажаратуд-Дур бу журъатли фикрни татбиқ қилишга ўзида малака топди. «Эримнинг ўлиmidан сўнг Мансура жанги юз берган кунларда махфий тарзда давлатни бошқардим-ку, буни ҳозир ошқора қилолмайманми?» дея ўзини руҳан кўтарди. Шажаратуд-Дур Туроншоҳ ўлдирилгандан кейин давлат бошқаруви масаласини мамлуклар билан маслаҳат қилди. Мамлуклар истаб турган ўтиш босқичи пайдо бўлди, бу аёл устозлари подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюбнинг завжаси эди. Нажмиддин Айюбни нафақат мамлуклар, балки

Миср халқи ҳам жуда яхши кўрар, беҳад ҳурмат қилар ва унга вафодор эдилар.

Шажаратуд-Дур аслида бир жория бўлган, сўнгра озод қилинган эди, яъни у айнан мамлуклардан бўлмасада, унинг келиб чиқиши мамлуклар билан бир хил манзилатда эди. Агар у Мисрга ҳокима бўлса, халқ мамлуклар босилди, деб ўйлаши аниқ эди. Нима бўлганда ҳам у бироз олдин дунёдан кўз юмган, халқнинг суюкли подшоси Солиҳнинг хотини эди. Айни вақтда мамлуклар бу аёлнинг ортидан давлатни бошқариши ва бу билан улар ўзларини озод қилишлари мумкин бўлиб қолди. Кейинчалик эса, уларнинг ошкора ҳукумат тепасига кўтарилишлари учун йўл очиларди. Модомики, мамлука аёл ҳокима бўла оларкан, мамлук эркак ҳоким бўлиши авло эмасми, деган фикр садоси уларга далда берарди.

Шажаратуд-Дур салтанат тепасида

Мамлукларнинг хоҳиши билан Шажаратуд-Дурнинг рағбати мутаносиб келди. Туроншоҳнинг қатлидан бир неча кундан кейин 648 йил сафар ойининг бошлари/1250 йил май ойида Шажаратуд-Дурни Миср ҳокимаси деб эълон қилишга қарор қилдилар.⁶⁶⁸ Лекин ҳамма нарса босди-босди бўлмади, Мисрнинг турли минтақаларида норозилик ва эътирозлар жўш ура бошлади. Ислом оламининг бошқа ерларидан ҳам бу фикрга қарши чиқувчилар кўпайди. Миср кўчаларида намоийшлар содир бўла бошлади. Шажаратуд-Дур кўлидан келгунича вазиятни сокинлаштиришга ҳаракат қилди. Халқ қаршисида у ўзини Солиҳ Нажмиддин Айюбга нисбатлаб, мен подшоҳ Солиҳнинг ишини давом эттираяман, мен Солиҳий мусулмонлар маликасиман, деб кўрди. Лекин бу гап халққа етарли бўлмади ва уларнинг намоийшларини тўхтата олмади. Сўнгра у ўзини Солиҳ Айюбдан бўлган кичик ўғли Халилга нисбатлади, мен мўминлар амири султон Халилнинг волидаси ҳамда Солиҳий мусулмонлар маликасиман, деди. Қолбуки, унинг ўғли Халил отаси Нажмиддин Солиҳ ҳаётлигида гўдаклик чоғидаёқ оламдан ўтган эди.⁶⁶⁹ Бироқ бу ҳам халққа кифоя қилмади. Ундан кейин у ўзини ўша пайтлар халифа бўлган Мустаъсимга нисбатлаб, мен Мустаъсимий мусулмонлар маликасиман, деди. Шажаратуд-Дур мўминлар амири

⁶⁶⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/307), Сиржоний «Қиссатут-татар» (228-бет).

⁶⁶⁹ Саллабий «Мавсуату тарихи Миср» (2/671) китобидан накл қилган, «ал-Мўғул» (303-бет).

Халилнинг волидаси, Солиҳий ва Мустаъсимий мусулмонлар маликаси эканини таъкидлади.

Омма халқ ва уламолар олдида фикрини қабул қилишлари учун қилинган бу хушомадларга қарамай, халқнинг ғзаби босилиш ўрнига, намоишлар халқнинг барча табақаларини ўз ичига олди. Мамлакатда вазиятнинг кескинлашгани барчага аён эди. Ваҳшиёна салиб юришлари тўхтамаган, Шомдаги Айюбийлар подшоҳ Солиҳ замонидан бери Мисрга таҳдид соларди. Бошқа тарафдан мўғуллар Ислом ўлкаларини шарқидан ғарбига қараб эгаллаб келаётган ва айни дамда улар Аббосийлар эшигини зарб билан қоқиб турган эди. 648/1250 йил мўғуллар Озарбайжон ва Форс ерларида туриб, Бағдодни тўнтаришга тайёргарлик қилаётган, Хулагу Ироққа ҳужум қилишга ҳозирликни бошлаган эди. Миср ўта қийин аҳволда, худди портлай деб турган вулқонга ўхшарди, лекин бу вулқоннинг қачон отилиб чиқишини Оллоҳдан бошқа ҳеч ким билмасди. Намойишлар шунчалар кучайдики, ҳатто намоишчилар шаҳар ташқарисига ҳам чиқа бошлади. Ҳукумат Қоҳира дарвозаларини беркитишга мажбур бўлди. Уламолар ва хутаболар минбарлар ва дарсларда, умумий ва хос йиғинларда аёл кишининг волийлигини қоралашга бел боғладилар, улар орасида буни энг қаттиқ инкор қилганлардан ўша замоннинг таниқли олимларидан Изз ибн Абдуссалом раҳимахуллоҳ эди. Шунингдек, Шомдаги Айюбий амирлар Миср тахтига аёл кишининг ўтирганига қаттиқ эътироз билдирдилар. Халифа Мустаъсимдан нафақат кескин ва қаттиқ жавоб келди, ҳатто бутун Миср халқини қаттиқ койиди ҳам. У ўзининг мактубида «Агар сизларда эркак киши қуриб кетган бўлса, айтинглар! Биз сизларга эркак киши йўллайлик! Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламнинг: *«Ўз ишларига аёл кишини бошлиқ қилиб олган қавм асло нажот топмайди»*⁶⁷⁰, деганларини эшитмаганмисизлар!»⁶⁷¹ дея маломат қилган эди.

Шажаратуд-Дурнинг турмушга чиқиши ва Иззуддин Ойбекнинг Мисрга ҳоким бўлиши

Янги маликанинг танқид қилиниши тўхтамади, бир кун ҳам тинчлик йўқ эди. Малика ўз нафсидан кўрқа бошлади, чунки ўша вақтлар юртбоши сайлови фақат қилич билан амалга оширилар, ниҳояси эса ўлим билан яқунланар эди. Шунда Шажаратуд-Дур давлатни бир эркак кишига бериб, ўзи унинг соясида бошқарувни олиб боришга қарор

⁶⁷⁰ Бухорий ривояти (4425).

⁶⁷¹ Саллабий «Бадаиъуз-зуҳур» (1/287) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (304-бет).

қилди. Салтанат муҳаббати эса, гўё унинг қонида оқарди. Шу сабаб тахтни осонлик билан таслим қилишга кўзи қиймади. У ўзида ақлий, идорий ва қиёдий қобилиятларни ҳис қиларди, булар эса ҳақиқатан катта имкониятлардир. У «сих ҳам, кабоб ҳам куймасин», қабилда иш тутди. Зоҳиран ҳукм майдонидан кетган-у, аслида ҳукмдор. У хатарли сиёсий ўйинни режа қилди. Бу сиёсий ўйин бирорта эркакка турмушга чиқиб, тахтни унга топшириш, сўнгра унинг орқасида туриб ҳукм юргизиш фикри эди. Бунга ўхшаш ўйинлар сиёсат майдонида кўп учрайди. Қанча-қанча ҳокимлар бор, бироқ уларнинг номи ҳоким, холос.

Шажаратуд-Дур ҳақиқий суратдаги эркакка эмас, қиёфаси эркак бўлган бирига турмушга чиқишни режа қилган эди. Чунки эркак киши қувватли бўлса, ҳукм қилишни ҳаргиз аёлига бериб қўймайди. Агар бўлажак эр насабли оиладан бўлса-чи, унда эрнинг қариндошлари унга султонлигида ёрдамчи бўлади ва шуҳратпараст малика ҳокимиятдан четлатилади. Агар эр мамлуклардан ҳамда заифроқ бўлса, айна муддао! Шажаратуд-Дур бу фикрларни бирма-бир хотиридан ўтказиб, торозига солиб кўрди. Сўнгра у мамлуклар орасидан Форисиддин Ўқтой, Рукниддин Бейбарс ва уларга ўхшаган кучли ва оқил бир кишини танламасдан, жангу-жадални хуш кўрмайдиган, ихтилофлардан узоқ ва тинчликсеварлиги билан машҳур Иззуддин Ойбек Туркмоний Солихийни ихтиёр қилди. Бу сифатлар Шажаратуд-Дур наздида айна у ахтарган энг яхши сифатлар эди.

Шажаратуд-Дур Иззуддин Ойбекка турмушга чиқди ва уни расман Миср волийси деб эълон қилди. Бу ҳодиса 648 йил жумодул-охир ойининг охирлари/1250 йилнинг октябр ойига тўғри келган эди, яъни Шажаратуд-Дур ҳукумат тепасига келганидан 80 кундан кейин юз берган эди.⁶⁷²

Миср бир йилнинг ўзида тўртта бошлиқни кўрган эди. Биринчи подшоҳ Солих Айюб раҳимаҳуллоҳ эди. У вафот топгач, ўрнига ўғли Туроншоҳ ўтирди. У ўлдирилгандан сўнг, Шажаратуд-Дур тахтга ўтирди. Бироз ўтиб у тахтдан тушди. Кейин Иззуддин Ойбек Туркмоний волий бўлди.

Мамлукларнинг салтанат тепасига чиқишини Иззуддин Ойбек Солихий бошлаб берди. Шажаратуд-Дур келиб чиқиш жиҳатидан мамлукларга ўхшасада, аксарият тарихчилар уни Айюбий султонлари

⁶⁷² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/308), Сиржоний «Қиссатут-татар» (231-бет).

сафига кўшади ва унинг Айюбийлар салтанатининг якунловчиси эканини билдирадилар.

Иzzуддин Ойбекка Миср халқи байъат қилди ва у подшоҳ Муъиз деган лақабни олди.⁶⁷³ Бу ҳодисалар Миср тахтига мамлукларнинг кўтарила олишига дебоча эди. Чунки Иzzуддин Ойбек Туркманий аслида мамлук аскар бўлган, кейин озод қилинган, бироқ барибир «Мамлук» деб эътибор қилинар эди. Миср халқининг райларига тўғри келмасида янги ҳолатни қабул қилди. Зеро, бу ҳолат аёл кишининг волийлигидан афзал эди-да. Подшоҳ Муъизнинг ўрнини боса оладиган шахс Миср ҳамда Шомдаги Айюбийлар орасида йўқ эди. Ҳолбуки, Шомдаги Айюбий амирлар заиф ҳолатда эдилар. Улар Носир Юсуф Айюбий, Ашроф Айюбий, Саид Ҳасан ибн Абдулазиз ва бошқалар мисолида гавдаланарди. Улар нафақат заиф, ҳатто бадхулқ, хоин кишилар эди. Подшоҳ Муъиз Иzzуддин Ойбек Туркманий ҳукумат тепасига келгандан сўнг, Мисрда вазият аста-секин мувозанатга кела бошлади.

Мамолийк муъиззиянинг шаклланиши

Шажаратуд-Дур ўзи режа қилганидек парда ортидан ҳукм юргиза бошлади. У мамлукларни, айниқса Форисиддин Ўқтой ва Рукниддин Бейбарсларни кўлларди. Бироқ унинг донолиги подшоҳ Муъиз Иzzуддин Ойбекни турмуш ўрток сифатида танлашида панд берган эди. Зеро, бу киши Шажаратуд-Дур гумон қилганидек заиф эмас, билакс ўта заковатли инсон чиқди. Иzzуддин Ойбек ўзининг биродарлари мамлукларнинг ва хотини Шажаратуд-Дурнинг хатарини яхши биларди, шу боис керакли тадбирини олишга киришди. Унинг биринчи қилган иши Шажаратуд-Дур ва Баҳрий мамлукларни йўқотиш бўлмади, балки шошилмасдан қадам-бақадам тайёргарлик кўра бошлади. Сайланган мамлукларни сотиб олиб, аскарий қуввати ва шахсий ҳомийлигини кучайтиришга киришди. Бу мамлуклар тарих саҳифаларида подшоҳ Муъиз Иzzуддин Ойбекка нисбатланиб, «Мамолийк Муъиззия» номи билан танилди. У Муъиззий мамлукларининг бошига рижолларнинг ёрқин намоёндаси, суворийларнинг энг кучлиси ва амирларининг мутлак улуғи — Сайфиддин Қутузни тайин қилди.

Бу ҳодиса Ислом оламининг машҳур қаҳрамони Сайфиддин Қутуз раҳимаҳуллоҳнинг тарих саҳифаларида илк кўзга ташланиши эди. У подшоҳ Муъиз Иzzуддин Ойбекнинг хос армиясига бош сардор бўлди.

⁶⁷³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/308).

Иншаоллох, куйида Сайфиддин Қутузнинг бу ўринларга қандай келиб қолгани, у кишининг насаби кимлардан эканини баён қиламиз.

Шом подшоҳ Солих ўлимидан сўнг Мисрдан ажралишга ҳаракат қилган бўлса, унинг ўғли Туроншоҳ ўлдирилганидан кейин амалий суратда алоҳида бўлиб олган эди. Миср билан Шом ўртасида икки марта катта уруш содир бўлди. Шомликлар бир неча бор Мисрга ғазот қилишга ҳаракат қилди. Биринчи жанг 648 йил 10 зулқайда/1251 йил 10 феврал куни, яъни Иззуддин Ойбек Миср тахтига ўтирганидан 4 ойдан кейин «Аббосия» деб аталган минтақада подшоҳ Муъиз билан Шом амирларидан Носир Юсуф ўртасида содир бўлди.⁶⁷⁴

Подшоҳ Муъиз Шом кўшини устидан икки марта катта ғалабага эришди, ҳатто охири сафар, яъни 3 йилдан сўнг 651/1253 йил Фаластинни Мисрга қўшиб олишга мушарраф бўлди. Бунда халифа Мустаъсим икки тараф ўртасида чиққан низога аралашиб, Фаластинни Мисрга қўшиб бериш бадалида⁶⁷⁵ улар ўртасида сулҳ ўрнатди.⁶⁷⁶ Подшоҳ Муъиз билан Носир Юсуф ўртасида ҳакамлик қилган халифанинг элчиси шайх Нажмиддин Базароий эди.⁶⁷⁷ Подшоҳ Солих қолдириб кетган давлатнинг қайтадан тикланиши, Миср халқи олдида подшоҳ Муъизнинг обрўси ва эътиборини ортишига олиб келди.

⁶⁷⁴ Саллабий «ал-Мўғул» (310-бет), Суҳайл Тоқуш «Тарихул-айюбийин фи миср ва биладийш-шам» (398-бет).

⁶⁷⁵ Сиржоний «Қиссатут-татар» (233-бет).

⁶⁷⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/321), Мақризий «ас-Сулук» (1/479-бет).

⁶⁷⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/321), Мақризий «ас-Сулук» (1/479-бет).

МАМЛУКЛАР ОРАСИДАГИ ФИТНА

Форисиддин Ўқтойнинг ўлдирилиши

Подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбек Баҳрий мамлуклардан бўлса ҳам, Баҳрий мамлуклар унга қаттиқ ҳасад қила бошлади. Икки тараф орасида гина-кудурат, ҳасаднинг нишонлари кўриниб қолди. Подшоҳ Муъиз Баҳрий мамлуклар назарида бирор қийматга эга эмасди. Мамлуклар орасида қувват, обрў-эътиборга ва тарихга эга бўлганлари бўлатуриб, Миср тахтига кўтарила олмаган, «Подшоҳ» деган лақабга лойиқ бўлсаларда, бу уларга насиб қилмаган эди. Иззуддин Ойбек эса, баобрў мамлуклар эришолмаган Миср ҳокими бўлган ва «Подшоҳ Муъиз» деган лақабни олган эди. Подшоҳ Муъиз номи қаерда-ю, Мамлук деган лақаб қаерда?!

Шулар сабаб, улар ўртасида кўролмаслик, ҳасад кучайди. Айниқса, Форисиддин Ўқтойнинг ҳасади чексиз эди. Муаррих Мақризийнинг хабар беришича, Форисиддин Ўқтой подшоҳ Муъизни менсимас ва жуда паст санарди, ҳатто бутун мамлуклар олдида унга шарафли лақаби билан мурожаат қилмай, фақат исмини айтиб, «Эй Ойбек!» дея хитоб қиларди.⁶⁷⁸ Форисиддин Ўқтойнинг бундай муомаласи самараси ўлароқ, Иззуддин Ойбек Баҳрий мамлукларнинг ҳасадларини сезиб турарди. Шу билан бирга халқ ҳам уни фақатгина маликанинг эри, деб ҳисобларди. Подшоҳ Муъиз Баҳрий мамлукларнинг бошлиқларини ўзгартиришни фикр қилди, бироқ унга шошилмади. Ойлар, ойлар кетидан йиллар ўтди.

652/1254 йил Миср армияси қўмондони Ўқтой Айюбий амирларининг қизларидан бирига уйланишни истади.⁶⁷⁹ У Ҳамаҳ амири Музаффар Такийюддин Махмуднинг қизига уйланмоқчи эди.⁶⁸⁰ Бу ҳолатни подшоҳ Муъиз эътибордан кочирмасдан, кузатиб борарди. Шунда подшоҳ Муъиз Ўқтойнинг халқ олдида ўзини кўрсатишга ҳаракат қилаётганлигини дарҳол пайқади. Агар Ўқтой Айюбийлардан бирига уйланса, у салкам 80 йил давомида Мисрни бошқариб келаётган Айюбийлар оиласига кириб бориши ва султон Айюбийнинг бевасига уйланган шахс Мисрда ҳоким бўлишга ҳақли-ю, Айюбийлар қизига

⁶⁷⁸ Саллабий «Қияму давлат ал-мамалийк ал-увла» (133-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (317-бет).

⁶⁷⁹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (233-бет).

⁶⁸⁰ Саллабий «Қияму давлат ал-мамалийк ал-увла» (133-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (317-бет).

уйланган ундан кўра ҳақли эмасми, дея инкилоб кўтариши мумкин, деган ўй подшоҳ Муъизнинг миясини қурт каби кемира бошлади. Устига-устак, Ўқтой ундан қувват ва обрў жиҳатдан устун эди. «Мансура жанги»да ҳам Миср лашкарига Ўқтой кўмондон бўлган эди. Подшоҳ Муъиз катта хатарни сезди. Ўзига қарши инкилоб қилиниши, инкилоб эса фақат қиличлар билан бўлишини у жуда яхши биларди. Ўқтойнинг ўзини баланд тутиши, уни менсимаслиги, энди эса Айюбий амирага уйланиш ҳаракати...

Булар гўё подшоҳ Муъизни тахтдан ағдариш учун қилинаётган режадек эди. Шунда подшоҳ Муъиз Форисиддин Ўқтойни ўзига қарши инкилоб қилиш режасини тузишда айблаб, уни ўлимга маҳкум қилди. 652 йил 3 шаъбон/1254 йил 25 сентябр чоршанба куни подшоҳ Муъизнинг фармони билан Форисиддин Ўқтой қатл қилинди.⁶⁸¹ Унинг қатлига фақатгина гумон сабаб бўлганди!

Ибн Касир раҳимахуллоҳ Ўқтойнинг ўлими сабабини бир гуруҳ Баҳрий мамлуклар подшоҳ Муъизни менсимамай, кибрланиб, унинг амрига бўйсунмай, ўзбошимчалик билан туғёнга кетиб, «ас-Сояид» минтақасида мусулмонлар молини талаб, хотин бола-чақасини кул қилиб, ер юзида фасод тарқатгани эканини хабар беради.⁶⁸² Подшоҳ Муъиз Форисиддинни Мисрдаги «Мансура қальаси»га чақиртиради⁶⁸³ ва ўша ерда уни Қутуз, Баҳодир ва Санжар Ғотмийлар қўли билан ўлдиртиради.⁶⁸⁴ Форисиддин Ўқтойнинг ўлими Иззуддин Ойбекнинг йўлини очди, унинг қуввати ортди, гапи ўтадиган бўлди. Хотини Шажаратуд-Дурнинг эса тили қисилиб, қуввати сина бошлади.

Баҳрий мамлукларнинг Шомга қочиши

Подшоҳ Муъиз етарли малакани ҳосил қилди ва Муъизий мамлукларнинг қувватини оширди. Ўлкада вазият анча барқарор ҳолатга келди. Халқ ундан рози, Аббосий халифа ҳам унинг ҳокимлигини тан олди. Бу подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбек учун ўта муҳим ҳамда Миср ҳукуматини барқарорлаштиришга бўлган жиддий одим эди. Форисиддин Ўқтойнинг ўлдирилиши натижасида Мисрда иккита катта гуруҳ вужудга келди. Улар: Шажаратуд-Дур ва Рукниддин Бейбарслар ҳомийлик қилган Баҳрий мамлуклар гуруҳи ва подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбек ҳомийлигидаги Муъизия мамлуклар жамоаси эди. Шунда

⁶⁸¹ Макризий «ас-Сулуқ» (1/483-бет). Муҳаммад Саллабийнинг хабар беришича, бу ҳодиса 652 йил 21 шаъбон душанба куни рўй берган. «ал-мўғул» (318-бет).

⁶⁸² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/323).

⁶⁸³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/323).

⁶⁸⁴ Макризий «ас-Сулуқ» (1/483-бет).

Баҳрий мамлуклар орамиздаги энг кучли ва улуғимиз Форисиддин Ўқтой ўлдирилди, энди қолганларнинг аҳволи нима бўларкин, деган ўйда довдираб қолишди. Раҳнамолари Шажаратуд-Дур бирор нарса қилишга қудрати етмаётган эди. Баҳрий мамлуклар хавф-хатар ва даргумон ҳолатда тонг оттирдилар. Сўнгра Баҳрий мамлукларнинг катталари подшоҳ Муъиздан хавфсираб, Шомга қочишга қарор қилдилар. Улар кечкурун Мисрни тарк қиларкан, Мисрнинг шарқий дарвозаси Қаротинга ўт қўйиб кетишди, шундан эътиборан бу дарвоза Маҳруқ (ёндирилган) деб номланиб қолди.⁶⁸⁵ Шомга қочганларнинг бошлиғи Рукниддин Бейбарс эди. Рукниддин Бейбарс Дамашқ волийси Носир Юсуфнинг химоясига кирди. Хуллас калом, Баҳрий мамлукларнинг катта қисми ёки ҳаммаси Шомга кетишди, қолган бир қисми Каракка подшоҳ Муғиснинг олдига ва бошқа жойларга кетишди.⁶⁸⁶ Баҳрий мамлукларнинг Фаластинда истиқомат қилишларига халифа Мустаъсим воситачилик қилди, шу билан Муъизий мамлуклари ва Баҳрий мамлуклари орасида юзага келган аланга гўё сўндирилган бўлди.

Шу тариқа Миср хавоси подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбек учун тамоман мусаффолашди. У яна уч йил, яъни 652–655/1254–1257 йиллар мобайнида бирор қаршиликларсиз салтанат сурди. Ўша дамларда унинг армиясига Сайфиддин Қутуз кўмондон эди. Подшоҳнинг хотини, собиқ малика Шажаратуд-Дурнинг попути анча пасайган, бутун дарди ва аламини ичига ютиб юрган эди.

Подшоҳ Муъиз ўлдирилиши қиссаси ва қотилнинг оқибати

655/1257 йил яъни подшоҳ Муъиз Мисрга ҳоким бўлганидан 7 йил ўтиб, минтақада янада мустаҳкам ўрнашишни истади. Чунки замон хоинлик, фитна ва хийлага тўлиб кетган эди. Шу боис у иттифоқ тузиш ҳаракатини бошлади, бу иттифоқни никоҳ билан юзага келтирмоқчи бўлди. У ўша минтақадаги бирорта подшоҳнинг қизига уйланиб, сўнгра у подшоҳ билан алоқаларни ривожлантиришни режа қилди. Подшоҳ Муъиз Мосулнинг амири Бадриддин Луълуънинг қизини танлади.⁶⁸⁷ Бу амир мўғулларга сотилгани ва хоинлиги ҳақида юқорида зикр қилгандик.

Кўп нарсадан маҳрумликдан ғазабини ичига ютиб юрган собиқ малика, подшоҳ Муъизнинг хотини Шажаратуд-Дур бундан хабар

⁶⁸⁵ Мақризий «ас-Сулук» (1/483-бет).

⁶⁸⁶ Мақризий «ас-Сулук» (1/483-бет).

⁶⁸⁷ Саллабий «ал-Мўғул» (319-бет).

топади ва рашк ўтида ёнади. Аёллар орасида кенг тарқалган «Эр бермоқ, жон бермоқ» қабилидаги сўзлар ўз натижасини кўрсата бошлади. Агар бу никоҳ амалга ошса, Шажаратуд-Дур тарихдан бутунлай ўчиб кетади, деган ўй унинг ичини темир тирноқлари билан тирнай бошлади. Ишларни гўзал идора қилиш ўрнини рашк алангаси эгаллаган, бошқа аёллардан ажратиб турувчи ҳикматни унутган, уни қўлловчи Баҳрий мамлукларнинг катталари Шомга қочиб кетган, ҳақиқий қувват эри подшоҳ Муъиз ҳомийлигидаги Муъизий мамлуклари томонда эканини хаёлига келтирмаган эди. Воқеликни кўришдан тўсган рашк отлик аёллик ҳиссиётига берилиб, оқибатини ўйламай қарор қилди. Бу қарор нима бўлса, бўлсин, барибир, эри бўлмиш подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбекни ўлдириш қарори эди!

Қабиҳ ҳукм 655 йил рабиул-аввал/1257 йил апрел ойида амалга оширилди.⁶⁸⁸ Шу билан подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбекнинг даври битди, у Миср тахтида 33 кун кам етти йил ўтирган эди. Ўшанда у 60 ёшлар атрофида эди.⁶⁸⁹

Шундай қилиб, Шажаратуд-Дур икки Миср султони: Туроншоҳ ва Иззуддин Ойбекнинг ҳаётига зомин бўлди.

Бу жиноят ҳаммага кундек равшан бўлди. Подшоҳ Муъизнинг ўнг қўли, армия кўмондони Сайфиддин Қутуз ва Иззуддин Ойбекнинг биринчи хотинидан бўлган 15 ёшли ўғли Нуриддин Али зудлик билан Шажаратуд-Дурни қўлга олдилар. Нуриддин Алининг онаси, яъни Иззуддин Ойбекнинг биринчи хотинидан қотилнинг устидан ҳукм чиқариши талаб қилинди. Нуриддин Алининг онаси ниҳоят даражада каттик ва жирканч ҳукм чиқарди, бу қасос жориялар Шажаратуд-Дурни ёғочдан бўлган калишлар билан уриб ўлдириш ҳукм эди. Ва у шу тарика ўлдирилди.⁶⁹⁰ Шаръан ҳукм қилинса ҳам, қотил қасосан қатл қилиниши керак, бироқ бу ўринда қасос аёлларга оид бўлиб, нафақат қасос, балки таҳқирлаш, хўрлаш мақсад қилинган эди.

Аббосийлар халифаси Мустаъсим ҳам тепкилаб ўлдирилган эди. Бу каби жазо Оллоҳнинг ҳам, халқнинг ҳам ҳақларига риюя қилмаган бошлиқларнинг баъзиларига хос ғайриоддий жазодир.

⁶⁸⁸ Саллабий «Қияму давлат ал-мамалийк ал-увла» (139-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (320-бет).

⁶⁸⁹ Мақризий «ас-Сулук» (1/494-бет).

⁶⁹⁰ Мақризий «ас-Сулук» (1/494-бет), Заҳабий «Сияр аълам ан-нубала» (23/199).

САЙФИДДИН ҚУТУЗ ВОЛИЙЛИГИ

Подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбек ва Шажаратуд-Дурнинг ўлдирилишидан сўнг, Нуриддин Али ибн Иззуддин Ойбекка байъат қилинди. У ўша дамлар 15 ёшда эди. Ёш боланинг султон бўлиши шубҳасиз катта ихтилофларга сабаб бўлар, аммо юзага келиши мумкин бўлган низоларнинг олдини олиш бундан каттароқ аҳамият касб этар эди. Шу билан бирга Мисрдаги рижолларнинг энг забардасти ҳисобланган Сайфиддин Қутуз ва подшоҳ Муъизни қўлловчи Муъизий мамлуклар бунга бош-қош бўлган эдилар. 655 йил 26 рабиул-аввал/1257 йил 20 апрелда⁶⁹¹ 15 ёшли Нуриддин Али Миср тахтига ўтирди ва «Подшоҳ Мансур» лақабини олди.⁶⁹² Парда ортидаги ҳақиқий ҳоким Сайфиддин Қутуз эди.

Сайфиддин Қутуз ўзи ким эди? Ислом тарихи қаҳрамонларидан бири бўлган Сайфиддин Қутуз ким эди?

У кишининг асл исми Маҳмуд ибн Мамдуд бўлиб, мусулмон подшоҳлар оиласидан эди. Субҳоноллоҳ, бу дунё бунчалар тор бўлмаса! Сайфиддин Қутуз раҳимахуллоҳнинг онаси Ҳоразмшоҳ Жалолиддин Мангубердининг опаси, отаси эса Жалолиддиннинг амакиваччаси эди.⁶⁹³

Жалолиддин Мангуберди икки марта мўғуллар устидан ғалаб қозонгандан кейин Ҳинд дарёси бўйида аччиқ мағлубиятга учраган ва Ҳиндистонга қочиб кетган эди. Сўнгра Форс ерларига қайтиб, мўғуллар ва насронийлар қатори кўпгина мусулмонларнинг жонига зомин бўлган ва охир-оқибат курд миллатига мансуб деҳқон томонидан аянчли ва фожиали суратда қатл қилинган эди. Мўғуллар Жалолиддиннинг қариндошларини кўпини ўлдирган, қолганини асир олган эди. Сайфиддин Қутуз мўғуллар тирик қолдириб, қул бозорларида сотганлар жумласидан эди. Муҳмудга Қутуз лақабини мўғуллар қўйган эди. Мўғул тилида «Қутуз» сўзи «қопағон ит», деган маънога далолат қилади.⁶⁹⁴ Қутузда ёшлигиданок қатъийлик, қувват ва жасорат аломатлари равшан бўлгани учун мўғуллар унга бу лақабни қўйишган эди. Сўнгра уни Дамашқ қул бозорида сотиб юборишган, кейинчалик уни Айюбийлардан бири сотиб олиб, Мисрга олиб кетган эди. Ундан бунга сотилиб, охири

⁶⁹¹ Мақризий «ас-Сулук» (1/495-бет).

⁶⁹² Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/386).

⁶⁹³ Мақризий «ас-Сулук» (1/520-бет), Заҳабий «Сияр аълам ан-нубала» (23/200–201), Сиржоний «Қиссатут-татар» (238-бет).

⁶⁹⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (239-бет).

подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбекка етиб келган эди. Сўнгра гувоҳ бўлиб турганимиздек, Қутуз унинг армиясига бош қўмондон бўлди. У Миср ҳокими бўлгандан сўнг «Подшоҳ Музаффар» (ғолиб) деган лақабни олди.

Қутуз қиссасини ўрганар эканмиз, тарихнинг ҳар доим қайталаниб туришининг яққол гувоҳи бўламиз. Оламлар Раббиси Оллоҳ субҳонаҳу ва таолонинг ажойиб ва гўзал тадбирини мулоҳаза қилинг. Фиръавн мулкининг заволидан кўркиб Бани Исроилнинг ўғил фарзандларини кирди. Аммо Оллоҳ таоло айнан ўша фарзандни Фиравннинг ўзи ўз уйда ўғил қилиб, тарбиялаб улғайтиришини хоҳлади. Сўнгра у сабабли мулки заволи бўлди. Мўғуллар ҳам мусулмонларнинг ёшу-қарисини қиличдан ўтказаркан, уларнинг фарзандларидан бирини кул қилди ва Дамашқда ўзларига қайтариб сотди.⁶⁹⁵ У бошқасига сотилди, сўнгра бошқасига, ҳатто бутунлай бошқа ўлкага бориб қолди. У етти ухлаб тушига бир кирмаган диёрда эди. Мўғуллар ўз мулкининг заволи қилувчи душманини ўзларидан узоқ бир ерга, Оллоҳнинг қадарини бажаришга сақлаб қўйган эди. Ўша дамлар ёш кул болакай бўлган бир ночор, йиллар ўтиб шу юртнинг волийсига айланади ва мўғуллар давлатига яқун ясайди. Раббимиз Оллоҳ нақадар буюк:

«Улар макрларини қилдилар. Биз ҳам улар сезмаган ҳолларида бир «макр» қилдик».⁶⁹⁶

Қутуз барча Мамлуклар сингари кучли диний тарбияда улғайди. Ёшлигиданоқ аскарый билимлар ва жанг услублари, бошқарув шакли ва идора қилиш йўлларини ўрганди. У киши динга муҳаббатли, динни кадрловчи, жасур ва мағрур бўлиб етишди. Қутуз ўта сабр-бардошли эди. Бундан ташқари, у подшоҳ хонадонидида туғилган ва гўдаклигида амирларга хос ҳаёт кечирган эди. Бу эса, унга ўзига бўлган ишонччи берган эди. Бошқариш, ҳукм юргизиш ва идора қилиш ишлари унга бегона эмасди. Устига-устак, унинг оиласи мўғуллар оёғи остиди ҳалок бўлган ҳамда ёшлигида мўғулларнинг қилмишларини ўз кўзлари билан кўрган эди. Бу эса мўғуллар фожиасини яхшироқ тушунишига катта туртки бўлганида шубҳа йўқдир. Юз марта эшитгандан бир марта кўрган бошқа, дейдилар. Бу омилларнинг барчаси тўпланиб, Қутузни қийинчиликларни енга оладиган, душманларидан, ҳар қанча кўп ва кучли бўлса ҳам, умуман кўркмайдиган мардлик тимсоли бўлишига олиб келди. Исломий тарбия Қутуз ҳаётида катта ижобий таассурот қолдирган эди...

⁶⁹⁵ Макризий «ас-Сулук» (1/520-бет).

⁶⁹⁶ Намл: 50.

Нуриддин Али ҳокимлиги даврида Мисрдаги аҳвол

Подшоҳ Муъиз ўлиmidан сўнг унинг ўрнини 15 ёшли ўғли Нуриддин Али эгаллади. Миср ҳокимиятига аёл киши бошлиқ бўлганида Мисрда ва Ислom оламида қаттиқ норозилик ва кўзғолонлар юз берди. Энди Миср тахтига ёш бола ўтиргани учун яна айни норозилик ва кўзғолонлар юз бера бошлади. Бу норозилик намойишларга баъзи Баҳрий мамлуклар раҳнамолик қилди. Чунончи, Баҳрий мамлукларнинг бошлиқлари ва аксарияти подшоҳ Муъиз даврида Шомга қочиb кетган эди. Бу кўзғолонларни чиқараётганлар уларнинг Мисрда қолганлари томонидан амалга оширилди. Уларга Баҳрий мамлуклардан бўлган Санжар Ҳалабий исмли шахс бошчилик қилди.

Санжар Ҳалабий Иззуддин Ойбекнинг ўлиmidан сўнг ўзининг султонликка лойиқ эканини даъво қилиб, ҳукуматни ағдаришга ҳаракат қилди. Қутуз уни ушлаб, ҳибс қилишга мажбур бўлди.⁶⁹⁷ У билан бирга бошқа кўзғолончилар ҳам ҳибсга олинди. Баҳрий мамлукларнинг қолганлари Шомга қочиb қолишди. Улар у ерда бошлиқларига қўшилди ва Айюбий амирларни Мисрга уруш очишга тезладилар. Баъзи амирлар уларга ижобат қилди. Жумладан, Карак амири Муғисуддин Умар уларнинг фикрини қабул қилди. Карак ҳозирги кунда Урдунда жойлашган шаҳардир.

Карак амирининг Мисрга ҳужуми

Муғисуддин Умар ўта заиф, кучсиз айни пайтда ўта тамагир амир эди. У лашкарини олиб Мисрга қараб юрди ва 655 йил зулқаъда/1257 йил ноябрда⁶⁹⁸ Миср чегарасига етиб келди. Қутуз уни Мисрга киришидан тўсди ва қўшинини тор-мор қилди. Шундай қилиб, Муғисуддин мағлуб ҳолатда юртига қайтди, бироқ Мисрга қайта ҳужум қилиш фикридан қайтмади. 656 йил рабиул-охир/1258 йил апрелда яна Мисрга ҳужум уюштирди. Бу сафар ҳам хунук мағлубиятга учради.⁶⁹⁹

Шу ўринда эътиборга лойиқ нозик бир нуктага эътиборингизни қаратаман. У ҳам бўлса Муғисуддин Умар Айюбийнинг Мисрга иккинчи бор ҳужуми, яъни 656 йил рабиул-охир/1258 йил апрел оyi Бағдод маҳв этилганидан икки ой ўтар-ўтмас юз берганидир. Маълумингизки, Бағдод хижрий 656 йил сафар ойида ишғол қилинган эди. Муғисуддин Умар Айюбий кучини тўплаб мўғулларга қарши сафарбар қилиш ўрнига, бор

⁶⁹⁷ Саллабий «ал-Мўғул» (322-бет).

⁶⁹⁸ Сиржоний «Қиссатут-татар» (241-бет). Саллабий «ал-Мўғул» (323-бет).

⁶⁹⁹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (241-бет). Саллабий 656 йил рабиъл-аввал ойида юз берган, деб хабар беради. «ал-Мўғул» (323-бет).

кучини мусулмонларга уруш очишга йўналтирди. Бу ҳақиқатан, ҳам иймоний, ҳам маънавий, ҳам сиёсий тубанликдир. Муғисуддин шундай хатарли маразга гирифтор бўлган шахс эди.

Юкорида баён қилганимиздек, Ҳулагу Шомга хужум қилишга тайёргарликни бошлади, унинг ўғли Ашмут 656 йил ражаб/1258 йил июл ойида Майяфариқин⁷⁰⁰ шахри қамалига киришди. Ҳулагу 657/1259 йил Форседан Шомга Ирокнинг шимолидан йўлга отланди. Нусайбин, ар-Роҳа⁷⁰¹ ва ал-Бира⁷⁰² шаҳарларини эгаллади. Ҳозирда бу шаҳарлар Туркиянинг жанубида жойлашган. У Ҳалабга яқинлашиб қолди. Ҳулағунинг Шомни ишғол қилгандан кейинги қадами Миср экани кундай равшан эди...

Сайфиддин Қутузнинг волий бўлиши

Қутуз Мисрни амалий суратда бошқарсада, Миср тахтида ёш султон Нуриддин Али ўтирар эди. Бу эса ҳокимиятнинг ҳайбатини пастлатар ва одамларнинг ҳукуматга ишончини йўқотар эди. Шунингдек, тахтда ёш болани кўрган душманларнинг тамалари ортар эди. Баҳайбат мўғулларнинг кўрқинчли хатари соя солиб турган бир пайтда Мисрда ички муаммолар, намоёишлар ва кўзғолонлар авжига чиққан ҳамда Шомдаги Айюбий амирлар Мисрга кўз олайтириб турар эди. Шунда Қутуз минтақадаги энг муҳим давлат бўлган Миср тахтида ёш султон Нуриддин Алининг қолишида манфаат кўрмагач, жиддий қарор қабул қилди. Бу қарор ёш султон Нуриддин Алини тахтдан олиб, ўзи тахтга ўтириши эди. Қутузнинг бу қарорни қабул қилишига шайх Изз ибн Абдуссалом раҳимахуллоҳ маслаҳат берди. Қарор жуда ҳам ажабланарли эмас. Қутуз давлатни амалий суратда бошқарар, буни нафақат халқ, ҳатто Нуриддин Алининг ўзи ҳам яхши биларди. Кучсиз ёш султоннинг ортида дунё ва унинг жўғрофий ҳолатини ўзгаришига ҳамда тарих саҳифаларида катта бурилиш юз беришига сабабчи бўлган арслон Сайфиддин Қутуз турар эди. Қутуз бу жиддий қарорни 657 йил 24 зулқаъда /1259 йил 19 ноябр куни ижро қилди.⁷⁰³ Ўша куни Муъиззий ва Баҳрий мамлукларнинг амирлари амир Сайфиддин Баҳодир ва амир Аламуддин Санжар Ғотмийлар бошчилигида Аббосия минтақасига овга кетишди. Шу фурсатдан фойдаланган Қутуз султон Нуриддин Алини, унинг укаси Қоқон ва онасини ҳибс қилди. Ва ўша куннинг ўзида Жабал

⁷⁰⁰ Ҳозирги кундаги номи Силвандир.

⁷⁰¹ Рус. Шанлыурфа. Ҳозирги кунда Туркиянинг Şanlıurfa шаҳридир.

⁷⁰² Рус. Биреджик. Ҳозирги кунда Туркиянинг Birecik шаҳридир.

⁷⁰³ Саллабий «ал-Мўғул» (325-бет).

калъасида подшоҳнинг тахтига ўтириб, ўзини Миср подшоси деб эълон қилди, ҳозир бўлганларнинг барчаси бунга рози бўлишди ва унга малик (подшоҳ) Музаффар деб лақаб қўйишди. У Миср тахтига ўтирган учинчи турк миллатига мансуб султон эди.⁷⁰⁴

Султон Нуриддин Али ибн Иззуддин Ойбек 2 йил 8 ойу 3 кун Мисрга волий бўлган эди.⁷⁰⁵

Ҳулагу Ҳалабга келишидан бир неча кун олдин, Қутуз Миср тахтига кўтарилиб қўйилган мўғулларни қаршилаш учун тайёргарликни бошлаб юборди. Миср диёрида муҳим ҳодисалар юз берди. Ўша замонда янги бурилиш содир бўлди, янги байроқ кўтарилди. Қўшин катта ҳозирлик кўрди. Келинг, бу ҳодисаларга яқиндан назар солайлик. Оллоҳ таоло бугунги ҳодисаларни ҳам, ўшандай нусратларга боғласин.

Сайфиддин Қутуз даврида Мисрнинг аҳволи

Мўғуллар Шомга хужумни бошлаб, Миср диёрига яқинлашиб қолган кезде Миср жуда таҳликали ҳолатда эди. Қутуз давлатни барқарор ва тинч ҳолатда эмас, аксинча тамоман бетартиб ва беқарор ҳолатда қабул қилган эди.

Ўша даврдаги ички сиёсат

Мисрнинг ички сиёсати тахт учун кураш натижасида қаттиқ танглашган ва бесаранжом бир ҳолатда эди. Бу ҳолат охириги ўн йил ичида жуда авжига чиқди. Подшоҳ Муъиз Иззуддин Ойбек даврида етти йил мобайнида вазият нисбатан барқарорлашди. Аммо унинг, сўнгра Шажаратуд-Дурнинг ўлдирилиши ва 15 ёшли Нуриддин Алининг тахтга ўтириши вазиятни яна кескинлашишига олиб келди. Сўнгра Қутуз Нуриддин Алини тахтдан олиб, ўзи ўтирди.

Қутуз айна дамда бошқарув курсисида ўтирган бўлсада, тахтга иштиёқмандлар ҳам етарли эди. Қутузга шахсий адовати бўлганларнинг кўп бўлишида ҳам шубҳа йўқ. Бу ҳасадчи, тамагир, тахт ишқибозлари қулай фурсатда, энг камида Қутузни тахтдан олишга ҳаракат қилишлари табиий ҳолдир. Йўқса, мамлуқлар одатига кўра уни қатл қилишлари ҳам эҳтимолдан холи эмас.

Шажаратуд-Дурни қўллаган Баҳрий Солиҳий мамлуқлар билан ўша пайтлар Сайфиддин Қутузни қувватлаган Муъизий мамлуқлар

⁷⁰⁴ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/507-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (325-бет).

⁷⁰⁵ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/507-бет).

Ўртасидаги фитна давом этаётган эди. Маълумингизки, Баҳрий мамлукларнинг аксарияти Шомга қочиб кетишган ва у ерда бошқа амирликлар билан бирлашган эди. Мисрда қолганлари доимий назоратда ва таъқиб остида эдилар. Мамлуклар орасидаги бундай бўлиниш Мисрнинг аскарӣ қувватини заифлаштирди. Зеро, Баҳрий мамлуклар Миср армиясининг тақрибан асосий қисмини ташкил қиларди.

Ўша даврдаги ташқи сиёсат

Юртда ички вазият ва армиянинг ҳолати бундай хатарли кўринишда бўлса, ташқи сиёсий ҳолат ҳам ундан қолишмас эди. Мисрнинг атрофдаги давлатлар билан алоқаси бутунлай узилиб бўлган, Шом амирликлари билан дипломатик алоқалари барбодгина эмас, улар ўртасида кучли адоват бор эди. Мисрнинг шимолий Африка, Ливия ва Судан билан ҳам айтарлик, суянса бўладиган алоқаси йўқ эди. Миср худди ваҳший мўғуллар ямламай ютиши мумкин бўлган, подадан ажралиб қолган якка кўзи мисоли эди.

Ўша даврдаги иқтисодий ҳолат

Мисрдаги иқтисодий аҳвол, сиёсий ва ижтимоий ҳолатга яраша эди. Мамлакатда мунтазам салиб юришлари, Шом амирликлари билан урушлар ҳамда ички низо ва кўзғолонлар оқибатида юртда иқтисодий бўҳрон ҳукм сурарди. Халқ ички ва ташқи фитналар билан овора, бу эса иқтисодни энг сўнгги даражага қадар ёмонлаштирди. Бошқа жиҳатдан, Мисрдаги ички низолар ва подшоҳларнинг бирин-кетин қатл қилинишини четдан кузатиб турган ғарб салибчиларининг қасос ва интиқом олишга ҳаракат қилишлари шубҳасиз эди. Чунончи, улар бундан 10 йил олдин «Мансура» ва «Фарискур» жанглирида хунук мағлубиятга учраган эдилар. Шунингдек, Фаластинда ўн йиллар давомида илдиш отган салиб амирликлари Мисрга жуда яқин эди. Мисрнинг бундай қийинчилик кунларида улар ҳам уруш очишни фикр қилиши аниқ. Буларнинг барчаси бир томондан, шарқдан ёпирилиб келаётган мўғул бўрони иккинчи томондан Мисрни ларзага соларди.

ҚУТУЗНИНГ САЪЙ-ҲАРАКАТИ

Қутуз жуда муҳим ва оғир меросни қабул қилган эди. Бу вазиятда у нима ишлар қилди? Йиртқич мўғул хужумини қандай қаршилади? Бу мавзу «*Мўғул босқини*» деб номланган ушбу қиссамиз орасидаги энг муҳим бўлим ҳисобланади. Бу бўлим умматнинг қайта бунёд бўлиши ва қайта оёққа туриши ҳақида баҳс юритади. Қутуз бизга сиёсий, ижтимоий, иқтисодий, ҳатто ахлоқий қийин вазиятда ислоҳни қаердан бошлашимизни таълим беради. У киши юртни ислоҳ қилди, Миср қисқа бир замонда Ер қуррасидаги энг кучли давлатга айланди. Қутузнинг қилган ишларига назар солинса, ҳайратда қолмасликнинг иложи йўқ.

Ички вазиятнинг барқарорлашиши

Қутуз биринчи ўринда Мисрда ички вазиятни барқарорлаштиришга киришди. Бунинг учун у ўзи ўтирган тахт ишқибозлари ишини бартараф қилиш керак эди.

Уларнинг тамаларини ҳийла йўли билан эмас, дохиёна гўзал хулқ билан бартараф қилди. Қутузни юксак даражага кўтарган нарса унинг гўзал хулқи эди. У Мисрдаги амиру аъёнлар, кибор уламолар ва халқ орасида етакчиларни Жабал қалъасига жамлади. Улар халқнинг турли табақалари орасида ҳаракат қилар, шу билан бирга халққа ўз таъсирларини ўткази оларди. Бир қатор амирлар Қутузнинг султон Нуриддин Алини тахтдан олиб, ҳибс қилганини танқид қилишди. Қутуз уларга юзланиб очиқ-ойдин мақсадини баён қилиб, «Мен Миср тахтини эмас, балки мўғуллардан миллатимизни озод қилишнигина қасд қилдим. Бу эса, подшоҳсиз амалга ошмайди!»⁷⁰⁶ деди.

Қутуз мантиқан ҳам асосли эди. Тахтда 15-16 ёшли бола билан, унинг орқасида туриб, Ер юзидаги энг кучли давлат бўлган мўғул давлатига қарши урушишни кимса ақлига сиғдира олмасди. Ёш боланинг подшоҳлиги мўғуллар назарида Миср давлатининг ҳайбатини йўқотарди. Қутузнинг Миср тахтига кўтарилишидаги биринчи ва асосий мақсади, мўғулларга қарши урушиш ва Оллоҳ йўлида жиҳод қилиш эди.

Қутуз сўзида давом этди: «Агар жангга чиқиб, бу душманни енгсак, иш ўзларингга ҳавола, ундан кейин истаган одамни бошлиқ

⁷⁰⁶ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/507, 508-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (245-бет).

килинглар!»⁷⁰⁷ деди. Буни эшитган мажлис аҳли тинчланди ва барчаси бунга рози бўлди.

Мусулмонларнинг ягона мақсад атрофида жамланиши

Қутуз тахтга ўтиришининг сабаби бўлган ушбу доҳиёна тадбирини ошкор қилди. Бу билан у бостириб келаётган мўғуллар хатарини умматга кўрсата олди. Уммат бошидан кечираётган қийинчилик, мусибат ва бўҳронлар янада катталашини мумкин эди. Одамлар кўрққан нарса ҳам шу эди. Ва мана шу кўрқув сабаб уларнинг бирлашини осонлашди. Қутуз одамлардаги бу кўрқув ва ҳайронликдан мўғулларга қарши курашда фойдаланди ва уларни битта байроқ остида бирлаштирди.

Қутуз Мисрга волий бўлган куни муқаддас жиҳод байроғи остида бирлашиш ихтиёрий эканини, бу иш муайян бир қабила ёки фақат мамлукларнинг ўзигагина чекланмаганини очикчасига эълон қилди.

Ғарблик шарқшунос таҳлилчилар ёки ўзларининг таҳлилларида ғарб мадрасаларига таянувчи баъзи мусулмон таҳлилчилар айтаётган сўзларга биз қўшилмаймиз. Улар, Қутуз бу каломни мусулмонларнинг Оллоҳ йўлида жиҳод қилишга бўлган муҳаббатидан фойдаланиб, муҳолифчиларни бостириш ҳамда тахтда мустаҳкам ўрнашиш учун эълон қилди, дейишади.

Қутуз айтган бу сўзлардан ҳеч қачон ёмон гумонда бўлмаймиз. Мўминлар хусусида яхши гумонда бўлиш, шариат матлабидир.

Сўзлар ва қилмишлар, ҳар доим шахснинг сийрати ва ҳаётига қараб баҳоланади. Ҳақиқатни ўз ичига олган бу жумла, жуда катта аҳамиятга эга. Киши битта гапни гапирди, ундан муайян бир маъно тушунилади. Аини гапни бошқа бир киши сўзлайди, ундан бутунлай бошқа бир маъно англанади. Қутуз сўзлаган муқаддас жиҳод калимасидан муайян бир маънони фараз қилсак, бундан олдин шу калимани айнан ўзини сўзлаган Носир Юсуф Айюбийнинг сўзидан мутлақо бошқа маънони фаҳмлаймиз. Бу икки ўрин орасида жуда катта фарқ бор. Ҳар иккиси ҳам Оллоҳ йўлида жанг қилишини айтди. Бироқ ҳозир биз бу калимага Қутуз раҳимаҳуллоҳнинг сийрати асосида баҳо беришни истаймиз. Унинг Мисрга волий бўлганидан кейинги ҳаёти, Айн-Жалутгача бўлган саъй-ҳаракатлари ва «Айн-Жалут маъракаси»даги ҳамда ундан кейинги ҳаёт тарзига асосланиб, унинг жиҳодга даъватини таҳлил қилмоқчимиз. У кишининг асосий ғояси Оллоҳ йўлида жиҳод қилиш, мўғулларга қарши савашиниш ва диннинг носирини бўлиш эди. Юқоридаги босқичларнинг

⁷⁰⁷ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/508-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (245-бет).

барчасида унинг бу ғоясининг подшоҳликка бўлган рағбатидан устун бўлганини гувоҳи бўламиз. Оллоҳ азза ва жалла унинг қўли билан умматга нусратини берганига, иншаоллоҳ куйида шоҳид бўламиз. Одатда, Оллоҳ таоло мунофиқ ва бузғунчи кимсалар қўли билан умматга нусрат бермайди. **«Зеро, Оллоҳ бузғунчи кимсаларнинг ишини ўнгламайди».**⁷⁰⁸

Мусулмонлар тарихида қалбидаги нияти нафс-ҳавоси билан аралашиб кетган кишиларнинг номи қолмаган. Қутуз ҳақида фақат яхши гумон қиламиз. Оллоҳ таолонинг олдида бирор кимсани оқламоқчи эмасмиз. Ислом уммати уламолари у кишининг адолати, фазли ва тақвосига бир овоздан гувоҳлик берганлар. Уламолар у киши ҳақида кўп сўзлар айтишган, уларнинг баъзиларини, Оллоҳнинг изни билан ҳали зикр қилиб ўтамиз.

Шундай экан, ғарблик шарқшунос ва таҳлилчиларнинг «Қутуз мулк ва салтанатни қасд қилган», деган ўринсиз сўзларига парво қилмаймиз. Ҳозирда баъзи мусулмон таҳлилчиларнинг бу борадаги айтган фикрлари эса ҳақиқатни ўзгартира олмайди. Умматимиз тарихида бундай ва бундан устун қаҳрамонлар: Умар, Холид, Салоҳиддин ва Нуриддин Зинкийлар сийрати порлоқ юлдузлар каби нур сочиб зийнат бўлиб туради. Шундай экан, бу уммат Қутузлардан холи бўлиб қолмайди. Ҳоради, толади, баъзан адашади, лекин Оллоҳнинг изни билан ўз йўлини топади. Оллоҳдан ҳар биримизни Расулulloҳнинг байроқларини тик кўтариб Умар, Холид ва Абу Убайда каби ҳақ томонга шахдам қадам босадиган бандалари сафида қилишини сўраб қоламиз. Дарҳақиқат, Қутуз умматнинг олдинги сафидан жой олган, уммат шодасида маржон бўлиб кўзга ташланган қаҳрамондир. Умматимиз Оллоҳнинг изни ила яхшилик узра давом этажак.

Сайфиддин Қутузнинг бошқарув маҳорати

Қутуз олий хулқи билан улуг мақсад йўлида қўмондон ва уламоларни жамлаш баробарида мамлакат бошқарувини четда қолдирмади. У нафақат хуснихулк, ҳатто идора қилиш, бошқарув ва сиёсат борасида пешқадам ва қатъиятли эди. У Шажаратуд-Дурга садоқати билан танилган вазир Тожуддин Абдулваҳҳоб ибн бинт Ал-Аъаззни мансабидан четлатди ва унинг ўрнига қудрат ва имкониятларга эга бўлган ҳамда ўзига нисбатан садоқатли Зайниддин Ёқуб ибн

⁷⁰⁸ Юнус: 81.

Абдуррофиъни вазир қилди.⁷⁰⁹ Айни вақтда Миср армиясига Форисиддин Ўқтой Соғийр Солихийни сардор этиб тайинлади.⁷¹⁰ Бу сардор Баҳрий мамлуклар қўмондони Форисиддин Ўқтой эмас. Чунончи, у ҳижрий 652 йил, яъни бундан 6 сана олдин подшоҳ Муъиз томонидан қатл қилинган эди.

Қутуз Баҳрий ва Муъизий мамлуклар ўртасидаги жиддий ихтилофлар бўлишига қарамай, Баҳрий мамлуклардан бўлган саркардада аскарий қобилият, сардорлик, садоқат ва бошқа лаёқатларни кўргач, уни ўз армиясига қўмондон этиб тайинлади. Бу тасарруфда Қутузнинг омонатга вафодорлиги ҳамда сиёсий донолигига гувоҳ бўламиз. Баҳрий мамлуклардан бирининг Миср армиясига қўмондон бўлиши Шом ва Анадолуга қочиб кетган ҳамроҳлари қалбида катта ижобий ўзгариш ясаб, Муъизий мамлукларга нисбатан туйган адоватларининг йўқолиши ва шу тариқа ўртадаги низолар бартараф бўлиши каби муҳим мақсадни Қутуз каби доҳийлар кўра олади. Шу сабаб Мисрда вазият барқарорлашибгина қолмай, Қутуз Баҳрий мамлукларнинг етук аскарий малакаларидан баҳраманд бўлиши ҳамда улар билан ҳамкорлик қилишга йўл ҳам очилган эди.

Қутуз агар одамлар муқаддас курашни четга суриб қўйсалар, ўзлари билан ўзлари овора бўлиб қолишларини яхши биларди. У тахтга ўтириб, ўзига вазир ва армиясига қўмондон тайин қилганидан сўнг, вазири Зайниддин ва армия сардори Форисиддин Ўқтойларга қўшин ҳозирлашлари, сафларни тартиблаб, тайёргарликни бошлашларига буйруқ берди. Барча инсонлар улуг мақсад — Оллоҳ йўлида курашишга бел боғлашди.

Қутузнинг сиёсатидаги биринчи қадами — мамлакатнинг ички вазиятини барқарорлаштириш экани шу тарзда барчамизга маълум бўлди.

У одамларни уммат хизматига жалб қилди, султоннинг ҳақиқий вазифаси — подшоҳ бўлиш, дунё жамғариш ва тахтни фарзандларига мерос қолдириш эмас, балки шариатни қويم қилиш, юртнинг ҳимояси, халқ манфаатини кўзлаш, одамларнинг ҳуқуқларини риоя қилиш эканини очиқ-ойдин кўрсатди. Шу сабаб Мисрда ички аҳвол барқарор бир ҳолатга келди ҳамда сафлар бирлашди.

⁷⁰⁹ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/507-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (247-бет).

⁷¹⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (247-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (326-бет).

Мўғулларга қарши курашга тайёргарлик

Мисрда вазият тобора ижобийлашиб бораркан, Қутуз асосий масалага қадам қўйди. Ушбу масала мўғулларга қарши жангга ҳозирлик эди. Ўтқир заковат талаб қилинадиган бу иш ҳикмат билан амалга оширилди. Қутуз буюкларга хос олий хулқ билан Баҳрий мамлукларнинг ҳаммасини чин маънода афв қилиш қарорини берди. Қутуз раҳимахуллоҳ мухлис, Оллоҳ учун борлигини бахш этувчи ҳамда вазиятнинг тўғри ва аниқ ҳисобини олувчи киши эди. Шу йўл билан у Баҳрий мамлуклар қувватини қўлга киритиш тадоригини олган эди. У Оллоҳга ихлоси, уммат ва юртга бўлган муҳаббати сабаб, юрт равнақи учун бу қувватга таянишни лозим деб билди. Бу билан у ўз тахтига зомин бўлиши ҳамда Мисрда ғалаёнлар қайта қўзғалишига сабаб бўлиб қолиши ҳам мумкин эди. Баҳрий мамлуклар билан Муъиззий мамлуклар ўртасида бундан 6 йил олдин (652 йил) Баҳрий мамлуклар бошлиғи Форисиддин Ўқтой ўлдирилганидан кейин фитналар юзага келган, подшоҳ Муъиз ва ундан кейин Шажаратуд-Дурнинг қатл қилиниши, бу фитналарнинг аланга олишига сабаб бўлган эди. Иш шу даражага етганидан Рукниддин Бейбарс бошлиқ кўпчилик Баҳрий мамлуклар Мисрдан Шомга қочишга мажбур бўлганди. Улар орасида Шом амирларини Мисрга уруш очишга тезлаганлари бўлганини зикр қилиб ўтдик. Қутуз Миср тахтига кўтарилганда Баҳрий мамлукларни кечириши ва уларнинг Мисрга қайтишларини эълон қилиши жуда қалтис қарор бўлсада, айтилган вақтда ҳикмат йўлини танлашга муваффақ бўлган эди.

Бу қарор Қутузнинг олий хулқ эгаси бўлгани, ўч олишга қудрати бўлатуриб, ўтмишдаги душманликни унутгани ҳамда чуқур сиёсий дунёқараш соҳиби эканини кўрсатади. Миср айтилган дамдаги ҳарбий кучи билан мўғуллар қаршисига чиқа оладиган ҳолатда эмасди. Баҳрий мамлуклар катта куч бўлиб, улар кенг қўламда ҳарбий малака соҳиблари ва шу билан бирга кўп жангларда тажриба қозонган аскарлар эди. Жумладан, бундан 10 йил олдин (648 йил) салибчилар билан бўлган машҳур жанглар: «Мансура» ва «Фарискур» жангларида улар қўшиннинг асосий қисмини ташкил қилган эди. Баҳрий мамлукларнинг Муъиззий мамлуклар билан бирлашиши, мўғулларни қарши олишга қуввати етадиган мусулмон аскарни пайдо қилар эди. Маълумингизки, бирлашиш нусратнинг энг муҳим омил ва сабаби, тарқоқлик эса мағлубият ва ўзаро фитна омилidir.

Қутуз Шомга кетган Баҳрий мамлукларнинг ҳолати беқарорлигини яхши биларди. Улар Шомга мажбурликларидан қочиб кетган, уларнинг мулклари, кадр-қиймати ва эътибори Мисрда эди. Улар ўзларининг

Мисрга қайтишлари ва бирор-бир зиён етмаслиги ҳақидаги беназир эълонни эшитишлари биланоқ, Салжуқийлар давлати, Карак, Дамашқ, Ҳалаб ва бошқа жойлардан Мисрга қайта бошладилар. Шу тариқа Мамлукларнинг янгидан бирлашишига шароит туғилди. Подшоҳ Музаффар Қутуз уларни муносиб суратда, камтарона кутиб олди. Подшоҳ ўзининг мамлуклардан эканини унутмаган эди.

Қутуз Баҳрий мамлуклар бошлиғи Рукниддин Бейбарсни ҳам чақирди. У Баҳрий мамлуклар ичида Қутуз учун мутлақо хатарли шахс ҳисобланарди. Агар Қутуз мақр, хиёнат ва сиёсий манфаатнигина кўзлаганида, уни ҳаргиз Мисрга чорламаган бўларди. Рукниддин Бейбарс Мисрдан қочиб, Дамашққа Носир Юсуф Айюбийнинг ёнига борган эди. Носир Юсуф узоқ замонлар мўғулларга қуллуқ қилган, сўнгра шароит ўзгарганда уларга қарши жанг қилишини даъво қилган хоин эди. Рукниддин Бейбарс унинг сафига кўшилганида, унинг мўғулларга қарши жанг эълон қилиб, уни амалга оширмасдан юрганини танқид қилди. Бироқ Носир Юсуф унинг гапига қулоқ солмади. Мўғуллар Дамашқ сари одимлаганида, у армияси билан жанубга қочиб қолди. Оллоҳ йўлидаги жиҳод руҳи билан тарбия топган Бейбарс ёлғизланиб қолди, сўнгра у ҳам жанубга — Фаластинга кетишга мажбур бўлди.

Мўғуллар Носир Юсуфнинг изидан Фаластинга келганида, у армияси билан бирга Каракка, сўнгра Сахрога қочди. Бейбарс эса, Ғазо ерларида ёлғиз қолди. У ҳар томондан яккаланиб қолган эди. Жанг қилай деса, чорасиз эди. Ғазода ёлғиз, ҳамроҳлари Баҳрий мамлуклар эса, ернинг машрику-мағрибига тарқалиб кетган, Миср Муъиззий мамлуклар кўлида. Ўшанда унга кенг ер тор бўлиб, жуда оғир вазиятда қолди. Ҳолбуки, у Баҳрий мамлукларнинг каттаси, яъни мудофаа вазири манзилатида эди. Ҳозирчи, Ғазода ёлғиз! Шимолдан мўғуллар бостириб келаяпти, Носир Юсуф Сахрога қочиб қолган, Мисрга ҳам қайтгулик эмас. У мана шундай қийин вазиятда турганда Қутуздан Мисрга муқаррам, азиз, қадди рост ва ўз мансабига қайтариш таклифини эшитди.

Қутуз эътиборини тортган баъзи нуқталар:

Биринчи: Қутуз Рукниддин Бейбарсдаги юксак аскарый қобилият ва юқори даражадаги етакчилик маҳоратини ҳамда бу саркардадаги олий исломий ҳамиятни кўра олди.

Иккинчи: Бошқалардан ажралиб турувчи заковатли Бейбарсдан мўғулларга қарши жангда фойдаланиш. Йўкса, бу заковат Муъиззий мамлукларга қарши хизмат қилиши мумкин эди.

Учинчи: Яна Қутуз Баҳрий мамлукларнинг Рукниддин Бейбарсга содиқлигини яхши биларди. Бейбарс каби инсон қочкин бўлса, Баҳрий мамлуклар бир кунмас бир кун унинг атрофига йиғилмаслигига ҳеч ким кафолат беролмасди. Унинг Бейбарсни ўз сафига қўшилишига тарғиб қилиб кадрлаши, унинг қудрати ва имкониятларидан фойдаланиши юксак сиёсий ҳикмат жумласидан эди. Бу билан у вазиятнинг барқарорлигини кафолатлади ва мўғулларга қарши бор кучни жамлаш муқобилида ички низоларларга чек қўйди. Қутуз Рукниддин Бейбарсни чақирғач, у Мисрга келди. Қутуз уни яхши кутиб олиб, вазирлар қасрига бошлаб келди ҳамда унга амирлардек муомала қилди. Унга Қалюб⁷¹¹ шаҳри ва унинг атрофидаги ерларни тақдим қилди.⁷¹²

Ҳа, Қутуз ўч олишга қодир бўлсада афвни танлаб, инсонларни ўз мақомига қўйиб, сиёсий теранлик ва бирдамликда намуна бўлди. Моҳир сиёсатчи бўлиш учун фақат кўзбўямачилик, инсонларга йўқни бор, жиноятни санъат, тўғрини эгри ва шахсий манфаатга эришиш йўлида барча чиркин қабоҳатларни сиёсат, деб аташ шарт эмас. Сиёсат инсонлар манфаатини кўриб, уни ўз манфаатидан устун қилиб, уларни дунё ва охират саодатига улаштиришга уринишдан иборат булиши лозим.

Яна Қутуз, ўзига ишонган бошлиқ атрофидаги кучли шахсларни йўқотиш эмас, уларни қозониш муҳимлигини ўргатди. Бу билан у халқ ишончини ва муҳаббатини қозонди.

Албатта, ҳозирги кунимизда афсонага айланган, аслида Ислом тарихи шодасида маржон-маржон терилган муҳлис бошлиқлар халқ розилиги ва уларнинг муҳаббати-ю, ҳурмат-эътиборини қозонишнигина ўзига мақсад қилиб қўймайди. Ҳақиқий юртбоши Оллоҳ билан ўз орасини тузатишга уринади. Шунда Оллоҳ таоло у билан халқи орасини тузатиб қўяди. Бундай юртбошилар шуҳратнинг ортидан эмас, шуҳрат уларнинг кетидан юради.

Имом Бухорийнинг саҳихида Абу Ҳурайра разияллоҳу анҳудан ривоят қилинади, у деди: «Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам дедилар: *«Агар Оллоҳ таоло бирор бандани яхши кўриб қолса, Жаброилга нидо қилиб: «Мен фалон бандани яхши кўрдим. Сен ҳам уни*

⁷¹¹ Рус. Кальюб.

⁷¹² Сиржоний «Қиссатут-татар» (251, 252-бет).

яхши кўр!», деб айтади. *Жаброил у бандани яхши кўриб, само аҳлига қарата: «Оллоҳ фалон бандани яхши кўрди. Сизлар ҳам уни яхши кўринглар!»*, деб нидо қилади. *Само аҳли ҳам уни яхши кўради. Сўнгра, у банда учун ерда мақбуллик берилади.*⁷¹³ (Яъни, бундай одам кўнгилларга яқин, ким уни кўрса яхши кўриб, ёқтирадиган одамга айланади. Бу хадиснинг шарҳида бир кишининг одамлар ўртасида сеvimли бўлиши унинг Оллоҳ олдида сеvimли эканига далолат қилади, дейилган).

Ҳа, Қутуз бу қарорларни халқ муҳаббатини қозониш учун эмас, авваламбор Оллоҳ олдидаги ўз бурчини ўташ, сўнгра халқини мўғулларнинг қора ҳужумларидан қутқариш ва уларнинг бошқа манфаатларини кўриш мақсадида берган эди.

Оллоҳ таоло Қутузга Ўз раҳматини ёғдирсин! Миллатини ҳалокатдан кўриган бошқа бошлиқларни ҳам Оллоҳ жаҳаннам фалокатидан асрасин!

Шундай қилиб, мохир саркарда Рукниддин Бейбарс бошлиқ Баҳрий мамлуклар Миср армиясига бирлашди. Бу иш Миср халқининг маънавияти ва руҳиятини бағоят кўтарди. Баҳрий мамлукларни кечириш қарори Қутуз ҳаётида босган энг муборак қадамларидан бири эди. Биз шу босилган қадам муқобилида у кишининг ҳар бир босган қадами эвазига Оллоҳ таоло ажр ёзишини сўраб қоламиз.

Хуллас, Қутузнинг биринчи қадами — мамлакатнинг ички вазиятини барқарорлаштириш бўлса, иккинчи қадами — Баҳрий мамлукларни кечириб, уларнинг куч ва имкониятларидан фойдаланиш бўлди.

Дипломатик алоқалар

Музаффар Қутуз амалга оширишга киришган учинчи масала — кўшни давлатлар билан дипломатик алоқани яхшилаш, яъни ташқи сиёсатни тиклаш бўлди. Миср билан Шом амирликлари орасидаги алоқалар борасида бундан олдин батафсил айтиб ўтдик. Шом амирликлари бир неча бор Мисрга ҳужум уюштиришга, подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюб даврида ўрнатилган келишувни бузишга ҳаракат қилди. Маълумингизки, Дамашқ ва Ҳалаб амири Носир Юсуф Бағдод маҳв этилгандан сўнг, Мисрга уруш очишида ёрдам бериши учун Ҳулагудан ёрдам сўраган эди. Мана шуларга қарамай, Қутуз «ўтган ишга салавот» қабилида иш тутиб, бўлиб ўтган келишмовчиликларни унутишга ва Миср билан Шом ўртасида ҳақиқий бирдамликни ҳосил

⁷¹³ Бухорий ривояти.

қилишга ҳаракат қилди. Энг камида Шом амирликларининг бетараф бўлишига, яъни мўғуллар билан урушаётган пайтда фурсатдан фойдаланиб, ҳужум қилиб қолмасликлари ёки мўғуллар сафига қўшилмасликлари учун ҳаракат қилди.

Шом амирларининг тутган ўрни

Қутуз Миср ва Шом ўртасини бирлаштиришга қарор қилди. У Шомнинг каттаси, икки асосий шаҳар: Дамашқ ва Ҳалаб амири Носир Юсуф билан алоқа ўрнатишга киришди. У Шомнинг бошлиғи манзилатида эди. Қутуз Носир Юсуфнинг кимлигини ва ўзини ёқтирмаслигини жуда яхши биларди. Шундай бўлса ҳам, Қутуз унга ажойиб мактуб йўллади. У мактубда гўё энг яқин кишисига хитоб қилаётгандай эди. Бу мактуб мўғуллар Ҳалабга бостириб келишидан олдин йўлланган бўлиб, ўшанда Носир Юсуф билан Қутуз ўртасида мўғулларга қарши бирлашиш имконияти ҳали мавжуд эди. Ўша вақтлар Носир Юсуф мўғулларга уруш эълон қилган ва Дамашқда ҳарбий лагер ўрнатган эди. Қутуз ундаги хато ва камчиликлардан кўз юмиб, сафларини бирлаштиришни хоҳлади. Қутуз Носирнинг асосий мақсади бошқарув курсида қолиш эканини, уни бундан бошқа нарса қизиқтирмаслигини яхши билгани ҳолда муносиб мактуб битди ва унга жўнатди. Мактубда Миср ва Шомни бирлаштириш ҳамда бунда Носир Юсуфнинг подшоҳ бўлиши, Қутуз эса унга тобе бўлиши баён қилинган эди. Ваҳоланки, Қутуз унга қараганда анчагина яхши саркарда ва сиёсатчи бўлиши баробарида, Миср ўлкаси ҳам Дамашқ ва Ҳалабдан мавқеи баланд эди. У мактубда подшоҳ Носир билан салтанат талашмаслиги ва унга қаршилик қилмаслиги ҳамда ўзининг Миср диёридаги унинг ноиби бўлишини баён қилди. Носир қачон Мисрга келса, Миср ва Шомни бирлашиши учун дарҳол уни тахтга ўтиргизишини айтди. Бу афсонавий таклифни моддий сиёсат мезони билан ҳисоб қилувчи инсон тасаввурига ҳам сиғдира олмайди. Буни иймон тарозуси билан ўлчайдиган инсонларгина ҳазм қила олади.

Қутуз Носир Юсуфнинг икки давлатни бирлаштиришда иккиланиши ёки унинг мутлақо Мисрга келишдан қўрқилини билароқ, мўғулларга қарши урушда унга мадад беришини ўртага ташлади. У Носир Юсуфга шундай деб мурожаат қилди: «Бирлашишни истасанг, бирлашамиз. Бирлашмасдан мўғулларга қарши курашда ёрдам беришимни хоҳласанг, ёрдам бераман. Мақсадимиз бир. У ҳам бўлса мўғулларни тор-мор қилиш. Агар ёрдамимни ихтиёр қилсанг, хизматингдаман. Истасанг, ўзим ва аскарларим билан келажак жангда, яъни мўғулларга қарши жангда қўмаклашиш учун бораман. Агар

боришимдан хавотиринг бўлса, аскарларимдан сен ихтиёр қилганларни хузурингга йўллайман». ⁷¹⁴ Бироқ Носир Юсуф Қутуз томонидан бўлган олийжаноб нидоларга ижобат қилмади ва бирлашишдан бош тортди. ⁷¹⁵ Чунки у аслида мўғулларга қарши курашишни қасд қилмагани сабаб кўшимча мададга ҳам эҳтиёжи йўқ эди. Мўғуллар етиб келгудек бўлса, қочиб қолишни фикр қилганди. Миллатини ҳимоя қилиш унинг хаёлига ҳам келмаган эди, десак янглиш бўлмас.

Носир Юсуф Айюбийнинг ниҳояси

Кунлар ўтди, Ҳалаб ишғол қилинди ва Дамашқ таҳдид остида қолди. Мўғуллар Дамашқ сари келаётганини эшитган Носир 658/1260 йил сафар (феврал) ойида ўзига эргашганларни олиб, Барзадан Ғазога қочиб қолди. У армияси билан Фаластинга етганида тақдирда ёзилиб, ўз вақтини кутаётган иш содир бўлди. Носир Юсуфнинг армияси ундан ажралиб, мухлис, мохир сардор Қутуз сафига кўшилди. Улар Носирнинг тахтинигина эмас, умматнинг келажагини кўриш — Оллоҳ йўлидаги жиҳод сари кетишган эди. Носир Юсуф сўққа боши билан Каракка, ундан сўнг Сахрога — Урдуннинг жанубида жойлашган ал-Жафр минтақасига кетишга мажбур бўлди. У ўша минтақада баъзи араб амирлари билан тил бириктирди. Бу хабар мўғулларга етиб борди. Мўғуллар ўша диёрга Носирни ахтариб бостириб келдилар. Улар у ердаги каттаю кичик барчани қатл қилиб, ҳамма жойни вайрон қилишди ва ҳижрий 658 йил шаъбон ойининг ўрталарида Биркату Зазо деган жойда Носирни асирга олишди. Носир билан унинг кичик ўғли Азизни Ҳулагунинг хузурига жўнатишди. Сўнгра Носир Айн-Жалутда мўғуллар мағлубиятигача асирликда қолди. Мағлубият хабари келиши билан шу йилнинг 18 шаввол, яъни 3 октябр куни Ҳулагу Носирни ва у билан бирга бошқа амирларни ҳам қатл қилди. Носирнинг ўғли Азиз ёш бола бўлгани учун омон қолди. ⁷¹⁶ Носир Юсуф умматга хоинлик ва душманни дўст тутиш билан бирор нарсага эришмади. Аксинча хорларча қатл қилинди. Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

Носир Юсуфнинг лашкари Қутузнинг сафига кўшилиши, унинг қувватини оширди. Қутуз фақат Носир Юсуф билан дипломатик алоқа

⁷¹⁴ Қосим Абдуҳ «Султон Музаффар Сайфиддин Қутуз» (86-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (255-бет).

⁷¹⁵ Сиржоний «Қиссатут-татар» (255-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (350-бет).

⁷¹⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/400, 401), Макризий «ас-Сулуқ» (1/519-бет).

тиклашгагина чекланмади, балки Шомдаги бошқа амирликларга ҳам элчи жўнатди.

Ҳамаҳ амири Мансур унга ижобат қилди. Маълумингизки, Ҳамаҳ мустақил амирлик эди. Амир Мансур армиясини олиб, Мисрга келди ва Қутузнинг сафига қўшилди.⁷¹⁷

Қутуз Урдундаги Карак амири Муғис Умарга мактуб йўллади. Мисрга икки марта — Бағдод ағдарилишидан олдин ва ундан кейин хужум уюштирган шахс шу Карак амири Муғис Умар эди. Қутуз қиёматда тарозида оғир келувчи гўзал исломий хулқларнинг татбиқи қандай бўлишини кўрсатиб берди. У олдин юзага келган барча ихтилоф ва келишмовчиликлардан кўз юмди. Ўрталарида юзага келган низоларни унутди. Бироқ Муғис Умар тамошабин бўлишни афзал кўрди.⁷¹⁸ У Носир Юсуф тарафдорларидан бўлиб, уруш эълон қилганда унга ижобат қилган, Сахрога қочиб кетгандан кейин Карак кўрғонига кириб олган эди. У ҳам Носир ортидан юрди. Гумроҳлиги ҳақиқатни кўришдан тўсди. У мамлукларни ёқтирмагани учун Қутузга қўшилмасдан ходисаларни ташқарида туриб кузатиш йўлини танлади. Ғолиб ким бўлса, ўшанга қўл беришим лозим деб билди.

Ҳимс амири Ашроф Айюбий Қутузга қўшилишдан кескин бош тортди ва мўғуллар билан ҳамкорликни афзал, деб билди. Ҳулагу унга Шом амирликларини ҳаммасини мўғуллар номидан бошқарув мансабини тақдим қилди.⁷¹⁹

Банияс амири Саид Ҳасан ибн Абдулазиз ҳам мусулмонларни қўйиб мўғулларга қўшилди!⁷²⁰ Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа биллаҳ.

⁷¹⁷ Ғомидий «Жихадул мамалик» (106-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (256-бет).

⁷¹⁸ Сиржоний «Қиссатут-татар» (256-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (350-бет).

⁷¹⁹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (257-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (350-бет).

⁷²⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (257-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (350-бет).

ҲИЖРИЙ 658 САНАГАЧА БЎЛГАН БОСҚИЧ

Қутуз билан бирга тарих саҳифаларини варақлаб, турган нуқтамизни бир аниқлаб олсак:

✓ Мисрда ички вазият барқарор ва янги ҳукумат Қутузга садоқатли.

✓ Ўша дамларда давлатнинг биринчи ва асосий вазифаси очиқ-ойдин, равшан бўлиб, мўғулларга қарши жангга қўшин хозирлаш эди.

✓ Баҳрий мамлукларни афв қилиш ва уларни Мисрга омонлик билан келишларига даъват. Бу нафақат мамлукларнинг, ҳатто Миср халқининг ҳам тинч ва осойишталигига олиб келди. Баҳрий ва Муъизий мамлукларнинг бирлашиши Миср қуроли кучлари қувватини бениҳоя оширди.

✓ Миср армияси сафига кўплаб шомлик аскарлар қўшилди. Ҳалаб ва Дамашқ амири Носир Юсуфнинг катта сондаги армияси, амир Мансур бошлиқ Ҳамаҳ қўшини Қутуз армияси сафига кирди.⁷²¹

Булар 658/1260 йиллар бошларида Мисрдаги аскарӣй ва сиёсий ҳолат эди. Ўша дамлар Ҳалаб, Дамашқ, Фаластин ва Ғазо мўғуллар томонидан ишғол этилди. Мўғуллар Мисрга жуда яқин келиб қолган эди. Улар Мисрдаги Сино ярим оролига атиги 35 км узоқликда эди.

Миср халқининг аҳволи

Одатда иқтисодий тангликлар халқнинг яшаш тарзи ва кундалик ҳаётига катта таъсир қилади. Албатта, кунлик лўқмасига зўрға етишган, бир бурда нонга зор бўлган халқ бундай оғир ва машаққатли синовга кириши учун фактгина ўлимдан қўрқмаган, умматини Оллоҳ ризоси учун ҳаёти эвазига бўлса ҳам қутқара оладиган инсонлар бўлиши керак бўлади. Бундай заҳматлар иймон қаршисида саодатга айланади.

Қутуз ҳукуматни ғоят қийин бир аҳволда қўлга олган эди. Ўн йил давомида юз берган тахт учун кураш, фитналар сабаб халқ орасида катта бўшлиқ ҳосил бўлган эди. Тахтга мустаҳкам жойлашиш ташвишидаги юртбошилар халқ билан шуғулланишга вақт ажрата олмадилар. Алҳол, Миср халқи баҳайбат мўғул қувватини қарши олиши ва улар билан жанг қилиб, уларни енгиши мумкинлиги тасаввурга ҳам сиғмайди. Миср халқи ҳам бошқа мусулмонлар сингари мўғуллардан қўрқар, мўғул

⁷²¹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (257, 258-бет).

лашкарини кўриш у ёқда турсин, уларнинг хабарини эшитганларида кўркувдан титроқ тутадиган даражада эди. Мўғуллар Мисрга яқинлашган сари уларнинг кўркувлари ва хавотирлари ортиб борарди.

Бу ҳолатда халқнинг маънавияти ва руҳиятини кўтарадиган, уларнинг ўй-фикрини ўзгартирадиган, дини, ватани, умматини ҳимоя қилиш ғурурини уйғотадиган туртки, далда лозим эди. Бу иш Қутузнинг вазибалари орасида энг қийинларидан бири эди. Зеро, халқ билан қувватланмаган кўшин ҳаргиз кучли бўла олмайди. Бошлиқ ҳам, армия ҳам халққа суяниши шарт. Йўқса, нусратга эришиш амримаҳолдир. Жанг ҳақиқий суратдаги жанг бўлиши учун эркак-аёл, ёшу-қари бир тан, бир жон бўлиб, бир ёқадан бош чиқариб, оёққа турмоғи лозим. Бунинг учун халқ комил тайёргарлик кўриши даркор эди.

Халқни Оллоҳ учун, Исломи дини учун жонларини фидо қиладиган руҳда тарбия қилиш Қутузнинг олдида ўта муҳим вазифа эди. Бу иш ўзига яраша машаққатдир. Бироқ ўша вақтлар Оллоҳ таоло Миср халқига неъмат қилиб берган икки нарса бор эди. Бу икки нарса Қутузнинг ишини нисбатан енгиллаштирди. Бу икки бебаҳо нарса халқда топилар экан, Оллоҳнинг фазли билан гирифторм бўлган тангликдан чиқиб, янгидан ҳаракатга келиши, умматни оёққа тургизиши ва душман ким бўлишидан қатъий назар у билан кураша олиши мумкин бўлади.

Биринчи: Шаръий билим ва уламолар

Миср халқида сақланиб қолган илм ва уламолар борлиги Қутузга яхши дастак бўлди. Салоҳиддин Айюбий хабис Фотимийлар давлатини ағдариб, Мисрда сунний мазҳабни қарор топтиргандан буён омма инсонлар ва ҳокимлар назарида олимларнинг мавқеи баланд бўлиб келди. Маълумингизки, Шажаратуд-Дур Мисрга ҳокима бўлганида уламолар қаттиқ норози бўлган, ҳатто маликанинг ўзига ҳам инкор маъносидаги мактубларини ёзишган эди. Олимлар аёл кишининг бошлиқ бўлиши мумкинмаслигини баён қилиб, халқни унга қарши оёққа тургизган эдилар. Шажаратуд-Дур ҳам, унинг аъёнлари ҳам олимларни тинчителишга қодир бўлмаган, уларнинг ҳур фикрларига қаршилиқ қила олмаган эдилар. Оллоҳнинг изни билан, фақат Унинг розилиги учун ҳақни баралла айта олган бу олимларнинг на дарслари ва на хутбаларидан ман қилишга ҳеч ким журъат қила олмаган эди.

Шунингдек, Айюбийлар мамлуқларнинг тарбия услубларида аввало диний тарбия, сўнгра чавондозлик, қиличбозлик, мерганлик каби ҳарбий билимларни беришда уламоларга эҳтиёжи бўлган эди. Бу тарбия мамлуқларга етарлича ижобий таъсир этган, натижада улар илмни ва уламоларни қадрлайдиган бўлиб улғайишган эди. Агар киши Оллоҳ ва

Расулининг сўзидан баҳс этса, хокиму-маҳкум, унинг атрофига тўпланиб, кулоқ солар эдилар.

Миср халқи динни мутлақо кадрлар ва Исломга чексиз муҳаббатли эди. Миср халқининг илм ва уламоларга нисбатан бундай юксак ҳурмати ўз юртларида одамларга таълим беришдан четлатилган олимлар учун бошпана бўлишига сабаб бўлган эди. Шу сабаб Миср ва Азҳар уламолари иши авжида эди. Азҳари шариф ўша пайтлар тамоман сунний мазҳабда бўлиб, Ислом оламининг турли ўлкаларидан олимлар оқиб келар ва Мисрда илм савиясининг ортишига ўз хиссаларини қўшар эдилар.

Миср ва мамлуклар ҳаётида шайх Изз ибн Абдуссалом раҳимахуллоҳнинг тугган ўрни

Миср ҳақида сўз борар экан, уни бундай равнақиға ўзининг катта хиссасини қўшган олим Изз ибн Абдуссалом ҳақида қалам сурмай иложимиз йўқ. Илм нур бўлгани каби Мисрға нур сочган олимимиз билан қисқача танишиб ўтсак мақсадга мувофиқ бўлади, деб ўйлайман ҳамда китобхондан бу борадаги тасарруфимизга мавзудан четга чиқиш, дея баҳо бермасликларини умид қиламан.

Ўша вақтлар Мисрға келган машҳур олимлардан бири Изз ибн Абдуссалом⁷²² эди. У киши Абдулазиз ибн Абдуссалом ибн Абул Қосим ибн Ҳасан Суламий (асли) Мағрибий, (туғилган жойиға нисбатан) Дамашқий, (вафот этган ериға нисбатан) Мисрий, (мазҳабига кўра) Шофейй⁷²³ бўлиб, куняси Абу Муҳаммад, халқ орасида танилган лақаблари: Иззуддин, имом Изз, Султонул-уламо, Шайхул-Ислом бўлган.⁷²⁴ У 577/1181 йилда Дамашқда дурадгор оиласида таваллуд топган⁷²⁵, яъни Қутуз Мисрға волий бўлган кезларда 80 ёшдан ошган эди. Изз ибн Абдуссалом раҳимахуллоҳ улуг олимлардан бўлиб, маломатдан заррача кўркмай, ўз замонаси подшоҳлариғада ҳақни журъатла етказиб, амримаъруф қилиб, мункардан қайтаргани учун унга «Уламолар султони» деган лақабни шогирди Тақийюддин Ибн Дақиқ Ийд раҳимахуллоҳ қўйган эди.⁷²⁶ Дарҳақиқат, шайх Ибн Абдуссалом илмға амал қилган, суннатға қаттиқ эргашган, зарурат ҳолатида

⁷²² Иззуддин Абу Муҳаммад ас-Суламий ад-Дамашқий аш-Шофейй, Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/441).

⁷²³ Заҳабий «Сияру Аълам ан-нубала» (3037-рақам).

⁷²⁴ Муҳаммад Зуҳайлий «Изз ибн Абдуссалом» (39-б).

⁷²⁵ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/441).

⁷²⁶ Муҳаммад Зуҳайлий «Изз ибн Абдуссалом» (39-б).

масалаларда ижтиҳод қилиш, ибодат ва ақидавий масалаларда фатво ҳамда ижтимоий ва сиёсий ишларда ҳам фатво бера оладиган буюк олим эди. Заҳабий раҳимахуллоҳ шайх Ибн Абдуссаломнинг мужтаҳид даражасига етгани хабарини берган.⁷²⁷ Шайх раҳимахуллоҳ илми ёшлигидан эмас, 20 ёшдан кейин олишга киришган бўлсада, у нафақат ўз замони олимлари, ҳатто бутун Ислом тарихида кўзга яққол ташланувчи етук олим даражасига чиқди.

Устозлари:

1. Фахриддин ибн Асокир (620 йил вафот этган).
2. Жамолиддин Ҳарастоний (614 йил вафот этган).
3. Сайфиддин Омадий (550–631 йиллар).
4. Қосим ибн Асокир (600 йил вафот этган).
5. Абдуллатиф ибн Шайхул Шуюх (596 йил вафот этган).
6. Хушубий (597 йил вафот этган).
7. Ҳанбал Рософий (604 йил вафот этган).
8. Умар ибн Тобарзод (607 йил вафот этган).
9. Шихобиддин Сухрурдий (632 йил вафот этган).

Шогирдлари:

1. Шайхул-Ислом ибн Дақиқ Ийд (625–702 йиллар).
2. Аҳмад ибн Абдуррахмон Қорофий (684 йил вафот этган).
3. Жалолиддин Дашнавий (615–677 йиллар).
4. Аҳмад ибн Фараҳ Ишбилиий (625–699 йиллар).
5. Шарофиддин Абу Муҳаммад Думётгий (613–705 йиллар).
6. Шихобиддин Абу Шомаҳ (599–665 йиллар).
7. Тожуддин Фаркоҳ (624–690 йиллар).
8. Садриддин ибн бинт ал-Иъазз (625–680 йиллар).
9. Абу Аҳмад ибн Зайтун (691 йил вафот этган).

Шайх раҳимахуллоҳ бир неча шаръий билимларга оид китоблар ёзган. Жумладан, тафсир, ҳадис, сийрат, иймон, эътиқод, тавҳид, фикҳ,

⁷²⁷ Заҳабий «Сияру Аълам ан-нубала» (3037-рақам).

усули фикҳ, фатво ва тасарруфга тааллуқли уммат учун манфаатли бўлган ўнлаб китоблар муаллифидир.

Шайх Изз ибн Абдуссалом Дамашқда подшоҳ Солиҳ Исмоил Айюбий даврида яшаб, амримаъруф наҳий мункар⁷²⁸ қилар эди. Солиҳ Исмоил Миср подшоҳи Солиҳ Нажмиддин Айюбнинг укаси бўлиб, ундан тамоман ўзгача шахс эди. У салибчилар билан ҳамкорлик қилиб, юртига хоинлик қилди. Салибчилар билан Мисрга биргаликда урушга кириш ва уларга қурол-аслаҳа сотишга ҳамда Сафад, Сайда ва Шақиф қалъа (шаҳар)сини таслим қилишга битим тузди. Бу ҳодиса ҳижрий 638 йил юз берган эди.⁷²⁹ Шайх Изз ибн Абдуссалом подшоҳ Солиҳ Исмоилнинг бу ишини кескин инкор қилди ва минбарда хутба қилиб, подшоҳнинг бу ишини қоралади. Исломи динига салибчиларни олиб киргани ва уларга қурол сотишга изн берганини инкор қилди. Шайх солим подшоҳга ҳақ калимани баралла айтди.⁷³⁰ Бунга чидолмаган подшоҳ Солиҳ Исмоил Изз ибн Абдуссаломни қозилик мансабидан четлатди, хутба қилишини ман қилди ва охири зиндонга ҳам ташлади. Маълум вақтдан кейин уни маҳбусликдан озод қилди-да, унданда каттароқ зиндонга ташлади. Бу зиндон ҳақни гапирмаслик, дарс бермаслик ва хутба қилмаслик зиндони эди.⁷³¹ Олим киши учун бундан каттароқ зиндон ҳам борми?! Сўнгра шайх раҳимахуллоҳ Дамашқда ҳақни айтишдан сукут қилгандан кўра динни тарқатиш учун Қуддусга кетишни лозим топди. Қуддусда бир муддат қолгач, подшоҳ Солиҳ Исмоил Қуддусга салибчилар билан бирга келиб, шайхга чопар жўнатди. Унга марҳамат кўрсатиши, ҳатто олдинги мансабига қайтаришини ваъда қилди. Бунинг эвазига олимлар султониغا ўта оғир шартларни қўйди, акс ҳолда зиндонбанд қилинишини айтди. Чопар олимлар султониининг олдига келиб:

— «Илгариги мансабингизга қайтишингиз ва ундан зиёда нарсаларга эришишингиз учун фақатгина подшоҳга таъзим бажо келтириб, бориб унинг қўлларини ўпишингиз кифоя!», дея хабар берди. Шайх Изз ибн Абдуссалом раҳимахуллоҳ унга:

— «Эй нотавон! Мен унинг қўлини ўпишим эмас, у менинг қўлимни ўпишига ҳам рози эмасман! Эй қавм! Сизлар тоғда бўлсангиз мен

⁷²⁸ Яхшиликга буюриб ёмонликдан қайтариш дегани, бу истилоҳ аксар китобхонларга тушунарли бўлсада баъзи ёшларимизга бу эски терминлар ёд бўлсин, дея таржима қилмасдан айнан талаффузини ёздик.

⁷²⁹ Саллабий «Сафаҳот матвийя мин ҳаёти султонила улама» (19-бет) китобидан нақл қилган, Саллабий «Шайх Изз ибн Абдуссалом».

⁷³⁰ Зухайлий «Изз ибн Абдуссалом» (176-бет).

⁷³¹ Зухайлий «Изз ибн Абдуссалом» (176-бет).

боғдаман, сизлар мубтало бўлган нарсадан (яъни, мансаб, мол-дунё муҳаббатидан) мени саломат сақлаган Оллоҳга ҳамд бўлсин!», дея кескин рад жавобини берди. Шунда элчи:

— «Ундай бўлса, мен сизни қўлга олишим ва камашим керак», деди. Унга жавобан шайх:

— «Сиз вазифангизни бажаринг», деди. Бундан дарғазаб подшоҳ Солиҳ Исмоил ўзининг чодирига ёнма-ён қилиб шайх учун чодир курдириб, уни ўша ерда зиндонбанд қилди.⁷³²

Олимлар султони ўзи учун бунёд қилинган чодирли қамоқда Қуръон тиловат қилар, подшоҳ Солиҳ эса, ўз чодирда уни тинглаб ўтирар эди. Кунлардан бир кун подшоҳ Солиҳ хузурига салибий подшоҳлар ташриф буюрдилар. Солиҳ Исмоил уларга хушомад билан тилёғламачилик қилиб, гўё уларни рози қилмоқчи бўлгандай:

— «Қуръон ўқиётган одамнинг овозини эшитаяпсизми?», деди. Салибий подшоҳлар:

— «Ҳа», дедилар.

— «Бу мусулмон олимларининг катталаридан бири, у менинг сизларга мусулмон кўрғонларни таслим қилганимни инкор қилгани учун дастлаб Дамашқда қамадим ва мансабидан четлатиб, хутбадан ман қилдим. Сўнгра Дамашқдан қувиб солдим, Қуддусга келди. Сизларни деб мана яна ушлаб, зиндонбанд қилдим», деди. Салибий подшоҳлар унга:

— «Агар бу киши насроний қиссислар (олимлар)дан бири бўлганда эди, оёқларини ювиб, ундан тушган сувни ичган бўлардиқ!», деб жавоб бердилар.⁷³³

Субҳоноллоҳ! Ҳа, олимнинг хурматини оёқ ости қилган подшоҳ Солиҳ Исмоил ҳатто ўзи илтифот кўрсатиб турган насронийлар томонидан ҳам бу қилмиши учун қораланди.

Подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюб 643/1245 йил Қуддусни ва Байтул Макдисни озод қилганида Изз ибн Абдуссаломни ҳам маҳбусликдан озод қилди, сўнгра шайх Мисрга борди.⁷³⁴ Подшоҳ Солиҳ Нажмиддин

⁷³² Саллабий «Сафаҳот матвийя мин хаёти султонила улама» (26-бет) китобидан нақл қилган, Саллабий «Шайх Изз ибн Абдуссалом».

⁷³³ Саллабий «Сафаҳот матвийя мин хаёти султонила улама» (26-бет) китобидан нақл қилган, Саллабий «Шайх Изз ибн Абдуссалом».

⁷³⁴ Саллабий «Сафаҳот матвийя мин хаёти султонила улама» (26-бет) китобидан нақл қилган, Саллабий «Шайх Изз ибн Абдуссалом».

Айюб унга «Амр ибн Ос» номидаги масжидда имом хатиблик қилиш ва қозилик мансабини берди.⁷³⁵

Мисрда подшоҳ Нажмиддин Айюб сотиб олган мамлуклар юқори мансабларга кўтарилган бўлиб, аксарият ишлар ўша мамлуклар томонидан бошқарилар, ҳатто подшоҳнинг ноиби ҳам мамлуклардан эди. Буни кўрган шайх раҳимаҳуллоҳ шариатда кулларнинг ҳақ-ҳуқуқларини баён қилишга киришди. У куллар хур кишилар устидан бошлиқ бўлмаслиги ва уларнинг тасарруфотлари саҳиҳ эмаслиги борасида фатво чиқарди. Мамлукларнинг юқори мансабга ўтириб, хурлар устидан ҳукм юргизиши халқ ғазабини оширгани ортидан шайх Изз ибн Абдуссаломнинг бу фатвоси Мисрда вазиятни янада кескинлаштирди. Бундан сўнг мамлуклар шайхнинг олдига келиб, фатвони бекор қилишини талаб қилишди, ҳатто таҳдид ҳам қилдилар. Шайх Изз ибн Абдуссалом ҳақ калиманинг бадалига ҳеч нарсани алмаштирмади ва уларга рад жавобини берди. Иш султон Солиҳ Айюбга етиб борди. Султон Нажмиддин Айюб бу фатводан ажабланиб, уни рад қилди.⁷³⁶ Бу ҳақдаги гап-сўзни йиғиштиринг, деди. Шунда шайх Изз ибн Абдуссалом аччиқ бўлсада, бу ҳақиқатга кулоқ солинмагани учун бу масъулиятни тарк қилиб, Қоҳирадан бутунлай кетишга қарор берди. Муфтий гапирган ҳар бир сўзи учун Оллоҳ хузурида жавоб бериши, ботилни кўриб инкор қилмагани учун сўралиши олимлар султони каби бир буюк олимга янгилик эмас эди, албатта. Ибнул Қоййим айтганларидек, фатво берувчи киши Оллоҳ номидан имзо отувчи кишидир. У истеъфога чикди ва кўчини олиб, бир эшакка ўзи, бошқа эшакка аҳлини ўтказиб, шаҳарни тарк қиларкан, унга минглаб кишилар — олимлар, солиҳ кишилар, тижоратчилар, ҳатто аёллар ва болалар эргашиди. Улар: «Изз ибн Абдуссалом ва у каби Китоб ва Суннатни коим қилувчи, маъруфга буюриб, мункардан қайтарувчи, маломатдан кўрқмасдан Оллоҳнинг йўлида юрувчи олимлар бўлмаган Мисрда хайр йўк», дейишди.⁷³⁷ Бу ўринда ҳақиқий Ислом олимларининг таквоси ва дунёдан зухдлари намоён бўлади, шайх раҳимаҳуллоҳнинг аҳли ва кўчи икки эшакка юк бўлгани бунга ёрқин далилдир.

Бу ҳолатдан хабар топган Султон Солиҳ Нажмиддин Айюб дарҳол унинг ортидан бориб, уни орқага қайтишига кўндирди. Фатволарининг кучга киришига ваъда берди. Шайх «Дастлаб мамлук амирлар сотилади, сўнгра сотиб олган киши уларни озод қилади, агар илгари бу амирлар

⁷³⁵ Саллабий «Шайх Изз ибн Абдуссалом».

⁷³⁶ Саллабий «Сафаҳот матвийя мин ҳаёти султонила улама» (31-бет) китобидан накл қилган, «Султон Сайфиддин Қутуз ва маъракату айн жалут» (35-бет).

⁷³⁷ Саллабий «Султон Сайфиддин Қутуз» (35-бет).

байтулмолдан сотиб олинган бўлса, пули байтулмолга қайтарилади», деди. Бу иш мукамал бажарилиши учун шайх Изз ибн Абдуссаломнинг ўзи унга бош-қош бўлди. У мамлук амирларни сотиш учун чақирди. Шайхнинг чақириғини эшитган подшоҳ ноиби у ким бўлибдики, бизни чақириб, сўнгра сотармиш, холбуки, биз Ер юзининг подшоҳлари бўлсак! Оллоҳга қасамки, мана шу қиличим билан уни ўлдираман, деб шайхнинг уйи сари равона бўлди. Шайхнинг уйига келиб, эшигини қокди, шайхнинг ўғли чиқиб, ҳаяжон билан отасининг ҳузурига кирди ва подшоҳнинг ноиби қора ниятда қиличини ялонғочлаб тургани хабарини берди. Шунда Ибн Абдуссалом: «Эй болам! Отанг Оллоҳнинг йўлида ўлдирилишга арзимаса ҳам керак», дея подшоҳ ноибини қарши олишга чиқди. Подшоҳ ноиби уни кўргани он ҳайбатидан ҳаяжонга тушиб, кўли титраб, қиличи ерга тушиб кетди ва ўзи ҳам отидан тушиб, йиғлаганича:

— Эй саййидим! Яхши, яхши, сиз айтганингиз бўлади! Нима қилайлик? — деди. Шайх:

— Сизларни чақиряпман, келинглар! Сўнгра сизларни сотиб, пулини мусулмонлар манфаатига сарф қиламан, — деди.⁷³⁸

Амирлар бирин-кетин келишди, шайх уларга нарх тайин қила бошлади, бирдан иккинчиси, иккинчисидан учинчисини нархини баландроқ қилиб қўйди, бу ходисага гувоҳ бўлиб турган халқ ҳам амирларга нарх қўйишда ўз хиссаларини қўшдилар. Амирларнинг нархи анчагина қимматлаб кетди, сўнгра подшоҳ Нажмиддин Айюб уларни сотиб олди ва озод қилди, уларнинг пуллари «Байтул мол»га қайтарилди. Шу тариқа мамлуклардан бўлган амирлар сотиб олинди, сўнгра озод қилинди ва ўз мансабларида қолдирилди. Шу сабаб шайх Изз ибн Абдуссаломга «Бааиъул умаро»⁷³⁹ (амирлар сотувчиси) деган лақаб берилди.⁷⁴⁰

Мисрда қабих бир жаҳолат ҳолати бор эди. Миср подшоҳи ҳайит намозидан кейин Миср қалъасига келиб, тахтига ўтирар, Мисрдаги бутун амирлар, аскарбошилар ва аскарлар жамланиб, ғалати бир урф амалга оширилар эди. Яъни, бу расм-русмга кўра ҳамма Миср подшосининг олдига келиб, йиқилиб ерни ўпиб ўтарди. Бунини ўз кўзлари билан кўриш учун шайх Изз ибн Абдуссалом ҳайит тонгида Миср қалъасига келади, не кўз билан кўрсинки, амирлар, аскарбошилар ва

⁷³⁸ Саллабий «Сафаҳот матвийя мин ҳаёти султони уллама» (33, 34-бет) китобидан нақл қилган, Саллабий «Шайх Изз ибн Абдуссалом».

⁷³⁹ «Бааиъул мулук».

⁷⁴⁰ Зухайлий «Изз ибн Абдуссалом» (182-бет).

аскарлар подшоҳ қаршисида ерни ўпиб ўтмоқда! Шунда шайх бутун амирлар, аскарбошилар ва аскарлар олдида бор овози билан қичқириб:

— Эй Айюб! Оллоҳ таоло: «Сени Мисрга волий қилгандим, сен унда маст қилувчи ичимликлар сотилишини мувоҳ қилдингми? — деб сўраса, Унинг ҳузурида ҳужжат топиб бероласанми? — деди. Султон Айюб ўзини билмасликка олиб:

— Ээ, шундаймикан? — деди. Шайх янада овозини баландлатиб:

— Ҳа, фалон-фалон жойда ҳамр (ароқ) сотилади ҳамда бошқа мункар ишлар ҳам содир бўлади. Сен эса мамлакатингда неъматларга бурканиб юрибсан, — деди.

— Эй Саййидим! Уларни нима қилишга ҳайронман, чунки улар отамнинг давридан буён бор, — деди султон. Шунда Шайх раҳимаҳуллоҳ:

— Сен: **«албатта бизлар ота-боболаримизни бир миллат — дин устида топганмиз ва албатта, бизлар уларнинг изларидан бориб хидоят топгувчидирмиз»⁷⁴¹**, дегувчилардансан, — деди.

Шу дамда подшоҳнинг қалбига қўрқув тушди ва маст қилувчи ичимлик сотиладиган барларни ёптириб ташлади!⁷⁴²

Шайх Ибн Абдуссаломдан подшоҳ, унинг вазирлари, қўрбошилари ва барча аскарлари ҳузурида қўрқмай, журъатла хитоб қилгани ва подшоҳни шайхнинг ҳайбати босиб, унинг талабини ижобат қилгани сабаби сўралганда шайх раҳимаҳуллоҳ: «Подшоҳни катта дабдабада кўрдим ва ўзига ортиқча бино қўйиб кибрланмасин, дея уни пастга тушириб қўйиш керак, деб билдим», деб жавоб қилди.

Ундан қўрқмадингизми, дейилди. Шайх: «Оллоҳнинг ҳайбатини ёдимга олдим, шунда подшоҳ қаршимда эътиборсиз бўлиб қолди», деди.⁷⁴³

Шайх Изз ибн Абдуссалом журъат, шижоат, амримаъруф наҳиймункар майдонида уммат тарихида зарбулмасал бўлган намоёнда олим эди.

⁷⁴¹ Зухруф: 22.

⁷⁴² Саллабий «Сафаҳот матвий мин ҳаёти султони улама» (28-бет) китобидан нақл қилган, Саллабий «Шайх Изз ибн Абдуссалом»; Шайх Муҳаммад ибн Мусо аш-Шариф «Ахбарус-салаф ас-солиҳ».

⁷⁴³ Саллабий «Сафаҳот матвий мин ҳаёти султони улама» (28-бет) китобидан нақл қилган, Саллабий «Шайх Изз ибн Абдуссалом»; Шайх Муҳаммад ибн Мусо аш-Шариф «Ахбарус-салаф ас-солиҳ».

У киши 643/1245 йилдан ҳозиргача, яъни 658/1260 йилгача 15 йил давомида Мисрда истиқомат қилиб келди. Ва Мисрда ўз фаолиятини, яъни Дамашқда ман қилинган даъватларини давом эттирди.

Шайх Изз ибн Абдуссаломнинг қиссасидан маълум бўладики, ўша пайтлар Мисрда илм ва олимларнинг қадри жуда баланд бўлган. Миср халқи кучли бўлишининг асосий сири илм ва олимларнинг кадрланишида эди. Зеро, Оллоҳ йўлида жиҳод қилиш, бу йўлда шаҳид бўлишни орзу қилиш каби маънавий озукани халққа ҳар доим уламолар улашиб келгандир. Бу даъватни халқ онгига етиб бориши учун уламоларнинг бўлиши шарт. Агар илм, олимлар ва диннинг қиймати бўлмаса, уммат учун нусрат умиди йўқдир.

Иккинчи: Оллоҳ йўлидаги жиҳод

Оллоҳ йўлидаги жиҳод руҳи Миср халқининг иккинчи кучи эди. Ўша дамлар мисрликлар ҳақиқий маънода яшаш учун Оллоҳ йўлда курашиш лозимлигига иймонлари комил эди. Тахт учун кураш, фитналар авж олган, иқтисодий танглик ҳукм сурган пайтларда ҳам халқ назарида Оллоҳ йўлидаги жиҳоднинг қиймати камаймаган эди. Миср ва Шомга уюштирилган мунтазам салиб юришлари бу руҳни мисрлик мусулмонлар онгига муҳрланиб қолишига сабаб бўлган эди. Мисрликлар доимий тинчлик бўлишини ақлларига сиғдира олмасдилар. Зеро, ҳақ аҳли билан ботил аҳлининг ўртасидаги кураш то Қиёмат давом этажаги Оллоҳ таолонинг ер юзида жорий бўлувчи қонунларидандир. Ҳақ билан ботил бор экан, улар ўртасида кураш ҳеч қачон тўхтамайди. Оллоҳ таоло ҳақни зоҳир-ғолиб қилгунга қадар тўхтамайди ҳам.

Мисрдаги мусулмонлар Оллоҳ йўлидаги жиҳод калимасини жуда улуғлар ва ҳар доим Оллоҳ таолога боғлиқ эдилар. Салиб юришларида салибчилар доимо мусулмонлардан кўп бўлган, шу сабаб мусулмонлар жангда Оллоҳга кўпроқ ва қаттикроқ боғланиб, унга муножот қилардилар. Бу эса ўз навбатида Оллоҳ йўлидаги жиҳоднинг қийматини анча баланд бўлишига олиб келган эди.

Миср армияси бирор вақт шаҳар ободончилиги каби ишлар билан овора бўлмади. Улар аскарый тайёргарлик, қурооларни янгилаб бориш, ҳарбий режаларини ишлаб чиқиш, моҳир саркардаларни етиштириш ҳамда мамлакатни машрику-мағрибидан ҳимоя қилиш ишлари билан банд эдилар.

Қутуз бутун ҳаёти, ёшлиги, армия қўмондони ва Миср волийси бўлган кунларида ҳам ўз олдига қўйган мақсади Оллоҳ йўлида курашиш эди. Мўғулларнинг тор-мор бўлиши унинг кўз ўнгида гавдаланарди.

Унинг Миср армиясини кучайтириши ва ички қувватларни бирлаштириш режаси қандай бўлганига ҳали гувоҳ бўламиз.

Ички қувватларни жамлаш ва ташқи алоқаларни яхшилаш қисқа бир замонда амалга ошмаслиги тайин. Тайёргарлик босқичи ҳам вақт талаб қилади. Шунинг учун уммат ҳар доим тайёр ҳолатда бўлиши лозим! Қутуз тайёргарлик учун бир неча ойга муҳтож бўлиб турган пайтда Ҳулагудан элчи келди. Жанг Қутуз ўйлагандан ҳам қисқа фурсатда юз бериши кутилаётган эди. Қутуз, унинг армияси ва халқ жанг қилишни хоҳлайдими ёки хоҳламайдими йиртқич мўғуллар Мисрга бостириб келаётган ва Мисрга жуда яқин келиб қолган эди. Ўша замонлар Ер юзидаги энг кучли ва катта Мўғул давлати билан Мисрда яшовчи оз сондаги ва кучсиз мусулмон давлати ўртасида тўқнашув кунлари яқинлаб қолганди.

Қутуз ўз нафсини, халқни, армияни ва уламоларни яқинда юз беражак буюк ишга қандай ҳозирлади? Келинг биргаликда гувоҳ бўлайлик...

Ҳулагунинг Музаффар Қутузга йўллаган мактуби

Қутуз тайёргарлик кўраётган бир пайтда Ҳулагунинг тўрт элчиси унинг таҳдидий мактубини Қутузга келтирди. Мактубда қуйидагилар битилган эди: «Машрику-мағрибнинг шоҳаншоҳи буюк Хондан...

Еру-заминни тўшак, осмону-фалакни бино қилган Оллоҳ номи билан бошлайман. Бизнинг қиличларимиздан қочиб Миср ерларига борган, ундан сўнг «Тузини еб, тузлиғига тупуриб» султонларини ўлдирган мамлуклардан бири — Султон Музаффар Қутузга!

Султон Музаффар Қутуз, унинг амирлари-ю, халқи ва Миср атрофидаги халқлар билиб қўйсинларки, биз Оллоҳнинг ердаги аскарларимиз, У бизни қаҳр-ғазаби жумласидан қилиб яратди. Кимга ғазаби муҳакқак бўлса, уларнинг устига бизни келтирди. Барча мўътабар шаҳарлар сизларники бўлсин. Биз азму-қароримиздан қайтмаймиз. Бошқаларга ҳам насиҳат қилинг ва пушаймон бўлмасдан олдин таслим бўлинг! Зеро, биз кўзёш қилганга раҳм қилмаймиз, зорланганга ачинмаймиз. Бизнинг қилмишларимизни — мамлакатларни қандай фатҳ қилиб, уларнинг аксар халқини ўлдирганимизни ва Ер юзини ислоҳ қилганимизни эшитганларинг аниқ. Бас, сизлардан қочиш бўлса, бизлардан қувиш.

Қайси жой сизларга қароргоҳ, қайси йўл сизларга нажот бўлур ва қайси давлат сизларни ҳимоя қилур? Сизларга қиличларимиздан халос

бўлиш, чангалимиздан кутулиш йўқ. Зотан, суворийларимиз тенгсиз, қиличларимиз кескир, найзаларимиз ўткир, қалбларимиз бамисоли тоғ ва ададимиз кумларнинг ададичадир!

Бизга кўрғонлар ғов бўлмас, жангга кирган қўшинлар наф кўрмас, дуои баъдингиз бизга кор қилмас! Чунки сиз ҳаром ейсиз, аҳду қасамларни бузасиз, орангизда оқ бўлиш ва осийликни кенг ёйгансиз. Бас, сизларга хорлик ва шармандалиқ қуллуқ бўлсин! **«Энди бугун ерда ноҳақ кибру ҳаво қилганларингиз ва итоатсиз бўлганларингиз сабабли хорлик азоби билан жазоланурсизлар»**⁷⁴⁴, **«Золим кимсалар эса яқинда қандай оқибатга қараб кетаётганларини билиб қолурлар»**.⁷⁴⁵

Ким бизга уруш очса, надомат қилгай, ким биздан омонлик талаб қилса, саломат қолгай. Шартимиз ва амримизга итоат қилсангиз, сиз ўз йўлингиздан, биз ўз йўлимиздан кетамиз. Борди-ю хилоф қилсангиз, ҳалок бўлури сиз. Шундай экан, ўз қўлларинг билан ўзингизни ўлдирманг!

Сиз бизни кофир деб билсангиз, биз сизни фожир деб биламиз. Сиз кўп деб билганлар бизнинг наздимизда оздир ва азизларингиз ҳузуримизда хордир. Подшоҳларингизга хорликдан бошқа йўл йўқ. Уруш алангаси учқун сиз томонга етмасдан жавобда пайсалланманг!...

Элчи жўнатиб инсоф қилдик ҳамда огоҳлантириб уйғотдик. Зеро, бошқа мақсадимиз ҳам қолмади. Бизга, сизга ҳамда ҳидоятга эргашганларга, қирғин оқибатидан қўрққан ҳамда буюк подшоҳга итоат этганларга салом бўлсин!»⁷⁴⁶

Бу мактубни Хулауга дини ва ватанини арзимас дунё матосига сотган мусулмон адиблар ёзиб берганди. Бу ҳайратомуз рисолада бирор бир дипломатик алоқа борасида сўз топиш маҳолдир. Мактубда ё урушиш, ё таслим бўлиш йўлидан бирини танлаш очиқ-ойдин эълон қилинган, учинчи йўл ҳақида гап-сўзга ўрин қолдирилмаган эди.

Қутуз олий кенгаш курди.⁷⁴⁷ Бу кенгашга катта кўрбошилар, амирлар, вазирлар ва уламолар йиғилди. Уларнинг олдига хатарли масала қўйилган, у ҳам бўлса икки йўлдан бирини танлаш эди. Қутузнинг наздида эса фақат битта йўл, у ҳам бўлса мўғулларга қарши жиҳод қилиш фикри бор эди. У таслим бўлиш, омонлик сўраш ҳақида

⁷⁴⁴ Аҳкоф: 20.

⁷⁴⁵ Шуъаро: 227.

⁷⁴⁶ Макризий «ас-Сулуқ» (1-жилд, 514–515-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (268–270-бетлар).

⁷⁴⁷ Макризий «ас-Сулуқ» (1/515-бет), Фомидий «Жихадул мамалик» (120-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (270-бет).

ўйлаб ҳам кўрмади. Зеро, у ҳақ-ҳуқуқ бекордан-бекорга берилмаслиги, балки уни олиш лозимлигини яхши биларди. Бирок Қутузнинг қўл остидаги амирлар фикху-фаҳмада унингдек етук эмасдилар. Тўғри, улар Исломни севувчи, динига ҳамиятли, юксак жангговор тажрибага эга эди, аммо синов ундан-да қийин ва оғир эди! Дарвоқеъ, шарқда Корейдан бошланиб, ғарбда Польшагача чўзилган Мўғул давлатининг имкониятлари, қурол-аслаҳа ва тайёргарлиги Миср давлатиникига караганда анча устун эди. Қолаверса, мўғул лашкари шу кунгача Хоразм, Арман, Гурж, Аббосийлар, Овропа ва Шом қўшинларини тор-мор қилиб, уларни даҳшатли суратда қирғин қилганди. Бу воқеалар эл оғзида дoston бўлиб, мўғулларнинг даҳшати бутун дунёга таралган эди. Халқ орасида оғиздан-оғизга кўчиб юрувчи «Мўғулларнинг энгилгани ҳақида кимдан эшитсанг ҳам тасдиқлама, чунки улар энгилмайди!» қабилдаги сўзлар таъсирида бу амирлар ҳам Қутузнинг фикрига бирдан қўшилишга иккиландилар.

Бу ўринда доно йўлбошчи нима қилди?

Қалблардаги кўрқув ва тушкунликни қандай бартараф қилди?

Халқ онгида «бўлиши мумкин бўлмаган» ишни амалга ошира олишига қандай ишонтирди?

Келинг! Буни қахрамонимиз Қутуздан таълим оламиз.

Қутуз олий тарбия қуролларидан иккитасини қўллади:

Биринчи: Ўрناق бўлиш йўли. Дарҳақиқат, «бир кишининг минг киши олдида қилган иши, минг кишининг бир киши олдида айтган сўздан яхшироқдир». Қутуз шижоат ва қатъийликла: «Керак бўлса якка ўзим мўғулларга қарши жанг қиламан», деди.⁷⁴⁸ Қутуз урушга чиқса, подшоҳлиги ва мансабидан бирор манфаат кўролмаслиги мумкин, бунинг устига у йигитлик даврида эди. У ўзи қасрида ўтириб, урушга лашкар йўлласа маломатга қолмасди. Бирок Оллоҳ йўлидаги ўлимга, мўғулларни қарши олишга ўзи чиқажагини сўзлади. У давлат бошлиғи эди, агар у ўлса, уммат иши зое бўлиши мумкин эди. Лекин у кўрқув ва изтиробдаги қалбларни жонлантириш, илҳомлантириш, уларнинг рухларини кўтариш учун бундан кўра афзалроқ йўл топмади.

У жиҳодга, шаҳодатга ва жаннатга муштоқ бўлсада, ҳаргиз Оллоҳ азза ва жалла белгилаб қўйган муҳлатдан олдин ўлмаслигини назарий билганларга амалий намуна бўлди. Ким назарий жиҳатдан билган бу ҳақиқатга воқеий ҳаётида амал қилиб яшамоқда?! Одамлар ризқ ва

⁷⁴⁸ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/515-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (272-бет).

умрларини зиёда қилиш учун ҳар доим елиб югуради. Лекин кўпчилик инсонлар шижоат ҳеч қачон ризқни камайтирмаслиги ҳамда умрни қисқартирмаслигини, кўрқоқлик мол-дунёни кўпайтирмаслиги ҳамда бу ҳаётда абадий қолдирмаслигини билмайдилар ёки эътиборга олмайдилар! Қутуз одамларга бунинг ҳақиқатини ўргатди. Инсон бир лаҳза бўлсада, азиз бўлиб яшаши бир аср хору-зор бўлиб яшаганидан афзал эканини таълим берди.

Тахтда ўтириб, керак бўлса якка ўзим мўғулларга қарши жанг қиламан, деб турган Музаффар Қутузни кўрган амирларнинг қалбларида ҳамиятлари кўзғалиб, қаттиқ тўлқинланди. Ўрнак бўлиш дегани мана шу эди. Амирлар руҳланиб, барчалари Қутузнинг мўғулларга қарши жанг қилиш фикрини ёқлашди.

Яқин ўтмишда халқ қийинчилик ва танглик вақтида фақат ўз нафси ва яқинлари омонлигини кўзлаб, халқни ташлаб жуфтакни ростлаган амиру-подшоҳларни кўриб келарди. Алоуддин Муҳаммад ибн Такаш Хоразмшоҳ, Жалолиддин Мангуберди, Носир Юсуф ва бошқа бошлиқларнинг ҳолатларига қиссамизнинг аввалида гувоҳ бўлдик. Аммо бошлиқнинг кўрбошилари, аскарлари ва халқи билан бир майдонда бўлиши, уларни шижоатлантириб ва руҳларини тетик қилади. Бу Қутузнинг омма халқни Оллоҳ йўлида курашишга тарғиб қилишда тутган йўли эди.

Бизга энг яхши ўрнак Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламдир. Имом Бухорий Анас разияллоҳу анҳудан ривоят қилади: «Набий саллаллоҳу алайҳи ва саллам инсонларнинг энг яхшиси, энг саховатлиси ва энг шижоатлиси эди. Мадина аҳли бир кеча ногаҳоний бир товушдан ҳузурсиз бўлди. Шунда одамлар овоз томонга қараб юрдилар. Улар йўлда ортга қайтаётган Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламга йўлиқдилар. У зот Абу Талҳанинг отини яйдоқ миниб, бўйинларида қиличлари билан ҳодиса хабарини билиб қайтаётган эканлар. Одамларга: *«Кўрқманглар, кўрқманглар, ҳеч гап йўқ!»*, дедилар».⁷⁴⁹ Бундан кўринадики, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам уммат орасида, унинг ғамида ҳатто ўз жонларини таҳликага қўя оладиган, шижоат ва жасорат майдонида умматга намуна эдилар.

Иккинчи: Қутуз одамзотнинг яратилиши ва Ер юзида яшашига изн берилишига сабаб бўлган улуғ мақсад ва олий ғояни хотирлатди. У одамлар руҳиятини моддиятдан олий уфқларга кўтарди. Уларни Оллоҳ азза ва жалланинг ризолиги ва динининг нусратига чақирди. Киши қалбида дин ишини кадрлар экан, у учун бу диннинг нусрати йўлида ҳар

⁷⁴⁹ Бухорий ривояти.

кандай йўқотиш, ҳар қандай қурбон бериш кичик ва арзимас нарсага айланади.

Қутуз одамларни дунёга, муайян бир шахсга эргашишга, миллатчиликка — Миср шаънига ёки арабларга ёки бошқасига, ҳатто бу ҳаётда тирик қолиш-у, ўзига келаётган ўлимдан мудофаа қилишга тарғиб қилмади. Балки у халқни Оллоҳ йўлидаги ўлимнинг муҳаббати сари чақирди! Ўлимдан қўрқмаган аскар билан ўлимдан қўрққан аскар орасида, тирик аскар билан ўлик аскар орасидаги фарқ янглиғ экани барчага маълум.

Қутуз қўл остидаги амирларга қарата шундай деди: «Эй мусулмонлар амирлари! Байтулмолдан еган пайтларингиз бўлди. Кўриб турибманки, сизлар жангни ёқтирмаяпсиз. Мен сизларга мурожаат қиламан, ким курашишни танласа, менга ҳамроҳ бўлсин. Истамаганлар уйига қайтсин. Зеро, Оллоҳ ундан хабардордир. Мусулмонларнинг ҳурмати жангдан қолганларнинг зиммасига!».⁷⁵⁰ Яъни мен сизларни ҳисоб-китоб қилмайман ёки сизларни кузатмайман, сизларни ҳисоб-китоб қилувчи ва кузатувчи Оллоҳ таолодир. Бу гап ниҳоятда мўътабар эди. Чунки масала иймон масаласи эди.

Расулulloҳ соллalloҳу алайҳи ва саллам мунофиқларни ҳеч қачон жиҳодга чиқишларига мажбурламасдилар, уларни жангга чиқиш ёки чиқмаслик орасида холи қўярдилар. Улардан жиҳодга чиқишни истаганлари чиқарди, истамаганлари чиқмасди. Маълумингизки, Табук ғазоти ўзига хос шарт-шароит ва қийинчилик дамлари юз бергани учун мусулмонларга жуда катта имтиҳон бўлган эди. Чин мўминлар ушбу ғазотдан ўзларини четга олмасдан, ҳаммалари чиқдилар, ҳатто ундан қолиш мунофиқлик белгиси бўлиб саналиб қолди. Бирор киши ундан қолиб кетган бўлса, бу ҳақда Расулulloҳ соллalloҳу алайҳи ва салламга хабар берилганида у зот: *«Қўяверинглар, агар у одамда яхшилик бўлса, Оллоҳ ўзи уни сизларга етказиб қўяди. Агар бошқача бўлса, Оллоҳ ундан сизларни қутқарган бўлади»*, дердилар.⁷⁵¹

Қутуз ҳам шундай қилди. Ким Оллоҳ йўлида жиҳодга чиқишни хоҳласа чиқсин, чиқишни истамаса ортда қолсин ва дунёсини дўст тутсин. Оллоҳ ундан хабардор, мусулмонларнинг ҳуқуқлари уларнинг зиммасига эканлигини билиб қўйсин, деди.

⁷⁵⁰ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/515-бет), Ғомидий «Жихадул мамалик» (120-бет), Аҳмад Абдулкарим Сулаймон «ал-Мўғул вал-мамолийк» (63-бет), Саййод «ал-мўғул фит-тарих» (305–306-бетлар), Сиржоний «Қиссатут-татар» (275-бет).

⁷⁵¹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (276-бет).

Қутузнинг ишораси, яъни амирлар ва вазирларнинг йиллар давомида мусулмонлар байтуллоидан еб яшашгани, ҳатто ундан ўмариб бойлик ҳам тўплагани кундай равшан эди. Қутуз гўё уларнинг ичидагини ўқиётган эди. Улардан баъзиларининг мақсадлари фақат мансабларидан имкон қадар фойдаланиб, ҳалолми ё ҳаромми мол-дунёларини кўпайтириб олиш эди. Вазирлар халқ олдида вазифаси борлиги, уларнинг хўжайини эмаслиги, балки улар хусусида Оллоҳ ҳузурида сўралажаги ва ҳисоб беражагини унутган эди. Қутузнинг бу сўзи ҳар бир вазир ва амирларга тегишли бўлиб, уларга зиммаларидаги ҳақларни хотирлатди, омонатни эгаларига топширишларига ишора қилди ва уларга қандай ўринда эканликларига ишора қилди.

Қутузнинг қалби юмшаб, тўлқинланди ва амирларга йиғлаган ҳолда хитоб қилиб: «Эй мусулмонлар амирлари! Агар биз Ислом учун ҳаракат қилмасак, унда ким ҳаракат қилади?!» – деди.⁷⁵²

Ҳақ устида айтилган ҳақ сўз нақадар гўзал. Агар ҳар бир мусулмон бу сўзни айтиб, ҳаётига татбиқ қилса, Ислом уммати ҳамиша устивор, олий бўлади ва ҳеч қачон хор бўлмайди.

Баъзан кўшни хонадон ёки бошқа ўлкадан Салоҳиддин ёки Холид ёки Қутуз ёда Қоъқоънинг чиқишига интизор бўламиз. Ўзимиз эса, ҳаракат қилишни хаёлимизга ҳам келтирмаймиз.

Нима учун Салоҳиддин Айнобий ёки Юсуф ибн Ташфин ёки шахид Нуриддин Маҳмуд ўрнида бўлишни фараз қилмаймиз? Улар фақат Оллоҳ азза ва жаллага иймон келтириб, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламнинг йўлларидан юрган эдилар-ку. Олдимизда Оллоҳнинг азиз Китоби ва Расули соллаллоҳу алайҳи ва салламнинг манҳажлари бор, нима учун ўзимиз турганда бошқалардан нусрат амалга оширилишини кутишимиз керак?

Агар биз Ислом учун ҳаракат қилмасак, унда ким ҳаракат қилади?!

Бу калима амирларнинг қалбларини ларзага солди, бу ларза қотган дийдаларни очди, қалбларда иймон кучи қалқиб, кўзларига ёш пурқади, йиғладилар. Ҳа, кимнинг қалбида Оллоҳдан қўрқув бор экан, ундан ҳамма яхшилиқни умид қилса бўлади. Баъзи амирлар ўрnidан туриб, яхши сўзларини илова қилдилар, қолганлари ҳам жанг тарафдори эканларини эълон қилдилар.

⁷⁵² Сиржоний «Қиссатут-татар» (276-бет).

Қутуз жуда қийин ва буюк масалага гўзал ечим топди. Бу ечим жанг қарори эди. Шундай қилиб, Миср давлати мўғулларга уруш эълон қилди, бу Миср тарихида мутлақо буюк қарорлардан бири бўлган эди.

Мўғул элчиларининг ўлдирилиши

Қутуз амирларнинг қалбларига ўрнак бўлиш, Оллоҳни ва бурчларни эслатиш ижобий таъсир қилишини биларди. У қалблар иккиланиши, тараддудланиши мумкинлигини ҳам унутмади. Шунда у иккиланиш, орқага қайтиш ёки таслим бўлиш йўлини батамом кесиш ҳамда урушдан бошқа йўл қолдирмаслик режасини қилди. Йиғилишдан сўнгра Хулагу жўнатган таҳдидий мактубни келтирган тўрт элчини қатл қилиб, бошларини Қоҳиранинг «Зувейла дарвозаси»га осиб қўйиш ва уларнинг орасида келган балоғатга етмаганини мамлуклар сафига қўшиш қарорини берди. Бу дарвозага илк бор мўғулларнинг боши осилиши эди.⁷⁵³ Мўғул элчиларини ўлдириш фикрини Бейбарс ўртага ташлаган эди.⁷⁵⁴ То Миср халқи уни кўриб, подшоҳимиз мўғуллардан кўркмас экан, деб руҳиятлари кўтарилиши ҳамда мўғулларни қарши олаётган бу қавм мўғуллар илгари дуч келган қавмлардан буткул бошқача эканининг эълони эди. Бу ҳодиса мўғулларнинг маънавиятига салбий таъсир қилгани, оз бўлсада, уларнинг қалбларига кўркув ва тараддудни солгани табиий.

Элчиларнинг қатл қилиниши бир томондан омонлик сўраб, таслим бўлиш ишига кескин нуқта қўйган бўлса, иккинчи жиҳатдан жангга жиддий ва мукамал тайёргарлик кўришга ундарди. Зеро, бундан сўнг Миср аҳли таслим бўлишни истаса ҳам мўғуллар буни қабул қилмаслиги турган гап эди. Битта йўл бор, у ҳам бўлса жанг. Бу Қутуз ва амирлари ижтиҳоди эди.⁷⁵⁵

⁷⁵³ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/515-бет), Ғомидий «Жихадул мамалик» (120-бет).

⁷⁵⁴ Рашидуддин «Сборник летописей» (3/52), Саййод «ал-Мўғул фит-тарих» (305-бет), Саллабий «Диросат тарихийя» (85-бет) китобидан нақл қилган, «ал-Мўғул» (355-бет).

⁷⁵⁵ Сиржоний «Қиссатут-татар» (278-бет).

Исломда эчилар ўлдирилишининг ҳукми

Бу ўринда тўхталиб ўтиш лозим бўлган нуқта бор. Бу, элчиларнинг ўлдирилиш ҳодисасидир. Бундай ҳолатга юқорида ҳам бир неча ўринда гувоҳ бўлиб келдик ва тафсилотини шу сатрларгача кечиктирдик. Мана ниҳоят ушбу масаланинг тафсилотига киришамиз.

Қутуз элчиларни ўлдириб, Хоразмшоҳ ва Комил Муҳаммад йўл қўйган хатони такрорлади. Чунки Исломда элчи, хоҳ мусулмон, хоҳ кофир, ҳатто муртад бўлсин, ўлдирилмайди. Абдуллоҳ ибн Масъуд разияллоху анҳудан ривоят қилинадики: «Ибн Наввоҳа ва Ибн Усол Набий соллаллоху алайҳи ва салламга Мусайлима томонидан элчи бўлиб келишди. Набий соллаллоху алайҳи ва саллам: *«Менинг Оллоҳнинг расули эканимга гувоҳлик берасизларми?»*, деб сўрадилар. Улар: «Биз Мусайлима Оллоҳнинг расули, деб гувоҳлик берамиз», дея жавоб қилишди. Шунда Расулуллоҳ соллаллоху алайҳи ва саллам: *«Оллоҳга ва расулига (ўзларини назарда тутдилар) иймон келтираманки, агар элчини ўлдиришни дуруст санаганимда, қасамки, сизларни ўлдирган бўлардим»*, дедилар.

Абдуллоҳ ибн Масъуд айтадилар: «Шундан эътиборан элчини ўлдирмаслик суннат бўлиб қолди». ⁷⁵⁶ Ибн Наввоҳа ва Ибн Усоллар илгари мусулмон бўлишган, сўнгра Мусайлима каззобга ишониб, муртад бўлган эдилар.

Имом Аҳмад ва Абу Довуднинг Нуайм ибн Масъуддан қилган ривоятларида: Расулуллоҳ соллаллоху алайҳи ва саллам: *«Оллоҳга қасамки, (элчилар ўлдирилмайдида) агар элчилар ўлдирилса эди, сизларни бўйинларингни узардим»*, дедилар. ⁷⁵⁷

Имом Шавканий «Найлул Автор» китобида айтадики, Абдуллоҳ ибн Масъуд ва Нуайм ибн Масъуддан келган бу икки ҳадис кофирлар томонидан келган элчини гарчи амир ва мусулмонлар ҳузурида куфр калималарни айтса ҳам ўлдириш ҳаром эканига далолат қилади. ⁷⁵⁸

Хуллас, шариат ҳукмида элчига ўлим йўқдир. Хоразмшоҳ, Комил Муҳаммад ҳамда Қутуз элчиларни ўлдиришга қаердан далил топган бўлса?! Нима учун ўша замондаги уламолар сукут сақлашди?! Балки уламолар етказгандир-у, аммо бизгача китобларда етиб келмагандир. Балки Қутуз мўғуллар бирор-бир қонун-қоидага эътибор бермай ёшу қарини, эркагу аёлни, жангчию оддий фуқарони бир чеккадан

⁷⁵⁶ Аҳмад, Ҳоким, Абу Довуд ва Насоий ривояти.

⁷⁵⁷ Аҳмад ва Абу Довуд ривояти.

⁷⁵⁸ Шавканий «Найлул автор».

ўлдирганлари учун ижтиҳодан шундай қилгандир. Балки элчилар унинг хузурида беодоблик қилиб, ҳадларидан ошгандир. Агар мана шулар сабаб у бу ижтиҳодни қилган бўлса, биз кофирларнинг ахлоқларидан узок бўлишимиз лозим-ку. Кофирлар болаларни ўлдирса, улардан қасос олаяпмиз дея болаларни ўлдириш, улар муслима аёлларни номусини топтаса ва ўлдирса, кофира аёлларни ўлдириш ва номусига тегиш мукулмон кишига жоиз эмас. Агар кофирлар аҳдларига хиёнат қилса, мукулмон киши уларга берган аҳдларига хиёнат қилиши жоиз эмас.

Демак, нима бўлганда ҳам бу ҳодиса Қутуз ва амирларнинг ижтиҳоддаги хатоси эди. Пайғамбарлардан бошқа ҳамма, гарчи ҳар қанча қадри баланд бўлса ҳам хатокордир.

Иқтисодий, моддий қийинчиликлар

Бу хатарли ва оғир қарор — элчилар қатлидан кейин, Қутуз зудлик билан кўшин ҳозирлашга киришди. Дарҳақиқат, душманни қаршилаш лаҳзаларига жуда оз вақт қолганди. Мўғулларга Мисрдаги мукулмонлар жангдан қочмаслиги ва уруш йўлинигина танлагани ҳақида мактуб етиб борди.

Бир ёдга олайлик, Қутуз 657 йил 24 зулкаъда/1259 йил 19 ноябр куни Миср тахтига ўтирган эди.⁷⁵⁹ Қутузнинг мактуби Ҳалаб ишғол қилинганидан бироз вақт ўтган, Дамашқ хануз ишғол бўлмаган, мўғулларнинг буюк ҳокони Мангухон ўлими сабаб Ҳулагу Мўғулистонга отланиш арафасида турганда етиб борган эди.

Ҳалаб 658 йил сафар/1260 йил февралда⁷⁶⁰, Дамашқ эса Китбуга нўён қўли билан 658 йил рабиул-аввал/1260 йил март ойида ишғол қилинган эди.⁷⁶¹ Шундан кўринадики, Ҳулагунинг мактуби Қутузга сафар ойининг охири ёки рабиул-аввал ойининг бошларида, яъни февралнинг охири ёки мартнинг бошларида, Қутуз тахтга ўтирганидан 3 ойдан кейин келган эди.⁷⁶² Қутуз амалга оширган ишларга бор-йўғи 3 ой вақт кетганди. Одатда бу ишларнинг ислоҳи учун йиллар керак бўлади. Баъзан эса ўнларча йилларда ҳам бундай ютуқларнинг ўндан бирига ҳам етишиб бўлмайди, баъзан эса йиллар ўтиб ютуқ эмас, анча орқага кетиб, ютказишга дуч келинади. Лекин Қутуз Оллоҳ азза ва жалладан мадад сўраб, муаммо кетидан муаммони бор кучи билан, ҳаракат ва ҳамият

⁷⁵⁹ Саллабий «ал-Мўғул» (325-бет).

⁷⁶⁰ Мақризий «ас-Сулук» (1/511-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» докторлик рисоласи (90-бет).

⁷⁶¹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (280-бет).

⁷⁶² Сиржоний «Қиссатут-татар» (280, 281-бет).

билан баргараф қилишга киришган эди. Унинг ғояси равшан: ёввойи, йирткич мўғул қувватини синдириш ва мусулмон ўлкаларни уларнинг исканжасидан озод қилиш эди.

Ички вазиятни барқарорлаштириш, сафларни бирлаштириш, Баҳрий мамлукларни кечириш, уларни Шом, Туркия ва бошқа ерлардан Мисрга чорлаш, Баҳрий ва Муъиззий мамлуклар орасини бирлаштириш, Айюбий амирларига мактублар йўллаш, қўшин тўплаш, халқни жангга ҳозирлаш ва амирларни жанг сари руҳлантириш ишлари атиги уч ой ичида амалга оширилган эди.

Қутузнинг қаршисидан шунча қийинчиликлар устига янги ва улкан муаммо чикди. Бу муаммо иқтисодий, молиявий қийинчилик эди. Мусулмон аскарни жиҳозлаш, озиқ-овқат таъминоти, кўприклар, қалъалар ва кўрғонларни тузатиш ва бошқа ишлар моддий таъминотга бориб тақалиши кундай равшан. Уруш учун керакли тайёргарлик кўриш, камал юзага келгудек бўлса, халққа қамал кунларида кифоя қиладиган озиқ-овқат жамғариб қўйиш шарт эди. Ўша дамлар Мисрда оғир иқтисодий танглик ҳукм сураётган бўлиб, беш-ўн йиллик режалар учун фурсат йўқ, мўғуллар эшик қоқиб турарди.

Қутуз бундай қийин вазиятдан қандай чикди? Катта қўшинни жиҳозлаш, кўрғонлар, қалъалар ва қурол-яроқларни ҳозирлаш, халқ учун озиқ-овқат захираларини тайёрлаш учун нима қилди? У шу йилнинг 15 шаъбон, яъни 2 август душанба куни маслаҳат кенгаши қурди,⁷⁶³ у ҳаётида барча муҳим ишларни маслаҳат асосида амалга оширар эди. Қутуз бу кенгашга катта аскарбошилар, амирлар, уламолар ва фақиҳларни чорлади. Уламоларнинг каттаси Изз ибн Абдуссалом эди.⁷⁶⁴

Улар мамлакатдаги иқтисодий тангликдан қандай чиқиш, армияни қандай таъминлаш мумкинлиги ҳақида фикрлай бошладилар. Мажлисни Қутуз очиб берди, у мўғулларга қарши жангга отланувчи лашкар ҳозирлиги учун халққа солиқ солиш фикрини ўртага ташлади. Лекин бу қарор шаръий фатвога муҳтож эди. Ислом давлатида эса мусулмонлар закотдан бошқа бирор солиқ тўламайдилар. Закотдан ташқари бирон солиқ (ўлпон, бож) хос вазиятда ва маълум муддатгина шаръий далил ва асосга кўра тўланиши мумкин. Йўқса бу шаръан таъқиқланган солиқ жумласига кириб қолади. Уни халққа шарт қилиш эса, Оллоҳ таоло ҳузурида аламли азобга мустаҳиқ қилиб қўяди.

⁷⁶³ Макризий «ас-Сулуқ» (1/515-бет), Ғомидий «Жихадул мамалик» (120-бет).

⁷⁶⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (281-бет).

Имом Аҳмад ва Абу Довуд Уқба ибн Омир разияллоху анхудан ривоят қилади, у киши деди: Расулulloҳ соллalloҳу алайҳи ва салламнинг: *«Солиқ солувчи киши жаннатга кирмайди»*, деганларини эшитдим.⁷⁶⁵

Зино қилиб қўйган, сўнгра тошбўрон қилинган Ғомидийлик аёл қиссада Расулulloҳ соллalloҳу алайҳи ва саллам шундай деган эдилар: *«Жоним қўлида бўлган Зотга қасамки, бу аёл шундай тавба қилдики, агар солиқ йиғадиган одам шундай тавба қилса, гуноҳи кечирилган бўларди»*.⁷⁶⁶ Бу ҳадис Бурайда разияллоху анхудан ривоят қилинган. Бундан ҳақсиз солиқ солиш неқадар қабиҳ иш экани маълум бўлади. Бу ўринда имом Нававий айтадики, солиқ солиш энг қабиҳ маъсият ва ҳалок қилувчи гуноҳлардандир.

Музаффар Қутуз буюк иш — Оллоҳ йўлидаги жиҳодга қўшин ҳозирлаш учун мўғуллар ишини ҳал қилиш ва мусулмонларни уларнинг зулмидан озод қилиш учун солиқ солишни таклиф қилган эди. Лекин шунда ҳам у уламоларнинг фикридан олдин қарор чиқармади.

Шайх Изз ибн Абдуссалом фатвоси

Иқтисодий танглик сабаб Қутуз қўшинни ҳозирлаш учун халққа солиқ солишни таклиф қилди. Бу мажлисда шайх Изз ибн Абдуссалом ҳам ҳозир эди.⁷⁶⁷ Бу нозик масаланинг шу тариқа ҳал этилишини шайх Изз ибн Абдуссалом маъқул кўрмади. У халққа солиқ солишнинг жоиз бўлиши учун иккита шарт мавжуд бўлгандагина амалга ошириш мумкинлигини баён қилиб шундай деди: «Агар мамлакатга душман бостириб келса, ҳаммага яъни бутун Ислом оламига душманга қарши жиҳод қилиш вожиб бўлади. Ислом ўлкаларидан бири таҳлика остида қолса, унда сафарбарлик эълон қилинади, ҳамда ҳимояланиш фарзи кифояликдан фарзи айнликка кўчади. Яна тайёргарлик учун халққа солиқ солиш иккита шарт юзага келгандагина жоиз бўлиши мумкин:

Биринчи шарт: «Байтулмол»да бирор нарса қолмаслиги. Агар давлатнинг бюджети сарфланиб тамом бўлса ва армия таъминотига ҳеч бир нарса қолмаса, бу таъминотни тўлдириш учун халққа солиқ солса бўлади. Бинобарин, фақат армия таъминотига яраша солиқ солинади, ундан ортиқ бирор нарса олинмайди.

⁷⁶⁵ Аҳмад ва Абу Довуд ривояти.

⁷⁶⁶ Муслим ривояти.

⁷⁶⁷ Ғомидий «Ҷиҳадул мамалик» (109-бет).

Иккинчи шарт: Эй вазир ва амирлар! Эҳтиёжга яраша от-улов ва қуролларни олиб қолиб, қолган мол-мулк ва қурол-аслаҳаларни сотиб, мусулмон аскарнинг эҳтиёжига сарф қиласиз! Ва ҳар бир аскар омма халқ билан мулкда баробар бўлиши шарт. Лашкарбоши ва сардорларнинг қўлида мол-давлат ва ортиқча қурол-аслаҳа бўлатуриб, халқнинг молидан олиш мутлақо мумкин эмас».⁷⁶⁸

Кескин журъатла айтилган бу фатво мажлисда иштирок этган Миср султони, амирлари, вазирлари ва катта лашкарбошиларни ҳайратда қолдирди.

Бу фатво ҳайратомуз бўлса, Қутузнинг бу фатвога дарҳол ижобат қилиши унданда ҳайратланарли бўлди. Қутуз шайх Изз ибн Абдуссаломнинг фатвосини қабул қилибгина қолмасдан амалий суратда кўрсатди ҳам. Дастлаб мол-мулкни борини берди ҳамда вазирлари ва амирларини ҳам шунга амр қилди. Улар гап-сўзсиз, эътирозсиз бўйсундилар. Шу тариқа мусулмон аскар шаръий йўл билан вазир ва амирларнинг мол-мулки эвазига жиҳозланди, халққа солиқ солишга эҳтиёж ҳам қолмади.

Шу тарзда ташқаридан хокисоргина кўринган Миср халқи ичида унинг эҳтиёжни қоплай оладиган даражадаги мол-давлатни ҳамёнида олиб юрган кишилари, аниқроқ қилиб айтсак зобитлари борлиги ўртага чиқди. Улардан баъзиларининг бойлиги баъзи кичик давлатларнинг бюджетига тенг келадиган, давлатнинг бутун қарзларини қоплайдиган, фақир ва мискинларнинг ҳожатларига етарли ва иқтисодий тангликдан қутқариб олишга кифоя қиладиган даражада кўп эди.

Минг афсуски, амирларнинг ҳамёнларига тушган беҳисоб мол-давлатнинг аксарияти ноҳақ ва ношаръий йўллар билан топилган эди. Улардан бу бойликларни ноҳақ ўзлаштириб олгани, порахўрлик ва зулм йўли билан топгани, ноўрин жойга сарф қилганлари ҳам бор эди. Шу тариқа буюк Миср давлатининг мол-мулки харжланиб, фақир ва ночор давлатга айланган эди.

Ибн Иёс шундай хабар беради, Қутуз шайх Изз ибн Абдуссалом фатвосини қуйидагича татбиқ қилди: «Миср ва Қоҳира халқига ҳар бир жон учун ёшу-қарига бир динордан, кўчмас мулк кираларидан бир ойлик пешин тўлов, бой ва тижоратчилар молларининг закотини муддатдан олдин, мерос қолдирганларнинг меросларини учдан бирини, боғ ва сув

⁷⁶⁸ Ғомидий «Жиҳадул мамалик» (110-бет), Ибн Иёс «Бадаиъуз-зуҳур» (1-жилд, 1-кисм, 302-бет).

омборларидан бир ойлик ижарасини олди. Тўпланган мол 600 минг динордан ортиб кетди». ⁷⁶⁹ Албатта, бу иш Қутуз ва унинг ёнидаги амирлари шайх Изз ибн Абдуссаломнинг олдига тилла буюмлари, тақинчоклари ва барча пулларини кўйгандан кейин амалга оширилди. ⁷⁷⁰

Қутуз келиб, мамлакат низомини, инсонларнинг амаллари ва қалбларини поклай бошлади. Узоқ йиллардан буён юртбоши билан халқ ўртасида узилиб қолган алоқа яхшиланди, мусулмон аскар ҳалол пул ҳисобига жиҳозланди. Бу иш ҳам Оллоҳнинг изни илоҳийси билан аъло даражада амалга оширилди. Халқ мусулмон аскар ва бошлиқ ҳаққига дуода бўлди. Қўшин жиҳозланган, тайёргарлик меъёрида, одамлар дуода...

Бундай қўшин нусратга лойикдир.

«Эй мўминлар, агар сизлар Оллоҳга ёрдам берсангизлар, У зот ҳам сизларга ёрдам берур ва жанг майдонида кадамларингизни собит-барқарор қилур». ⁷⁷¹

Оллоҳнинг нусрати фақат ва фақат Унинг шариатини татбиқ ва қоим қилган жамоагагина берилади. Шариатга муҳолиф мусулмон лашкарига нусратнинг келиши амримаҳолдир. Шу тариқа Миср армияси ҳалол пул эвазига жиҳозланди ва буюк тайёргарлик кўра бошлади.

Қутуз ва амирларнинг мўғулларни қаршилаб олиш борасидаги фикрлари

Жанг режасини тузиш замони келди. Қутуз одатига кўра, ҳарбий мажлис курди. Ўртага лашкарнинг ҳаракатланиш харитаси кўйилди. Мўғуллар билан курашишнинг афзал йўли ва уларнинг устидан ғалаба қозониш мумкин бўлган лойиҳалар муҳокама қилинди. Қутуз ўзи ишлаб чиққан ҳарбий режани ўртага ташлади. У фикрини баён қилганидаёқ мажлис аҳли ўринларидан туриб кетди ва ҳаяжондан қайтиб ўтиролмай қолдилар. Унинг таклифи мажлисдагиларни ларзага солган эди!

Қутузнинг режаси

Қутуз мўғуллар бостириб келишини кутмай, Фаластин сари лашкар тортишни режа қилди. ⁷⁷² Аксарият амирлар унинг фикрига кўшилмай, Мисрда қолиб душманни кутиш фикрини ўртага ташладилар. Мўғуллар

⁷⁶⁹ Фомидий «Жихадул мамалик» (110-бет), Ибн Иёс «Бадаиғуз-зухур» (1-жилд, 1-қисм, 305, 306-бет).

⁷⁷⁰ Сабкий «Тобақот аш-шафиъя» (5-жилд, 83-бет).

⁷⁷¹ Муҳаммад: 7.

⁷⁷² Фомидий «Жихадул мамалик» (115, 116-бет).

Мисрга бостириб келмаса, буюк қирғин-барот ва қатлиомдан кутуламиз. Борди-ю, хужум қилсак, урушдан ўзга чора қолмайди, яъни ўз оёғимиз билан жанг майдонига борган бўламиз, дедилар. Амирлар уммат ғами қолиб, ўз дардларида фақат Миср ҳимоясини ўйлаб хато қилган эдилар, десак муболаға бўлмайди.

Қутузнинг фикри амирларникидан теран эди. У амирлар билан ўз режасининг афзалликлари, фикрининг асрорларини муҳокама қилишга киришди. Урушдан кўзланган мақсад ва мусулмон аскар зиммасидаги бурчларни эслатди. Узун йиллар давомида йироқлашиб кетилган ҳақиқатларни уларга хотирлатди. Бу ҳақиқатлар қуйидагилар эди:

Биринчи: Миср мамлакатининг хавфсизлиги давлатнинг ичидан эмас, чегара-худудларидан таъминланиши. Тажовузкор, қонхўр мўғуллар каби қўшниси бўлган давлат қандай хотиржам бўлсин?! Душман ҳар лаҳзада Мисрга хужум қилишга пайт пойлаб, фурсат бўлди дегунча, унинг шарқий чегарасидан бостириб кириб, Сино минтақасини санокли кунларда маҳв қилиши, сўнгра Мисрнинг қолган қисмларига таҳдид солиши кундай равшан эди. Шундай экан, қўшни Фаластинга бориб босқинчи, мустабид, тажовузкор қувватни, ёки ҳеч бўлмаганда ўша ерда унга қарши урушаётганларга ёрдам бериш билан бўлса ҳам синдириш керак. Бу фикр шаръий бурч бўлиши билан бирга инсонийлик ва мантиқ тарозусида ўлчанса ҳам жуда ўринли эди.

Иккинчи: Ҳарбий қарашда ҳам тўғри фикр ғаним устига юриш қилиш эди. Бу ҳаракат бир тарафдан душман қалбига қўрқув солса, бошқа томондан мусулмон аскар мағлуб бўлгудай бўлса, ортга қайтиш имкони қолган бўлади. Мисрда жанг қилиб, ўша ерда мағлуб бўлса, Қоҳира сари йўл очиб беришдан, сўнгра бутун давлатнинг маҳв бўлишидан бошқа чора қолмайди.

Учинчи: Яна ҳарбий нуқтаи назардан, тўсатдан хужум уюштириб душманни ғафлатда қолдириш ҳамда ундан олдин жанг майдони ва замонини танлаш муҳим эди. Одатда кўққисдан қилинган хужум нафақат аскарӣй, ҳатто маънавий устунликни касб этиб, душманни шоширибгина қўймай, тайёргарлик, ўзини ўнглаш каби жангда катта аҳамият касб қилган ҳаракатлардан қалғидади.

Тўртинчи: Миср мусулмонлари учун мўғул балосига мубтало бўлган Фаластин, Сурия, Ливан, Ироқ, Афғонистон, Озарбайжон, Чеченистон ва бошқа Ислом диёрларидаги мусулмонларнинг қасосини олиб, уларни зулмдан озод қилиб, ўзларини оқлаш ва бурчларини адо қилиш йўлида қочирилмас фурсат келган эди. Чунки бу диёрларда мусулмонлар қатл қилиниб, номуслар поймол этилганда, шаҳарлар

вайронага айлантирилганда Миср ахлидан ёрдам қўли чўзилмаганди. Энди айна фурсат, ўч олиш фурсати, биродарларини озод қилиш вақти, золимларни ер юзидан супуриб ташлаш замони келган эди. Миср аҳлига биродарларини зулмдан кутқариш ҳам қарз, ҳам фарз бўлган эди.

Шу тарика Қутуз Фаластин, Сурия ва бошқа халқларга ёрдам бериш учун жангга чиқишни қарор қилди. У гарчи мўғуллар Мисрга мутлако юриш қилмаган тақдирда ҳам бундай тадбир Миср халқи зиммасига тушганини билдирди. Қутузнинг бу фикри тўғри ва шариатга мувофиқ эди. Шунинг учун Миср уламолари унинг фикрини қўллаб-қувватладилар.

Бешинчи: Мусулмонларга ўз юртлари-ю номуслари, динлари-ю молу-мулкларини ҳимоя қилишлари фарз бўлган эди. Тоинки душман мусулмон юртларини тарк этсин. Бузук эътиқод ва ваҳшиёна урушларни касб этган мўғулларнинг мавжудлиги нафақат мусулмон ўлкалар, балки Ер юзига улкан фитна уруғини сочаётган эди. Мусулмонлар бу фитна уруғини янчиб ташлашлари лозимдир.⁷⁷³

Амримаъруф ва наҳиймункар Қутуз ёки Миср халқи зиммасигагина юкланган вазифа эмас, умматдан кодир бўлган ҳар бир мусулмон қилиши керак бўлган вазифадир.

«Одамлар учун чиқарилган миллатларнинг энг яхшиси бўлдингиз. Зеро, сиз яхши амалларга буюрасиз, ёмон амаллардан қайтарасиз ва Оллоҳга иймон келтирасиз».⁷⁷⁴

Мисрда қолиб мўғуллар ҳужумини қарши олишнинг ҳам ижобий жиҳатлари бор эди. Жумладан, мўғуллар Мисрга Сино саҳроларидан келишдан ўзга чораси йўқ. Нотаниш жойлар, айниқса, саҳродан катта қўшинни олиб ўтиш учун озиқ-овқат, ем-хашак ва сабр-бардош керак бўлиб, саҳро лашкарга талайгина бошқа муаммолар чиқариши турган гап эди. Бирок Қутуз мўғулларнинг турли табиий ғовлар: тоғу тош, совук ва иссиқ, саҳроларга чидамли эканини ҳамда ярим аср давомида зўр малака ҳосил қилганини биларди.

Хуллас, бу икки фикр тарозига қўйилиб таққосланганда, Фаластинга бориб жанг қилиш фикри палласи оғир келди.

Шундай қилиб, ҳарбий кенгаш аҳли Қутузнинг далилларига ҳамда Фаластин ерларида жанг олиб боришнинг муҳимлигига қаноат ҳосил қилдилар. Мусулмон аскар Сино саҳросини кесиб ўтиш ва Фаластин

⁷⁷³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (285–287-бет).

⁷⁷⁴ Оли Имрон: 110.

сари сафарбарлик учун тайёргарликни бошлаб юборди. Вазият жуда қалтис эди. Бу ҳамла биргина лашкарбоши ва армияга эмас, бутун Миср халқи учун ҳам ўта аҳамиятли эди. Ҳал қилувчи бу жангга халқ жиҳозланиши ва ўйин-кулгуни чеккага суриб, жидду-жаҳд билан киришмоғи лозим эди.

Бундай катта жанг аҳамиятини халққа етказиш уламолар ва фақиҳларнинг масъулиятларидан эди. Шайх Изз ибн Абдуссалом ва бошқа уммат олимлари масжид минбарлари узра барча инсонларни муқаддас жангга ундашга киришдилар. Одамларни жаннатга тарғиб қилиб, дунёни дўст тутмасликни, шаҳидларнинг мартабалари ва уларнинг ажрлари қанчалар улуг эканини англатдилар. Уларга Холид ибн Валид, Қоъқоъ, Зубайр, Нўъмон, Торик ибн Зиёд, Мусо ибн Нусайр, Юсуф ибн Ташфин, Имодуддин Зинкий, Нуриддин Маҳмуд, Салоҳиддин Айюбий каби буюк қаҳрамонлар ҳақида сўзладилар. Бадр, Аҳзоб, Фатҳи Макка, Ярмук, Қодисия каби Оллоҳнинг нусрат берган кунларини ҳамда 75 йил олдин юз берган Ҳиттийн жангини, 10 йил олдин содир бўлган Мансура ва Фарискур жанглари хотирлатди. Қалблар уйғонди, кўзлар равшанлашди.

Зеро, икки гуруҳ савашадиган кун учун халқни ҳозирлаш, ёшлар ва йигитларни Оллоҳ йўлидаги ўлимни ардоқловчи, жаннат сари ошиқувчи қилиб тарбиялаш лозим эди.

Бу ташвиқотни бажариш учун хос тарбиячилар ва уламолар лозим эди. Азҳар уламолари бу олийҳиммат ишга бел боғладилар. Салоҳиддин Айюбий замонларидан буён «Азҳару шариф» уламолари солибчилар, французлар, инглизлар ва яҳудийлар ҳамлаларига қарши мусулмонларни тайёрлашда катта ҳиссаларини қўшиб келдилар. Мана ҳозир халқни мўғулларга қарши курашга тарбия қилмоқдалар.

Миср халқи жангга шу тарзда тайёрланди. Армияни ҳозирлаш, уни жиҳозлаш, аскарларни ҳарбий машғулотлари беш ой, 658 йил рабиул-аввал ойидан, яъни Ҳулагудан мактуб келган ондан ражаб ойининг охиригача/1260 йил февралдан июлгача давом этди.⁷⁷⁵

Акко муаммоси

Шу аснода Қутузнинг қаршисидан яна янги муаммо чиқди. Бу муаммо аслида янги бўлмасда, айна дамда ҳал қилиниши лозим эди. Фаластин, Ливан ва Суриянинг кўп қисмлари, хоссатан Ўртаер денгизи соҳиллари солибчилар томонидан босиб олинган бўлиб, Акко, Ҳайфа,

⁷⁷⁵ Сиржоний «Қиссатут-татар» (292-бет).

Сайда, Сур, Байрут, Лазикия, Антакия ва бошқа шаҳарлар салиб амирликлари қўл остида эди. Бу салиб амирликларининг орасида энг қувватлиси Фаластин ерларидаги Акко амирлиги бўлиб, у Қутузнинг йўлида жойлашган эди.

Қутузнинг Акко ҳақидаги қарашлари:

1. Ақидавий ғояга кўра мусулмонларга душман бўлган салибчилар фақат мулку-тахт, дунё пайида бўлган мўғуллардан душманлиги ошса ошардики, кам эмасди. Қутуз бу икки душман: мўғуллар ва салибчиларнинг душман эканини эътибордан қочирмади.

2. Мўғул ва салибийлар орасидаги ҳамкорлик узун тарихга эга. Мўғуллар Чингизхон давридан бошлаб мусулмонлар ерига салибчилар йўл-йўриғи ила юриш қилди. Бағдод ва Шом ишғолида салибчилар Хулагуга катта ёрдам берган эди. Арманистон ва Гуржистон подшоҳлари ҳамда Антакия амирининг мўғуллар билан аҳдлашиб, иттифоқ курганига кўп бўлмаганди. Мўғуллар Фаластин ва Шомдаги салиб амирликлари билан иттифоқ қуриш эҳтимоли катта эди. Булар Қутузнинг тасаввуридан узоқ эмасди.

3. Қутуз мўғуллар билан салибийлар ўртасида ҳамкорлик бўлсада, Аккодаги салибчилар мусулмонларни кўрарга кўзи бўлмасада, мўғуллардан нафратланишини биларди. Улар нафақат мўғулларни ёмон кўрар, балки улардан кўрқарди. Чунки улар мўғулларнинг бевафо, аҳдсиз эканини билар, Овропа ва Россиядаги насронийлар қирғинини унутмаган, мўғуллар қиличи уларнинг беҳисоб инсонларини санаганини унутмаган эдилар. Бундан ташқари, Хулагу Антакия католик канисасига ортодоксал патриархни бошлиқ қилиши тарихда кузатилмаган ҳодиса бўлиб, салибийларнинг Хулагуга нисбатан адоватларини янада орттирган эди. Католик ва ортодоксал оқимлар орасидаги адоват бу соҳада оз бўлсада маълумотга эга бўлганларга сир эмас. Акко насронийлари мутаассиб католиклар эди. Шу сабаб Антакияда содир бўлган бу ҳодиса уларнинг тасаввурларига ҳам сиғмаслиги аниқ. Акко насронийлари мўғулларни қаттиқ ёмон кўрар ва улардан ашаддий кўрқар эдилар. Қутуз мўғуллардан олдин улар билан ҳамкорлик қилишни режа қилди.

4. Салибийлар 658/1260 йилларда оғир ҳолатни бошдан кечираётган бўлиб, Акко амирлиги улар орасида энг қувватлиси бўлишига қарамай анча заиф эди. Улар 648/1250 йил рўй берган «Мансура жанги»дан сўнг ҳали ўзига келолмаган эди. Жангда катта сондаги йўқотиш бўлган, Людовик IX Францияга қайтган, улар урушдан тирик қолганлар хисобига сафларини сақлаб қолган эдилар. Қутуз бу душманнинг

мусулмонларга нисбатан ашаддий адовати бўлсада, айна дамда ўта заиф эканини тушуниб етди.

5. Акко амирлиги жуда мустаҳкам қўрғонли бўлиб, умуман олганда Шом ва Фаластин ерларидаги энг зўр ҳимояланган шаҳар эди. Бу шаҳар 492/1099 йил насронийлар қўлига кирган бўлиб, салибчилар бу шаҳарга ўрнашганига 160 йилдан ошган эди.⁷⁷⁶ Ўшандан бери ҳатто Салоҳиддин Айюбийдек баҳодирлар ҳам бу шаҳарни фатҳ қила олмаган эдилар.⁷⁷⁷

Қутуз Акко амирлигини ишғол қилиш жуда қийин эканини яхши биларди. Акко муаммосини ечмай мўғуллар билан жанг қилолмаслигини ҳам тушунарди. Борди-ю, мўғуллар билан салибчилар бирлашиб қолса, мусулмон лашкари тегирмоннинг икки тоши орасида қолиши мумкин.

Қутуз Аккога вафд йўллади.⁷⁷⁸ Вафд мусулмон ва салибийлар ўртасида муваққат (маълум муддатга) тинчлик битими тузишни ўртага ташлади. Қутузнинг таклифи яқин тарихда бошидан қонли жанглар кечириб, ҳали тўлиқ оёққа туриб улгурмаган салибийларга болдай ёкиб тушди. Яна салибийларнинг бундай қарорига сабаб, мусулмонлар ғолиб бўлса уларнинг устига юриш қилиш эҳтимолидан қўрққанликлари эди. Шунинг учун тинчлик битимини иккиланмай қабул қилдилар. Ҳатто уларнинг баъзилари мўғулларга қарши мусулмонлар билан иттифок бўлиш таклифини ҳам билдирдилар. Салибчиларнинг жанг майдонида хиёнат қилиши мумкинлигидан андиша қилган Қутуз бу таклифни қабул қилмади.⁷⁷⁹

«Ҳар қачон бирон аҳдга аҳдлашсалар, улардан бир гуруҳи бузаверадими? Ҳақиқатан, уларнинг кўпи иймонсизлардир».⁷⁸⁰

«Улар бирон мўмин хусусида на аҳдга ва на бурчга боқадилар. Улар тажовузкор кимсалардир».⁷⁸¹

Қутуз Акко амирлиги билан маваққат аҳд тузди, уларга мўғуллар билан уруш асносида мусулмон лашкар таъминоти ва озик-овқатини етказиб туриш вазифаси юкланди. Улар буни қабул қилишди.

Шу тариқа Фаластин сари йўл беҳавотир бўлиб, Қутуз навбатдаги қадамни босишга ҳозирлик кўра бошлади.

⁷⁷⁶ Бу ҳисоб ҳижрий санада ҳисобланган.

⁷⁷⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (292–294-бет).

⁷⁷⁸ Ғомидий «Жиҳадул мамалик» (108-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (295-бет).

⁷⁷⁹ Ғомидий «Жиҳадул мамалик» (108-бет).

⁷⁸⁰ Бақара: 100.

⁷⁸¹ Тавба: 10.

Мусулмон аскарнинг покланиши

Қутузнинг ҳар турли: моддий, дипломатик, маънавий ва иқтисодий тайёргарликларига қарамай, баъзи иймони заиф мусулмонлар ҳақиқатда жанг бўлишига кўзлари етмади. Улар жисмонан кучга эга бўлсада, маънавияти заиф кимсалар эди. Улар бу шунчаки ҳиссиётга берилиш, Қутузга халқнинг қўйнига пуч ёнғоқ тўлдирадиганларнинг бири, деб баҳо бердилар. Жанг вақти-соати яқинлашган сари бу тоифа номард мунофиқларнинг жонлари бўғизларига кела бошлади. Бир тоифа яширин, бошқа бир тоифа ошқора халқ сафидан суғурилиб чиқа бошладилар. Бошқа шаҳарларга кўчдилар. Улар орасида Ҳижозга, Яманга, ҳатто Мағрибга етиб олганлари бўлди.⁷⁸²

Баъзи таҳлилчилар бу ҳодисани катта йўқотиш деб ҳисобласада, биз буни ютуқ деб биламиз. Сафимизда бизни ғоямиздан чалғитган кўпчилигимиздан, бирликда жон беришга тайёр бўлган озчилигимиз яхши!

«Агар улар сизларнинг орангизда чикқанларида ҳам, сизларга фақат ортиқча зиён бўлган ва ўрталарингизда сизларни фитнага солиш учун югуриб-елиб юрган бўлур эдилар ҳамда ораларингизда уларга қулоқ солувчилар ҳам (топилган) бўлур эди. Оллоҳ золим кимсаларни билгувчидир».⁷⁸³

Бу оятда Оллоҳ таоло бизга бундай тоифа инсонларни гўзал бир суратда баён қилиб берди. Шу тариқа Миср армияси яна бир сира сараланди.

Мусулмон армия Қоҳира атрофидаги машғулот жойларини тарк қилиб, бир жойга йиғила бошлади.⁷⁸⁴ Мусулмон лашкар тўплангандан сўнг Қутуз кўзғалишга, яъни шарққа — Фаластин тарафга қараб юришга ишора қилди.

Миср лашкарининг Ғазога отланиши

Миср лашкари бир жойга жамланди, сўнгра Фаластин сари одимлай бошлади. Бу ходиса 658 йил шаъбон ойининг бошлари/1260 йил

⁷⁸² Сиржоний «Қиссатут-татар» (297–298-бет).

⁷⁸³ Тавба: 47.

⁷⁸⁴ Баъзи ривоятларда Миср ҳарбий лагерларидан 40 минг аскар жамланлиги зикр қилинади. Ғомидий «Жихадул мамалик» (107-бет), Ибн Йёс «Бадаиъуз-зуҳур» (1-жилд, 1-қисм, 305-бет).

июлнинг ўрталарига тўғри келган, яъни бу йўлчилик ёзнинг жазирама иссиқ кунларида Синонинг қурғоқ саҳроси орқали бўлган эди.⁷⁸⁵

Мусулмон лашкар шимоли-шарққа Сино томонга, сўнгра Синонинг шимоли бўйлаб Ўртаер денгизи соҳили қаршисидан Ғазоғача саҳро узра йўл юришди.

«Парвардигоро, биз Сендан бу сафаримизда яхшилик ва тақвони, амаллардан эса Ўзинг рози бўладиганини насиб этишингни сўраймиз!

Парвардигоро, бизларга бу сафаримизни енгил, узоқлигини яқин қилгин!

Парвардигоро, Сен сафаримизда йўлдош, аҳлимизда эса халифасан!

Парвардигоро, бизни сафар машаққатларидан, сафарда қайғули кўнгилсиз ҳодисалар содир бўлишидан ва молу аҳлимизга зиён захмат этишидан ўзинг асрагин».

Йўл ўта машаққатли эди. Мусулмон жангчилар сабрла Табук ғазотини ёдга олдилар. Ҳақиқатан бу ғазот айни Табук ғазотидаги кийинчиликларни хотирлатарди. Табук ғазоти ҳам жазирама иссиқ кунларда, Мадинада иқтисодий танглик замонида, узун саҳро орқали бўлган сафар ва ўша замондаги энг қувватли Рум давлатига қарши бўлган жанг эди. Бу сафарги жангда ҳам мусулмонлар худди шундай жазирама кунларда, саҳро орқали юриш, иқтисодий танглик дамлари ҳамда Ер қуррасидаги маҳобатли ва бақувват Мўғул давлатига қарши бораётган эди. Тарих такрорланмоқда, фақат Табук кунда мусулмонлар Рум лашкарини топмаган ва жанг содир бўлмаган эди. Аммо бу ғазотда...

Қутуз мусулмон лашкарнинг сафларини тартиблашга киришди. Мусулмон лашкар мўғул қўшинидан бир бўлагига дуч келса ҳам жанг қилишга тайёр турарди. Қутуз лашкарнинг бошига етук кўмондон Рукниддин Бейбарсни тайин қилди. Уни лашкарнинг олдинги сафларига қўйилишидан мақсад биринчи зарбада мўғулларни ер тишлатиш эди. Мўғулларнинг оз қисмини бўлсада, биринчи зарбада енгилиши мусулмон лашкарнинг руҳиятини кўтарарди. Қутуз қўшиннинг олдинги сафига энг кучли жангчилар гуруҳини қўйиш билан бирга, бу гуруҳни лашкардан ажратди ва уни анча олдинда юришига амр қилди. Бу эса мўғул разветкачиларининг кўзини шамғалат қилиш учун қилинган эди, тоинки мўғуллар бу гуруҳни кўриб, мусулмон лашкари шу экан деб, шунга яраша ҳаракат қилган вақтда орқадаги асосий қўшин қакшатқич

⁷⁸⁵ Сиржоний «Қиссатут-татар» (298–299-бет), Аҳмад Абдулкарим Сулаймон «ал-Мўғул вал-мамолийк» (62–63-бет).

зарбани бериши учун эди. Қутузнинг бу режаси мўғулларнинг хаёлига хам келмади.

ҒАЗО ЖАНГИ

Рукниддин Бейбарс 658 йил 8 шаъбон/1260 йил 26 июл куни Миср хуудларидан ошиб, Фаластин ерларига кирди.⁷⁸⁶ Мусулмон лашкарининг асосий қисми йўлда эди. Бейбарс Фаластин ерларига кириши билан Ғазодан 30 км жанубда жойлашган Рафаҳ, сўнгра унинг шимолида жойлашган Хон-Юнус ва Дайр ал-Балаҳдан ўтиб, Ғазога яқинлашиб қолди. Шундагина мўғуллар Рукниддин Бейбарснинг лашкарини кўришди. Кутуз гумон қилганидай улар мусулмон лашкарининг бори шу деб тахмин қилдилар шекилли, Ғазодаги мўғул лашкари бошқа шаҳарлардаги мўғуллардан мадад ҳам сўрамай уларни қарши олишга киришди. Ғазода мусулмон лашкари билан Байдер бошлиқ мўғул кўшини ўртасида тўқнашув содир бўлди.⁷⁸⁷ Маълумингизки, мусулмон лашкарининг муқаддимаси анча кучли эди, Ғазодаги мўғул гуруҳи эса унга нисбатан кучсиз эди. Мўғул кўмондони Китбуга ва асосий мўғул лашкари эса бироз олисда — марказий ҳарбий лагерда, яъни Ғазодан 300 км узоқда Ливан ерларида жойлашган Бақоъ водийси — Баалбекда⁷⁸⁸ эди.⁷⁸⁹ Барча шарт-шароитлар мусулмонлар фойдасига хизмат қилаётган, кичик бўлсада, ғалаба нишонлари кўринаётган эди. Воқеда ҳам Рукниддин Бейбарс бошлиқ кўшин Ғазодаги мўғуллар устидан ғалаба қозонди, улар мўғулларнинг бир қисмини ўлдирди, қолганлари шимолга қочиб қолишди.⁷⁹⁰

Шимолга қочганлари Китбуганинг ёнига етиб бориб, Ғазодаги аянчли мағлубиятлари ва мусулмон лашкарининг шимол тарафга қараб келаётгани хабарини беришди.

Мўғул армияси эсанкираб қолди ва енгилди. Уларни нима эсанкиратди?! Уларни тасодифий ҳужум ёки пухта ҳарбий режа доводиратмади, балки уларга мусулмонларнинг жон-жаҳдлари билан, ортга қайтмай жанг қилишлари янгилик бўлганди.

⁷⁸⁶ Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 313-бет), Ғомидий «Жихадул мамалик» (121-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (299-бет).

⁷⁸⁷ Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 313-бет)/ «Сборник летописей» (3/52), Ғомидий «Жихадул мамалик» (121-бет).

⁷⁸⁸ БААЛБЕК (араб. Баълабакка) — Ливандаги шаҳар, Антиливан тоғи этагида. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («Б» ҳарфи бўлими).

⁷⁸⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/401), Ғомидий «Жихадул мамалик» (122-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (301-бет).

⁷⁹⁰ Рашидуддин «Жомиъут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 313-бет)/ «Сборник летописей» (3/52), Макризий «ас-Сулуқ» (1/516-бет).

Мусулмонлар динлари, ватанлари, шарафлари ва номусларини сақлаш учун кураш бошлаган эди. Мўғуллар йилларча мусулмонларнинг кўркиб қочишларига гувоҳ бўлиб келар, мусулмон бошлиқларидан доимо куллуқ ва мулозаматни топар эди. Ҳа! Уммат заифлашиши мумкин, бироқ ўлмайди, улардан кимлардир ғанимларга куллуқ қилса, бошқалари Оллоҳнинг амри келгунга қадар динни ва умматни ҳимоя қилиб борадилар.

«Саҳиҳайн»да ривоят қилинган ҳадисда Расулulloҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам айтганлар: «*Умматимнинг бир тоифаси ҳақ узра зоҳир бўлиб қолаверади, то қиёмат уларга қарши чиққанлар ҳам, ёрдамсиз қўйганлар ҳам, уларга ёрдам беришида ёки улар билан бирга туришида қосирлик қилганлар ҳам зарар етказолмайди*».

«Улар қаердалар, ё Расулаллоҳ?» — деб сўралганда, «Улар Шомда», деб жавоб берганлар.⁷⁹¹

Имом Аҳмад Абу Умома разияллоҳу анҳудан ривоят қилган ҳадисда, «Улар қаердалар, ё Расулаллоҳ?» — деб сўралганда,

«Улар Байтул-Мақдисда ва Байтул-Мақдиснинг атрофида», деганлар.⁷⁹² Байтул-Мақдис Фаластинда, унинг атрофи эса Фаластин ва Шом ерларидир.

Фаластин — ғалабалар диёри

Ғазо ва Айн-Жалут жанглари Байтул-Мақдис ва Фаластин халқига бошқа жанглардан кўп ҳам фарқ этмасди. Оллоҳ таоло Фаластин ерларини мусулмонлар учун буюк ғалабалар макони қилгандир, буни тарихга шунчаки назар солган киши ҳам кўра олади. Тўғри, бу жойларда ҳам энгилиш ва мағлубиятлар рўй берган, лекин бу ерларда мусулмонлар кийинчиликка дуч келган замонларда буюк ғалабалар юз берган.

Мусулмонлар Фаластин ва Шом ерлари: Ажнадин, Бейт-Шеан ва Ярмукда Рум императорлигига қарши; Ҳиттин, Табария ва Байтул-Мақдисда салибчиларга қарши; Ғазо, Айн-Жалут ва Бейт-Шеанда мўғулларга қарши қаттиқ ва аччиқ жанглар олиб борди. Бундан сўнг мусулмонлар Акко, Асқалон, Ҳайфа ва бошқаларда салибчиларга қарши; Аккода французларга қарши; турли даврларда ва хоссатан 1936 йилда 4 йил давомида инглизларга қарши жанглар олиб борди. Шунингдек, бу ерларда яҳудийларга қарши жанглар давом этмоқда, Оллоҳнинг изни

⁷⁹¹ Бухорий ва Муслим ривояти.

⁷⁹² Аҳмад ривояти.

билан яхудийларнинг ҳалокати бу муборак ерларда юз беради. Бу орзу ёки тахмин эмас, балки набавий башоратдир, имом Бухорий ва Муслим Абу Ҳурайра разияллоху анхудан ривоят қилган ҳадисда Пайғамбар соллаллоху алайҳи ва саллам шундай деганлар:

*«То мусулмонлар яхудийларга қарши урушмагунларича қиёмат қоим бўлмайди. Шунда мусулмонлар уларни ўлдирадидлар. Яхудийлар ҳатто тош ва дарахт ортига яшириниб олишади. Шунда тош ва дарахт: «Эй мусулмон, эй Оллоҳнинг бандаси, ортимда яхудий бор, кел, уни ўлдир», дейди. Фақат гарқад (ундай демайди), чунки у яхудларнинг дарахтларидан».*⁷⁹³

Ғазо ғалабасининг аҳамияти

Мусулмонлар Ғазода мўғуллар устидан нусратга эришдилар, гарчи бу ғалаба жузъий бўлсада, муҳим аҳамият касб қиларди. Баъзи тарихчилар Ғазо жангини кўп ҳам эътиборга олмаса, баъзилари мутлақо аҳамият бермайдилар! Ҳолбуки, бу жанг мусулмонлар тарихидаги энг муҳим маъракалардандир.⁷⁹⁴ Унинг аҳамияти кўп сондаги мўғулларнинг қатл қилингани, Ғазонинг муҳим стратегик жойлиги ва бошқа ҳарбий масалалар жиҳатидан эмас. Унинг аҳамияти мусулмонлардаги рухий тушкунликнинг бартараф бўлганидадир. Мусулмонлар «ЕНГИЛМАС» деб ном олган мўғулларнинг тумтарақай қочишларига кўзлари билан гувоҳ бўлдилар. Мусулмонларнинг руҳияти бағоят кўтарилди, «кимнингдир мўғуллар енгилибди, дегани кулоғингга чалиниб қолса, ишонма!» каби эл оғзида дoston бўлган чўпчаклар бекорга чикди. Ўз ўрнида бу воқеа узоқ йиллардан бери мағлубият кўрмаган мўғул армиясига салбий таъсир қилди. Зоҳиран тор доирадаги ушбу устунлик буюк маънавият ғалабаси эди.

Мусулмонлар билан Акко салибчилари орасидаги сулҳ

Мусулмонлар Ғазодаги ғалабадан кейин шимол тарафга Ўртаер денгизи бўйлаб йўналди. Қутуз ўз лашкари билан Ислом шахарларидан бирин-кетин ўтиб борар эди. Улар Асқалондан, сўнгра Яфа⁷⁹⁵дан ўтиб, шимолга юришни давом эттирди. Тулкарм шахрининг ғарбидан ўтиб, Ҳайфа шахрига етиб келишди. У ердан салиб амирлиги қўл остидаги Акко шахрига йўл олишди.

⁷⁹³ Бухорий: 6/75, Муслим: 2922.

⁷⁹⁴ Гомидий «Жихадул мамалик» (121-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (303-бет).

⁷⁹⁵ Ёки Яффа.

Қутуз Акконинг ташқарисида Акко кўрғонига лагер курди. У салибийларни илгариги тинчлик аҳдларида турган ёки турмаганини билишни истади. Шу боис мусулмон амирлардан иборат вафдни Аккога йўллади. Қутуз ва Акко салиб амирлари ўртасида элчилар воситасида мулоқот бошланди. Салибийлар мусулмон амирларни чиройли қаршилаб олишди ва икки тараф ҳам илгариги аҳдларида содиқликларини таъкидлашди. Зиёратлар бир неча бор такрорланди. Ҳатто иккала тараф ҳам вазият барқарор эканидан хотиржам бўлдилар. Сўнгра Қутуз мўғулларни қаршилаш мумкин бўлган муносиб жой танлаб, йўлга чиқишга қарор қилди.⁷⁹⁶

Қутуз Акко минтақасини тарқ қилишга шайланган замон вафд сафида бўлган мусулмон амирлардан бири Акко амирлигининг ўта заиф ҳолатда экани ва улар мусулмонларнинг аҳдларидан хотиржамлиги ҳамда жангга тайёргарлиги йўқлиги, агар уларга тўсатдан ҳужум қилинса, мусулмон ўлкани насронийлардан озод қилиш мумкинлигини сўзлади. Бу мусулмон шахар 166 йил олдин босиб олинган эди. Ўша амир Қутузга:

— Бу мустамлака шахарни озод қилиш фурсати, — деди. Қутуз унга жавобан:

— Биз аҳдларга хиёнат қилмаймиз! — деди.⁷⁹⁷

Ҳа, Қутуз ҳақиқий нусрат сабабларини топган эди. Оллоҳнинг шариатига эргashiш, аҳдларга вафо қилиш шу сабаблар жумласидандир. Аҳдларга риоя қилиш шариатимиз асосларидандир.

«Эй мўминлар, ақдларга (ўзаро келишган битимларга) вафо қилингиз!»⁷⁹⁸

Имом Термизий ва Абу Довуд раҳимаҳумаллоҳ Амр ибн Абаса разияллоҳу анҳудан ривоят қилади, у киши деди: «Мен Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламнинг шундай деганларини эшитганман: *«Кимнинг бошқа бир қавм билан аҳдномаси бўлса, у ниҳоясига етгунигача ёки у қавм аҳдни бузганини билмагунича аҳдномани бузмасин!»*⁷⁹⁹

⁷⁹⁶ Фомидий «Жихадул мамалик» (121–122-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (304-бет).

⁷⁹⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (305-бет).

⁷⁹⁸ Моида: 1.

⁷⁹⁹ «Сунан Аби Довуд» (2397; 2/528), «Сунан ат-Термизий»: (1285; 2/113–114).

АЙН-ЖАЛУТ ЖАНГИ

Китбуганинг мусулмонлар қаршисидаги аҳволи

Қутуз Аккони ортда колдириб, олдиндаги жанг учун муносиб жой кўзлаб жануби-шарққа томон йўл олди. Айни вақтда лашкарбоши Китбугага Ғазодаги мағлубият хабари етиб келди. У бу машъум хабарни эшитиб, қаттиқ ғазабнок бўлди. Бу минтақада мўғулларнинг илк бор енгилиши эди. У дарҳол қўшин ҳозирлаб, жанубга — Фаластин сари йўлга отланди. У турган жой, яъни Бақоъ водийси билан Фаластиннинг шимоли, яъни Ливан-Фаластин чегараси орасидаги масофа 100 км атрофида эди. Одатда бу масофани лашкар икки ёки уч кунда босиб ўтарди. Бироқ Китбуга бу масофани бир ойдан ортиқроқ муддатда босиб ўтди. Фаластин ерларида жангга отланган рижолларни эшитиб, қалбига кўрқув кирган, у ерларга боришга юраги бетламай қадами оғирлашган эди унинг. Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам: *«Бир ойлик масофадан (душманларим қалбига тушажак) кўрқув билан нусратландим»*⁸⁰⁰, деб хабар берганлар. Бу кўрқувни Оллоҳ ўз душманларининг қалбига жо қилгандир, **«Мен кофир бўлган кимсаларнинг дилларига кўрқув солажакман. Бас, уларнинг бўйинларини узинглар, бутун-ҳамма бармоқларини чопинглар»**, деб ваҳий қилган эди».⁸⁰¹

«(Илоҳлигига) ҳеч қандай ҳужжат-далил келмаган нарсани (яъни, жонсиз бутларни) Оллоҳга шерик қилганлари сабабли кофирларнинг дилларига кўрқув солажакмиз».⁸⁰²

Оллоҳ таоло беҳисоб лашкар қалбига Оллоҳ йўлида жиҳод қилувчи мусулмон аскарни қаршиларида кўргани замон кўрқувни туширади. Бу мусулмонлар билан кофирлар ўртасидаги барча жангларда кузатилган ва бундан кейин ҳам кузатиладиган ўзгармас ҳақиқатдир.

Китбуга Ливан тоғлари бўйлаб юриб, Фаластинга унинг шимоли-шарқидан ва Голан тепалигининг ғарбидан кирди. Сўнгра Иордан дарёсини кесиб ўтиб, шарқий Галилея⁸⁰³ минтақасига кирди. У бу минтақага Ғазодаги ходисадан хабар топганидан бир ой ўтгандан кейин

⁸⁰⁰ Бухорий: 2977.

⁸⁰¹ Анфол: 12.

⁸⁰² Оли Имрон: 151.

⁸⁰³ ГАЛИЛЕЯ (юн. Galilaia, қад. яҳудийча Галил — вилоят) — Шим. Фаластиндаги тарихий вилоят. Дастлабки аҳолиси хурритлар ва хананейлар бўлган. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («Г» харфи бўлими).

етиб келган эди. Мўғулларнинг бу минтақага етиб келганидан хабар топган мусулмон разведкачилар бу ҳақда Қутузга хабар бердилар.⁸⁰⁴

Мусулмон аскарнинг Айн-Жалут сари йўналиши

Қутуз Носира шаҳридан ўтиб, жануби-шарққа то Айн-Жалут водийси деб аталган минтақага тезроқ етиб олишга ҳаракат қилди.⁸⁰⁵ Айн-Жалут водийси тахминан икки шаҳар: жанубдан Набулус, шимолдан Бейт-Шеан шаҳарларининг ўртасида жойлашган минтақа бўлиб, ҳозирги кундаги Жанин минтақасига жуда яқин жойдир.

Жанин минтақасида бундан бир неча асрлардан кейин Фаластин мужоҳидлари билан яҳудийлар ўртасида катта жанг рўй бериб, унда мусулмонлар ғоят матонатла сабр қилдилар ва 500 дан ортиқ шахид бердилар.

Бу водийнинг ўрни беназир бўлиб, Ҳиттин минтақасидан 65 км жанубда жойлашган. Маълумингизки, бу минтақада 583/1187 йилда, яъни бундан 75 йил олдин улуғ Ҳиттин жанги юз берган эди. Шунингдек, Айн-Жалут водийси бундан 6 аср олдин буюк баҳодирлар Холид ибн Валид ва Абу Убайда ибн Жарроҳ разияллоху анхумолар бошчилик қилган улуғ Ярмук жанги содир бўлган Ярмук минтақасидан 60 км ғарбда жойлашгандир.

Қутуз Айн-Жалут водийсини жанг учун энг қулай ва муносиб макон деб билди. Зеро, бу водий ясси майдон бўлиб, тахминан ҳамма томондан ўрта баландликдаги адирлар билан ўралган, фақат шимолий томонигина очик эди. Яъни худди тақасимон кўринишда бўлиб, атрофдаги адирлар бута ва дарахтлардан иборат чакалакзор эди. Бу эса мусулмон лашкарни чакалакзорга яшириш ва катта-катта пистирмалар қўйиш ҳамда водийнинг ўртасида мўғул лашкарини қуршаб олиш имкони берар эди.⁸⁰⁶

Китбуга келмасдан бурун Қутуз бу водийга етиб келди ва мусулмон аскарни тартиблади. Водийнинг очик томони, яъни шимолий қисмига Рукниддин Бейбарс бошчилигидаги энг кучли гуруҳни жойлаштирди. Қутуз бутун аскарни водийнинг шарқ, ғарб ва жануб томонидаги чакалакзорларга беркитди. У лашкарни 658 йил 24 рамазон/1260 йил 9 сентябр пайшанба куни тартиблаб бўлди. Маълумингизки, Бадр жанги, Макка ва Андалус фатҳлари рамазон ойига тўғри келган эди.

⁸⁰⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (306-бет).

⁸⁰⁵ Гомидий «Жихадул мамалик» (122-бет).

⁸⁰⁶ Сиржоний «Қиссатут-татар» (307-бет).

24 рамазон кечаси, Ислом уммати ҳарбий кучлари билан Мўғул ҳарбий кучлари ўртасида дахшатли кураш юз беришига санокли соатларгина қолган. Китбуганинг лашкари манманлик, ғурур ва мутакаббирлик билан мусулмонлар томон келарди.

«Дарҳақиқат, улар ўзларига бино қўйдилар ва жуда катта кетдилар».⁸⁰⁷

Мўғул лашкари Бейт-Шеаннинг ғарбидан ўтиб, жанубга — уларни интиқлик билан кутиб, сафларини тартиблаб турган мусулмон аскарари тарафга, яъни Айн-Жалутга йўналди.

Қутуз Айн-Жалут водийсида турган дамда Фаластин халқидан шаҳар ва қишлоқлардан мусулмонларнинг катта гуруҳи аскарлар сафига келиб қўшилди. Яқинда ҳақиқий жанг бўлишига ишончлари комил эди. Бу ихтиёрий кўнгилли жангчилар мўғулларнинг бир гуруҳи Фаластинга келиб, унинг шимолидан жанубига қараб тўлиқ эгаллаган ва ниҳоят Ғазони ҳам босиб олган кезларда қаерда эдилар? Бундан олдин улар қаерда ўтирган эдилар? Ҳозир қаердан чиқиб келдилар? Яқин тарихда мухлис бошлиқлари бўлмаган бу халқ бир томондан Қутуздай мухлис бошлиқдан таъсирланса, иккинчи томондан эса, юқорида зикр қилганимиз маънавий ғалабадан илҳомланарди. Бундан олдин Ислом кадрилини олий қилишни истаган содиқ мўминларнинг аксарияти эргашишга салоҳиятли, ўрнак бўлишга лойиқ, мухлис йўлбошчи йўқлиги боис қўл қовуштириб ўтиришдан бошқа чора топмаганди.

Тўғри, улар мунтазам армия каби кучли ва маҳоратли бўлмасаларда, лекин Оллоҳ йўлида бирор-бир амал қилиб қолишга муштоқ эдилар. Бу иштиёқ жанг майдонида катта рол ўйнаши табиий ҳолдир. Қутуз улардан қурол-яроқ ташиш ва аскарларга хизмат ишларида фойдаланди. Шу билан бирга улар мусулмонларнинг қорасини кўпайтирар, бу эса ўз навбатида кофирлар қалбига қўрқув соларди. Ўшанда касаллиги, ожизлиги ёки қариллиги сабаб жанг ҳам, хизмат ҳам қилолмайдиган ожизлар, аёллар ва болалар қишлоқлардан Айн-Жалут водийси сари чиқиб келишган эди. Улар водийнинг атрофига тўпланиб, баралла баланд овозда такбир айтиб, мусулмон лашкарининг ҳаққига дуолар қилишарди. Қўллар, тиллар ва қалблар дуо билан банд, улар Исломга ва мусулмонларга нусрат сўраб, ширк ва мушрикларни хор бўлишини тилаб, оламлар Рабби субҳонаҳу ва таолога илтижо қилишар эди.⁸⁰⁸

⁸⁰⁷ Фурқон: 21.

⁸⁰⁸ Ғомидий «Ҷихадул мамалик» (122-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (311-бет).

Бу ҳодисалар 658 йил 24 рамазон/1260 йил 9 сентябр пайшанба куни катта жанг олдидан юз берган эди.

Мўғуллар сафидаги Оллоҳнинг қўшини

Яна шу куннинг ўзида, яъни жангдан бир кун олдин ғаройиб ҳодиса юз берди. Бу Оллоҳ таолонинг ишидир. Мусулмон аскар Айн-Жалут водийсида турган замон Шом аҳлидан бир киши Қутуз ва унинг амирлари билан зудлик билан кўришмоқчи эканини билдирди. У ўзининг Соримуддин Ойбекнинг элчиси эканини сўзлади. Соримуддин Ҳулагу Шом ерларини босиб олганда асир тушган мусулмонлардан бири бўлиб, кейинчалик у мўғул лашкари сафида хизмат қилишни қабул қилган эди. Соримуддин мўғуллар сафида кўпгина жангларда иштирок этган ва ҳозир улар билан бирга Айн-Жалутга келаётган эди. Нафсига эргашиб мўғулларга ёрдам беришни қабул қилганми ёки пайтини пойлаб мусулмонларга ёрдам беришни қасд қилиб мажбурликдан уларнинг сафига қўшилганми, буниси Яратганга маълум. Бу у билан Оллоҳ таоло орасидаги сирдир. Бизга маълум бўлгани — Айн-Жалут жангидан олдин кўлидан келгунича мусулмонларга ёрдам беришга қарор берган эди.

«Парвардигорингизнинг қўшинларини ёлғиз Унинг Ўзигина билур».⁸⁰⁹

Соримуддин Ойбекни Қутуз ҳам, мусулмон амирлар ҳам танимас эдилар. Унинг мусулмонларга улкан хизматлар қилиши ва улар ўйламаган тарафдан нусратнинг келиши Оллоҳ таолонинг тадбири эди. Бундан олдин Аҳзоб ғазотида нусрат сабабчиси Нуъайм ибн Масъуд каби Соримуддин Ойбекни бу ўринга келтирган Оллоҳ барча айбунуксонлардан пок Зотдир.

«Парвардигорингизнинг қўшинларини ёлғиз Унинг Ўзигина билур».⁸¹⁰

Бу элчи учта маълумот билан келган эди:

➤ Мўғул лашкари ҳар доимгидек қувватли эмас. Мўғул хони Мангухон ўлиmidан кейин Ҳулагу бир қисм қўшинни ўзи билан олиб Табризга кетган ва айна вақтда мусулмонлар қаршисидаги мўғул лашкари Шомга бостириб кирган аввалги ҳолатидан оз. Бу хабар жуда муҳим бўлиб, мўғул қўшини Шомга кирган ҳолатидан кам бўлса,

⁸⁰⁹ Муддассир: 31.

⁸¹⁰ Муддассир: 31.

уларнинг устидан ғалабага эришса бўлади, деб мусулмонлар руҳан тетиклашди.

➤ Мўғул лашкарининг ўнг қаноти чап қанотига нисбатан қувватлидир. Бунга кўра мусулмонлар чап қанотни кучайтириши лозим эди. Бу ҳарбий маълумот ҳам ғоят муҳим.

➤ Мўғуллар сафида Ҳимс амири Ашроф Айюбий ҳам бор. Бироқ у мўғулларга ёрдам бераётгандай кўриниш берса ҳам, аслида эса жангда мусулмонларга енгилиб беради.⁸¹¹

Бу ўринга мусулмон аскарнинг ҳарбий таҳлилчилари ҳам жамланган эди. Улар бу хабарларнинг барчаси мўғулларнинг ҳийласи бўлишидан кўрқиб, бу мўғулларнинг навбатдаги найранги, улар бизни бу хабарларга алданиб, керакли тадбирни олмаслигимизни мақсад қилган, шундай экан огоҳлигимизни кўрайлик дедилар. Лекин амалда эса, бу маълумотларни ростдай эътибор қилиб, сафларни шунга кўра тартибладилар. Кейин Соримуддиннинг гаплари мутлақо рост экани маълум бўлди.

Хижрий 658 йил 25 рамазон куни воқеалари

Рамазоннинг 24 куни ниҳоясига етди, аксар мусулмонлар кечани намоз, дуо, илтижо, умид билан бедор ўтказдилар. Бу кеча шу йилнинг энг улуғ кечаларидан эди. Чунки аввало бу кеча охириги ўн кунликнинг тоқ кечаси бўлса, иккинчидан Оллоҳ йўлидаги жиҳоддан олдинги рибот кечаси эди. Тонг отганда ваҳший мўғуллардан миллионлаб мусулмонлар қасоси олинажак. Оллоҳдан жанг майдонида собитқадамлардан айлашини сўраймиз!

Субҳ яқинлашди. Бомдод вақти ҳам кирди, мусулмонлар тонг намозини хушў билан адо этдилар, сўнгра сафларини тартиблай бошладилар. Тонг отди, қуёш ҳам ҳаялламасдан ҳар кунги ўзининг топшириғини бажариб, борлиққа нуруни таратар эди. Бу кун осмонда ҳам, Ер юзида ҳам байрам бўлган жума куни эди, шу билан бирга мусулмонлар учун буюк нусратга эришажаклари сабаб янада улуғ байрам бўлади.

658 йил 25 рамазон/1260 йил 10 сентябр жума куни Ислом тарихида мутлақо улуғ кун бўлгани учун барча мусулмонлар бу санани ёдларида сақлашлари лозимдир.

⁸¹¹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (312, 313-бет), Аҳмад Абдулкарим Сулаймон «ал-Мўғул вал-мамолийк» (65–66-бет).

Қуёш чикиб, оламни ёритганида узокдан водийнинг шимол тарафида мўғул лашкарининг қораси кўрина бошлади. Бутун оламга қиргин келтирган ваҳший мўғул лашкари водийга жуда яқин келди, водийнинг шимол томони остонасида улкан ва маҳобатли мўғул лашкари тўхтади. Водийда бирор тирик жон кўринмасди. Барча мусулмонлар, ҳатто Рукниддин Бейбарс бошлиқ лашкар муқаддимаси ҳам бу тонгда тепаликлар ортига беркинган эдилар.

Мусулмон аскар муқаддимасининг Айн-Жалутга тушиши

Мусулмон аскар Қутуз тайин қилганидек, унинг ишорасидан кейин Айн-Жалут водийсига, мўғуллар қаршисига туша бошлади. Соримуддин Ойбек жанг майдонида мўғул кўмондони насроний Китбуганинг ёнида турарди. У мусулмон аскар муқаддимасининг жанг майдонига кириб келишини шундай васфлайди: «Тонг отиши билан мусулмон лашкар кўрина бошлади, унинг биринчи гуруҳи қизил ва оқ рангли аскарий либосда эди. Мусулмонларнинг ҳар бир гуруҳи ўзига хос аскарий либосда, яъни уст-бошлари, қилич ва қалқонлари ва отлари гўзал кўринишда эди. Буни кўрган Китбуга ва унинг атрофидаги мўғул лашкари эсанкираб қолди».

«Шунда бу инкор қилувчи довдираб қолди. Оллоҳ золим кимсаларни ҳидоят қилмайди».⁸¹²

Дарҳақиқат, у мусулмон аскарни биринчи маротаба бундай кўринишда кўраётган эди. Бундан олдин у ҳамиша мусулмонларни қалъа ва кўрғонлар ортида кўрқиб, даҳшатга тушган ёки мўғулларни кўргани он ортига қарамай қочаётган ёки хор бўлиб бошларини мўғулларнинг қиличига тутиб турган ҳолатда кўравериш ўрганиб қолган эди. Аммо ҳозирчи, у довдираб қолди, чунки мусулмонларни бундай маҳобатли кўринишда кўраман деб ҳечам ўйламаган, етти ухлаб тушига ҳам кирмаган эди. Китбуганинг қалбига кўрқув тушди, у Соримуддин Ойбекдан сўради:

— Эй Сорим! Бу ранг, бу гуруҳ кимники?

Ҳақиқатан аскар беназир кўринишда эди. Соримуддин унга жавобан:

— Мамлуклар амирларидан бири — Сункар Румий гуруҳи, — деди.⁸¹³

⁸¹² Бақара: 258.

⁸¹³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (316-бет).

Мамлуклар бир-бирларидан ўзига хос ранглар билан ажралиб турарди. Ҳар бир гуруҳнинг ўз ранги бўлар, баъзиси оқ ва кизил бўлса, бошқаси кўк ва яшил, яна бошқаси янада бошқа рангда бўлар эди. Ўша ранг шу гуруҳга ишора қиларди, уларнинг Мисрдаги омборлари ва уйлари ҳам шу рангда бўларди. Бу ранглар орқали улар бир-бирларидан ажралиб турарди.⁸¹⁴

Золим, «енгилмас» мўғул қўмондонининг қалбига қўрқув солган гуруҳ ҳали мусулмон аскар муқаддимасининг ҳаммаси эмасди. Ваҳший мўғул сардори ва мўғул лашкари қалбига кирган қўрқувни фақат куйидаги ҳадис замирида шарҳлашимиз мумкин. Расулulloҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам: *«Бир ойлик масофадан (душманларим қалбига тушажак) қўрқув билан нусратландим»*⁸¹⁵, деб хабар берганлар. Зеро, нусрат фақат Оллоҳ таолонинг ҳузуридандир. Уларнинг қалбларига бу қўрқувни жо қилган зот фақат Оллоҳ субҳонаҳу ва таолодир.

Бироз замон ўтгандан сўнг иккинчи гуруҳ жанг майдонига тушди, улар сариқ рангли аскарый либосда эди. Уларнинг савлатлари ва гўзалиklarини таърифлаш қийин эди. Китбуга сесканиб кетди ва Соримуддиндан:

— Бу кимнинг гуруҳи? — деб сўради. Соримуддин:

— Бу яна бир мамлуклар амири ливанлик Рашид гуруҳи, — деди.⁸¹⁶

Сўнгра Рукниддин Бейбарсининг қолган гуруҳлари жанг майдонига тушди. Ҳар бир гуруҳ бошқача рангда эди. Ҳар бир гуруҳ жанг майдонига тушганда Китбуга Соримуддиндан сўрар, у эса ўзидан тўқиб асли бўлмаган турли номларни зикр қиларди. Бу билан у Китбуганинги мамлуклар бениҳоя кўп экан, Миср, Шом ва бошқа жойдаги мамлуклар қуввати жамланибди, деб ўйлашини ва охир-оқибат, унинг қалбига қўрқув солишни қасд қилган эди.⁸¹⁷

Довулчилар гуруҳининг жанг майдонидаги ўрни

Рукниддин Бейбарс бошчилигидаги лашкар муқаддимаси жанг майдонига кириб бўлгандан сўнг навбат ҳарбий навога келди.

⁸¹⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (317-бет).

⁸¹⁵ Бухорий: 2977.

⁸¹⁶ Сиржоний «Қиссатут-татар» (317-бет).

⁸¹⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (318-бет).

Довулчилар довул⁸¹⁸ ларини урар, бурғучилар бурғу⁸¹⁹ ларини чалар, мискайроқлар жаранги ўзига хос маҳобатли наво ҳосил қилар эди. Бу Айн-Жалут жангида ўзгача аҳамият касб этди. Ҳар бир оҳанг алоҳида маъно касб қилар ва аскар шунга кўра бошқарилар эди. Душман эса бундан ғафлатда...

Маълум оҳангдаги зарба уришлари лашкарнинг чап қаноти учун, бошқаси ўнг қаноти учун, яна бири жойларни ўзгартириш учун бўлса, яна бири ҳужум ва яна бири ортга чекиниш маъноларини билдирар эди. Яъни ҳар бир ҳарбий ҳолатнинг ўзига хос навоси-оҳанги бўлиб, мусулмон лашкар кўмондони Қутуз масофадан туриб шу зайлда лашкарни бошқариб турарди. Шу билан бирга лашкар ҳам бошлиқларини ўзлари билан эканини ва ҳар бир ҳолатни кузатиб турганини ҳис қилиб турар эди. Бу нағмалар: довул зарбалари, бурғу овози, мискайроқларнинг жаранглаши мусулмонларни дадиллаштирган айни замонда душманнинг қалбини титратар ва унга кўркув солар эди.⁸²⁰

Амир Рукниддин Бейбарс ўз аскарлари билан водий остонасига келиб тўхтади, водийнинг орқа томонида бирор тирик жон қолмаган, мусулмон аскарнинг қолган асосий қисми дарахтзор, бутазор ва тепаликлар ортида пистирмада эдилар. Жанг майдонида фақат Рукниддиннинг гуруҳигина турарди. Саркарда Китбугага Ғазо жангидан етиб келган маълумотлар ҳам фақат шу гуруҳ ҳақида бўлгани сабаб, у мусулмон аскарнинг бори шу бўлса керак, деб ўйлади.

Лекин минг афсус, мўғуллар киссасини ривоят қилган манбалар Айн-Жалут жангида иштирок этган мусулмон лашкарининг ҳам, мўғул лашкарининг ҳам саноғини аниқ зикр қилмаган. Ҳар иккала тараф ҳам улкан ададда бўлгани табиий ҳол. Бизга маълум бўлган маълумотлардан бири Арманистон ва Гуржистон ҳарбий кўшинлари мўғуллар сафида иштирок этаётганидир.⁸²¹

⁸¹⁸ ДОВУЛ, дўл — гардишининг икки томонига тери қопланган катта шаклдаги урма чолғу. Товуши учи юмалоқ таёқча ёрдамида ҳосил қилинади. Довул ўтмишда асосан ҳарбий чолғу ҳисобланган. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («Д» ҳарфи бўлими).

⁸¹⁹ Бурғу — шох, сополдан ясалган қад. пуфлама чолғу. Одамларни тўплаш, огоҳлантириш учун ишлатилган. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» («Б» ҳарфи бўлими).

⁸²⁰ Сиржоний «Қиссатут-татар» (318-бет).

⁸²¹ Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 313-бет), Аҳмад Абдулкарим Сулаймон «ал-Мўғул вал-мамолийк» (65-бет).

Айн-Жалут маъракасининг бошланиши

Мўғул кўмондони Китбуганинг назарида Ислом қуввати оз бўлиб кўрингани сабаб жанг бошланишидаёқ мусулмонларни бартараф қилиб, масалани ҳалламоқчи бўлди. Рукниддиннинг лашкари зўр кўринишда бўлиб, Китбуга ва мўғул лашкари қалбига кўрқув солсада, душманнинг сони оз деган тушунча уларга далда бўлди. Мўғул лашкари Рукниддиннинг лашкарини бир ҳамладаёқ қириб ташлаймиз, дея ҳаммалари жанг майдонига тушишди. Бу Қутузнинг режасига айна муддао бўлди.

Мўғул кўмондони Китбуга лашкарига жангга киришларига ишора қилди, улар ваҳший ҳайвонлар мисоли бор овози билан қичкирганларича мусулмонлар устига бостириб келарди. Ҳақиқатан уларнинг сони жуда кўп эди. Лекин Рукниддин Бейбарс ва унинг атрофидаги ботир риждоллар ўрниларидан кўзгалмасдан мардоновор душманга тик қараб турарди.

«(Эй мўминлар), Оллоҳ қилинадиган ишни амалга ошириш учун тўқнашган пайтингизда сизларнинг кўзингизга уларни кам қилиб кўрсатганини, уларнинг кўзларига эса сизларни оз қилиб кўйганини эслангиз! Барча ишлар Оллоҳга қайтарилур».⁸²²

Мўғул лашкари мусулмонларга яқин келганларида Рукниддин ўз кўшинига жангни бошлашларига ишора қилди. Мусулмонлар шиддат ва шиждоат билан мўғулларга ташланди. Икки тараф ўтрасида кўркинчли ва шиддатли тўқнашув юзага келди. Жанг майдонидан чанг-тўзон осмонга кўтарилди, мамлукларнинг барабанлари ва бурғулари жаранги, водий четида турган мусулмон халқнинг такбир овозлари оламни тутди. Қисқа фурсат ичида жанг майдонини инсон аъзолари, узилган бошлар, жасадлар-у, тупроққа қоришган қонлар қоплади. Ҳамма томон даҳшатга айланди, ҳавода ўйнаётган қилич, шамшир, найза, қалқондан нима бўлаётганини англаб олиш қийин эди. Улар ҳам бошқалар сингари бутун ҳаётида бу каби даҳшатга гувоҳ бўлмаган эди. Дарҳақиқат, бу жанг Ер қуррасидаги энг катта жанглардан бири бўлган бўлса, ўша кунда Мамлуклар жамоаси мусулмонлар ичида энг афзал гуруҳ бўлган эди.

Мусулмон лашкари муқаддимаси оз бўлишига қарамай, сабр қилиб, собитқадам турди ва бемисл довчилик⁸²³ кўрсатдилар. Буни кўриб турган Китбуга бирорта аскарини орқада олиб қолмасдан, барчасини жанг майдонига туширди. Ҳодисани Қутуз узоқдан кузатиб турар ва пистирмадаги асосий лашкар ҳам Қутузнинг ишорасини сабр билан

⁸²² Анфол: 44.

⁸²³ Қахрамонлик.

кутар эдилар. Дақиқа ва соатлар бамисоли кун ва ойлардек ўтарди. Мўғулларнинг силласи қурий бошлади, улар мусулмонлардаги шижоат, жасорат ва қувватни кўриб, руҳиятлари анчагина синган эди. Бу Қутуз режасининг бошланғич босқичи бўлиб, унда Рукниддин бошлиқ аскар мўғул лашкари дармонсизлангунига қадар имкон борича сабр билан собит туриши керак эди.

Ҳарбий режанинг иккинчи босқичини амалга ошириш вақти келди ва довул овози гумбурлай бошлади. Бу товушни эшитган Рукниддин Бейбрас Қутузнинг режанинг иккинчи босқичига ўтишга буйруқ қилаётганини англади. Режанинг иккинчи босқичи мўғул лашкарини водийнинг тўрига бошлаб бориш эди. Агар мўғул аскарлари водийнинг ичкарасига бошлаб кирилса, улар тўлиқ мусулмонлар қопқонига тушиб, ҳар томондан қуршаб олинар ва битта қўймай кириб ташлашга имкон туғилар эди. Рукниддин жуда қийин вазифани бажаришга киришди, у мўғуллар кўзига гўё енгилаетган ва ортга чекинаётган бўлиб кўриниши керак эди. Чекиниш бирдан амалга оширилмаслиги лозим, чунки мўғуллар пистирма борлигини пайқаб қолишлари мумкин эди. Режани амалга ошириш учун хушёрлик билан жанг асносида орқага бир маромда чекиниш керак эди. Акс ҳолда, мусулмон гуруҳ катта талофат кўриши турган гап. Бу вазифа амалга оширилиши катта маҳоратга, ундан олдин оламлар Рабби субҳонаҳу ва таолонинг тавфиқига муҳтож эди.

Ҳижрий 19 йилда Форс қувватига қарши жангда ҳам айни вазият юзага келган эди. Ўша жангда Рукниддин Бейбарснинг ўрнида саҳобий жалил Қоъқоъ ибн Амр Тамимий разияллоҳу анҳу, Музаффар Қутузнинг ўрнида эса Нуъмон ибн Муқаррин разияллоҳу анҳу эди. Қоъқоъ ибн Амр Тамимий ўша жангда баҳайбат форс қувватини мусулмонларнинг хатарли пистирмаси сари бошлаб келган ва охир-оқибат улкан форс қуввати тор-мор қилинган эди. Бу ўринда Айн-Жалут жангида Қутуз тарихдан, салаф мусулмонларнинг тажрибаларидан гўзал ибрат ва намуна олган эди.

Рукниддин Бейбарс аста-секин ортга чекинар, чекинган сари мўғул лашкари унинг ўрнини эгаллаб борарди. Мусулмонлар «мағлубият» ўйинини худди ҳақиқийдек ўйнаб бердилар. Китбуга ва мўғул лашкари борган сари мусулмонларни тўлиқ янчиб ташлаш иштиёқида водийнинг ич-ичига кириб борарди. Гўё вақт ҳам ҳодисани кузатиш илинжида ўтишдан чалғигандай чўзилиб кетди. Ва ниҳоят мўғул лашкари Айн-Жалут водийсига тўлиқ кириб бўлди. Рукниддин бошлиқ лашкар муқаддимаси водийнинг остонаси, яъни водийнинг шимолидан жанубий

жабҳасигача чекинди. Китбуга бор лашкари билан водийга кириб бўлган эди.⁸²⁴

Китбуга бундай катта ва кўпол ҳарбий хатога қандай йўл қўйди?! У жуда мохир ва малакали саркарда бўлиб, узоқ йиллардан бери жанг майдонида эди-ку! Олтмиш ёки етмиш ёшни қоралаган туллак Китбуга бундан 34 йил муқаддам ўлган Чингизхон мўғул давлатини барпо қилишида иштирок этган шахслардан бири бўлиб, шундан бери жанг майдонида эди. У Хулағунинг ишонган тоғи эди гўё.

«Ҳар йўрғанинг бир тойиши бор»⁸²⁵, деганларидек, омилкор сардор водийга киришида эҳтиётан бир гуруҳ аскар қолдирмай, катта хато қилган эди. Биринчидан, бу уруш жараёнини кузатиш, бордию мағлубият аломатлари кўринса, ортга хотиржам чекинишни таминласа, иккинчи томондан, мусулмон лашкарига ташқи ёрдам кучини водийдан тўсиш учун керак эди. Лекин ундай бўлмади. Жанг майдонида бундай нозик ва қалтис вазиятда мўғул ақли шошди. Баъзи таҳлилчилар бу ходисани Китбуга мусулмонларни буткул кириб ташлашга рағбат қилганидан шу хатога йўл қўйди десалар, яна бошқалари Китбуганинг айғокчи, разведкачилари кучсизлиги сабаб мусулмон аскарни ҳақиқий баҳолай олмаганидан, дейдилар. Баъзи таҳлилчилар Китбуганинг ҳаддан зиёд мағрур ва катта кетганидан шу аҳволга тушди, деб шарҳласалар, яна бошқа бирлари кекса саркарда Китбуганинг ақлида бошқа тактик мақсади бўлган, деб фараз қиладилар. Бироқ бу таҳлилларнинг бирортаси Китбугадай мохир саркарданинг бундай кўпол хатосини оқлай олмайди.

«Қадар келса басар кетар»⁸²⁶, деганларидек, Китбуганинг бу ҳолатга тушишини англаш учун биз мусулмон фарзандига сиёсий таҳлилчи ёки тарих мутахассисининг фикри жудаям зарур эмас. Атрофимизда бўлаётган ҳар қандай ҳаракат кимнинг қўли билан бажарилмасин, фақат ва фақат Оллоҳ таолонинг буйруғини бажараётгани айни ҳақиқат. Агар шу ҳолат юз марта такрорланса ҳам, ўша ҳолатда айни шахс, айни қарорни қабул қилишини Оллоҳ истаса, ундан бошқасини қилолмайди. Бу ўринда Оллоҳ таоло мўмин бандаларига нусрат беришни хоҳлади, шунинг учун кучли малака соҳиби, мохир саркарда Китбуганинг қалбига

⁸²⁴ Сиржоний «Қиссатут-татар» (322-бет).

⁸²⁵ Арабча мақол таржимаси. (لكل جواد كيوّة)

⁸²⁶ Арабчадан таржима. (إذا جاء القدر عمى البصر) — Оллоҳнинг тақдири келса басар-кўз кўрмай қолади.

бу ўринда унинг малакасига мутлақо номуносиб қарор қабул қилишини ўрнаштирди. Бу Оллоҳ таолонинг ишидир:

«Улар макр қилурлар, Оллоҳ ҳам «макр» қилур. Оллоҳ макр қилувчиларнинг зўридир».⁸²⁷

Буюк «Бадр жанги»ни эсланг, ҳамманинг эътирозига қарамасдан, Абу Жаҳл ўз лашкарини ҳалокат сари бошлаб бормаганмиди?! Ўшанда Абу Жаҳл қатъий туриб олганди, оқибатта ўзи билан бирга Қурайшнинг 70 зодағони, мусулмонларнинг ашаддий душманларининг бошини еган эди. Айн-Жалутда Китбуга ҳам шундай қилди.

«Эй мўминлар, агар сизлар Оллоҳга ёрдам берсангизлар, У зот ҳам сизларга ёрдам берур ва қадамларингизни собит қилур»,⁸²⁸ дея марҳамат қилган Оллоҳ таоло барча айбу нуқсонлардан покдир. Нусрат берувчи ёлғиз Оллоҳдир.

Шундай қилиб, Китбуга ўз лашкарини Айн-Жалут водийсига бошлаб кирди ва мусулмонлар режасининг иккинчи босқичи муваффақиятли амалга ошди.⁸²⁹

Режанинг учинчи бочқичи ғоят муҳим эди. Қутузнинг ишорасидан сўнг муайян маънони касб этган довул урилди, бурғулар чалинди ва мусулмон аскарнинг катта бўлаги водийнинг ҳамма томони: шарқ, ғарб ва жануб томонларидан жанг майдонига қуйилиб туша бошлади. Лашкарнинг бир гуруҳи зудликла водийнинг кириши ҳам чиқиши бўлган шимолий қисмини тўсишга шошилдилар. Шу тарика санокли дақиқалар ичида мўғул лашкари қуршаб олинди. Китбуга мусулмонларнинг пистирмасига тушганини фаҳмлади, лекин вақт ўтган эди. Дарҳақиқат, Айн-Жалут водийси қўйнида Китбуга ва мўғул лашкари тўрт тарафдан ўраб олинган эди. Қочининг ёки хийла ишлатишнинг умуман имкони йўқ. Водий теп-текис ва очиқ майдон, қилич ёки қалқоннинг ортига беркиниб химояланилмаса, бошқа жойнинг ўзи йўқ эди. Уришишдан ўзга чора йўқ! Мўғуллар бор кучлари ва малакаларини ишга солиб, жон-жаҳдлари билан жанг қиларди, мусулмонлар сабр қилишди ва собитқадам туришди. Ҳолат ўта муҳим бўлиши билан бирга ўта хатарли ҳам эди. Энди масала ғалаба масаласи эмас, ҳаёт-мамот масаласига айланган эди.

⁸²⁷ Анфол: 30.

⁸²⁸ Муҳаммад: 7.

⁸²⁹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (324-бет).

Қутузнинг жанг майдонига тушиши

Мўғул лашкарининг ўнг қаноти мусулмон аскарнинг чап қанотидан устунлик қила бошлади. Соримуддин Ойбекнинг элчиси хабар берганидек, мўғул лашкарининг ўнг қаноти анча бақувват эди. Мусулмон лашкарининг чап қаноти мўғул лашкарининг ўнг қаноти босими остида аста-секин чекинишга мажбур бўлди. Мўғуллар мусулмонларнинг чап қанотидан ёриб чиқа бошлади. Мусулмонлар сафида шахидлар ортиб борарди, мўғуллар бироз жадаллади. Агар улар мусулмон аскарнинг чап қанотини тўлиқ ёриб чиқса, мусулмон аскарга янада жипслашган ва мўғуллар томон кучлироқ ҳолатга кўчган ва водийнинг берклиги мусулмонларнинг зарарига бўлиши мумкин эди.⁸³⁰

Музаффар Қутуз тепадан, сафларнинг ортида туриб вазиятни назорат қилиб борарди. Лашкарнинг чап қаноти дуч келган ҳолатни кўриб, катта-ю кичик гуруҳларни мўғуллар ёриб чиқаётган жойга тўғаноқ қилди. Шунга қарамай, мўғулларнинг босими тўхтамади, баъзи мусулмонлар вазиятнинг қийинлашганини ҳис қилиб, руҳиятлари тушди ва нусратдан умидлари узила бошлади. «Мўғуллар енгилмайди», кабилидаги гап-сўзлар ҳали тўлиқ унитилиб улгурганича йўқ эди.

Қутуз бу вазиятнинг ҳаммасини кўриб турарди. У чап қанотга кўшимча куч йўллади, лекин вазият жуда кескинлашди. Бу ўринда у жанг майдонига ўзининг ҳам тушишидан бошқа чорани топмади. Қутуз жанг майдонига туша бошлади. У майдонга комил аскарый ҳолатида эмас, ўлимдан қўркмаслигини намоён қилиб, бошидаги дубулғасини ечиб, ерга улоқтирди ва жанг майдонига отилди. У жангга кираркан, бутун маърака майдонидаги вазиятни остин-устин қилиб юборган машҳур сўзини баланд овозда баралла айтиб борарди. Қутузнинг ҳамма ёқни тутган «Во Исламаах! Во Исламаах!»⁸³¹ — деган овози кулоқлар орқали қалбга бориб урилди.⁸³² Султон Музаффар Қутуз башар тўлкини ичига ўзини отди. Мусулмон аскар Султон Музаффар Қутузни ўзлари билан бир сафда кўриб янада илҳомланди. Барчанинг кўз ўнгида олдиларига қўйган ғоялари янада равшанлашди. Мақсади салтанатни қўлга киритиш эмас, Исломни олий қилиш эканини англатароқ, ёш

⁸³⁰ Мақризий «ас-Сулук» (1/516-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (326-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (261-бет).

⁸³¹ «Во Исламаах!», калимасидаги «ل» юкламаси афсус, ҳайрат, шодлик туйғуларини ифодаловчи юклама бўлиб, «هـ» қўшимчаси билан тугайдиган отлардан олдин ишлатилади. Унга ўзбек тилида «Исломгинам!» «Вой Исломим!» маънолари тўғри келади. «Ан-Наъим» арабча-ўзбекча лугат, «вов» ҳарфи қисми (892-бет).

⁸³² Мақризий «ас-Сулук» (1/516-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (326-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (261-бет).

султон ўлим билан олишиб, аскарлари ва халки билан бир сафда туриб ўз вужудини намоён қилди.

Мусулмон лашкарнинг ҳамияти, ғурури жўш уриб тўлқинланди, қаршиларида турган йиртқич каби пишқираётган мўғул лашкари улар учун ҳеч нарса бўлмай қолди. Ислонни йўқ қилишга бел боғлаган ваҳший мўғул ҳамласига жонларини фидо қилароқ ташландилар. Айн-Жалут водийсида уруш авжига чиқди, жанг майдонига жасадлар тўшалди, водийнинг атрофидаги халқнинг такбир садоси осмонгача етарди. Мусулмонлар рамазоннинг бу улуғ қунида сидқидилдан Оллоҳга дуо қилиб, ёлвордилар. Қутуз довларча жанг олиб борарди. Балоғатга етмагани учун ўлимдан олиб қолинган, Ҳулағунинг таҳдидий мактубини келтирган беш мўғул элчисининг бири мамлуклар сафида жангга олиб келинган эди (қолган тўрттаси боши олиниб Зувейла дарвозасига осилганди). У жанг авжидида мўғуллигига бориб аҳдни бузди. У Қутузни мўлжалга олиб найза отди, бироқ найза Қутузга эмас, унинг отига тегди. От ерга жон ҳолатда йиқилди, Қутуз оёқда қолди, лекин ҳеч иккиланмай, ортига қарамасдан жангни давом эттирди. Мўғул болани Қутузга найза отганини кўрган мусулмонлардан бири шу заҳоти уни ўлдирди. Мусулмон амирлардан бири амир Фахриддин Қутузнинг пиёда жанг қилаётганини кўрган заҳоти у томонга шошилди ва унга отини тақдим қилди,⁸³³ лекин Қутуз «мусулмонларни сендан маҳрум қилайми», деган маънодаги сўзини айтиб, уни қабул қилмади ва то бир эгасиз от ўз оёқлари билан ёнига келмагунича пиёда ҳолатда жанг қилди. Жанг майдонида бу ҳолатга кўзи тушган бир амир жангдан сўнг Қутуздан: «Фалончининг отини минмадингиз? Агар душманларнинг бири сизни шу ҳолатда кўрганда сизни ўлдирар ва сиз сабаб Ислон ҳалокатга юз тутар эди-ку!» — дея сўз очди.

Қутуз вазмин оҳангда, яқийн ишонч билан: «Мен ўлдирилсам, Оллоҳ изн берса, жаннатга борарман, Ислоннинг эса зое қилиб қўймайдиган Рабби бор! Фалончи ва писмадончилар ўлдирилди, дея Умар, Усмон ва Али разияллоҳу анҳум қатори подшоҳ ва амирлардан бир қанчасини санади. Оллоҳ таоло Ислонни зое қилмади, балки улардан бошқалар билан уни қоим қилди», — деб жавоб берди.⁸³⁴ Дарҳақиқат, умматнинг қадди шу қабиларнинг елкаларида ростланади.

Бу ҳолатга гувоҳ бўлган мусулмонлар бутун имкониятларини ишга солиб, жанг қилдилар. Мўғуллар сингари жон сақлаш учун эмас, ё нурсатга эришиш ёки шаҳодат учун жанг қилдилар. Оллоҳнинг фазли

⁸³³ Мақризий «ас-Сулук» (1/516-бет).

⁸³⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Нихоя» (17/411, 412), Сиржоний «Қиссатут-татар» (327-бет).

мархамати билан уруш янгидан мусулмонлар фойдаси томон ҳал бўла бошлади. Чекиниш навбати мўғулларга келган эди.

Китбуганинг ўлдирилиши

Бир вақтлар Носир Юсуфнинг лашкари таркибида мўғуллардан кочган, бироқ кейинчалик Айн-Жалут жангидан олдин келиб, Қутузнинг сафига қўшилган мохир Шом амирларидан бири Жамолиддин Оқуш Шамсий олдинга чиқди. У жанг майдонида зўр матонат кўрсатиб, мўғуллар сафини ёриб борди ва мўғул саркардаси насроний Китбуга қаршисига етиб келди. Мардонавор шамширини қўтарган Жамолиддин ва жон-жаҳдида қилич ўйнатган мўғул қўмондони ўртасида олишув бошланди. Жанг якунида Оллоҳ таоло у мўғулнинг руҳини амирга ҳада қилди.⁸³⁵

«Бас, уларни сизлар ўлдирмадингиз, балки Оллоҳ ўлдириди. Отган пайтингизда, сиз отмадингиз, балки Оллоҳ отди».⁸³⁶

Ерга биринчи бўлиб тушган, боши танидан жудо бўлган мутакаббир тоғут Китбуга жасадими ёки унинг лашкарининг маънавиятимиди, ёлғиз Оллоҳга аён.

Мўғулларнинг мағлубияти ва Айн-Жалутдан қочиши

Китбуганинг ўлими урушга ҳал қилувчи нуқтани қўйган ва мўғулларга вазият бутунлай ўзгарган эди. Уларнинг олдидаги асосий мақсадлари Айн-Жалут водийсининг кириш қисмини ёриб чиқиш ва қочиб жон сақлаш эди. Мўғулларнинг асосий қисми мусулмонларнинг оёқлари остида худди чириган дарахтдек қулаб, ҳалок бўлиб ётарди. Уларда на ҳайбат ва на савлат қолди. Баҳайбат мўғул лашкари парча-парча қилиб ташланган эди. Улар тиш тирноқлари билан мусулмон аскарнинг орасини ёриб чиқишга киришдилар. Қаттиқ уриниш ва қўп қурбонлар эвазига мусулмон аскар сафида тирқиш пайдо бўлди. Бу

⁸³⁵ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/401), Мақризий «ас-Сулуқ» (1/516-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (328-бет). Тарихшунослар орасида биргина Рашидуддин Фазлуллоҳ, мўғул сардори Китбуга жангнинг аввалида асирга тушиб, у билан Қутуз ўртасида савол-жавоб бўлгани, сўнгра ўлдирилгани ҳақида хабар беради. Рашидуддин «Жомийут-таварих» (2-жилд, 1-қисм, 315, 316-бет)/ «Сборник летописей» (3/52–53). Бу ўринда биз қўпчилик тарихшунослар, жумладан Ибн Касир, Мақризий, Ғомидий, Сиржоний, Саллабий каби тарихчиларнинг ривоятини асослироқ кўрдик. Хуллас, Китбуга ўша жангда ёки бевосита жангдан кейин ўлдирилди.

⁸³⁶ Анфол: 17.

тирқишга ўзларини жон талвасида уриб, Айн-Жалут водийсидан чиқиб, шимол томонга қоча бошладилар. Мусулмонлар мўғулларни таъқиб қилиб, бир қисмини ўлдирдилар ва яна бир қисмини асир олдилар. Асир олинганлар орасида Банияс амири Саид Ҳасан ибн Абдулазиз ҳам бор эди. Қутуз унинг бошини танасидан жудо қилишга амр қилди. Асир Ҳимс амири Ашроф Айюбий эса, Қутуздан омонлик сўради. Унинг жанг майдонида енгилиб бериши ҳақида Соримуддиннинг элчиси ҳам хабар берганди. Шу эътиборла Қутуз унга омонлик берди⁸³⁷. Мусулмонлар ўз олдиларига қўйган мақсадлари жангда ғолиб бўлиб, минтақада сиёсий мавқега эга бўлиш эмас, балки Ислом ўлкаларни мўғуллар зулмидан батамом озод қилиш эди.

⁸³⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/401), Мақризий «ас-Сулук» (1/516-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет).

БЕЙТ-ШЕАН ЖАНГИ

Мўғуллар шимол тарафга кочиб, Бейт-Шеан минтақасига етиб олдилар.⁸³⁸ Бейт-Шеан минтақаси Айн-Жалут водийсидан 20 км шимоли-шарқда жойлашган эди. Мусулмонларнинг таъкиб қилиб келаётганини кўрган мўғуллар жанг учун сафларини қайта тартиблашга ва яна урушишга мажбур бўлди. Баъзи тарихчилар Бейт-Шеан жангини Айн-Жалут жангидан ҳам қийин ва машаққатли бўлган ҳамда янада кўпроқ мўғул лашкари ҳозир бўлган, деб хабар берадилар.⁸³⁹ Унда мўғуллар даҳшатли жанг қилдилар, бор кучлари билан жон сақлашга ҳаракат қилиб, мусулмонларга қаттиқ зарба бердилар. Ана ўшанда мўминлар яна бир бор имтиҳон қилиндилар ва бу даҳшатдан қаттиқ ларзага тушдилар. Бу лаҳзалар мусулмонлар учун энг оғир дамлар бўлган эди. Буни кўрган Қутуз мусулмонларни собитқадамликка чақирди ва яна бир бор ўзининг унутилмас сўзлари билан хитоб қилиб, «Во Исламааҳ! Во Исламааҳ! Во Исламааҳ!» — дея, бор овози билан кичқирди. Сўнгра тавозе билан «Эй Оллоҳим! Банданг Қутузни мўғулларга ғолиб қил!» — дея дуо қилди.⁸⁴⁰

Бу ўринда Қутуз бандалигини эътироф қилди. У ўзини подшоҳ Музаффар ёки Миср султони ёки амирул муслимийн эмас, банданг Қутуз деб убудиятини ёдга олди, бу қандай ҳам яхши! Банда Раббисига сидқидилдан ялиниб ёлворса, Оллоҳ таоло у бандасини қандай ҳам ташлаб қўйсин?! Оллоҳ таоло шундай Зотки, банда икки қўлини очиб дуо қилар экан, У унинг қўлларини қуруқ қайтаришдан ҳаё қилади. Қутуз садоқат билан қоқилса, албатта очилажак эшикни қоққан эди. У осмонлар ва Ернинг подшоҳлиги Унинг қўлида бўлган Зотга жуда яқин бўлган эди. Ер юзидаги подшоҳлар тавозе ила итоат қилса, осмонлар ва Ернинг Подшоҳи унга раҳм қилади. Қутузнинг содиқ тавозеси гўё мўғул лашкарининг устига тушиб, уни буткул яксон қилган тоғ эди. Қутуз раҳимаҳуллоҳ дуосини тугатар-тугатмас, мўғул лашкари кучсизлана бошлади, субҳоноллоҳ! Бундан олдин Ер куррасига ўзининг даҳшатини солиб турган мўғул лашкари Бейт-Шеан ерларида ночор ҳолатда руҳсиз ётар эди. Мусулмонлар бешафқат урушиб, мўғул лашкарини енгдилар ва

⁸³⁸ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/517-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет).

⁸³⁹ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/517-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (329-бет).

⁸⁴⁰ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/517-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (329-бет).

Ислом байроғини баланд кўтариб, мўғул байроғини йикитдилар. 40–43 йилдан бери орзиқиб кутилган орзулар ушалгандай бўлди.

«Ўша кунда мўминлар Оллоҳ ғолиб қилгани сабабли шодланурлар. (Оллоҳ) Ўзи хоҳлаган кишини ғолиб қилур. У қудрат ва раҳм-шафқат эгасидир».⁸⁴¹

Бир тасаввур қилинг, Ер юзининг ярмини эгаллаган, миллионлаб инсонларнинг ҳаётига зомин бўлган, юзлаб шаҳарларни харобага айлантирган, Ер юзини фасодга тўлдирган мўғул лашкарининг асоси янчилди! Мусулмон аскар буюк ғалабага эришди. Мевани узадиган вақт келди. Қутуз мўғулларнинг жасадларини Бейт-Шеан ерларида қалашиб ётганини кўриб, қадрини тик кўтариб, фахрланмади, уни ғолиблик ғурури олмади, кибрланмади ҳам. Балки энг биринчи қилган иши отидан тушиб, оламлар Рабби Оллоҳ субҳонаҳу ва таолога шукр саждаси учун пешонасини ерга қўйди ва икки ракаат шукр намозини ўқиди.⁸⁴² Зеро, фазл ва миннат Оллоҳдан ва Унинг Ўзи нусрат неъматини унга инъом қилган ва уни ихтиёр этиб, жанг майдонида собитқадам қилган эди. Ҳикматни унга илҳомлантирган ва тўғри қарор қабул қилишида мадад берган ҳамда уни Ўзининг ҳақ йўлига ҳидоят қилган Оллоҳ таоло эди. Оллоҳнинг ёрдами билангина нусратга эришишини, Унинг раҳмати билангина нажот топишини ва Унинг иродаси билангина ҳаракат қилишини ҳар бир инсон билиши лозим. **«Аввалу-охир барча иш Оллоҳнинг (измида)дир».**⁸⁴³

Мусулмонлар бу жангда зафар қозондилар ва беҳисоб ғаниматларни кўлга киритдилар.⁸⁴⁴

⁸⁴¹ Рум: 4 – 5.

⁸⁴² Мақризий «ас-Сулук» (1/517-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет), Сиржоний «Қиссатут-татар» (333-бет).

⁸⁴³ Рум: 4.

⁸⁴⁴ Мақризий «ас-Сулук» (1/517-бет), Ғомидий «Жихадул-мамолийк» (123-бет).

Музаффар Қутуз Ислои мезонида

Қутузнинг Ислоидаги қийматини билишни истаганлар, Ер юзида фахр, кибр ва манманлик билан бошқалардан ўзини юқори санаб юрган, одамлар орасида димоғини баланд тутадиган, худди бутун Ер юзини эгаллаб олган ёки баланд тоғларга тенг келгандек ерда керилиб юривчиларга назар солсин! Улар уммат учун бирор нарса қилиб қўймаганлар, балки халқининг бошига битган бало бўлганлар. Ўша шахсларга назар солинса, Қутузнинг қадри кўз ўнгимизда намоён бўлади. Ана ўшанда уни Қутузнинг ғалабаси ва «енгилмас» душманнинг мағлубияти ажаблантирмайди. Зеро, Оллоҳ таоло ҳеч кимга зулм қилмайди, У зот Ўзининг Карим Китобида марҳамат қилади: **«Ва Биз уни икки (яхши ва ёмон) йўлга йўллаб қўймадикми?»**.⁸⁴⁵

Бир ёдга олсак, Қутуз омон-омон замонда, тўкин-сочин ва қулай вазиятда ҳокимият тепасига келмаган эди. У Оллоҳ таолодан мадад сўраб, садоқат ва ихлос билан амал қилди ва бошқаларни ҳам ўзининг сафига қўшилишларига тарғиб қилди. Мусулмонлар ҳам Қутуз қилганидай амал қилишган пайтларида маррага етдилар. Ваҳоланки, Мисрдаги ҳолатнинг ўзгариши учун йиллар ёки асрлар керак эди. Айн-Жалут жанги эса, Қутуз тахтга ўтирганидан ўн ойдан кейин содир бўлди. Энг муҳими мухлис, содиқ, билувчи ва билганига амал қилувчиларнинг мавжуд бўлишидир. Оллоҳ таоло ваъдасига ҳаргиз хилоф қилгувчи эмас. У зот Ўзининг Карим Китобида марҳамат қиладики: **«Албатта, Биз пайғамбарларимизга ва иймон келтирган зотларга ҳаёти дунёда ҳам, гувоҳлар (ҳозир бўлиб) турадиган Кунда (қиёматда) ҳам ёрдам берурмиз»**.⁸⁴⁶

Айн-Жалут жанги Ислои тарихидаги жангларнинг энг буюкларидандир. Бу жанг Ер юзида, айниқса, мусулмонлар ҳаётида чуқур из қолдирди.

Айн-Жалут жангидан олдин мўғулларнинг мусулмонлар устидан ғолиб бўлиши сабаблари

Бутун оламга катта ўзгариш киритган Айн-Жалут жангидан олинадиган дарс ва ибратлар беҳисобдир. Ўша кундаги мусулмонларнинг, айниқса, Малик Музаффар Сайфиддин Қутузнинг ҳар бир қадами, чизган режаси узундан-узун шарҳларга лойиқдир. Айн-Жалут жангида Ер юзида бузғунчилик ва ваҳшийлик сиёсатини қўллаб

⁸⁴⁵ Балад: 10.

⁸⁴⁶ Ғофир: 51.

келаётган мўғул лашкари тор-мор қилинди. Оллоҳ таоло бузғунчиларнинг ишини ўнгламайди. Мўғул истибдоди узок йиллар, яъни 40 йилдан ортиқ муддат муттасил мусулмонлар устидан ғолиб бўлиб келди. Бу даврда мусулмонлар қаҳр, жабр-зулм ва қаттиқ босим остида яшадилар. Мусулмонлар ўнлаб, ҳатто юзлаб жангларда мағлубиятга учрадилар. Кун келиб, бу жабр-зулм, хорлик ва истибдодга Айн-Жалут маъракасида нукта қўйилди. Мусулмонлар улкан ғалабага эришдилар. Оллоҳ таоло марҳамат қиладики, «**Бу кунларни (яъни, ғалаба ва мағлубият кунларини) одамлар орасида айлантириб турамин**».⁸⁴⁷

Ушбу ўринда иккита савол туғилиши мумкин, у иккисининг ҳам ечими битта:

Биринчи савол: Нима учун мўғуллар мусулмонларга ғолиб бўлди? Ҳолбуки, мусулмонлар яхши, афзал уммат эдику! Гарчи Ислом уммати ўз манҳажига хилоф иш тутсалар, зиммаларидаги вожиботлардан узоклашиб, қосирлик қилсалар ҳам, охир-оқибат барибир Ислом уммати эди-ку! Шундай экан, нима учун Оллоҳ азза ва жалла бузғунчи мўғулларни уларга ғолиб қилди?

Иккинчи савол: Нима учун мўғул лашкари собиқ жангларда мусулмонлар устидан ғалабага эришдилар-у, Айн-Жалут жангида мағлубиятга учрадилар? Ҳолбуки, мўғул лашкари ўша-ўша эди-ку! Нима сабабдан ўтган жангларда ғолиб бўлиб келган қўшин Айн-Жалут жангида ғаройиб суратда батамом ҳалокат узра юз тутди?

Бу икки саволга саҳобий жалил мўминлар амири Умар ибн Хаттоб разияллоху анхунинг ҳаётидан жавоб топамиз. У киши буюк «Қодисия жанги»да мусулмон аскарга сардорлик қилган Саъд ибн Абу Ваққос разияллоху анҳуга қуйидагича хитоб қилди: «Сени ва аскарларингни ҳар қандай ҳолатда Оллоҳдан тақво қилишга буюраман. Зеро, Оллоҳдан тақво қилиш душманга қарши тайёрланишнинг энг афзали ва ҳийланинг энг кучлисидир. Сени ва ҳамроҳларингни душманингиздан кўра гуноҳингиздан эҳтиёткор бўлишингизга чақираман, чунки гуноҳ сизлар учун душманга қараганда хафвлироқдир. Мусулмонлар душманлари устидан уларнинг Оллоҳга қилган маъсиятлари сабаб нусратландилар. Шундай бўлмаса, бизнинг уларга қувватимиз етмаган бўларди, чунки биз улардан оз ҳамда тайёргарлигимиз уларникидай эмас. Бордию маъсиятда улар билан баробар бўлсак, улар биздан қувватда устунлик қилади. Фазилатимиз ила нусратга эришмасак, қувватимиз билан уларни енголмаймиз. Шуни яхши билингларики, жиҳод сафарингизда қиладиган

⁸⁴⁷ Оли Имрон: 140.

ишларингизни билиб турадиган Оллоҳ азза ва жалла томонидан вакил қилинган саклаб турувчи фаришталар бордир. Шундай экан, улардан ҳаё қилинг! Оллоҳнинг йўлида бўлган ҳолларингда Оллоҳга маъсият қилманг! Душманмиз биздан ёмонроқ, шунинг учун бизга ғолиб бўлолмайди, деманг! Қанчадан-қанча қавмлар устидан улардан ёмонроқ бўлганлар ғолиб бўлишди. Бани Исроил Оллоҳнинг ғазабини келтирувчи амалларни қилганларида мажусий кофирлар улар устидан ғолиб бўлдилар».

«Улар (Бани Исроилни ҳалок қилиш, асир олиш учун) ҳовли-жойларни оралаб кездилар. Бу адо қилингувчи ваъда бўлди»^{848 849}.

Яъни Умар разияллоҳу анҳунинг сўзи мўғуллар мусулмонлардан ёмонроқ, шунинг учун ҳаргиз мусулмонлар устидан ғолиб бўлолмайди ёки яҳудийлар мусулмонлардан ёмонроқ, демак, улар ҳам мусулмонларга ҳукмрон бўлолмайди, ёки мажусийлар, ёки насронийлар ва бошқалар мусулмонлар устидан ҳукм юргизувчи бўлолмайди, деган сўзимизга равшан жавобдир. Яҳудийлар аҳли китоб эдилар, бироқ улар Ер юзида бузғунчилик қилиб, Оллоҳнинг ғазабига сабаб бўлган маъсиятларни қилдилар ва Оллоҳ азза ва жалланинг шариатидан узоқлашдилар, шунда Оллоҳ уларнинг устига оловга сиғинувчи мажусийларни ҳукмрон қилди. Холбуки, яҳудийлар аҳли китоблиги жиҳатидан мажусийлардан яхши ва афзал уммат эди.

Умар разияллоҳу анҳунинг бу сўзлари нақадар гўзал. У, агар мусулмонлар гуноҳ ва маъсият ишларни қилсалар, мағлуб бўлиб, кофирларнинг уларга ҳукмрон бўлишига ишора қилмоқда. Агар улар Оллоҳга тақво қилсалар ҳамда Раббиларининг ва Расулининг йўлидан юрсалар, ғолиб бўлиб келган ҳар қандай душманни енгадилар. Мусулмонлар душманларидан кучли бўлганлари, санокларининг кўплиги, тайёргарликнинг зўрлиги билан нусратга эришмайдилар, балки улар Раббиларига боғланганлари ҳамда душманлари эса оламлар Раббидан узоқ бўлганлари учунгина нусратга эришадилар. Мана шу ўринда нима учун 40 йил давомида мўғулларнинг мусулмонлар устидан ғолиб бўлиб келгани ва айнан шу мўғул лашкари Айн-Жалутда мусулмонлардан енгилганининг сабабини фаҳмлаймиз. Шунингдек, тарих ва воқеликда жуда кўплаб ҳодисалардаги ўхшашлик ва такрорланишига гувоҳ бўламиз.

Умматнинг бемажол заифлиги, баъзида ғарбга, баъзан эса шарққа тобе бўлганини руҳан тушкун, ҳайбатини йўқотган, баъзан қоқоқ,

⁸⁴⁸ Исро: 5.

⁸⁴⁹ Сиржоний «Қиссатут-татар» (333, 334-бет).

баъзида нўнокликда айбланиб хўрланган, тирноқ остидан кир ахтарилгани каби айб қидирилиб, унга ҳар хил лақаблар ёпиштирилганини, қонимизга ташналарни дўст тутилаётгани, мусулмон диёрларини вайрон, хароб қилаётганлар билан ҳамкорлик қилингани, мусулмонларнинг ўз юртларидан қувғин қилаётганларга садоқат билан ёндошаётгани, иқтисодларини синдираётганларга мадад бераётганлари, қўйинги хиёнатнинг барча турини кўрсангиз, буюк Ислом уммати душманлари назарида ҳеч бир қийматга эга бўлмай қолгани, яҳудийлар ва салибчилар ёки сигирга сигиниб юрган ҳиндуслару бутпарастрлар ҳам уларга золимона босимлар ўтказа олаётганининг сабабини кўрасиз. Ҳа, уммат Оллоҳдан узоқлашди, Уни унутди, буйруқларига хилоф қилди, қайтарганларидан тийилмади. Оллоҳнинг назаридан тушган уммат устига Оллоҳнинг Ўзи яҳудий, салибий, ҳиндус, атеист ва бошқа золимларни келтириб қўйди. Буларнинг барчасига гувоҳ эканмиз, тушкунликка тушиб, ноумид бўлиш эмас, балки тарихдан ибрат олиб, нажотимиз Унинг қўлида бўлган зот — Оллоҳ таолога қайтиш ва атрофдагиларни бундан воқиф қилиб қайтариш, амал қилиш лозим бўлади. Зеро, тарих ўз-ўзини такрорлайди. Минг йилларча тарихнинг бу қоидаси ўзгармади, ўзгармайди ҳам. Ҳақ ва ботил орасидаги кураш то қиёмат давом этажак. Оллоҳнинг марҳамати ва саодатига лойиқ кишилар тарихдан тўғри хулоса қилишга муяссар бўладилар. Оллоҳ барчамизни ўшалар сафида қилсин.

Анас ибн Молик разияллоҳу анҳудан ривоят қилинади: Расулulloҳ соллalloҳу алайҳи ва саллам айтдилар: *«Оллоҳ бандасининг тавбаси билан кимсасиз саҳрода озиқ-овқати ортилган туяси қочиб кетган кишидан ҳам кўпроқ хурсанд бўлади. (Тасаввур қилинг) Туяни топшидан умиди узилгач, ноумид бўлиб бир дарахт соясига бориб (ўлимини кутганича) ётиб олди. Бир вақт қараса, туяси олдида турибди. Унинг тизгинидан тутганича қаттиқ хурсанд бўлиб кетганидан тили адашиб: «Эй Парвардигор! Сен бандамсан, мен раббингман», деб юборди.⁸⁵⁰ (Оллоҳ бандасининг тавба қилишидан ана шу кишидан кўра ҳам кўпроқ хурсанд бўлади)».*

Кўриб турганингиздек, ғалаба ёки мағлубиятнинг асоси такводир. Агар мусулмонлар Раббиларига боғлансалар, нусратга эришадилар, Ундан узоқлашганда эса, мағлубиятга дучор бўладилар. Оллоҳ таоло бирор кишига зулм қилмайди, лекин инсонлар ўзларига зулм қилурлар. Оллоҳ таолодан динимизга гўзал суратда қайтаришини ҳамда Ислом ва мусулмонларга азизлик ва нусрат беришини сўраймиз.

⁸⁵⁰ Имом Муслим ривояти.

ШОМНИНГ МЎҒУЛЛАРДАН ОЗОД ҚИЛИНИШИ

Айн-Жалут жангида улуғ ғалабага эришган Кутузнинг ва Ислом лашкарининг ўз олдларига қўйган мақсадлари энди бошланди, десак ҳам бўлади. Мўғуллар Шомнинг бошқа шаҳарлари Дамашқ, Ҳимс, Ҳалабда хали хукмрон бўлиш билан бирга Ироқ, Туркия, Форс ва бошқа Ислом мамлакатларда тарқалиб кетган эди. Ислом ўлкалари мўғуллардан тамоман тозаланмасдан ёзнинг жазирама иссиғида Сино саҳросини кесиб ўтган, саноксиз шаҳидлар берган, мислсиз аламлар чекиб, жароҳатлар олган мусулмон аскар ва қахрамон Кутузнинг кўнгли хотиржам бўлмаслиги аниқ.

Дарҳақиқат, мусулмон аскар июл ойида Сино саҳросини кесиб ўтиб, Ғазода мўғуллар билан жанг қилган, сўнгра Фаластиннинг жанубидан шимолига томон босиб ўтиб, Аккога етиб борган, сўнгра Айн-Жалутга қараб ортга қайтган эдилар. Айн-Жалутда мўғуллар билан катта тўқнашувдан кейин Бейт-Шеанда уларнинг қолган қисми билан ҳам жанг қилиб ғалаба қозондилар.

Кутузнинг бундан кейинги қадами бевосита Дамашқ бўлди. Мусулмон аскар бир муддат ҳам дам олмасдан шимолга Дамашқ сари отланди. Айн-Жалут водийси билан Дамашқ орасидаги масофа тахминан 150 км эди. Мўғулларнинг катта мағлубиятидан унумли фойдаланиш, уларнинг қайта оёққа туришига йўл қўймаслик, зудлик билан ёндош мусулмон шаҳарларни ҳам улардан озод қилиш айни муддао эди. Агар вақт бой берилса, Хитой, Мўғулистон, Овропа, Форс ва бошқа жойлардан мўғул мадади келиб, ўзларини тиклаб олишлари мумкин эди. Мохир саркарда Кутуз Дамашқни мўғул гуруҳларидан тозалаш сари одим қўйди. Дамашқдаги мўғулларга Айн-Жалут фожиаси хабари хали етиб бормаган эди.

Кутуз 658 йил 27 рамазон/1260 йил 12 сентябр якшанба куни Табарияга келди ва Дамашқ аҳлига Айн-Жалут жангидаги улкан ғалаба муждасини ўз ичига олган мактуб билан элчи жўнатди.⁸⁵¹ Бу хабар Дамашқдаги вазиятни остин-устин қилиб юборди. Мусулмонларнинг маънавияти қанчалар юксалса, мўғулларники шунчалар чўкди. Мўғуллар босими остида бирор ҳаракат ва қаршилик қилмасдан

⁸⁵¹ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/517-бет).

жимгина юрган мусулмонларга нусрат хабарининг келиши билан ўзларини ҳимоя қилишга киришдилар. Баъзилар насронийлардан ўч олишга бел боғладилар, уларнинг жойларини ва канисаларини вайрон қилиб, бир қанча насронийларни қатл қилдилар.⁸⁵²

Бу мактуб Дамашққа 658 йил 27 рамазон/1260 йил 12 сентябр якшанба кечаси етиб борган эди.⁸⁵³ Дамашқда катта қўзғолон, инқилоб бошланди, у ердаги мўғулларнинг бир қисми ўлдирилди, бир қисми асир олинди ва яна бир қисми шимол томонга қочиб қолишди. Халқ ўша ночор халқ, мўғуллар ҳам ўша мўғуллар! Лекин Айн-Жалутдан келган хушxabар вазиятни буткул ўзгартирган эди. Айн-Жалутдаги намуна натижасида халқ қаршилиқ қилиш, ҳимояланиш ва Оллоҳ йўлида жанг қилишга қодир эканини англади. Ҳукуматни бошқариб турган мўғулларнинг умуман ҳайбати қолмади ва инқилобчиларга қарши туришга тоқат қилолмади. Дамашқ бир неча лаҳзалар ичида мўғуллардан озод қилинди.⁸⁵⁴

Мўғулларнинг Дамашқни босиб олганига 7 ойу 10 кун бўлган эди.⁸⁵⁵

Қутуз 30 рамазон куни, яъни мактуб келганидан уч кундан кейин Дамашққа келганида шаҳарда битта ҳам мўғул қолмаган эди. Оллоҳу акбар!

Қутуз ва Миср лашкарининг Дамашққа келиши

Қутуз 30 рамазон/15 сентябр чоршанба куни Дамашққа келиб, шаҳар ташқарисида ҳарбий лагерини ўрнатди, сўнгра 2 шаввол куни Дамашққа кирди.⁸⁵⁶ Йўл атрофига безаклар осилган, эркак, аёл ва болалар пешвоз чиқиб қахрамон Малик Музаффарни кутиб олдилар. 40 йилдан бери мусулмонлар бу қадар севинмаган, хурсанд бўлмаган эдилар. Ҳа, бу ҳақиқий хурсандчилик эди!

«(Эй Мухаммад), айтинг: «Оллоҳнинг фазлу марҳамати ва раҳмат-меҳрибонлиги билан — мана шу (неъмат) билан шод-хуррам бўлсинлар. (Зеро), бу улар тўплайдиган мол-дунёларидан яхшироқдир»».⁸⁵⁷

⁸⁵² Макризий «ас-Сулуқ» (1/517-бет).

⁸⁵³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/402).

⁸⁵⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/402).

⁸⁵⁵ Макризий «ас-Сулуқ» (1/517-бет).

⁸⁵⁶ Макризий «ас-Сулуқ» (1/517-бет), Ғомидий «Жихадул мамалик» (126-бет).

⁸⁵⁷ Юнус: 58.

Бу шодлик ҳаёти дунё лаззатларидан ҳеч бирига қиёслаб бўлмайдиган Ислоннинг олий ва мусулмонларнинг азиз бўлиш хурсандчилиги, буюк шодлик эди.

Мамлуқлар қўшини Дамашққа кирди ва юртга ҳақиқий омонлик берилди, ҳатто насроний ва яҳудийларнинг жонию молига ҳам тўлик омонлик берилди.

Қутуз Дамашққа мўғуллар қози этиб тайин қилган Ибн Закийни мансабидан четлатиб, унинг ўрнига Нажмиддин Абу Бакр ибн Суннийни қози этиб тайинлади.⁸⁵⁸ Янги қози мусулмонлар ва насронийлар орасидаги келишмовчиликлар устида ҳукм чиқарди ва ихтилофларга чек қўйди. Бу ҳукмга кўра, бирорта насронийга мусулмон ўлкада зулм қилинмади. Ҳолбуки, насронийлар мўғуллар даврида мусулмонларнинг бошига не-не кулфатларни солган эди!

Қутуз Дамашққа келган куннинг эртасига рамазон ҳайити бўлиб, бу байрам мусулмонларга 40 йилдан бери ўтган байрамларнинг энг улуғи, нафақат рамазон ҳайити, шу билан бирга нусрат ва тамкин билан қўшалок байрам бўлган эди.

Қутуз вақтни бой бермасдан мусулмон аскар муқаддимасини Рукниддин Бейбарс бошчилигида Шомнинг бошқа шаҳарларини ҳам мўғуллар исканжасидан озод қилиш мақсадида қочиб қолган мўғуллар ортидан юборди. Бу мусулмон аскар Ҳимсга етиб келди ва мўғулларнинг ҳарбий лагерига ҳужум қилишди, мўғуллар саросимага тушиб, ҳовлиққанларича қочиб қолишди. Вазият бутунлай алмашган эди. Мусулмонлар минглаб биродарларини асирликдан озод қилдилар ва мўғулларнинг ортидан тушиб, аксариятини қиличдан ўтказдилар ва қолганларини асир олдилар. Мўғуллардан тирик қолганлари бошпанасиз, қувғинда қолдилар. Ҳа, Ҳимс ҳам қисқа фурсат ичида озод қилинди.⁸⁵⁹ Сўнгра Ислон қуввати Ҳалаб томон отланди. Мўғуллар, ҳуркиб ўзига тешик ахтарган сичқон мисоли шаҳардан қочиб қолишди. Мусулмонлар уларнинг кетидан тушиб, бир қисмини ўлдирдилар ва яна бир қисмини асир олдилар. Оллоҳ таоло кўз очиб юмгунча бир ҳолатни иккинчи ҳолатга ўзгартириб қўйди. Мусулмонлар Шом⁸⁶⁰ диёрини бир неча ҳафталар ичида мўғуллардан озод қилишди. Шом янгидан мусулмонлар қўлига кирди.⁸⁶¹

⁸⁵⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/405), Сиржоний «Қиссатут-татар» (339–340-бет).

⁸⁵⁹ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/517-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (365-бет).

⁸⁶⁰ Шом — Сурия, Ливан, Фаластин ва Урдунни ўз ичига олади.

⁸⁶¹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/402).

Оллоҳ азза ва жалладан шу кунларда Шомнинг қалби Сурияда бўлаётган қирғинларни ва фитналарни ҳам мусулмонлар фойдасига ҳал қилиб, Шом ва бошқа Ислоом ўлкаларини ҳамиша озод ва иззатда бўлишини сўраб қоламиз.

Сўнгра Қутуз энг улуғ масалани ҳал қилишга киришди. Бу масала Шом ва Мисрни қайтадан бирлаштириш режаси эди. Шом Мисрдан хижрий 648 йил Солиҳ Нажмиддин Айюб вафотидан сўнг ажралиб кетган ва улар ўртасида тўлиқ ўн йил давомида кескин ихтилоф ва келишмовчиликлар давом этиб келган эди. Бу Ислоом ўлкаларини Қутуз янгидан бирлаштириб, бир бутун давлатга айлантирди. Мусулмонлар бахтиёр онларни бошдан кечира бошладилар.⁸⁶²

Шомга амирлар тайинланиши

Қутуз шаҳарларга волийлар тайин қилишни бошлади. У дохийлигидан баъзи Айюбий амирларни ўз мансабларига қайтарди. Қутуз энди уларнинг хиёнатларидан қўрқмас ҳамда уларнинг Қутуз ва унинг қўшинига тенглашадиган кучга эга эмаслигини яхши биларди.

Қутуз Ҳимс амирлигини Ашроф Айюбийга тақдим қилди. У бир пайтлар мўғуллар билан иттифоқдош бўлган, лекин кейин надомат қилиб, тавба қилган ва мусулмонлар сафига қайтган эди.⁸⁶³

Ҳалаб амирлиги Алоуддин ибн Бадриддин Луълуъга берилди.⁸⁶⁴ Маълумки, унинг отаси Мосулнинг амири Бадриддин Луълуъ мўғулларга ўта садоқатли киши эди. Унинг оламдан ўтганига кўп бўлмаган эди. Аммо унинг ўғли Алоуддин эса, Қутузни ва мусулмонларни қўллади ва унга садоқатли бўлди. Қутуз қора ҳарфлар билан битилган отанинг тарихини ўғлига ғов қилмади.

Бу ўриндаги нозик нукта, Қутуз Рукниддин Бейбарсга агар Ҳалабни мўғуллардан озод қилсанг, унинг волийлигини сенга бераман, дея ваъда берган эди. Лекин Бейбарс Ҳалабни озод қилганда, юқорида зикр қилганимиздек, Ҳалаб Алоуддинга берилди. Бу эса Рукниддиннинг Қутузга нисбатан адоватига сабаб бўлди. Ҳа, одамзот хатодан холи эмас, Қутузнинг озгина эътиборсизлиги ёки бошқа бир мақсадни кўзлаб

⁸⁶² Саллабий «ал-Мўғул» (365-бет), Сиржоний «Қиссатут-ғатар» (340, 341-бет).

⁸⁶³ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/401, 404), Макризий «ас-Сулук» (1/517-бет).

⁸⁶⁴ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/401, 404), Макризий «ас-Сулук» (1/517-бет).

ваъдасида турмагани ўз ҳаётига зомин бўлди!⁸⁶⁵ Бу воқеанинг тафсилотини ўз ўрнида баён қиламиз...

Қутуз ҳар бир кишини қудратига яраша муомала қилиб, Ҳамаҳ амирлигини ўз эгасига, яъни Айн-Жалут жангида мусулмонлар томонида туриб жанг қилган амир Мансурга топширди.⁸⁶⁶ Китбугани ўлдирган амир Жамолиддин Оқушни Фаластин ва Ғазога волий этиб тайинлади.⁸⁶⁷

Дамашқни Аламуддин Санжар Ҳалабийга берди.⁸⁶⁸ Шу тариқа Шомдаги вазият барқарорлашди ва Исломнинг шавкати ортди. Яҳудий ва насронийларнинг мусулмонларга таҳдид солишга мажоли ҳам қолмади.

Шом шаҳарларига волийларни тайин қилиш ва мамлакатда тартиб ўрнатиш учун 25 кун атрофида вақт кетди. Султон Музаффар Қутуз 658 йил 26 шаввол/1260 йил 11 октябр душанба куни Мисрга, пойтахт Қоҳирага бир қатор сиёсий ишларни тартиблаш ва идора қилиш мақсадида йўлга отланди.⁸⁶⁹

Ортга бир назар солсак, Қутузнинг ҳокимият тепасига келганига атиги 11 ой бўлган эди, холос. Чунончи, у 657 йил 24 зулқаъда/1259 йил 19 ноябрда тахтга ўтирган эди. Мана ҳозир 658 йил шавволнинг охирида Қоҳирага қайтаёпти.

⁸⁶⁵ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/404), Ғомидий «Жихадул мамалик» (128-бет).

⁸⁶⁶ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/401, 404), Макризий «ас-Сулук» (1/517-бет).

⁸⁶⁷ Макризий «ас-Сулук» (1/517-бет), Ғомидий «Жихадул мамалик» (126-бет).

⁸⁶⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/405), Макризий «ас-Сулук» (1/518-бет), Ғомидий «Жихадул мамалик» (126-бет).

⁸⁶⁹ Макризий «ас-Сулук» (1/519-бет), Ғомидий «Жихадул мамалик» (128-бет).

**АЙН-ЖАЛУТ ЖАНГИНИНГ
САМАРАЛАРИ**

АЙН-ЖАЛУТ ЖАНГИНИНГ САМАРАЛАРИ

Айн-Жалут жанги гарчи қисқа муддатда юз берган ва бир кунда ниҳоясига етган бўлсада, унинг самараларини қанчалар катта ва улуғ эканини тасаввурга сиғдириш қийин. Бу ўринда унинг самараларини енгил зикр қилиб ўтишни мақсадга мувофиқ деб билдик. Бу мавзу таҳлилчилар учун ғоят аҳамиятлидир.

Биринчи самара: Оллоҳнинг амридан йироқлашган мусулмонларнинг Оллоҳ аза ва жаллага қайтишлари. Мусулмонлар бу жангга ҳозирлик кўриш асносида, жанг пайтида ва ундан кейин ҳам Раббиларига қайтдилар. Улар Оллоҳга қайтганларида кўпчилик таҳлилчилар ҳақиқий мўъжиза, деб эътибор қилган нусрат рўёбга чиқди. Буни одамлар яхши тушуниб етдилар. Мусулмонлар Айн-Жалут жангидан сўнг урушдаги ҳақиқат Оллоҳнинг амри асосига кўра бўлишини англадилар.

Иккинчи самара: Айн-Жалут ғалабаси узоқ вақтлардан бери мусулмонларни қийнаб келаётган руҳий тушкунликни бартараф қилди. Улар Оллоҳ таолодан умидвор бўлиб, ноумид бўлмаслик шарт эканининг маъносини англадилар. Кофирларнинг қуввати ҳар қанча кучли бўлсада, бир кун келиб, завола топажагини тушуниб етдилар. Ва улар Оллоҳ таолонинг қуйидаги каломининг маъзини чақдилар, «**Сизни кофирларнинг юртларда (бир неъматдан иккинчисига шўнғиб) кезишлари алдаб қўймасин! (Бу елиб-югуриш, ғолибона кезишлар) озгина матодир. Сўнгра жойлари жаҳаннам бўлгай! Нақадар ёмон жой у!**».⁸⁷⁰

Мусулмонлар Оллоҳ таолонинг амрига қайтиб, Махдий ёки бошқанинг лашкарини кутмай, ўзлари нусратга эришишлари ва душманга ғолиб бўлишлари мумкинлигини аниқ идрок қилсалар, Оллоҳ таоло нусрат беради. Тавба сурасида Оллоҳ таолонинг мусулмонлар тилидан айтган сўзига диққат қилинг: «**Биз эса сизлар учун Оллоҳ сизларга Ўз даргоҳидан ёки бизнинг қўлимиз билан бир азоб етказишини кутмоқдамиз**».⁸⁷¹

Демак, мусулмонлар ўзлари ҳаракат қилиб, амал қилишлари лозим, сўнгра Оллоҳ таоло Ўзи истаган бандаларига нусратини нозил қилади.

⁸⁷⁰ Оли Имрон: 196, 197.

⁸⁷¹ Тавба: 52.

«Агар Оллоҳ сизга бирон зиён етказса, уни фақат Ўзигина кетказа олур. Агар сизга бирон яхшилик (етказишни) ирода қилса, Унинг фазлу марҳаматини қайтара олгувчи йўқдир. У Ўзи хоҳлаган бандаларига яхшилик етказур. У мағфиратли, меҳрибондир».⁸⁷²

Учинчи самара: Ислом уммати қайтадан ҳайбат либосини кийди. Бу ҳайбат қўлдан бой берилганига чамаси олтмиш сана бўлган эди. Ҳижрий 6-асрнинг охирларида Ислом уммати шарқда — Фаластиндаги «Ҳиттин» ғалабаси ва ғарбда — Андалусдаги «ал-Арок» ғалабасидан кейин обрў-эътиборда юксак даражага етган эди. Ундан сўнг уммат Оллоҳдан узоқлашиши сабаб бир сира чўкди. Халқаро ҳайбати қолмади. Айн-Жалут жангидан кейин Ислом уммати ўз ўрнига қайтди. Ҳатто Форс диёрини ўзига қароргоҳ тутган Ҳулагу, улкан мўғул лашкари бўлишига қарамай Шомни қайтариб олишга ҳадди ҳам сиғмади.

Тўртинчи самара: Шом, Туркия ва Фаластинда мўғул қувватига барҳам берилиши. Айн-Жалут жангидан сўнг бир неча ўн йиллар давомида бу ўлкаларда мўғулларнинг номи ҳам қулоқларга чалинмади. Бу диёрларга зулму-истибодод бир юз қирқ йилдан узоқроқ муддатгача қайтмади. Мусулмонлар жонлари, моллари, ерлари ва номусларидан хотиржам омонликда яшадилар.

Бешинчи самара: Мамлуклар давлатининг тан олиниши. Мамлуклар султонликни 648/1250 йилда, яъни Айн-Жалут жангидан ўн йил олдин Шажаратуд-Дурнинг ва ундан сўнг унинг умр йўлдоши Иззуддин Ойбекнинг султон бўлиши билан бошланган эди. Лекин Айн-Жалут жанги Мамолийк давлатини барча мусулмонлар томонидан тан олинишига сабаб бўлди. Мамлуклар охириги ўн йиллар ичида икки буюк ғалабаларни амалга оширдилар. Биринчиси, Мансура ва Фарискурда Людовик тўққизинчи бошчилигидаги салиб лашкарини ер тишлатган бўлса, иккинчи ғалаба Айн-Жалутда баҳайбат мўғул қўшинини тор-мор қилган эдилар. Шу тариқа Мамлуклар давлати пайдо бўлди. Бу давлат ўша замонда уммат душманлари бўлган мўғуллар ва салибийлар ҳамласига кўксини тутиб берди. Мамлуклар давлати Айн-Жалут жангидан бир йилдан кейин Зоҳир Бейбарс даврида Қоҳирадаги Бани Аббос оиласига нисбатланди, лекин шунга қарамай бу давлат бутун мусулмонлар учун ҳақиқий халифалик манзилатига етолмади. Сабаби Мамлуклар давлати Ислом оламининг муайян ҳудудидагина ҳукм юргизар, қолган минтақалар эса турли тоифаларга ажралиб, бўлиниб кетган эди. Мамлуклар Миср, Шом, Ҳижоз, Яман, Ироқнинг баъзи қисмлари ва Ливиянинг маълум бўлагига ҳукмрон эдилар. Мусулмонлар

⁸⁷² Юнус: 107.

то буюк Усманийлар хилофати оёққа туриб, умматни бирлаштирмагунича халифаликнинг ҳақиқий юзини кўрмадилар.

Айн-Жалут жангидан кейин мамлуклар давлати гўё қайта дунёга келган эди. Улар Ислом байроғини 270 йил давомида, яъни Усманийлар хилофатигача кўтариб келдилар.⁸⁷³

Олтинчи самара: Миср ва Шом ўртасидаги бир бутунликнинг тикланиши. Миср ва Фаластинни ўз ичига олган Шом, Ислом оламининг стратегик, диний, сиёсий, жўғрофий, маданий ва тарихий қалби ҳисобланади. У иккисининг бирлашиши, барча минтақалар учун буюк омонлик омили бўлиши билан бирга Ислом оламига тама килувчиларнинг иштиёқларини сўндиради.

Шом диёрларини бундан илгари Нуриддин Маҳмуд ва Салоҳиддин Айюбий бирлаштирган эди, улардан кейин буюк Усманийлар хилофати ҳам шундай қилди.

«Ва барчангиз Оллоҳнинг арқонига (Қуръонга) боғланингиз ва бўлинмангиз!»⁸⁷⁴

Еттинчи самара: Айюбий амирларининг майдондан четга чиқиши. Ўша даврда Айюбийлар боболари Салоҳиддин Айюбий қолдириб кетган катта омонатни кўтаришга ожизлик қилиб, уни зое қилдилар. Уларнинг бутун дардлари ўз манфаати учун кураш, мол-дунё жамғариш, тахт таллашиш бўлди. Ёлғон ва макрга берилдилар. Улар бу курашлар натижасида фазилатлар, чиройли ахлоқларини йўқотдилар ва ўз манфаатлари йўлида душмандан баъзан насронийлар, баъзан мўғулларни ўзларига дўст тутдилар, ҳатто бу Ислом душманларидан мусулмон биродарларига қарши ёрдам сўрадилар. Гоҳида туғишган ака-укалар ўртасида урушлар рўй берди. Бу амирлар халқларига жабр-ситам, зулм ва хиёнатда бўлдилар. Улар узоқ йиллар давомида Мамлуклар давлатига қарши курашди ва уни ағдариш учун салибчилар билан иттифоқчилик қилдилар. Бу ҳолат Айн-Жалут жанги содир бўлгунича давом этди, сўнгра халқ олдида бу сохта амирларнинг ҳақиқий башаралари очилиб қолди. Улардан ҳар бир бошлиқ ўзининг ҳақиқий қудрати қанчалик эканини билиб, ўзига берилган мансабида Қутузнинг ҳукмида бўлишга рози бўлди. Айн-Жалут жанги нафақат ташқи душман бўлган мўғулларга, ҳатто мусулмонларнинг разил ва қабих йўлбошчилари — ички душманларига ҳам якун ясаган эди.

⁸⁷³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (346-бет), Саллабий «ал-Мўғул» (372-бет).

⁸⁷⁴ Оли Имрон: 103.

Саккизинчи самара: Шомнинг салибий амирликлардан тозаланиши. Бу масала ғоят муҳим аҳамият касб қилсада, ушбу сатрларга унинг баёнини сиғдира олмаймиз, мавзуни иншаоллоҳ, салиб юришлари баҳсларида батафсил баён қиламиз.

Айн-Жалут жангидан сўнг мамлуклар Шом ва Фаластин ерларида 166 йилдан, яъни 491 йилдан бери ажириқ мисоли илдиз отган салиб амирликлари илдизини кўпориб ташлашга бел боғладилар. Салибийлар Шом, Фаластин, Ливан, Сурия ва Туркия минтақаларида мустаҳкам ўрнашган, Имодуддин Зинкий, Нуриддин Маҳмуд ва Салоҳиддин Айюбийлар бу минтақаларни салибчилардан озод қилишга бор имкониятларини сафарбар қилган бўлсаларда, мақсадларини тўлиқ амалга ошира олмаган эдилар. Устига-устак уларнинг фарзандлари озод қилинган жойларнинг кўпини қўлдан бой берган ва салибчилар у ерларга қайтадан ўрнашган эди.

Мамлуклар бу минтақаларни бирин-кетин озод қилишга киришдилар. Қутуздан сўнг салтанатни қўлга олган Зоҳир Бейбарс 659/1261 йилдан бошлаб, яъни Айн-Жалут жангидан бир неча ойдан кейин, бирма-бир салибий амирликларини ағдара бошлади. 664/1266 йилга келиб, бир қатор Ислом ўлкалари, жумладан, Фаластиннинг кўпгина шаҳарлари: Қайсария, Ҳайфа, Хусн, Арсуф озод қилинди. 664 йил 18 шаввол/1266 йил 30 июлда Фаластиннинг шимоли-шарқдаги Сафад озод қилинди.⁸⁷⁵ Зоҳир Бейбарс Фаластин ерларини салиб амирликларидан тозалаётган бир пайтда буюк саркардалардан бири Сайфиддин Қолавун Туркиядаги Киликияни озод қилди. Мазкур ерда у кичик Арманистон подшоси Ҳайсум устидан ғалаба қозонди. Сайфиддин Қолавун насронийлар устидан катта ғалабага эришиб, беҳисоб ғаниматларни қўлга киритди ҳамда салибчилар ва армани насронийлардан 40 минггини асир олди.⁸⁷⁶

Зоҳир Бейбарс 665–666/1267–1268 йилда Яфани озод қилди. 666 йил 4 рамазон/1268 йил 25 майда Антакия озод қилинди, насроний амир Бухманд мағлубиятга учради.⁸⁷⁷ Маълумингизки, мусулмон ўлкаларидан энг биринчи Антакия 491/1098 санада салибчилар қўлига кирган эди. Зоҳир Бейбарс вафот этганда Ислом мамлакатларидан саноклиларигина мустамлака ҳолатда қолганди. Жумладан, Акко, Сур, Сайда, Байрут, Тартус, Лазикия кабилар хануз салибчилар ҳукмида эди.

⁸⁷⁵ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/465).

⁸⁷⁶ Сиржоний «Қиссатут-татар» (349-бет).

⁸⁷⁷ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/476).

684/1285 йил Тарабулус мамлуклар султони Мансур Қолавун кўли билан озод қилинди.⁸⁷⁸ Бу киши мусулмонларнинг улуғ султонларидан бўлиб, салибий подшоҳликлар ҳукмида қолган мусулмон ўлкаларни ҳаммасини озод қилди. 690/1291 йил қўрғонли Акко озод қилинди.⁸⁷⁹ У икки аср атрофида салибийлар ҳукмида бўлган эди.

Акко амирлиги ишғол қилингандан сўнг, Шомдаги салибий амирликларнинг мажоли қолмади. Акко ишғолидан кўп ўтмасдан Сайда, Сур, Байрут, Жубайл, Тарабулус ва Лазиқия озод қилинди.⁸⁸⁰ Шундай қилиб, Айн-Жалут жангидан 32 йилдан сўнг, Шомда бирорта салибий амирликлари қолмади. Бу ютуқлар Айн-Жалут ғалабасининг самараларидан эди. Йилларча боши эгилган мусулмонлар қисқа вақт ичида бошларини кўтариб, яна азиз бўлдилар.

Тўққизинчи самара: Айн-Жалут ғалабаси ва Мамлуклар давлати шаклангандан кейин Миср пойтахти Қоҳиранинг қадри кўтарилди. Ўша замонда Мамлуклар давлати минтақадаги энг буюк давлат мавқеида бўлса, Қоҳира ўша давлатнинг пойтахти эди. 636/1238 йилда Қуртуба шаҳри, 656/1258 йил Бағдод вайрон қилингандан сўнг, мусулмон ўлкалари орасида Қоҳира шаҳридан бошқа илм-маърифат, куч-қувват марказлари қолмаган эди. Қоҳира бу шаҳарларнинг энг улуғига айланди. Унга олимлар ва адиблар ташриф қила бошлади. Илмий изланишлар авж олди, Азҳарнинг мавқеи кенгайди. Оллоҳнинг фазлу марҳамати ила Ислом оламидаги университетларнинг энг улуғига айланди. Оллоҳга ва Унинг динига даъват, илм-маърифат кучайди, султонларга ҳақни очик ва баралла сўзлай оладиган олимлар етишди ва бу илмлар ҳозирги кунимизгача авлодларга мерос бўлиб келмоқда.

Ўнинчи самара: Бу самара алоҳида аҳамиятга эга бўлиб, ҳар қандай муфаккир эътиборини жалб қилмай қолмайди. Одатда мустамлакачилар босиб олган ерларига ўз маданиятларини ҳар хил услуб билан олиб кирадилар, сингдирадилар. Бунинг баёнида она тилларини-да унутаёзган ўзбек, қозок, қирғиз, қипчоғу озар ва бошқа туркий миллатларнинг русийзабонга айланганини мисол қилишга ҳожат йўқ. Уларни айблаш ўрни ҳам эмас. Чунки бу бир ҳаёт қоидасидирки, унда заифлар кучлиларга эргашади. Аслида инсонларни нималаргадир сиғиниб кетишига ҳам асосий сабаб ана ўша кучдир. Ҳа, барча инсон кучлига истаса истамаса интилади. Шунинг учун биз ягона ва мутлақ куч эгаси бўлган Оллоҳга сиғинамиз. Мўғул мустамлакачиларининг маданияти Ислом тамаддунига бардош бера олмади. Мўғуллар ўзлари босиб олган

⁸⁷⁸ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/597).

⁸⁷⁹ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/631).

⁸⁸⁰ Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/635).

ерларининг маданиятида эриб кетган илк қавм бўлди, десак адашмасмиз. Мўғуллардан Ислом динини яқиндан кўрган, унинг асослари ва қонун-қоидаларини ўқиган ва ундаги одоб ва фазилатларга озроқ назар ташлаган ақл эгалари бу порлоқ ҳақиқат ва кучли маданият қаршисида ўз маданиятларида собит тура олмадилар.

«Заҳабия қабиласига» (Олтин Ўрда) мансуб мўғул бошлиқларидан бири иймонга келди. Бу қabila мўғул қабилаларининг катта тармоқларидан бири бўлиб, у Ҳулағунинг бевосита амакисининг ўғли ва саркарда Ботухоннинг укаси, яъни Жўжихоннинг ўғли — Чингизхоннинг невараси эди. Бу мўғул бошлиғи 650/1252 йил Исломга киргандан сўнг, Берке исми билан лақабланди. У 655/1257 йил Заҳабия қабиласига бош бўлди⁸⁸¹ ва «Беркехон» деб атала бошлади. Айн-Жалут жангидан бир неча йил олдин бошлиқ бўлган Беркехон мўғуллар давлатидан ташқарида Каспий денгизининг шимолий минтақаларида мустақил равишда ҳукм юргизар эди. У Исломга киргандан кейин, унинг қабиласидан кўпчилик Исломни қабул қилишган эди. Бу ҳодиса Айн-Жалут жангидан олти йил олдин, муғул маданияти устун бўлган бир замонда юз берди.⁸⁸² Бир қарашда қувват эгаси бўлганлар заифларнинг динига кирган эди. Айн-Жалут жангидан кейин эса, Заҳабия қабиласининг барчаси мусулмон бўлди. Уларга ғалаба ва Исломнинг қуввати таъсир қилган эди. Улар вақти келиб, Зоҳир Бейбарс билан Ҳулағунинг зиддига иттифок қуришди.⁸⁸³

Айн-Жалут жангининг бундан бошқа кўплаб самараларини санашингиз мумкин, уларни таҳлилчи ва илмий тадқиқотчиларга ҳавола қиламиз.

Дарҳақиқат, бу жанг бутун Ер қурраси тарихидаги энг улуғ жанглар жумласидан бўлган, десак муболаға бўлмайди.

⁸⁸¹ Муҳаммад Сухайл Тоқуш «Тариху мўғул ал-қобилатуз-заҳабия вал-ҳинд».

⁸⁸² Сиржоний «Қиссатут-татар» (351 -бет).

⁸⁸³ Ғомидий «Жиҳадул-мамолийк» докторлик рисоласи (157-бет).

НУСРАТ ВА МАҒЛУБИЯТ САБАБЛАРИ

НУСРАТ САБАБЛАРИ

Мусулмон аскарнинг тайёргарлик босқичлари ҳақида етарлича гапирдик. Бу ўринда қисқача нусрат сабаблари зикрига чекланамиз.

Биринчи сабаб: Иймон, у нусрат сабабларининг энг биринчи ва энг улуғидир. Нусрат фақат Оллоҳ таоло тарафидандир. Шунинг учун ҳам Қутуз мусулмон аскар ва умматнинг иймоний жиҳатига катта эътибор қаратди. У мўғулларга қарши курашда халқнинг исломий бурчини уларга англатди. Ёдингизда бўлса, Қутуз жанг майдонида «Во Мисреей!» ёки «Подшоҳлигимеёй!» ёки «Во Арабоо!» демади, балки «Во Исломах!» — деган эди. Нусратнинг буюк сабаби мутлақо иймон экани, Қутузнинг жанг майдонида, аҳвол жуда қийинлашганда Оллоҳга ёлворганида янада равшан бўлди. Ўша ўринда у: «Эй Оллоҳ! Банданг Қутузни мўғуллар устидан ғолиб қилгин», дея муножот қилган эди. Дуо ибодатдир. Инсон бандалигини Яратувчисига эътироф қилиши, Унга муҳтожлигини билдириши дуонинг ижобат бўлиш сабабларидандир. Оллоҳ азза ва жалладан мунтазам, илҳох бўлиб, хушув ва тазаррув билан Ислому ва мусулмонларга нусрат сўраш ҳар бир мусулмон бурчидир.

Иккинчи сабаб: Мусулмонлар ўртасидаги бирдамлик. Тарқок уммат ғолиб бўлолмайди. Қутуз Мисрга волий бўлган дастлабки кунлардан бошлаб қўлидан келганича мусулмонларни бирлаштиришга ҳаракат қилди. У Баҳрий мамлукларни афв қилиб, уларни Муъиззий мамлуклар билан бирлаштирди. Шомдаги Айюбий амирликларини бирлашишга чорлаб элчилар юборди. Ҳолбуки, улар узок йиллар давомида Мисрга уруш қилиб келарди. Шунга қарамай уларни бирлашишга чақирди ва келганларига бағрини очиб кутиб олди. У ўз сафига Шом ва Хоразм аскарларини ва ўз ихтиёри билан келган кўнгилли жангариларни қўшиб олди.

Учинчи сабаб: Умматдаги Оллоҳ йўлидаги жиҳод руҳини жонлантириш. Қутуз мусулмонларнинг ҳуқуқларини қайтариб олишнинг муҳим йўли мужодала эканига, Ислому дини тинчлик ва омонлик дини бўлиши билан бирга у муқаддас кураш, қувват, қаромат ва иззат дини эканига ишончи қомил эди. Қутуз баъзида уруш йўлини танлаш, ягона ечим бўлишини равшан идрок қилди.

Тўртинчи сабаб: Жанг учун муносиб тайёргарлик кўриш. Қутуз лашкарни қувватлаш мумкин бўлган барча сабабларни амалга оширди. Жумладан, у қурол-аслаҳа ҳозирлаш, аскарний машғулотлар, сафларни

тартиблаш, муносиб режалар тузиш, жанг майдонини тўғри танлаш, дипломатик алоқалар ўрнатиш ишларини амалга оширган эди.

Бешинчи сабаб: Ўрнак — намуна бўлиш. Қутуз мусулмон аскар ва уммати учун барча амалларда ўрнак бўлди. Ўрнак бўлиш, курук кўтаринки сўз ва хитоблардан минг марта афзал тарбиядир. Қутуз хулқда, ҳалолликда, жанг майдонида, иймонда, афв қилишда, ҳамма-ҳамма нарсада умматга намуна бўлган эди.

Олтинчи сабаб: Уммат душманларини дўст тутмаслик. Қутуз мўғуллардан қувватда ва тайёргарликда кучсиз бўлса ҳам, уларни дўст тутмади, яъни улардан омонлик сўрамади. Шунингдек, Шомдаги насронийлар иттифокчилик кўлини чўзиб турса ҳам, уларнинг ёрдамига муҳтожлиги бўлса ҳам, уларни дўст тутмади, яъни улар билан ҳамкорлик қилмади. Ундан олдин баъзи мусулмон амирлар ва подшоҳлар, сўнгра уларнинг ортидан халқ ҳам кофирларни дўст тутди, улардан омонлик сўради ёки ҳамкорлик қилди, оқибатда эса кофирлар уларнинг бошларига қора кунларни солди. Улар шаръий хатога йўл қўйган эдилар. Чунки ҳимояланиш лозим бўлиб турганда уни тарқ қилиш бир хато бўлса, халқни Ислому душманларига бўйсундириш иккинчи хато ва душманни дўстлик қилади, деб билиш учинчи хатодир. Лекин Қутуз Оллоҳнинг шариатини маҳкам ушлагани учун буларни теран фаҳмлар ва мусулмонлар зарарига ҳеч қачон кофирларни дўст тутмаган эди.

Еттинчи сабаб: Уммат ва лашкарда умид руҳини жонлантириш. Уммат қаттиқ тушқунликка тушган ва нусратдан умиди узилган эди. Руҳан тушқун умматнинг нусратга эришиши амримаҳолдир. Лекин ноумидлик, тушқунлик мўминларнинг сифати эмас. Оллоҳ таоло марҳамат қиладики:

«Оллоҳнинг раҳматидан фақат кофир қавмгина ноумид бўлур».⁸⁸⁴

Қутуз лашкарнинг ва умматнинг руҳиятини кўтаришга ҳаракат қилди. Ва уларга Оллоҳ йўлида юрганларга Унинг Ўзи нусрат беражаги таъкидланган экани ва бу иш ақидавий масала эканини англатди. Оллоҳ азза ва жалла айтадики:

«Оллоҳ: «Шак-шубҳасиз Мен Ўз пайғамбарларим билан бирга ғолиб бўлурман», деб ёзиб қўйгандир. Албатта Оллоҳ кучли, қудратлидир».⁸⁸⁵

⁸⁸⁴ Юсуф: 87.

⁸⁸⁵ Мужодала: 21.

Саккизинчи сабаб: Кенгаш-маслаҳатга асосланиш. Қутузнинг тақрибан барча режалари маслаҳат асосида бўлган эди. Маслаҳатлашиш Ислох ҳукмларининг асосларидандир. Уммат бу асосга эътиборли бўлмоғи лозим.

Тўққизинчи сабаб: Ишларнинг ўз эгаларига топширилиши. Қутуз малака ва омонат сифатларига эга бўлганларни волий этиб тайинлади. Яъни ишга яроқли, қобилиятли ва илгари шу каби ишларни қилган, Оллохнинг ҳақлари ҳамда уммат ва ўз нафси олдидаги омонатларни риоя қилувчиларни волий қилди. Қутуз Баҳрий мамлуклар билан алоқа кескин бўлган бир пайтда улардан бўлган Форисиддин Ўқтой Соғйирни армия кўмондони мансабига қўйди. Айн-Жалутда лашкар муқаддимасига Руқунуддин Бейбарсни сардор қилди. Шунингдек, Шомга ўзининг яқинларини эмас, балки Шом амирларини ўзларини амир қилиб тайинлади.

Ким омонатни муҳофаза қилса, оламлар Рабби ҳам уни ҳимоя қилади.

Ўнинчи сабаб: Дунёдан парҳез қилиш. Ҳар қайси замонда ва маконда дунёга кўзини тиккан бошлиқлар ва эзгуликни унутган умматларнинг енгилишлари турган гапдир. Муҳаммад ибн Хоразмшоҳ, Жалолоддин Мангуберди, Мустаъсим Биллах, Бадриддин Луълуъ, Носир Юсуф Айюбий ва бошқаларнинг қиссалари зикр қилинди. Улар дунёни дўст тутиб хатога йўл қўйдилар. Қутуз аксарият бошлиқлар гирифтор бўлган дунёдан зоҳид бўлди ва унга фитналанмади. Қўлига беҳисоб ғаниматлар, бойликлар кирди, лекин унга қиё боқмади. У дунёни сотиб, эвазига жаннатни сотиб олган эди. Бор мулкни мўғулларга қарши ҳозирлик кўраётган мусулмон кўшинга сарфлади, тахт учун ҳарис бўлмади, ҳатто Миср ва Шомни бирлаштириш илнжида Носир Юсуфга тахтни топшириши ва ўзи унга ноиб бўлишини айтган эди. Айн-Жалут жангида душман ҳаммадан ҳам унинг ўлимига ҳарис бўлишига қарамай, у жанг майдонида жонбозлик кўрсатган ва Оллох йўлида ўлишни орзу қилган эди.

МАҒЛУБИЯТИМИЗ САБАБЛАРИ

Асримиздаги кофирлар ва мўғуллар ўртасидаги ўхшашлик оз бўлсада тафаккур қилган кишига осонликча кўринади. Замон ва макон фаркли бўлсада куфр миллати ва уларнинг мақсади бирдир. Бугун асримиз кофирларининг мўғулларга ўхшашлиги бизни кўрқитмасда ўзимизнинг ўша асрлардаги мусулмонларга ўхшашлигимиз таҳликалидир. Мусулмонлар нусрат сабабларини бажарсалар, душмани ким, мўғул, яхуд, насоро, хиндус, оташпараст ёки атеист бўлиб, ўта қувватли бўлса ҳам улардан енгилмайдилар.

Мусулмонлар мўғуллар асрида нусрат сабабларидан ғофилликлари натижаси ўлароқ мағлубияту муваффақиятсизликка юз тутдилар. Улар ахлоқий ҳасталликлар исканжасида на тарихга ва на маданиятга эга бўлган мўғуллар қаршисида мағлуб бўлдилар. Бугунги кунимиз кечаги кечмишимизга бунчалар ўхшаш бўлмаса!

Сони миллиарддан зиёд бўлган мусулмонлар устига бугун бир ҳовуч золимлар ҳар турли мусибатларни ёғдирмоқда. Нима сабаб Оллоҳ таоло душманлари қалбидан мусулмонлар ҳайбатини олиб қўйиб, мусулмонлар қалбига ваҳн, заифлик ва лоҳасликни солди? Бу каби саволлар жавоби тарих саҳифаларида баён қилинган, улардан баъзиларига ушбу қиссамизда оз-кўп воқиф ҳам бўлдик.

Қутуз раҳимаҳуллоҳ даврида амалга оширилган нусрат сабабларини зикр қилдик. Ушбу нусрат сабаблари Расулulloҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам кунлари, ҳозирги кунимиз ва то қиёмат ўзгармас илоҳий қонунлардан бири бўлиб қолаверади.

«(Бу) илгари ўтган зотлар ҳақидаги Оллоҳнинг йўли-қонунидир. Оллоҳнинг йўлини эса ҳаргиз ўзгартира олмастиз».⁸⁸⁶

Мусулмонлар мағлуб ва заиф бўлган замонларга диққат қилинса, бунга сабаб уларнинг нусрат сабабларидан йироқ бўлиши ёки маънавий иллатларга мубтало бўлганлигига гувоҳ бўламиз. Шундай экан, бу иллатлар нима эканлигига қисқача тўхталиб ўтсак:

Биринчи иллат: Мақсаднинг равшан эмаслиги. Оллоҳнинг нусрати Унинг шариатини татбиқ қилиш ва ягона Ислом байроғи атрофида

⁸⁸⁶ Ахзоб: 62.

жамланиш билан амалга ошади. Айн-Жалут жангидан кейин маълум бўлган асл исломий қоида:

«Агар сизлар Оллоҳга ёрдам берсангизлар (яъни, Унинг динини барпо қилсангиз), У зот ҳам сизларга ёрдам берур»,⁸⁸⁷ қоидасидир.

Иккинчи иллат: Мусулмонлар ўртасидаги бўлиниш ва тарқоқлик. Мусулмонларнинг мўғулларга мағлуб бўлишининг асосий сабабларидан бири ҳам шу эди. Бугунги кунимизда ҳам тарқоқлик иллатига дучор бўлган мусулмон уммати бу иллат оғриғидан инграмоқда.

«Ва Оллоҳ ҳамда Унинг пайғамбарига итоат қилингиз ва (ўзаро) талашиб-тортишмангизки, у ҳолда суस्ताшиб, куч-қувватингиз кетур. Сабр-тоқат қилингиз! Албатта, Оллоҳ сабр қилгувчилар билан биргадир»,⁸⁸⁸ бу ояти карима душманлар қаршисидаги мағлубиятимизни тафсир қилади.

Учинчи иллат: Дунёга ҳирс кўйиш. Мўғуллар замонида мусулмонлар дунё билан қаттиқ фитналанганидек, бугун ҳам унга ружу кўймоқдалар. Аксинча, асримизда бу ҳақир дунёнинг ўлчами, афсуслар бўлсинки ҳар қандай кадриятлардан устун келмоқда. Ёшларимиз фахри уммат қаҳрамонлари Холид ибн Валиду, Салоҳиддин Айюбийлар эмас, Марадонаю, Роналдо бўлиб қолди. Ўзимиз эса ҳақни эмас нафси тусаганини, ҳалолми-ҳаромми ундирган ёшларимизни «учар йигит», «шоввоз» дея мактайдиган бўлиб қолдик. Олди-берди, куда-андачилигимиз ўлчови ҳам фақат дунё, мато ва пулга айланди.

«Биз қачон бирон шаҳарни ҳалок қилишни истасак, унинг боёнларини (яъни, маишатпарастларини) (итоатга) амр қиламиз, бас, улар ун(шаҳар)да бузғунчилик қилурлар, шунда у шаҳар (аҳолиси) устига Сўз (азоб тушиши) вожиб — муқаррар бўлур. Бас, биз уни вайронага айлантирурмиз».⁸⁸⁹

Ҳозирги кунда маишат, фароғат барча мусулмон хонадонларга кириб борди, десак муболаға бўлмас. Баъзиларимизнинг фарзандларига таълим беришга вақти йўқ, лекин ойнаи жаҳон ёки интернет қаршисида кундузларини кўя тулинг, бутун кечаларини на дунёсига ва на охиратига фойдаси бўлмаган сериаллар кўриш ёки ўйинлар ўйнаш ёки спорт кўрсатувларини кўриш билан овора, ёки вақти топилган тақдирда ҳам, ҳали ўзи таълимга муҳтож! Ва лаа ҳавла ва лаа қуввата иллаа билаҳ...

⁸⁸⁷ Муҳаммад: 7.

⁸⁸⁸ Анфол: 46.

⁸⁸⁹ Исро: 16.

Мусулмонларнинг бу аҳволи жуда ачинарли! Биз ўзимиздаги бу хато ва камчиликлар, касалликларга эътибор беришимиз ва уларни тузатишимиз лозим. Мусулмонлар ўзларини ислоҳ қилмагунича ва Раббилари Оллоҳга қайтиб, Унинг шариатини татбиқ қилмагунларича улардан нусрат кечикаверади. Мусулмонлар Оллоҳнинг Ер юзидаги суннат-қонунларига мос келсагина нусратга эришадилар. Бунга тарих ва воқелик очиқ гувоҳдир.

Тўртинчи иллат: Оллоҳ йўлидаги жиҳодни тарк қилиш. Бу эса дунёга шўнғиб ҳар ким ўз ғамида яшаши натижасидир. Мусулмонлар Оллоҳ йўлидаги жиҳоднинг барча: маданий, маърифий, илмий, ижтимоий, ҳарбий ва иқтисодий турларини тарк қилиб, умматни бошқариш вазифасини қўлдан олдириб, элатларга тобе бўлишга рози бўлди, натижада душманнинг чизган чизиғидан чиқмайдиган бир миллатга айландик. Ўз ҳуқуқларимизни талаб қилиш эса жиноятга айланди. Бу иллат тузалмайди деями ёки кўникиб қолдикми, ҳар ҳолда иллатнинг давоси бизни қизиқтирмай ҳам қўйди.

Тарихда умматимиз шу иллатдан холи бўлиб, соғлом ва бақувват бирлиги билангина оёққа турган ва динни қоим қилганига гувоҳ бўламиз. Тарих ибратларга бойдир...

Бешинчи иллат: Муқаддас кураш учун тайёргарлик йўқлиги. Афсуски жиҳодга тайёргарлик ҳақида сўз юритадиган ҳолимиз ҳам йўқ. Чунки ўзини ўзи ҳимоя қилиш ҳақида ўйламаган тоифа жиҳодга қандай тайёргарлик кўрсин. Атрофга назар солинг, ўзимизни ҳимоя қиламиз деганлар, армия, қурол-аслаҳа ҳамда уларни такомиллаштишига сабаб бўлган барча асосларни етиштириб бормоқда. Ҳамда ўзларининг чегараларида эмас, биз мусулмонлар ерида ичимизга кириб, минтақада урушлар юзага келтириб, миллатимизни кириб, еримизни босиб олиб, энг ачинарлиси ўз еримизда ўзларини ҳимоя қилувчилар эканликларига бизни ишонтиришларидир. Демак, улар ҳужумни ҳимоя санадилар. Ҳа! Албатта шундай санайдилар. Биз қачон хулоса қиламиз?! Бизга ҳуррият дея қуллиқни, адолат дея зулмни олиб келиб, бунга қарши жонларини фидо қилган ота-боболаримизга босмачи, бугун эса, террорист тамғасини ўз ўғлонлари тилида жорий қилганларчи?! Улар ҳам шу тариқа ўзларини ҳимоя қилган эдиларми?! Биз ҳамон уйқудамиз...

Улар ўз мақсадларига эришдилар. Биз динимиздан узоқ бўлиб гоёмизни утутдик. Энди дунёга машҳур олимлару ихтирочилар ўрнига спортчилар, қўшиқчи хонандалар, раққосалар, созандалару, қизиқчи-масхарабозлар билан шуҳрат қозонмоқдамиз.

Умнат бу аҳволда бўлса, қандай қилиб нусратга эришсин?!

Олтинчи иллат: Намуна-ўрнакнинг йўқлиги. Қутуз халқини унга чақирган барча шиорларини амалга оширишда унинг ўзи биринчи сафда тура олди — ўрнак бўлди. Оллоҳ таоло бизнинг элатларга ҳам ана шундай ўрнак бўладиган қондлар насиб қилсин.

Еттинчи иллат: Уммат душманларини дўст тутиш. Душманларни дўст тутиш ҳалокатга етакловчи хатарли касалликдир. Бу касаллик Ислом умматини мағлуб бўлишига олиб келадиган асосий сабаблардан ҳисобланиб, дунё шармандалиги ва охират азобига ҳам сабаб бўлади,

«Эй мўминлар, сизлардан илгари китоб берилганлар ичидан динингизни ҳазил-масхара қилиб олган кимсаларни ва кофирларни дўст қилиб олмангиз! Агар мўмин бўлсангизлар, Оллоҳдан қўрқингиз!»⁸⁹⁰

Қиссамизда мўғулларни ёки насронийларни дўст тутган амирлар ва халқларнинг шу дунёдаги шармандаликларига гувоҳ бўлдик. Ўзи, уммати ва динини шайтон ва унинг малайларига сотганлар, дунё ва охиратини бой беришини билмасмилар?! Балки ўша пайт у қайсидир маънода фойда кўргандай бўлар, бироқ охир-оқибат барибир зиёндадир, кошки буни англаб етсалар!

«(Яхудийларни мўминларга қаршилик қилишга гиж-гижлаётган мунофиқлар) худди шайтоннинг ўхшашидирлар. Эсланг, у инсонга «Кофир бўл», деган эди. Энди қачонки (инсон) кофир бўлгач, (шайтон унга) «Албатта мен сендан безорман. Зеро, мен барча оламлар Парвардигори бўлмиш Оллоҳдан қўрқурман», деди. Бас, иккисининг (шайтон ва унинг сўзига кириб, кофир бўлган инсоннинг) оқибати дўзахга кириб, унда мангу қолишлари бўлди. Золим кимсаларнинг жазоси шудир!»⁸⁹¹

Саккизинчи иллат: Ноумидлик. Ноумид ва руҳан тушкин умматнинг нусрати амримаҳолдир. Ҳолбуки ноумидлик мўминларга ёт нарсадир.

«Парвардигорининг фазлу раҳматидан фақат гумроҳ кимсаларгина ноумид бўлурлар»⁸⁹².

Ислом душманлари мусулмонлар қалбига қўрқув солишга уринишлари тарихда ҳам, ҳозирги кунимизда ҳам, бундан кейин ҳам

⁸⁹⁰ Моида: 57.

⁸⁹¹ Ҳашр: 16, 17.

⁸⁹² Ҳижр: 56.

учрайдиган бир ҳолат. Биз тарихимизга қалб кўзи билан назар солсак бундай ҳолатлар муолажасини ва бу иллатлар шифосини яққол кўраемиз.

«Ёмон макр-ҳийлалар қиладиган кимсалар учун эса қаттиқ азоб бордир ва уларнинг макрлари ҳам ҳалок бўлур (яъни, беҳуда кетур)».⁸⁹³

«Ва Оллоҳ харгиз кофирлар учун мўминлар устига йўл бермагай».⁸⁹⁴

Ер юзига ўзининг қора соясини солиб турган баҳайбат мўғул қувватининг синдирилиши кўз ўнгимизда. Қутуз раҳимахуллоҳ халқни ва аскарни маънан ва руҳан жонлантирди. «Арслон боласини тутмоқ учун арслон инига кирмоқ лозим» деганларидек ҳар бир мақсадга етиш учун ўшанга лойиқ сабабларни қилиш керак бўлади. Аҳвол қанча қийинлашиб, мусибатлар қанча ортса, нусрат ҳам шунча яқин келади.

«Ёки (эй мўминлар), сизлардан илгари ўтган зотлар ибрати сизларга келмай туриб жаннатга киришни ўйладингизми? Уларга бало ва мусибатлар (устма-уст) келиб, шундай ларзага тушган эдиларки, ҳатто пайғамбар ва иймонли кишилар: «Ахир қачон Оллоҳнинг ёрдами келади?» дейишган эди. (Шунда) уларга бундай жавоб бўлган эди: «Огоҳ бўлингизки, Оллоҳнинг ёрдами яқиндир».⁸⁹⁵

Кулфат ва мусибатлар энг охириги нуктага келганда Оллоҳнинг нусрати келади, бу эса Роббул-оламийнинг кавний (қоинотда жорий қилган) қонунларидандир.

Тўққизинчи иллат: Ишни ўз эгаларига топширилмаслиги. Буни бир томондан омонатсизлик десак ҳам бўлади. Жамиятда ҳар бир касб ва ҳар бир лавозимнинг ўз эгаси, устаси бўлиб ҳар бир инсон ўз масъулиятини ҳис қилган ҳолда иш юритиши лозим. Бу қоидадан чиқишлик ҳар доим тартибсизлик ва муваффақиятсизликка олиб келади.

Ўнинчи иллат: Кенгаш йўқлиги. Ислонда маслаҳатлашиш шаръий ҳукм асосларидандир. Ишларни маслаҳат асосида қилмаган киши, хоссатан бошлиқ хато ортидан хатога йўл қўйиши турган гап. Ҳаммасидан ҳам бу Оллоҳнинг қуйидаги буйруғига муҳолиф иш тутишдир, **«Ва ишларингизда уларга маслаҳат солинг!»**⁸⁹⁶

⁸⁹³ Фотир: 10.

⁸⁹⁴ Нисо: 141.

⁸⁹⁵ Бақара: 214.

⁸⁹⁶ Оли Имрон: 159.

Бу ўнта иллат, ҳамма даврда ҳам, мағлубиятнинг асосий сабаблари жумласидан бўлиб қолаверади.

Умматни хорликдан чиқиб, азиз бўлишини истаган мухлис банда юкорида зикри ўтган ва бошқа иллатлардан сақланиб, нусрат сабабларини ушлаши лозим.

Оллоҳга қасамки, кунлар ўтади, замон эса ўзгаради ва Ислом уммати албатта нусратга эришади. Мўғуллар даврида бугунги кунимиздан янада мазлумроқ бўлган бу уммат, елкасидаги бу зулм тоғларини ирғита олади, иншооллох. Ишончимиз комилки аждодларимизга Қутуз туғиб берган бу уммат пушти ҳали қуриганича йўқ.

«Албатта сизлар унинг хабарини (озгина) вақтдан сўнг билиб олурсизлар».⁸⁹⁷

«Бу кунларни (яъни, ғалаба ва мағлубият кунларини) одамлар орасида айлантриб турамиз».⁸⁹⁸

Музаффар Қутуз сийрати

Мўғул-татар қиссида тарих йўналишини муайян бир шахс таъсирида батамом ўзгарганига гувоҳ бўлдик. Бу шахслар Чингизхон ва Қутуздир. Улар Ер қуррасининг жўғрофий ҳолати ва инсониятга катта таъсир ўтказган ҳамда тарихни жумбишга келтирган бўлсаларда, бироқ улар орасида улкан тафовут бордир. Қутуз ўз қувватини иймон ва шариатдан, ҳа, ўша зилол манбадан олди. Сув жисмоний ҳаёт манбаи бўлгани каби Ислом шариати маънавий ҳаёт манбаидир. У адолат, самимият, мурувват, хурмату иззат, борингки барча эзгулик манбаидир. Уларсиз ҳар қандай тирик жонга тириклик ортиқчадир. Аммо Чингизхон эса ўз кучини беаёвлик, бешафқатлик, қурол-аслаҳа ва ваҳшийлик қонунидан олди. Маълумингизки, бузиш осон, лекин бунёд қилиш қийин; зулм қилиш осон, бироқ адолат қилиш қийин; қаҳр-ғазаб қилиш осон, аммо афв қилиш машаққатдир.

Баъзи тарихчилар тарихни ўзгартирувчи ва уни ҳаракатга келтирувчи, Оллоҳдан кейин инсоннинг ўзи эканини тан олмайдилар. Ҳолбуки, бун тарихнинг ўзи тасдиқлайди. Турли давр ва маконларда муайян шахслар пайдо бўлиши билан тарих ҳаракатга келган ва тубдан ўзгарган. Масалан, Абу Бакр Сиддик, Умар ибн Хаттоб разияллоху анхумо даврларида тарих ҳаракатга келди, катта футуҳотлар бўлди. Умар ибн Абдулазиз, Мусо ибн Нусайр, Абдуррахмон Дохил,

⁸⁹⁷ Сод: 88.

⁸⁹⁸ Оли Имрон: 140.

Абдуррахмон Носир, Имодуддин Зинкий, Нуриддин Маҳмуд, Салоҳиддин Айюбий, Муҳаммад Фотиҳ, Абдуллоҳ ибн Ёсин, Юсуф ибн Ташфин, Сайфиддин Қутуз раҳимаҳумуллоҳ ва бошқалар тарихни жумбишга келтирдилар.

Ҳолбуки, улар турли замонларда яшаб ўтган эдилар. Муттафакун алайҳи ҳадисда, Абдуллоҳ ибн Умар разияллоҳу анҳумо ривоят қиладики: «Мен Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламнинг: *«Одамлар бамисоли орасида бирорта ҳам минишга яроқлиси йўқ юзта туяга ўхшайдир!»* — деб айтганларини эшитганман, дедилар».⁸⁹⁹ Лекин шу минишга яроқлиси топилса, Ер аҳлининг бахтидир.

Абу Довуд «Сунан»ларида Абу Ҳурайра разияллоҳу анҳудан ривоят қиладики, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам дедилар: *«Албатта Оллоҳ бу умматга ҳар юз йил бошида унинг динини янгилайдиган кишини юборади»*.⁹⁰⁰

Қутузнинг ўша янгиловчилардан бўлганида шубҳа йўқ. Имом Заҳабий ўзининг «Сияру Аълам ан-Нубала» китобида Қутузни шундай васфлайди: «У довюрак, устамон, диндор, эл ардоқлаган, Айн-Жалут кунни мўғулларни енгиб, Шомни озод қилган, оқ-сарикқа мойил, серсакол ва серсавлат навқирон йигит эди. Оллоҳ йигитлигини жаннатла эвазласин ва ундан рози бўлсин!»⁹⁰¹

Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя»да Қутузни шундай сифатлайди: «У серсаховат, шижоатли қаҳрамон, Ислом ва мусулмонларга самимий эди. Одамлар уни яхши кўриб, унинг ҳақкига мудом дуои хайрда эдилар». Мусулмон тарихчиларнинг одамларнинг бирор кишига, хоссатан бошлиққа муҳаббатли бўлганини зикр қилишлари эътиборга лойиқ нозик нуқтадир. Зеро, умматнинг солиҳ кишилари фақат солиҳ кишиларнигина яхши кўргани, бузғунчи ва фосиқ кимсаларни эса ёмон кўргани кундай равшандир. Солиҳ кишиларнинг бир кишини яхши кўриши, унинг Оллоҳ таолонинг яхши кўрган бандаси эканилигига, шунингдек, уларнинг бир кишини ёмон кўриши, унинг Оллоҳ таолонинг ёмон кўрган бандаси эканилигига ишора бўла олади.

Имом Муслимнинг ривоятларида келишича, Абу Ҳурайра разияллоҳу анҳу ривоят қилади, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам: *«Агар Оллоҳ таоло бирор бандасини яхши кўрса, Жаброил алайҳиссаломни чақириб: «Мен фалон кишини яхши кўраман, сен ҳам уни яхши кўргин», дейди. Кейин Жаброил алайҳиссалом ҳам уни яхши кўради*

⁸⁹⁹ Бухорий (6498) ва Муслим (2547).

⁹⁰⁰ Абу Довуд ривояти.

⁹⁰¹ Заҳабий «Сияр аълам ан-нубала» (23/200–201).

ва осмон аҳлини чақириб: «Оллоҳ таоло фалон кишини яхши кўрди, сизлар ҳам уни яхши кўринглар», деса, осмон аҳли ҳам ўша кишини яхши кўришади. Кейин бу нарсани ер аҳли ҳам қабул қилиб олишади. Агар Оллоҳ таоло бирор бандасини ёмон кўрса, Жаброил алайҳиссаломни чақириб: «Мен фалон кишини ёмон кўраман, сен ҳам уни ёмон кўргин», дейди. Бас, Жаброил алайҳиссалом ҳам уни ёмон кўради. Кейин осмон аҳллари чақириб: «Оллоҳ фалон кишини ёмон кўради, сизлар ҳам уни ёмон кўринглар», деб айтади. Кейин бу ёмон кўриш ер аҳлида ижро бўлади (яъни, бу киши Ер юзида ҳамманинг кўзига ёмон кўрина бошлайди)», дедилар.⁹⁰²

Изз ибн Абдуссалом шундай деди: «Мусулмонларга Умар ибн Абдулазиз раҳимахуллоҳдан кейин Қутуздек салоҳият ва адолат билан ҳукм қилувчи киши волий бўлмади». ⁹⁰³ Бу Қутуз раҳимахуллоҳнинг Ислоом майдонидаги кадр-қийматидир.

Воқеи ҳаётимизда Қутуз каби жонкуярлар ва мўғуллар сингари бузғунчиларнинг ходисалар саҳнаси тўридан жой олиши табиий ҳолдир,

«Лекин Оллоҳ ҳалок бўлгувчилар очиқ ҳужжат билан ҳалок бўлсинлар, тирик қолгувчилар ҳам очиқ ҳужжат билан тирик қолсинлар, деб қилиниши керак бўлган ишни амалга ошириш учун (тўкнашдингиз)».⁹⁰⁴

Қутузнинг ўлими

Сайфиддин Қутуз қиссасининг охири ва аянчли саҳифалари харфларини ўқувчини ҳайрат тўлкинида қолдирсада ёзишга мажбурмиз. Бу қиссанинг аянчли томони Қутуз раҳимахуллоҳ Миср тахтида 11 ойу 17 кунгина ўтиргани, холос.⁹⁰⁵ Гўё у бир вазифа — умматга ўзлигини танитиб қўйиш учунгина тахтга ўтиргандай, Айн-Жалут ғалабасидан 50 кундан сўнг дунёни тарк қилди.

Рукниддин Бейбарс ўзига Ҳалаб волийлигини берилмагани натижаси ўлароқ эски адовати кўзғалиб, амир Сайфиддин Булбон Рошидий, амир Сайфиддин Баҳодир Муъиззий, амир Бадриддин Муъиззий, амир Байдағон Рукний, амир Булбон Ҳоруний, амир Бадриддин Анас Исбаҳонийлар билан Подшоҳ Музаффар Қутузни ўлдиришга яширинча келишиб оладилар. Бу иш бўлиши керак экан, бўлди. Тақдирдан қочиб қутулувчи бўлмас. Қутуз Мисрга келганидан

⁹⁰² Муслим ривояти.

⁹⁰³ Сиржоний «Қиссатут-татар» (367-бет).

⁹⁰⁴ Анфол: 42.

⁹⁰⁵ Мақризий «ас-Сулуқ» (1/519), Захабий «Сияр аълам ан-нубала» (23/201).

бироз вақт ўтиб, бу амирлар билан бирга овга чиқади ва овдан қайтган чоғида Рукниддин ундан бир мўғул асира қизни беришини сўрайди. Қутуз унга қизни тақдим қилади, миннатдорчилик билдирган Рукниддин, Қутузнинг кўлини ўпади, бу унинг амирларга ишораси эди. Амирлар бирдан Қутузга ҳамла қилиб, уни қатл қиладилар...

Бу орада уларнинг олдига етиб келган аскар қўмондони Форисиддин Ўқтой Соғийр воқеага гувоҳ бўлиб, Қутузни ким ўлдирди, деб сўраганда, Рукниддин мен ўлдирдим, деб жавоб беради ва шу тариқа Рукниддин Мисрга подшоҳ бўлади. Зеро, ўша давр одатларига кўра биринчидан, Рукниддин подшоҳликка лойиқ бўлса, иккинчидан подшоҳни ўлдирган шахс подшоҳ бўлар эди. Шу кундан эътиборан, у Подшоҳ Зоҳир лақабини олди. Бу воқеа 658 йил 16 зулқаъда/1260 йил 30 октябр шанба куни юз берди.⁹⁰⁶

Шайх Изз ибн Абдуссалом Қутуз вафотидан сўнг, мусулмонлар унинг кўли билан кўлга киритган буюк нусратнинг заволи бўлишидан кўрқиб, шундай дея йиғлаган эди: «Раҳматлик йигит! Агар узокрок яшаганида Исломни ёшартириб янгилаган бўларди».⁹⁰⁷

Гарчи Қутуз узок умр кўрган бўлмасада, Мамолийк давлати салкам уч асрга қадар давом этди. Дарҳақиқат, Қутуз Мамлуқлар давлатига мустаҳкам асос қўйган эди. Қолганлар шу асос устига мустаҳкам бино курдилар. Шайх Изз ибн Абдуссалом раҳимахуллоҳ шундай деди: «Мусулмонларга Умар ибн Абдулазиз раҳимахуллоҳдан кейин Қутуздек салоҳият ва адолат билан ҳукм қилувчи киши волий бўлмади».⁹⁰⁸ Бу Қутуз раҳимахуллоҳнинг Ислом майдонидаги кадр-қийматидир.

У бу даражага Оллоҳнинг китоби ва Расули соллаллоҳу алайҳи ва салламнинг суннатларини татбиқ қилиш билан эришди. Йўкса, Ислом бўлмаса Умар ким эди? Ислом бўлмаса Холид, Ториқ ибн Зиёд, Қутуз ким эди? Оллоҳ таолога ҳамду санолар бўлсинки, Унинг китоби олдимизда бўлганидек, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва салламнинг суннатлари ҳам кўз ўнгимизда. Оллоҳ таоло уларни сақлади ва то Қиёмат ҳимоя қилажак. Уммат уни ушласа ҳаргиз йўлдан озмайди. Имом Молик «*Муваддоъ*»да ривоят қилади, Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам дедилар: «*Мен сизларга икки нарсани қолдирдим. Агар*

⁹⁰⁶ Макризий «ас-Сулуқ» (1/519-бет), Ибн Касир «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» (17/412, 413), Заҳабий «Сияр аълам ан-нубала» (23/201).

⁹⁰⁷ Сиржоний «Қиссатут-татар» (367-бет).

⁹⁰⁸ Сиржоний «Қиссатут-татар» (367-бет).

*уни маҳкам ушласангиз ҳаргиз адашмайсиз. У — Оллоҳнинг китоби ва Пайгамбарининг суннатидир».*⁹⁰⁹

Холид, Қоъқоъ, Ториқ, Салоҳиддин ва Қутузларни яратган Оллоҳ таоло, бу уммат ичидан воқеликни ўзгартирадиган, динини янгилайдиган, уларда умид учқунларини пайдо қиладиган, Оллоҳнинг изни билан бутун олам ва умматларга пешволик қиладиган ва жаннатлар сари етаклайдиган эр кишиларни (рижолларни) яратади.

Қутуз азиз, улуғвор, қадди рост, диндор, халқига муҳаббатли ва душманига ҳайбатли ҳолатда яшади. Оллоҳ таоло у кишини жаннатда шаҳидлар саййидлари билан бирга қилсин!

⁹⁰⁹ Имом Молик ривояти.

ХОТИМА

Мўғул-татар қиссасини Айн-Жалутгача бўлган қисми, яъни мўғулларнинг тарих саҳнасида пайдо бўлишидан то қуввати синдирилгунча бўлган ҳодисаларни зикр қилиб ўтдик. Лекин қиссадаги баъзи воқеаларни батафсил баён қилиш билан бирга бошқа кўпларини енгил айтиб ўтишга кифояландик. Чунки ҳамма ҳодисаларни батафсил зикр қилишимиз кўп вақт талаб қилар эди. Аслида бу қисса янада эътибор бериб, диққат билан ўрганишга лойиқ. Бу қиссадан фақатгина Ер юзида ва тарих саҳифаларида юз берган ҳодисаларни шунчаки билиб қўйиш ёки унга назар солиш ёки беамал таҳлил қилишни мақсад қилмадик. Балки тадаббур ва тафаккур қилиш, ибрат ва фойда олиш, келажакка тарих кўзи билан назар солиш ва бугуннинг кечаги кунга ўхшашлигидан дарс олиш мақсадида зикр қилдик. Ҳозирги кунимиздаги мусулмонларнинг аҳволи мўғуллар замонидаги мусулмонларга бунчалар ўхшаш бўлмаса! Бугунги кун мусулмон ҳокимлари мўғуллар кундагиларга ўхшашлигини айтмайсизми! Исломи динларининг кофирлар томонидан эгаллангани мўғуллар томонидан босиб олинганига бунчалар ўхшамаса! Ҳа, тарих такрорланаверади, лекин ундан ибрат олувчилар қани?!

Шу тариқа *«Мўғул босқини ёхуд Мусулмонларнинг қонли кечмиши»* қиссамиз ниҳоясига етди. Солихлар ҳам, толихлар ҳам, золим ва мусулмон лашкар ҳам қора тупроқ остига кирди. Йиллар, йиллар ортидан асрлар ўтди; диёрлар, қалъа ва қўрғонлар ўзгарди; шоду-хуррамлар бир томону, ғурбатдагилар бир томонда ўтди; ҳамма-ҳамма нарса ўтиб кетди, фақат ундаги ибратларгина қолди.

«Дарҳақиқат, уларнинг қиссаларида ақл эгалари учун ибрат бордир. (Ушбу Қуръон) тўқиб чиқариладиган сўз эмас, балки ўзидан аввалги нарсаларни (яъни, самовий китобларни) тасдиқ этувчи, унга иймон келтирадиган қавм учун барча нарсаларни муфассал баён қилиб берувчи ҳидоят ва раҳмат (бўлган бир Китобдир)».⁹¹⁰

Ўзгартирилмайдиган ва алмаштирилмайдиган илоҳий қонунлар ва кавний суннатлар боқий қолади,

⁹¹⁰ Юсуф: 111.

«Агар сизларга Оллоҳ ёр бўлса, ҳеч ким сизлардан ғолиб бўлмас».⁹¹¹

Оллоҳ таолодан бутун ҳаётимизни Ўзининг йўлида қилишини; сўзларимиз ва воқеимизни Расулуллоҳ соллаллоҳу алайҳи ва саллам ва унинг саҳобалариники каби қилишини сўраймиз. Улар Пайғамбаримиз соллаллоҳу алайҳи ва салламга байъат бериб, бу байъатларида содик қолгандилар.

Ушбу рисоламизда ҳақиқатни ёритиб беролган бўлсак, бу Оллоҳнинг бизга марҳамати илоҳийсидандир. Бунинг учун Оллоҳга беҳад ҳамду сано айтамыз. Агар хатога йўл қўйган бўлсак, бунинг учун Оллоҳга истиғфор айтиб, Унга тавба қиламыз. Зеро, бу рисола ни ёзиш жараёнида хатога йўл қўймасликка тоқатимиз ва қўлимиздан келгунича ҳаракат қилдик. Оллоҳ таолодан бу камтарона ишимизни мақбул қилиб, охиратимизга захира қилишини ўтинамиз. Оллоҳ таолодан дуо қилиб сўрайман, бу китобни мусулмонларга манфаатли китоблардан қилсин. Муҳтарам китобхонлардан дуоларида бизнинг ҳаққимизга ҳам дуо қилишларини сўраш баробарида умид ҳам қиламыз, чунки бир биродарининг ҳаққига ғойибона қилинган дуо, мустажоб иншооллоҳ...

Оллоҳ субҳонаху ва таолодан унинг Ер юзида жорий қилган қонунларини билдиришини, манфаатли бўлган илмни таълим бериб, таълим бергани билан фойдалантиришини ва тарихни бизларга ибрат қилишини сўраймиз, албатта у Оллоҳнинг қўлида ва У бунга қодир зотдир.

«Парвардигоро, Ўзинг бизларни ва бизлардан илгари иймон билан ўтган зотларни мағфират қилгин ва қалбларимизда иймон келтирган зотлар учун бирон ғилли-ғаш қилмагин. Парвардигоро, албатта Сен меҳрибон ва раҳмлидирсан».⁹¹²

«Ҳали мен сизларга айтаётган сўзларни эслайсизлар. Мен ўз ишимни Оллоҳга топширурман. Зеро, Оллоҳ бандаларини кўриб тургувчидир».⁹¹³

«Эй Раббим! Сенга ҳамдлар ила тасбеҳлар бўлсин! Сендан ўзга ҳеч қандай илоҳ йўқ! Сендан мағфират тилайман ва Сенга тавба қиламан».

Валлоҳу аъла ва аълам

1433 йил 19 рамазон/2012 йил 7 август.

⁹¹¹ Оли Имрон: 160.

⁹¹² Ҳашр: 10.

⁹¹³ Ғофир: 44.

МЎҒУЛЛАР ҚИССАСИ ҚИСҚА САТРЛАРДА

603/1206 йил:

Чингизхон бошчилигида мўғул давлатининг пайдо бўлиши;

616/1219 йил:

Ислом оламига мўғул босқинининг бошланиши, Бухоро қирғини;

617/1220 йил:

Самарқанд қирғини.

Хоразм мамлакати бошлиғи Муҳаммад ибн Такаш Хоразмшоҳнинг қочиши ва унинг Касбий денгизи ўртасидаги оролда вафот этиши;

Мозандарон ишғоли;

Рой ишғоли;

Арманистон ишғоли;

Гуржистон ишғоли;

Фарғона водийси қирғини;

Термиз қирғини;

Кулоба қалъаси қирғини;

Мўғулларнинг Балх халқига омонлик бериши;

Толиқон ишғоли;

Марв фожиаси;

Нишопур фожиаси;

Ҳирот шаҳри ишғоли;

Хоразм фожиаси;

Балқда Жалолиддин ибн Муҳаммад ибн Хоразмшоҳнинг бирлашган қуввати мўғуллар устидан ғолиб бўлиши;

Қобул ғалабаси;

Ғаниматлар сабаб мусулмон аскарнинг парчаланиши;
Ҳинд дарёси бўйида Жалолиддин Мангуберди қўшинининг
аччиқ мағлубияти;
Жалолиддиннинг Ҳиндистонга чекиниши;
Ғазна шаҳри ишғоли;

618/1221 йил:

Мароға қирғини;
Аббосийлар хилофатига таҳдид бўлиши;
Ҳамадон ишғоли;
Ардебил шаҳри қирғини;
Табризда Шамсуддин Тоғроий бошчилигида мўғулларга уруш
эълон қилиниши;
Байлақон қирғини;
Мўғуллар Ганжа остонасида;
Доғистон қирғини;
Чеченистон қирғини;
Россиянинг жануби-ғарбининг ишғоли;

619/1222 йил:

Мўғулларнинг Хитой билан Ироқ орасидаги эгаллаган
жойларда давлатини мустаҳкамлаши;

620/1223 йил:

Мўғулларнинг Болгарлардан енгилиши;
Мусулмонларнинг Гуржлар билан урушиши ва охир-оқибат
икки тараф ўртасида сулҳ юзага келиши;
Форснинг шимолида Ғиёсиддин ибн Хоразмшоҳнинг тарих
сахнасига чиқиши;
Мўғуллар болгарлардан енгилгандан сўнг, Ғиёсиддиннинг
Форс иқлимига ҳукмрон бўлиши;
Ғиёсиддиннинг Кармон минтақасини қўлга олиши;
Ғиёсиддин билан тоғаси Иғон Тоисий орасидаги фитна;

Муғисиддин ибн Туғрулшоҳ ўғлининг насроний бўлиши;
Ирок, Шом, Форс ва Жазира ерларида чигиртка балосининг
чиқиши;

621/1224 йил:

Ғиёсиддин ибн Хоразмшоҳ билан Саъд ибн Дакла орасидаги
уруш ва Форс ерларини улар орасида таксимланиши;

Уч минг мўғул қўшинининг Рой, Сава, Кум, Кошон ва Ҳамадон
шаҳарларини қирғин қилиши;

Қаҳатчилик, чигиртка балоси чиқиши ва нархлар кўтарилиши;

622/1225 йил:

Жалолиддин Мангубердининг Ҳиндистондан қайтиши;

Жалолиддин ва Саъд ибн Дакла Ғиёсиддин ибн Хоразмшоҳга
қарши тил бириктириши;

Жалолиддиннинг Форсга ҳукмрон бўлиши;

Жалолиддиннинг Басрага ҳужум қилиши ва Бағдодга таҳдид
солиши;

Халифа Носир Лидийниллаҳнинг мўғуллардан ёрдам сўраши;

Жалолиддиннинг Озарбайжон ва Гуржистонни эгаллаши;

Халифа Носирнинг вафот этиши;

Одил Зоҳирнинг халифа бўлиши;

623/1226 йил:

Халифа Зоҳирнинг вафот этиб, Мустансир Биллаҳнинг халифа
бўлиши;

Жалолиддиннинг Халат шаҳрини қамал қилиши;

624/1227 йил:

Чингизхоннинг ўлиши ва Ўқтойнинг хоқон бўлиши;

Ўқтой даврида босқиннинг муваққат тўхташи;

626/1229 йил:

Шомдаги Айюбий амирларнинг Байтул-Мақдисни
салибийларга сулхан таслим қилиши;

628/1231 йил:

Мусулмон ўлкаларга Шўрмағон бошчилигида иккинчи мўғул босқини;

Форс ерларида Жалолиддиннинг мўғуллардан енгилиши;

Жалолиддиннинг Ироқнинг шимолига Жазира ерларида ғойиб бўлиши;

Жалолиддиннинг курд деҳқони томонидан қатл қилиниши;

629/1232 йил:

Мўғуллар Форснинг шимолини қайта эгаллаши;

Мўғуллар Озарбайжонни қайта ишғол қилиши;

Шўрмағоннинг босқинни вақтинчалик тўхтатиши;

634/1237 йил:

Шўрмағон бошчилигида мўғул босқини бошланиб, Арманистон, Гуржистон, Чеченистон ва Доғистоннинг ишғол қилиниши;

Боту ибн Жўжи бошчилигидаги мўғул аскарининг Россия-нинг Волга дарёси соҳилларини эгаллаши;

635/1238 йил:

Ботухон бошчилигида Россияга мўғул юриши;

Россиянинг бир қатор шаҳарлари: Рязан, Коломна, Суздаль ишғоли;

636/1238 йил:

Москва, Владимир шаҳарларини ишғол қилиниши;

Россиянинг батамом ишғол бўлиши;

638/1240 йил:

Украина ишғоли ва пойтахти Киевнинг вайрон этилиши;

639/1241 йил:

Байдер бошчилигида Польша давлатини ишғол қилиниши;

Польша ва Олмония бирлашган қувватининг мўғуллар қаршисида мағлубиятга учраши;

Ботухоннинг Можаристонни ишғол қилиши;

Байдернинг Словакияни батамом эгаллаши;

Хорватия ишғоли;

Мўғул хони Ўқтойхоннинг ўлими ва мўғул юришининг тўхташи;

Мўғул хоқонлигига Гуякхоннинг хон бўлиши ва босқин сиёсатини тўхтатиб, давлатни мустаҳкамлашга киришиши;

640/1242 йил:

Аббосийлар халифаси Мустансир Биллаҳ вафоти, Мустаъсим Биллаҳ халифа бўлиши;

643/1245 йил:

Рим папаси Иннокентийнинг Гуякхонга иттифоқ тузиш ғаразида делегация йўллаши;

645/1247 йил:

Иннокентийнинг мўғул саркардаси Байжуга элчи йўллаши;

646/1248 йил:

Людовик тўққизинчи мўғул хони Гуякхонга иттифоқ тузиш мақсадида делегация йўллаши;

Мўғул хони Гуякхон ўлими;

Ўғул Қўймишнинг мўғулларга бошлиқ бўлиши;

647/1249 йил:

Людовик тўққизинчи томонидан Думёт портининг эгалланиши;

648/1250 йил:

Мусулмонларнинг Мансура ва Фарискур жанглирида француз салибчилари устидан ғалаба қозониши;

649/1251 йил:

Мўғулларга Мангухоннинг бошлиқ бўлиши;

Форс минтақасининг Хулагуга топширилиши;

Аббосийлар хилофатини ағдаришга ҳозирлик бошланиши;

650/1252 йил:

Шимолий Ироқ ерларининг ишғол қилиниши;

651/1253 йил:

Людовик тўққизинчи томонидан Мангухонга делегация йўлланиши;

654/1256 йил:

Ирокка қарши хужумга тайёргарликнинг мукаммаллашуви;

655/1257 йил:

Хитой, Форс, Россия, Овропа, Гуржистон, Арманистондан мўғул лашкарининг жамланиши;

656/1258 йил:

Бағдод қамали;

Бағдод қатлиоми;

Бани Аббос халифаларига яқун ясалиши;

Ислом тарихида илк бор исломий хилофатнинг ағдарилиши;

Майяфариқин амирлигининг мўғулларга қарши уруш эълон қилиши;

Майяфариқин қамали;

Носир ибн Юсуф билан Хулагу алоқасининг ёмонлашиши;

657/1259 йил:

Шомга мўғул босқини;

Нусайбин ишғоли;

Ал-Бира ишғоли;

Ҳалаб қамали;

658/1260 йил:

Комил Муҳаммад Айюбий қатли;

Ҳалаб ишғоли;

Дамашқ ишғоли;

Ғазо ишғоли;

Мисрга таҳдид;

Қутузнинг жанг қарори;

Мусулмон аскарнинг Мисрдан Ғазога отланиши;

Ғазода Рукниддин Бейбарс бошлиқ мусулмон аскарнинг мўғуллар устидан ғалаба қозониши;

Айн-Жалутда Қутуз бошчилигида буюк ғалабага эришилиши;

Дамашқ, Ҳалаб ва Шомнинг қолган жойларини мўғуллардан озод қилиниши;

Миср ва Шомнинг бирлаштирилиши;

МАМЛУКЛАР ҚИССАСИ ҚИСҚА САТРЛАРДА

198/814 йил:

Аббосийлар хилофатига Маъмуннинг халифа бўлиши ва илк бор мамлуклар сотиб олиб, аскар сифатида қўллаши;

218/833 йил:

Аббосийларга Мўътасим халифа бўлиб, мамлуклар сафини кенгайтириши;

637/1240 йил:

Подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюбнинг Мисрга волий бўлиши;

641/1243 йил:

Шом амирларини салибийлар билан иттифоқликда Мисрга уруш очиши;

642/1244 йил:

Ғазо жангида Подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюбнинг Шом ва салибчилардан иборат бирлашган қувват устидан ғолиб бўлиши;

643/1245 йил:

Подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюб Байтул-Мақдисни озод қилиши;

Форисиддин Ўқтой ва Рукниддин Бейбарс бошчилигида Баҳрий мамлукларнинг шаклланиши;

Изз ибн Абдуссаломнинг Мисрга келиши;

647/1249 йил:

20 сафар куни Людовик тўққизинчи Мисрнинг Думёт портини эгаллаши;

15 шаъбон куни подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюбнинг оламдан ўтиши;

Мансура жангини подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюбнинг беваси Шажаратуд-Дур бошқариши;

4 зулқаъда куни мусулмонлар Мансура жангида ғалаба қозониши;

17 зулқаъда куни подшоҳ Солиҳ Нажмиддин Айюбнинг ўғли Туроншоҳнинг Туркиядан Мансурага етиб келиши;

648/1250 йил:

Мухаррам ойи бошларида Туроншоҳ бошчилигида Фарискур жангида салибийлар устидан катта ғалаба қозонилиши;

Франция қироли Людовикнинг асирга тушиши;

Туроншоҳнинг Шажаратуд-Дур ва Ўқтойларга тана қилиши;

27 муҳаррам куни Туроншоҳ қатли;

Сафар ойи бошларида Шажаратуд-Дурнинг Мисрга малика бўлиши;

Шажаратуд-Дурнинг Иззуддин Ойбекка турмушга чиқиши;

80 кундан кейин жумодулохир ойининг охирларида Шажаратуд-Дурнинг тахтдан тушиши ва ўрнига эри Иззуддин Ойбекнинг ўтириши;

10 зулқаъда куни Аббосия минтақасида подшоҳ Муъизнинг Шомдаги Айюбий амирларига ғолиб бўлиши;

650/1252 йил:

Қутуз бошлиқ Муъизий мамлукларнинг шаклланиши;

651/1253 йил:

Подшоҳ Муъиз Фаластинни Мисрга қўшиб олиши;

652/1254 йил:

3 шаъбон куни подшоҳ Муъиз томонидан Форисиддин Ўқтойнинг ўлдирилиши;

Бахрий мамлуклар Рукниддин Бейбарс бошчилигида Мисрдан кочиб кетиши;

655/1257 йил:

Подшоҳ Муъиз Мосул амири Бадриддин Луълуънинг қизига уйланишга қарори;

Рабиулаввал ойида Шажаратуд-Дур томонидан подшоҳ Муъизнинг қатл қилиниши;

Рабиулаввал ойида Шажаратуд-Дурдан қасос олиниси;

Қутуз раҳнамолигида 15 ёшли Нуриддин ибн Иззуддин
Ойбекнинг Мисрга волий бўлиши;

Зулқаъда ойида Карак амири Муғис Умарнинг Мисрга уруш
очиши ва енгилиши;

656/1258 йил:

Бағдод ағдарилиши;

Рабиулохир ойида Карак амрининг яна Мисрга уруш очиши;

657/1259 йил:

Хулагу бошчилигида Шом диёрига мўғул босқини бошланиши;

24 зулқаъда куни Миср тахтига Қутузнинг ўтириши ва подшоҳ
Музаффар лақабини олиши;

658/1260 йил:

Қутуз Мисрда ички ислохотларини бошлаши;

Баҳрий мамлукларни афв қилиниши ва Муъиззий мамлуклар
билан бирлашиши;

Рукниддин Бейбарсни Мисрга қайтиши;

Қутузнинг Шом амирларига бирлашиш таклифи билан элчилар
йўллаши;

Сафар ойида Ҳалабнинг, рабиулаввал ойида Дамашқнинг
мўғуллар амрига бўйсундирилиши;

Мисрга Хулағунинг таҳдидий мактуби келиши;

Қутузнинг мўғулларга қарши курашишга қарори;

Фаластин ерларида уруш олиб боришга қарор берилиши;

Миср аскарининг иқтисодий ва аскарый тайёргарлик кўриши;

Шом амирларининг баъзиларини Қутузнинг сафига қўшилиши;

Шаъбон ойида Миср аскарининг Фаластин сари йўлга чиқиши;

Ғазода мўғул гуруҳи устидан ғалаба қозонилиши;

Акко салиб амирлиги билан тинчлик сулҳи ўрнатилиши;

Айн-Жалут водийсининг жанг учун танланиши;

25 рамазон куни Айн-Жалут жангида мўғуллар устидан ғалаба қозонилиши;

30 рамазон куни Дамашқнинг мўғуллардан озод қилиниши;

Шаввол ойининг бошларида Рукниддин бошчилигида Ҳалабнинг озод қилиниши;

Қутузнинг Миср ва Шомни бирлаштириши;

26 шавволда Қутузнинг Мисрга қайтиши;

16 зулқаъда куни Қутузнинг ўлдирилиши.

МАНБАЛАР

Қуръони Карим:

1. Қуръони Каримнинг ўзбек тилидаги маънолари таржимаси, шайх Алоуддин Мансур.
2. Қуръони Карим ва ўзбек тилидаги маънолари таржимаси, шайх Муҳаммад Содик Муҳаммад Юсуф.

Ҳадис китоблари:

1. Абу Абдуллоҳ Муҳаммад ибн Исмоил Бухорий «ал-Жомий ас-Саҳиҳ»,
2. Муслим ибн Ҳажжож Нисобурий «Саҳиҳ Муслим»,
3. Муҳаммад ибн Исо Термизий «Сунан ат-Термизий»,
4. Сулаймон ибн Ашъас Абу Довуд «Сунан Аби Довуд»,
5. Аҳмад ибн Шуъайб Насоий «Сунан ан-Насоий»,
6. Муҳаммад ибн Язид Ибн Можа «Сунан Ибн Можа»
7. Аҳмад ибн Аҳмад ибн Муҳаммад ибн Ҳанбал Шайбоний «Муснад Аҳмад».

Тарих китоблари:

1. «ал-Камил фит-тарих» Аллома Иззуддин Абул Ҳасан Ибнул Асир (555–630). Байрут, Дар Содр.
2. «Сийратус-султон Жалолиддин Мангуберди» Муҳаммад ибн Аҳмад ибн Али Шихобуддин Насавий (1193–1249). Таҳқиқ ҳофиз Аҳмад Ҳамдий. Дарул фикрил арабий, Миср (1953 йил).
3. «ал-Бидаяту ван-Ниҳоя» Имодуддин Абул Фадо Исмоил ибн Умар Ибн Касир (700–774). Биринчи табаъ, ал-Жиза (1417/1997).

4. «Жомеъут-таворих» Рашидуддин Фазлуллох Ҳамадоний (тахм. 1247–1318). Биринчи табаъ (1420/2000).
5. «Ас-Сулук лимаърифати дувал ал-мулук» Такиюддин Абул Аббос Аҳмад ибн Али Мақризий (766/845). Биринчи табаъ, Байрут–Ливан (1418/1998).
6. «Тарихи Жаҳонгушойи» Алоуддин Отамалик Жувайний (1226–1283). «Тариху фатуҳул-олам» форсчадан Муҳаммад Тунжий таржимаси. Дамашқ (1985 йил).
7. «Сияр аъламу ан-нубала» Шамсуддин Муҳаммад ибн Аҳмад Заҳабий. Байтул афкор ад-давлийя.
8. «Дувалул-ислам» Шамсуддин Муҳаммад ибн Аҳмад Заҳабий.
9. «Тарих ибнул-вардий» Зайниддин Умар Ибнул Вардий. Байрут–Ливан (1389/1970).
10. «Найлул-автор» Шавконий.
11. «Тобақот аш-шафиъйя» Сабкий.
12. «Тобақоти носирӣ» Абу Умар Минҳожуддин Усмон ибн Сирожуддин Жузжоний.
13. «Қиссатут-татар минал-бидаяти ила айн-жалут» док. Роғиб Сиржоний. Биринчи табаъ, Қоҳира (1427/2006).
14. «ал-Мўғул байнал-интишор вал-инкисор» док. Али Муҳаммад Саллабий. Биринчи табаъ (1430/2009).
15. «Сукуту давлатил-аббосийя» док. Саъд Ғомидий. Биринчи табаъ (1401/1981).
16. «ад-Давлатул-ховаризмийя вал-мўғул» Ҳафиз Ҳамдий. Дарул фик-рил арабий.
17. «ал-Мўғул фит-Тарих» док. Саййод. Байрут–Ливан.
18. «ал-мўғул» док. Саййид Боз Урайний. Байрут–Ливан (1406/1986).

19. «Моғол истилоси ве Аббаси девлетинин йикилиши» докторлик рисоласи, док. Аҳмад Ўздемир. Истанбул, 2011.
20. «Жихадул-мамолийк зид ал-мўғул вас-салбийин» докторлик рисоласи, док. Абдуллох Саид Муҳаммад Ғомидий.
21. «ал-ғозвул-мўғулий лидиярил-ислам» док. Муҳаммад Фатҳий Амин. Биринчи табаъ, Байрут–Ливан (1408/1988).
22. «ал-Ааламул-ислам вал-ғозвул-мўғулий» Исмоил Холидий. Биринчи табаъ, Кувайт (1404/1984).
23. «Муҳавалат ат-таҳавул байнал-мўғул вас-солибийин зиддал-муслимийна фил-қорнайни ас-сабиъ вас-самини ал-ҳижриййайни» док. Шафик Жосир Аҳмад Маҳмуд.
24. «Кайфа дахола ат-татар биладал-муслимийн» Салмон Авда. Иккинчи табаъ, Саудия (1417/1997).
25. «Тариху мўғул ал-қобилатуз-заҳабия вал-ҳинд» Муҳаммад Сухайл Тоқуш.
26. «Удатур-рух лил-хилафатил-Аббасия» Муҳаммад Солиҳ Муҳиддин. Биринчи табаъ, Саудия (1425/2004).
27. «Ат-Тарихул-Исламий» Маҳмуд Шоқир. Саккизинчи табаъ (1421/2000).
28. «Тарихул-мўғул вал-мамалик» док. Аҳмад Авдат. Дарул киндий (1990 йил).
29. «Қияму давлатил-мамаликул-увла фи миср ваш-шам» док. Аҳмад Мухтор Аббодий. Байрут – Ливан.
30. «Фит-тарихил-айюбий вал-мамлукий» док. Аҳмад Мухтор Аббодий.
31. «Давлатул-мамолийк» Самир Фарож.
32. «Султон Музаффар Сайфиддин Қутуз ва маърақату айн-жалут» док. Али Муҳаммад

- Муҳаммад Саллабий. Биринчи табаъ, Қоҳира (1430/2009).
33. «Музаффар Кутуз ва маърақату айн-жалут» Бассом Аслий. Олтинчи табаъ (1408/1988).
 34. «Султон Музаффар Сайфиддин Кутуз» Қосим Абдух. Биринчи табаъ, Қоҳира (1419 /1998).
 35. «Айн-жалут» Фатҳий Шиҳобуддин. Биринчи табаъ (1418/1998).
 36. «Софаҳат матвийя мин ҳаяти султони-улама Изз ибн Абдуссалом» Салим Йидул Ҳилолий. Биринчи табаъ, Дар ибн Жавзий (1410/1990).
 37. «Изз ибн Абдуссалом» Зухайлий. Биринчи табаъ, Дамашк (1412/1992).
 38. «Тарихул-айюбийин фи миср ва биладиш-шам ва иклимил жазира» док. Муҳаммад Сухайл Токуш. Биринчи табаъ, дарун-нафаис (1420/1999).
 39. «Ас-Сунан ал-илаҳийя» Абдулкарим Зайдан. Дарул рисалах.
 40. «Ан-Нужумуз заҳиро фи мулуки Миср вал-коҳира» Ибн Тағрий Бардий.
 41. «Чингизхон» Акийд Муҳаммад Асадуллох. Дарун-нафаис.
 42. «Ҳурубул-мўғулий» Аҳмад Ҳатит. Биринчи табаъ (1994 йил).
 43. «Тарихул-мўғул» Аббос Иқбол.
 44. «ал-Арабу ват-татар» Иброҳим Аҳмад Адавий. Қоҳира (1963 йил).
 45. «ад-Давлатул-ховаризмийя» док. Нофё Убуд.
 46. «Тарих мухтасар ад-дувал» иккинчи табаъ, Байрут (1308/1890)
 47. «Мухтасар фи ахбарил башар» Абул Вафо.
 48. «Ниҳаятул-араби фи фунунил-адаб» Аҳмад Абдулвахҳоб Нувайрий, Қоҳира (1395/1975).

49. «Бадаиъуз-зухур» Муҳаммад ибн Аҳмад Ибн Иёс. Биринчи табаъ (1975 йил).
50. «Тариху байтил-мақдис фил-аҳдил-мамлукий» Муҳаммад Аҳмад Назр. Биринчи табаъ, Уммон – Урдун (1426/2006).
51. «Интишорул-ислам байнал-мўғул» док. Ражаб Муҳаммад Абдулҳалим.
52. «ал-Алақот байнал-мўғул ва уврубба ва асаруҳа алал-аламил-ислабий» док. Одил Исмоил Муҳаммад Ҳилол. (1997 йил).
53. «Атлас ат-тарихил арабий ал-ислабий» док. Шавқий Абу Холил.
54. «Атлас дувалил-ааламил-ислабий» док. Шавқий Абу Холил.
55. «Жаҳон тарихи» (7-боб, 35-§. Мўғуллар давлати ва унинг боскини), Т. Ў. Салимов, Ф. Э. Султонов.
56. «Сокровенное сказание монголов» Перевод С. А. Козина. Москва-Ленинград 1941.
57. «Чингизхан история завоевателя мира» Ала-ад-Дин Ата-Мелик Джувейни. Перевод с текста М. М. Казвини на английский язык Дж. Э. Бойла. Перевод текста с английского на русский язык Е. Е. Харитоновой. Москва 2004.
58. «Сборник летописей» Рашид-ад-Дин. Перевод с персидского Л. А. Хетагурова. Москва-Ленинград 1952.
59. «Туркестан в эпоху монгольского нашествия» В. В. Бартольд. Москва 1963.
60. «Военная держава Чингисхана» Р. П. Храпачевский.

Бошқа манбалар:

1. «Ўзбек тилининг изоҳли луғати» икки жилдли, З. М. Маъруфов таҳрири остида. Москва «Рус тили» нашриёти, 1981й.

2. «Ўзбек тилининг изоҳли луғати» беш жилдли, А. Мадвалиев таҳрири остида. Тошкент, 2006й.
3. «Энциклопедик луғат» икки жилдли, бош муҳаррир Қ. Х. Хоназаров, Тошкент 1988й.
4. «Ўзбекистон Миллий Энциклопедияси» Давлат илмий нашриёти, 2005й.